

श्री महावीर ग्रंथ अकादमी—सप्तम पुष्प

बाई अजीतमति एवं उसके समकालीन कवि

[१६ वीं-१७ वीं शताब्दि के अर्धचित्त, अज्ञात एवं अल्पवर्णित पाँच कवियों—बाई
अजीतमति, परिमत्स, धनपाल, भ० महेन्द्रकीर्ति एवं देवेन्द्र के जीवन,
व्यक्तित्व एवं कृतित्व के साथ उनकी सम्पूर्ण कृतियों के मूल पाठों
का प्रथम बार संकलन प्रकाशित]



लेखक एवं सम्पादक
डा० कस्तूरचन्द्र कासलीवाल
एच. ए., पी-एच. डी., शास्त्री

प्रकाशक
श्री महावीर ग्रंथ अकादमी जयपुर

प्रथम संस्करण : अप्रैल, १९४४

मूल्य ५०.००

सम्पादक — डा० हीरालाल माहेश्वरी एम.ए., डी० फिल, डी.लिट जयपुर
 डा० राजाराम जैन, एम.ए. पी-एच.डी साहित्याचार्य आरा
 डा० गंगाराम गर्ग, एम.ए.पी-एच.डी. भरतपुर

निदेशक मण्डल —

परम संरक्षक — श्री भट्टारक चावकीतिजी महाराज, मूढबित्री

संरक्षक — श्री साहू अशोक कुमार जैन, बेहली
 श्री पूनमचन्द जैन, झरिया (बिहार)
 श्री रमेशचन्द्र जैन (पी. एस जैन) बेहली
 श्री डी० बीरेन्द्र हेगडे, धर्मस्थल
 श्री निर्मलकुमार ठेठे, लखनऊ
 श्री महावीरप्रसाद सेठी, सरिया (बिहार)
 श्री कामसचन्द्र कासलीवाल, जयपुर
 डा० (श्रीमती) सरयू० बी० बीशो, जम्शेड
 श्री पन्नालाल सेठी, डीमापुर
 श्री रूपचन्द्र कटारिया, बेहली
 श्री डालचन्द्र जैन, सागर

अध्यक्ष — श्री शांतिलाल जैन, कलकत्ता

कार्याध्यक्ष — श्री रतनलाल गंगवाल कलकत्ता श्री पुरणचन्द्र गोस्वीका, जयपुर
 उप-अध्यक्ष — सर्वश्री गुलाबचन्द्र गंगवाल, रैनवाल, अजितप्रसाद जैन ठेकेदार, बेहली
 कन्हैयालाल सेठी जयपुर, पद्मचन्द्र तोतूका जयपुर
 रतनलाल बिनायकया डीमापुर, त्रिलोकचन्द्र कोठारी, कोटा
 महावीरप्रसाद नृपत्या जयपुर, चिरंजीलाल बज्र, जयपुर
 रामचन्द्र रारा गया, लेखचन्द्र बाकलीवाल, जयपुर
 रतनलाल बिनायकया भागलपुर, सम्पत्कुमार जैन, कटक
 पद्मकुमार जैन नेपालगंज, ताराचन्द्र बक्शी, जयपुर
 रतनचन्द्र बंसारी जयपुर, भरतकुमारसिंह पाटोड़ी, जयपुर
 श्रीमती चनेली देवी कोठिया वाराणसी, शांतिप्रसाद जैन, बेहली
 घुषचन्द्र पांड्या जयपुर, ललितकुमार जैन, उज्जैन
 मोहनलाल अग्रवाल जयपुर

निदेशक एवं प्रधान

सम्पादक — डा० कस्तूरचन्द्र कासलीवाल, जयपुर

प्रकाशक — श्री महावीर ग्रंथ अकारबसी

८६७ अमृत कलश

प्रतिया ११००

बरकत नगर, किसान मार्ग

टोंक फाटक, जयपुर-१५

मूल्य ५० रुपये

मुद्रक-मनोज प्रिन्टर्स, जयपुर-३

फोन-६७६६७

श्री महावीर ग्रंथ अकादमी

प्रगति परिचय

श्री महावीर ग्रंथ अकादमी के प्रगति परिचय में मुझे यह कहते हुए प्रसन्नता है कि जिस उद्देश्य को लेकर अकादमी की स्थापना की गयी थी उसकी ओर वह निरन्तर आगे बढ़ रही है। प्रस्तुत पुष्प सहित अब तक उसके सात पुष्प निकल चुके हैं। इन सात पुष्पों में जिन कवियों का व्यक्तित्व एवं कृतित्व के रूप में मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया है उनमें से अधिकांश कवि अब तक अर्चित, अज्ञात अथवा अल्प अर्चित रहे हैं। कुछ कवि तो ऐसे हैं जिनके व्यक्तित्व को प्रकाश में लाने का एक मात्र श्रेय श्री महावीर ग्रंथ अकादमी को दिया जा सकता है।

अकादमी के छठे पुष्प कविवर दुलाबीचन्द, बुलाबीदास एवं हेमराज का विमोचन तिजारा (राजस्थान) में पञ्च कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के विशाल समारोह में परमादरणीय महामहिम राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैलसिंह जी सा० ने अपने कर कमलों से किया था। यह संभवतः प्रथम अवसर है जब महामहिम राष्ट्रपति महोदय ने किसी जैन विद्वान की पुस्तक का ऐसे विशालतम समारोह में विमोचन किया हो। इसलिये ऐसा गौरव प्राप्तकर लेखक एवं अकादमी दोनों माही गौरवान्वित हैं।

प्रस्तुत सप्तम पुष्प में हमने पांच कवियों का परिचय एवं उनकी कृतियों का संकलन किया है उनमें चार तो अब तक पूर्णतः अर्चित एवं अज्ञात माने जाते रहे हैं। हिन्दी साहित्य में कवयित्रियों के नाम अंगुलियों पर गिने जा सकते हैं इसलिये बाई अजीतमति की उपलब्धि एक उल्लेखनीय खोज है। बाई अजीतमति के अतिरिक्त घनपाल, भ० महेन्द्रकीर्ति एवं देवेन्द्र सभी अर्चित कवि हैं।

राजस्थान के शास्त्र भण्डारों में हिन्दी रचनाओं का विशाल भण्डार छिपा हुआ है। इन शास्त्र भण्डारों की जितनी अधिक छानबीन की जाती है उतनी ही

नयी एवं अचञ्चित कृतियों की उपलब्धि होती रहती है प्रस्तुत पुष्प में जिन चार कवियों का परिचय दिया गया है उनमें तीन कवियों की उपलब्धि अभी गत वर्ष १९८३ में की गयी खोज का सुखद परिणाम है ।

अब तक प्रकाशित सात भागों में ८० से भी अधिक कवियों पर विस्तृत प्रकाश डाला जा चुका है । उनमें महत्त्वपूर्ण कवि, १ भट्टारक त्रिभुवनकीर्ति, २ बूचराज, ३ छीहल, ४ ठक्कुरसी, ५ गारवदास, ६ चतुस्मल, ७ ब्रह्मजिनदास, ८ भट्टारक रत्नकीर्ति, ९ कुमुदचन्द्र, १० अभयचन्द्र, ११ शुभचन्द्र, १२ श्रीपाल, १३ संयमसागर, १४ वर्मसागर, १५ गरेश, १६ आचार्य नोमकीर्ति, १७ ब्रह्म पशोधर, १८ सांगु, १९ गुणकीर्ति, २० यशःकीर्ति, २१ बुलासीचन्द्र, २२ बुलाकीदाम, २३ हेमराज गोदीका, २४ हेमराज पांडे, २५ बाई अजीतमति, २६ धनपाल, २७ परिमल्ल, २८ भ० महेश्वरीकीर्ति, २९ देवेन्द्र, एवं ३० ब्रह्म रायमल्ल के नाम उल्लेखनीय है । प्रस्तुत भाग को मिलाकर अब तक २८५० पृष्ठों का विशाल मेटर उपलब्ध कराया जा चुका है जो अपने माप में एक रिकार्ड है । मुझे पूर्ण विश्वास है कि हिन्दी के जैन कवियों का जैसे-जैसे परिचय, मूल्यांकन एवं उनकी कृतियों का संकलन हिन्दी के विद्वानों के पास पहुँचेगा, जैन कवियों के प्रति उनकी उपेक्षा की भावना उतनी ही तेजी से दूर हो सकेगी और जैन कवियों को भी हिन्दी की मुख्य धारा में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त हो सकेगा ।

सहयोग

अकादमी को समाज का जितना सहयोग अपेक्षित है उतना सहयोग अभी तक प्राप्त नहीं हो सका है । हम चाहते हैं कि अकादमी के प्रत्येक ग्राम एवं नगर में सदस्य हों जिससे इसके द्वारा प्रकाशित सभी महत्त्वपूर्ण पुस्तकें साहित्य प्रेमियों के हाथों में पहुँच सके । फिर भी जितना सहयोग हमें अब तक मिला है उसके लिये हम उन सभी महानुभावों के आभारी हैं जिन्होंने अकादमी का सदस्य बन कर साहित्य प्रकाशन की योजना को मूर्त रूप देने में सहयोग दिया है । हमारी हादिक भावना तो यही है कि अकादमी द्वारा प्रति वर्ष तीन प्रकाशन हों, एक सेमिनार का आयोजन एवं प्राचीन साहित्य की खोज के विभिन्न कार्यक्रम तीव्र गति से होते रहें । अकादमी के संरक्षक माननीय श्री निर्मलकुमार जी सा० सेठी लखनऊ की भी यही भावना है कि अकादमी की साहित्य प्रकाशन की योजनाओं पर अच्छी राशि खर्च हो । हम सेठी जी की भावनाओं के प्रति आभारी हैं । आपका अकादमी के प्रति सहज सहयोग प्रशंसनीय है । उसी तरह अकादमी के परम संरक्षक स्वामी श्री पंडिताचार्य भट्टारक चारुकीर्ति जी महाराज मूढबिंदी एवं डा० दरबारी लाल

जी सा० कोठिया बाराणसी के सहयोग के लिये भी हम आभारी हैं। सा० कोठिया सा० से स्वयं का तो सहयोग मिलता ही रहता है, वे दूसरों को भी अकादमी का सदस्य बनाने को भी प्रेरणा देते रहते हैं।

अकादमी के अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल जी सा० पहाड़िया मद्रास के आकस्मिक निधन से संस्था को गहरी क्षति पहुँची है। पहाड़िया सा० अखिले समाज सेवा से तथा दक्षिण भारत में राजस्थान का प्रतिनिधित्व करते थे। वे अकादमी के प्रति पूर्ण सहयोग की भावना रखते थे। इस अवसर पर हम अकादमी की ओर से उनके प्रति हार्दिक श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं।

नये संरक्षक सदस्यों का स्वागत

षष्ठ पुष्प प्रकाशन के पश्चात् माननीय श्री रूपचन्द जी सा० कटारिया एवं श्री डालचन्द जी सा० जैन सागर ने अकादमी के संरक्षक सदस्य बनने की स्वीकृति दी है। कटारिया सा० समाज सेवा एवं आर्थिक प्रकाशन दोनों में पूर्ण रक्षित लेते हैं तथा बिना किसी प्रदर्शन के अपनी सेवाओं से समाज को लाभान्वित करते रहते हैं। इसी तरह माननीय श्री डालचन्द जी सा० जैन मध्यप्रदेश में ही नहीं किन्तु पूरे देश में अपने सेवा भावी जीवन के लिये प्रसिद्ध हैं। आप देश के जाने माने उद्योग-पति हैं तथा अपनी उदारता एवं सरल स्वभाव के लिये सभी ओर लोकप्रिय हैं। हम दोनों ही महानुभावों का हार्दिक स्वागत करते हैं।

नये अध्यक्ष का स्वागत

कलकत्ता निवासी श्री शांतिलाल जी सा० जैन ने अकादमी के अध्यक्ष पद की स्वीकृति देकर अपने सहयोगी भावना का परिचय दिया है। आप एक युवा व्यवसायी हैं तथा धार्मिक लगन वाले व्यक्ति हैं। आपने अभी इसी वर्ष श्री महावीर जी में सम्पन्न पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में सौधर्म इन्द्र का यशस्वी स्थान लेकर अपनी धार्मिक रक्षित का परिचय दिया था। अकादमी की ओर से हम आपका हार्दिक स्वागत करते हैं।

वर्ष १९८३ में जिन महानुभावों ने अकादमी का उपाध्यक्ष बन कर संस्था को सहयोग दिया है उसके लिये हम सभी के हार्दिक आभारी हैं। ये महानुभाव हैं जयपुर के सर्व श्री धूपचन्दजी पांड्या, भरतकुमारसिंह जी पाटोदी, एवं श्री मोहन लाल जी अग्रवाल, बाराणसी की श्रीमती चमेलीदेवीजी कोठिया, देहली के श्रीशान्ति प्रसाद जी जैन एवं उज्जैन के श्री ललितकुमार जी जैन। श्री धूपचन्द जी पांड्या युवा व्यवसायी हैं तथा सभी के प्रति सहयोग की भावना रखते हैं। धार्मिक

कार्यों में अपनी प्रवृत्ति योगदान देते रहते हैं। श्री भरतकुमार सिंह जी पूर्णतः धार्मिक जीवन जीने वाले व्यक्ति हैं। व्रत उपवास पूजा पाठ जिनका प्रति दिन का नियम है। संस्थाओं को धार्मिक सहयोग देने की भावना रखते हैं। श्री मोहन लाल जी सा० काला ग्रामवाल जयपुर के जाने माने चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट हैं। धार्मिक लक्ष्य एवं समाज सेवा की भावना रखते हैं। साहित्य प्रकाशन में अत्यधिक रुचि लेते हैं। श्रीमती चमेलीदेवीजी कोठिया समाज के यशस्वी मनीषी डा० दरबारीलालजी कोठिया की धर्मपत्नी हैं। हमारे उपाध्यक्षों में आप एक मात्र महिला सदस्या हैं। अकादमी के कार्यों से आप विशेष रुचि रखती हैं। हम आपकी भावनाओं का हार्दिक स्वागत करते हैं। देहली के श्री शांतिप्रसाद जी सा० जैन स्वयं बड़े भारी पुस्तक व्यवसायी हैं। आपकी धार्मिक एवं साहित्यिक लगन देखते ही बनती है। बिना किसी प्रदर्शन एवं यश लिप्ता के आप सभी को अपना धार्मिक सहयोग देते रहते हैं। इसी तरह श्री ललितकुमार जी जैन उर्जन के प्रतिष्ठित युवा समाज सेवी एवं कर्मठ कार्यकर्ता हैं तथा मालवा में अत्यधिक लोकप्रिय हैं। हम सभी संस्थाएँ हार्दिक स्वागत करते हैं।

इसी तरह कलकत्ता के श्री तुलीचन्द्र जी सरावगी, बम्बई के श्री राज मल जी जवेरी, सागर के श्री महेश्वर कुमार जी मल्लिया, जयपुर के श्री गणपतराय जी सरावगी एवं भावनगर के श्री भंवरलाल जी सा० अजमेरा ने अकादमी का सम्माननीय सदस्य बन कर जो सहयोग दिया है इसके लिये हम सभी महानुभावों के अभारी हैं।

सम्पादन में सहयोग

प्रस्तुत पुष्प के सम्पादन में राजस्थान विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ० हीरा लाल जी माहेश्वरी, आराकालेज के प्रोफेसर डॉ० राजाराम जी जैन एवं भरतपुर राज्यकीय महाविद्यालय के व्याख्याता डा० गंगारामजी गर्ग ने जो सहयोग एवं मार्ग दर्शन दिया है इसके लिये हम तीनों ही विद्वानों के अभारी हैं। डॉ० माहेश्वरी सा० ने तो विद्वत्तापूर्ण सम्पादकीय भी लिखा है जिसके लिये हम उनके विशेष अभारी हैं।

विद्वानों का स्वागत

अमृत कलश स्थित अकादमी कार्यालय में देश विदेश के विद्वानों का स्वागत करने का अवसर मिलता रहता है। इस वर्ष जिन विद्वानों ने विशेष रूप से अमृत कलश में पधार कर अकादमी के कार्यों को देखा, परखा एवं अपना आशीर्वाद

प्रदान किया उनमें डॉ० भागचन्द भारेन्दु दमोह, श्रीमती राजकुमारी रीबेलीय, कटनी, डॉ० विनान्त क्लेवार्ट प्राच्य विद्या विभाग, लुबेन विश्वविद्यालय बेल्जियम, डॉ० महेन्द्र सागर प्रचंडिया एवं डॉ० आदित्य प्रचंडिया अलीगढ़, डॉ० भागचन्द भास्कर नागपुर एवं श्रीमती डॉ० पुष्पा जैन नागपुर, डॉ० प्रेमचन्द रावका मनोहरपुर के विशेष रूप से आभारी हैं। हम समाज के सभी विद्वानों का स्वागत करते हैं।

आगामी पुष्प

अकादमी का अष्टम पुष्प 'मुनि सभाचन्द एवं उनका पद्मपुराण' का प्रकाशन कार्य भी मई ६४ तक पूर्ण हो जावेगा। इस भाग में हिन्दी में रचित प्रथम पद्मपुराण का पूरा पाठ एवं कवि के काव्य का मूल्यांकन किया गया है। जिसमें ५६० से भी अधिक पृष्ठ रहेंगे।

आभार

अन्त में मैं इन सभी महानुभावों का आभारी हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से अकादमी को अपना सहयोग /आशीर्वाद तथा आर्थिक संबल प्रदान किया है।

डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल

निदेशक एवं प्रधान सम्पादक

संरक्षक की ओर से

श्री महावीर ग्रन्थ अकादमी के सप्तम पुष्प "बाई अजीतमति एवं उनके समकालीन कवि" को पाठकों को हाथों में देते हुए मुझे अत्यधिक प्रसन्नता है। प्रस्तुत पुष्प में बाई अजीतमति, परिमल चौधरी, भ० महेन्द्रकीर्ति, धनपाल एवं देवेन्द्र कवि-इन पांच कवियों का जीवन परिचय एवं उनके कार्यों के विस्तृत अध्ययन के साथ उनकी मूल कृतियों को भी प्रकाशित किया गया है। यह प्रथम अवसर है जब योजनाबद्ध प्राचीन जैन कवियों की रचनाओं को सुसम्पादित करके साहित्यिक जगत के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। सप्तम पुष्प के पांच कवियों में से परिमल चौधरी को छोड़ कर शेष सभी चार कवि अब तक अज्ञात एवं अचर्चित रहे हैं। यही नहीं हिन्दी जगत के समक्ष एक महिला कवि बाई अजीतमति को खोज निकालने में भी डा० कासलीवाल जी की सफलता मिली है। बाई अजीतमति की कृतियों के अध्ययन के पश्चात् इस निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है वहकि आध्यात्मिक कवयित्री थी तथा भक्ति परक पद रचना में पूर्ण रुचि लेती थी।

भ० महेन्द्रकीर्ति के सभी १५ पद उच्चस्तर के हैं जो अध्यात्म एवं भक्ति रस में घोल प्रोत हैं। धनपाल कवि ऐतिहासिक पदों के लिखने में रुचि लेते थे। वे पहले कवि हैं जिन्होंने केशोराय पाटन में स्थित भगवान मुनिसुखतनाथ, आमेर (जयपुर) में स्थित भगवान नेमिनाथ, टोडारायसिंह में स्थित भगवान आदिनाथ एवं सांगानेर में स्थित भगवान महावीर की प्रतिशययुक्त प्रतिमाओं के स्तवन के रूप में पद लिखे हैं। इसी तरह देवेन्द्र कवि हैं जिन्होंने संवत् १६३८ में यशोधर रास को महुआ नगर (गुजरात) में लिखवा दिया था। यशोधर रास १६वीं शताब्दी की महत्वपूर्ण कृति है जिसका भी प्रथम बार प्रकाशन किया गया है। इसी पुष्प में १७वीं शताब्दी के महत्वपूर्ण कवि परिमल चौधरी का गहन अध्ययन किया गया है। कवि परिमल अपने युग में ही नहीं किन्तु उसके पश्चात् दो शताब्दियों तक

अत्यधिक लोकप्रिय रहे हैं इसीलिए उनकी “श्रीपाल चरित” कृति की पचासों पाण्डुलिपियां जैन ग्रन्थालयों में उपलब्ध होती हैं। डा० कासलीवाल ने ऐसी महत्वपूर्ण कवियों एवं उनकी कृतियों को खोज निकालने में जो अधिक परिश्रम किया है और उसमें सफलता प्राप्त की है उसके लिए वे साधुवाद के पात्र हैं। साहित्यिक जगत उनकी इस महान् सेवा के लिए शिरःशुण्णी रहेगा।

श्री महावीर ग्रन्थ अकादमी साहित्य सेवा संस्था है जिसकी स्थापना समस्त हिन्दी जैन साहित्य को योजनाबद्ध बीस भागों में प्रकाशित करने के लिए की गई है। यह उसका सप्तम पुष्प है इसके पूर्व छह पुष्पों में, ब्रह्म रायभल्ल, बूचराज, धीहल, गारवदास, ठक्कुरसी, ब्रह्मजिनदास, भ० रत्नकीर्ति, भ० कुमुदचन्द्र, प्राचार्य सोमकीर्ति, सांगा, ब्रह्म यशोधर, बुलाकीचन्द, बुलाखीदास, पांडे हेमराज हेमराज गोदीका जैसे कवियों पर उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के रूप में बहुत सुन्दर प्रकाश डाला जा चुका है।

अकादमी के षष्ठम पुष्प का विमोचन गत वर्ष मार्च में महामहिम राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैलसिंह जी ने तिजारा (राजस्थान) में आयोजित पंचकल्याणक महोत्सव में अपने कर कमलों से किया था। यह प्रथम अवसर था जबकि देश के महामहिम राष्ट्रपति जी ने किसी जैन विद्वान की कृति का विमोचन किया हो। इसके पूर्व के पुष्प भी स्व० डा० सत्येन्द्र, झुल्लकरलाल सिद्धसागर जी महाराज लाहन्वाले, मट्टारक चारुकीर्ति जी महाराज मूढबिंदी जैसे मनीषियों एवं सन्तों द्वारा विमोचित हो चुके हैं।

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र की तरह साहित्यिक क्षेत्र में भी कार्य करते रहने की ओर निरन्तर जागरूक है। वह यह भी चाहती है कि श्री महावीर ग्रन्थ अकादमी जैसी साहित्यिक संस्था द्वारा जैन साहित्य के प्रकाशन का कार्य निरन्तर आगे बढ़ता रहे। मैं समाज के सभी महानुभावों से प्रार्थना करता हूँ कि वे अकादमी के अधिक से अधिक से संस्था में सदस्य बन कर जैन साहित्य के प्रकाशन में अपना पूर्ण योगदान दें।

निर्मल कुमार जैन

दो शब्द

(डॉ० होरालाल माहेश्वरी, एम.ए., एल्-एल्. बी., डी. फिल्., डी. लिट्)

प्राच्युनिक भारतीय आर्यभाषाओं—विशेषतः हिन्दी, गुजराती और राजस्थानी के साहित्येतिहासों में जैन काव्य धारा का महत्वपूर्ण स्थान है। वह धारा बड़ी व्यापक है। जैन काव्य की गणना धार्मिक काव्य के अन्तर्गत है। जिन जैन कवियों ने लौकिक प्रेम कहानियों और इतिहास की आधार बनाया है, उन्होंने भी धार्मिक रचनाएँ तो लिखी ही हैं।

मध्य युग में मुख्यतः तीन तत्व जनभावना की प्रेरित करते थे—राजा, धर्म और परम्परा। धार्मिक प्रेरणा से ही हमारी अधिकांश सांस्कृतिक और साहित्यिक धाती सुरक्षित रह गई है। जैन काव्य का निर्माण, संरक्षण और प्रचार-प्रसार इस प्रेरणा के फलस्वरूप हुआ है। आत्मिक उत्थान उसका लक्ष्य है। माध्यम है—तत्-तत् कालीन क्षेत्र-विशेष में प्रचलित सरल भाषा और कथ्य है—(1) परम्परागत और पौराणिक कथाएँ तथा (2) स्वानुभव और भावपूर्ण उद्गार। साहित्यिक दृष्टि से सर्वाधिक आकर्षक है—जैन कथा और चरित काव्य। ऐसे काव्यों में स्थान-स्थान पर मनोवृत्तियों और दशाओं, विभिन्न वस्तुओं, त्योहारों, अवसरों, प्रकृति आदि के भाव-भीने चित्रण मिलते हैं। कथा में वर्णित समाज की युग-युगीन भांकी के भी दर्शन होते हैं। इन काव्यों की विशिष्ट शब्दावली का सांस्कृतिक महत्व है। इस महत्व को भलीभाँति दर्शाना अध्ययन का एक पृथक् पहलू है। इस और ध्यान दिया जाना चाहिए।

यद्यपि भारतीय साहित्य भिन्न-भिन्न भाषाओं में लिखा गया है तथापि वह मूलतः एक है। देश, काल, युगीन मान्यताओं, विचारों और परम्पराओं के कारण उसमें अलग-अलग रंगत दिखाई देती है। भारतीय साहित्य वाटिका में भिन्न-भिन्न भाषा-साहित्यों के फूलों की यह रंगत भी उसका विशिष्ट सौन्दर्य है।

लेखक की ओर से

देश में हिन्दी भाषा का विशाल साहित्य विद्यमान है। विगत सात शताब्दियों से कवियों एवं लेखकों ने हिन्दी साहित्य के भण्डार को इतना अधिक आप्लावित किया है कि उसरी धातु पाना किसी नये द्वीप की खोज करने के समान है। हम किसी भी गाँव/शहर में स्थित शास्त्र भण्डारों अथवा व्यक्तिगत संग्रहों की खोज में निकल जावें तो कभी २ कुछ ऐसी कृतियाँ उपलब्ध हो जाती है जिनके बारे में हमने अब तक सुना भी नहीं होगा। इसलिये हिन्दी साहित्य के विशाल भण्डार को इतिहास के रूप में बाँधना किसी एक विद्वान के लिये संभव नहीं है। अब तक हिन्दी साहित्य के जो इतिहास निकले हैं वे सब किसी न किसी प्रकार अपूर्ण हैं क्योंकि उनमें समग्र हिन्दी साहित्य का प्रतिनिधित्व नहीं हो पाया है। उदाहरण के लिये हम जैन कवियों द्वारा रचित हिन्दी साहित्य को ही लें। इस साहित्य को किसी भी विद्वान् ने उचित स्थान प्रदान नहीं किया। अब तो प्राचीन कवियों का इतिहास में स्थान मिलना ही बन्द सा हो गया है। जैन कवियों एवं उनकी काव्य कृतियों के बारे में अभी तक जो कुछ भी सामग्री सामने आई है उसे केवल सेम्पल सर्वे (Sample Survey) कह सकते हैं। यही कारण है कि जैसे-जैसे प्रकाशनी के प्रकाशनों की संख्या बढ़ रही है वैसे ही अज्ञात एवं अवचित कवियों की संख्या में आशानीत वृद्धि हो रही है। अब तक हम ऐसे २० हिन्दी जैन कवियों को प्रकाश में लाने में सफलता प्राप्त कर चुके हैं जिनके बारे में हम अब तक पूर्णतः अन्धकार में थे। प्रस्तुत सप्तम पुष्प में चार कवि पूर्णतः अज्ञात एवं अवचित हैं तथा एक कवि अल्प अवचित है।

मेरे इन पाँच कवियों में एक कवयित्री अजीतमति है जो १७ वीं शताब्दि में अपनी कविताओं से व्योसाओं को आनन्दित किया करती थी। अजीतमति प्रथम जैन कवयित्री के रूप में हिन्दी जगत् के सामने आयी है। इसकी उपलब्धि की कहानी भी अत्यधिक रोचक है। जिस पोथी में कवयित्री की कृतियों का संकलन

है उसकी दशा जीर्ण शीर्ण होने से वह उपेक्षित बनी रही और उसके एक एक पाठ नहीं देखे जा सके। करीब ६-७ महिने पूर्व वह पोथी पुनः देखने में आयी और जब उसका एक २ पृष्ठ देखते २ प्रागे बढ़ने लगा तो एक पत्र पर बाईं अजीतमति का नाम पढ़ने में आया। एक महिला कवि बाईं अजीतमति का नाम पढ़कर उसकी कृति को पूरा पढ़ने की ओर भी उत्सुकता बड़ी तथा घीरे २ पूरी पोथी के एक २ पृष्ठ को ध्यान से देखने पर अजीतमति की अच्छी सामथी हाथ लग गयी। साथ में उसके स्वयं के द्वारा लिखा हुआ वह पत्र जिसमें संवत् १६५० अंकित है। इतनी प्राचीन कवयित्री की उपलब्धि अत्यधिक प्रसन्नता की बात है। अजीतमति मीराबाई की समकालीन थी। मीरा का जन्म सं० १५५५-१५७३ के मध्य माना जाता है तथा उसकी मृत्यु १६०३-१६०४ के मध्य मानी जाती है इसी तरह बाईं अजीतमति का जन्म हमने सन् १५५० के आसपास एवं मृत्यु सन् १६१० के आस पास मानी है। जैसे मीरा ने भक्ति परक पद लिखे उसी प्रकार अजीतमति ने भी आध्यात्मिक पद लिखे हैं। यही नहीं संवत् १६५० (सन् १५६३) में प्रयुक्त हिन्दी गद्य के प्रयोग का भी एक गद्यांश मिला है जो आपा साहित्य की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

प्रस्तुत पुष्प के दूसरे कवि परिमल चौधरी है जिनके बारे में डॉ० प्रेम सागर, डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री एवं पं० परमानन्द शास्त्री ने संक्षिप्त प्रकाश डाला है। कवि की एक मात्र रचना श्रीपाल चरित्र ४०-४५ वर्ष पहिले प्रकाशित हुई थी जो अनुपलब्ध मानी जाती है। परिमल कवि उच्च स्तरीय कवि थे। उनके कवि श्रीपाल चरित्र में श्रीपाल की घटनाओं का बहुत विशद रूप से वर्णन मिलता है। कवि की भाषा में लालित्य एवं शब्दों में मधुरता है। कवि ने श्रीपाल के चरित्र का इतना सुन्दर एवं आकर्षक वर्णन किया है कि पूरा काव्य रोचक बन हो गया है। उसके वर्णनों में सजीवता एवं हृदय पुलकित करने की भरपूर क्षमता है। इसलिये कोई भी पाठक श्रीपाल चरित्र को एक बार प्रारम्भ करने के बाद उसे पूरा करने के बाद ही छोड़ता है। प्रस्तुत भाग में काव्य का प्रारम्भिक एवं अन्तिम अंश दिया गया है वह काव्य का प्रमुख अंश है।

तीसरे कवि घनपाल है। जिनकी चर्चा भी साहित्यिक जगत् के समक्ष प्रथम बार की जा रही है। घनपाल देल्ह कवि के द्वितीय पुत्र थे। पिता का कवि होना और उसके दोनों पुत्रों का भी कवि होना अत्यधिक उल्लेखनीय है संयोग है। घनपाल की अभी तक हम कोई बड़ी कृति नहीं खोज सके हैं लेकिन उनके जो चार पद मिले हैं वे चारों ही इतिहास परक हैं। केशोरायपाठन, आमेर, सांगानेर एवं टोड़ारायसिंह के मुनिसुखतनाथ, नेमिनाथ, महावीर एवं आदिनाथ स्वामी की

प्रतिमाओं का इन पदों में उल्लेख किया गया है। जैन कवियों ने इस प्रकार के बहुत कम पद लिखे हैं।

प्रस्तुत भाग के चतुर्थ कवि भट्टारक महेन्द्रकीर्ति है जो अजमेर की भट्टारक गादी के सन्त थे। महेन्द्रकीर्ति के पदों का प्रकाशन भी प्रथम बार हो रहा है। डिग्री ग्राम के दिगम्बर जैन मन्दिर के शास्त्र मण्डार में संग्रहीत एक गुटके में इनके पदों का संग्रह मिला है। भ० महेन्द्रकीर्ति पूर्णतः आध्यात्मिक सन्त थे। उनके पदों के अध्ययन से पता चलता है कि जैसे अध्यात्म उनके जीवन का प्रमुख अंग था। कवि के सभी पद एक से बढ़ कर हैं। सरल एवं जलित भाषा में लिखे हैं। चेतन काहे भरम लुभाना एवं चेतन चेतन क्यूँ नहि मन में जैसे पद कविवर मूषर दास, बनारसी दास, रूपचन्द द्वारा लिखे हुए पदों के समान हैं।

देवेन्द्रकीर्ति इस पुण्य के अन्तिम कवि हैं जिन्हें महाकवि की उपाधि से भी सम्बोधित किया जा सकता है। देवेन्द्रकीर्ति १६वीं एवं १७वीं शताब्दी के एक सशक्त कवि थे जिनका एक मात्र रास काव्य यशोधर रास अपने युग का महाकाव्य है। यद्यपि काव्य की भाषा जटिल एवं दुर्गह भवश्य है लेकिन जब रास का गहराई से अध्ययन किया जाता है तो कवि के काव्य कीमत् को देख कर मन झूमने लगता है। एक महाकाव्य के लिये जो आवश्यक तथ्य स्वीकृत किये गये हैं वे सब इस रास काव्य में हैं। यशोधर रास की कथा में पूर्व कवियों द्वारा प्रतिपादित कथा ग्रहण करने के पश्चात् भी कवि ने प्रत्येक घटना का वर्णन जितना गहन, रोमाञ्चक एवं अलंकारिक किया है वह अपने ढंग का अनूठा है। कवि ने राजगृह नगर, राजपोर नगर एवं अमन्ती एवं उज्जयिनी नगर चारों का बहुत विस्तृत वर्णन किया है। अमन्ती की शोभा का तो पूरे ४० पदों में वर्णन हुआ है नगर के वर्णन एवं समृद्धि का वर्णन करते हुए उसे इन्द्रपुरी से भी उत्तम नगर सिद्ध किया है।

घनद तिहां एक अहां अनेक, इन्द्र घणा नर आहां मुखिवेक

चनुर घणा नर सुर गुरु समा, बणी घणी भोम तिलोत्तमा ॥४०॥

मवे नार भर्ता उर्वसी, घिर घिर नार सुकेसी जी।

रंभा जगि ऊर घणी माननी, रंभा वन मंडित अवनी ॥४१॥

इसी तरह कवि उज्जयिनी के वर्णन में इतना डूब गया कि उसका वर्णन ५१ छन्दों में भी कठिनाता से पूर्ण हो पाया है। कवि ने चीन देश की साड़ियों का उल्लेख किया है। एक वर्णन में कवि ने लिखा है कि वहां स्फटिक के चतुर्भुज भवन थे इसलिये जब जाली में से चन्द्रकिरण आती थीं तो भोजी युवतियां उसे चन्द्रहार समझ कर दूँठने लगती थीं। जब कभी चन्द्रमुखी ऊँचे आकाश पर रात्रि को बैठ

जाया करती थी तो लोग उसे पूजिमा का चन्द्र समझ कर आकाश में देखने लगते थे। कवि के वैसे तो सभी वर्णन एक से एक बढ़ कर हैं लेकिन इनमें यशोधर की रानी अमृतमती के सौन्दर्य एवं उसके विवाह का वर्णन बहुत अच्छा हुआ है। प्रत्येक रीतिरिवाज का ठीकी सूक्ष्मता से वर्णन किया गया है। वादात की महारवणी होना एक महत्वपूर्ण रिवाज माना जाता है कवि ने लिखा है कि पहरावणी के लिये परिवार के सभी सदस्य एकत्रित हो गये हैं। राजा यशोधर अपनी रानी अमृतमती के रूप सौन्दर्य पर मुग्ध था। रात्रि की जब वह अमृतमती के महल में गया तो उसका एक र मंजिल पर जितना स्वागत हुआ कवि ने उसका बहुत सूक्ष्म वर्णन किया है उसने अपने जीवन में उसे अमृत के समान समझा। यशोमती रानी का वसन्त कीड़ा का वर्णन भी श्रुत हुआ है। इन सबके अतिरिक्त मुनि सुदत्ताचार्य द्वारा धर्मोपदेश का भी कवि ने १३६ पद्यों में वर्णन किया है। पूरा रास काव्य ६ अधिकारों में विभक्त है जो किसी काव्य के लिये पर्याप्त कहे जा सकते हैं।

इस भाग में परिमल चौधरी के श्रीपाल चरित्र का एक भाग ही दिया जा सका है शेष सभी कवियों की सभी रचनाओं के पूरे भाग इस में दिये गये हैं। यशोधर रास स्वयं ही एक काव्य है, इसके अतिरिक्त बाई अजीतमति की ६ कृतियां, महेन्द्र कीर्ति के पूरे १५ पद एवं धनपाल के ४ गीत इस प्रकार ३० मूल कृतियों के पाठ भी दिये गये हैं।

सम्पादक मंडल :—

प्रस्तुत पुष्प के संपादक मंडल में माननीय डॉ० हीरालाल जी माहेश्वरी, डॉ० राजाराम जी जैन एवं डॉ० गंगाराम जी गर्ग हैं। डॉ० माहेश्वरी राजस्थान विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग में रीडर हैं। आप राजस्थानी भाषा के जाने माने इतिहासज्ञ विद्वान एवं लेखक हैं। अकादमी पर आपकी विशेष कृपा रहती है आपने विद्वतापूर्वक “दो शब्द” व्यक्तकथा लिखने की जो कृपा की है उसके लिये हम उनके अत्यन्त आभारी हैं। डॉ० राजाराम जैन मगध विश्वविद्यालय के प्राकृत एवं अपभ्रंश के प्रोफेसर है समाज आपकी विद्वता से चिरपरिचित है। इसी तरह डॉ० गंगाराम जी गर्ग युवा पीढ़ी के विद्वान् हैं। जैन साहित्य पर शोध कार्य आपकी रचि में शामिल है। पार्श्वदास निगोत्या पर आपने अच्छी खोज की है। तीनों ही विद्वानों के हम हृदय से आभारी हैं।

अकादमी के संरक्षक श्री निर्मल कुमार जी सेठी ने “संरक्षक की ओर से दो शब्द” लिखने की महती कृपा की है। सेठी साहब उदार व्यक्तित्व के बनी

है तथा साहित्य प्रकाशन में बहुत रुचि लेते हैं। अकादमी को आपका पूर्ण सहयोग प्राप्त है।

प्रस्तुत भाग के उपयोग के लिये श्रीपाल चरित्र की पाण्डुलिपि के लिये श्री पं० अनूपचन्द्र जी न्यायतीर्थ एवं श्री राजमलजी संघी, अजीतमति की पाण्डुलिपि के लिये कैलाशचन्द्र जी सोगानी, धनपाल एवं महेन्द्र कीर्ति की पाण्डुलिपियों के लिये श्री माणिक चन्द जी सेठी डिग्री एवं यशोधर रास की पाण्डुलिपि के लिये श्री लक्ष्मीचन्दजी गांधी, प्रतापगढ़ का आभारी हूँ जिन्होंने उदारता पूर्वक पाण्डुलिपियाँ देकर इस भाग के प्रकाशन में योगदान एवं सहयोग प्रदान किया है।

डा० कस्तूरचन्द्र कासजीदास

३०-३-८४

विषय-सूची

	पृष्ठ संख्या
१. श्री महावीर ग्रंथ अकादमी-प्रगति परिचय	i
२. संरक्षक की ओर से	vi
३. दो शब्द	viii
४. लेखक की कलम से	x
५. पूर्व पीठिका	१
६. बाई अजीतमति	२-७
कृतियां—(१) अध्यात्मिक छन्द	८-१०
(२) षट् पद	११
(३) पद—रागकेदारो (२)	१२
(४) पद—राग वसन्त	१२
(५) पद—राग वसन्त	१३
(६) पद—राग साभरी	१४
(७) इतिहास परक घटनाओं का वर्णन	१४
७. कविबर परिमल्ल चौधरी	१५-२४
कृति—श्रीपाल चरित्र	२५-६३
८. कवि धनपाल	६४-६६
कृतियां—I मुनिसुखत जिन वन्दना	६७
II तेजीजित वन्दना	६८
III वर्षमान्नगीत	६९
IV प्रादि जिन गीत	१००
९. भट्टारक महेन्द्रकीर्ति	१०१-१०३
पद -- पञ्चह विभिन्न	१०४-११०
राग रागनियों में	
१०. देवेन्द्र कवि	१११-१२३
कृति — यशोधर रास	१२४-३०४
११. धनुक्रमणिकाएं	३०५

पूर्व पीठिका

१७वीं शताब्दी में जितने व्यापक रूप से हिन्दी कृतियाँ लिखी गयीं उतनी कृतियाँ इसके पूर्व किसी शताब्दी में भी नहीं लिखी जा सकी। इस शताब्दी में देश के सभी प्रदेशों में हिन्दी रचनायें लोकप्रिय बन रही थी। प्राकृत एवं संस्कृत ग्रन्थों के हिन्दीकरण का यह युग था। जैन कवियों का इस ओर विशेष ध्यान जा रहा था। पाण्डे रूपचन्द इसी शताब्दी के कवि थे जिन्होंने समयसार कलश पर हिन्दी टब्का टीका लिखी थी। जैन कवि स्वतन्त्र रूप से भी काव्य रचना करते तथा गीत, रासी एवं काव्य की अन्य विधाओं के माध्यम से छोटी बड़ी रचनाएँ लिखते रहते थे। इस शताब्दी में होने वाले ब्रह्म रायमल्ल, भ. प्रसापकीर्ति का अकादमी के प्रथम पुष्प में भट्टारक रत्नकीर्ति, कुमुदचन्द एवं उनके समकालीन ६६ अन्य कवियों का। चतुर्थ पुष्प में बुलासीचन्द, बुलासीदास एवं हेमराज जैसे पुत्रलिख कवियों का अठे भाग में परिचय दिया जा चुका है। इनके अतिरिक्त अभी और भी पचासी कवियों का परिचय अवशिष्ट है जिन्होंने हिन्दी साहित्य के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया था।

इस शताब्दी में होने वाले कवियों में कवयित्री 'अजीतमति' का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। किसी जैन कवयित्री की यह उपलब्धि विगत १०-६० वर्षों में की गयी सतत खोज के बाद हो सकी है। जैन हिन्दी कवयित्रियों में दिगम्बर समाज में चम्पाबाई का नाम आता है जो करीब १०० वर्ष पूर्व टोंगा परिवार में देहली में हुई थी और जिनकी एक मात्र कृति 'चम्पा शतक' का मैंने सम्पादन करके प्रकाशित करवाया था। श्वेताम्बर समाज की कवयित्रियों में हरकू बाई, (सं. १८२०) हुल साजी (सं. १८८७) सरुपा बाई, जडावजी एवं मूर सुन्दरी जैसे नाम और आते हैं लेकिन ये सब कवयित्रियाँ हरकूबाई एवं हुलसाजी के अतिरिक्त एक शताब्दी पूर्व ही हुई हैं। इसके अतिरिक्त जहाँ हिन्दी जैन कवियों की संख्या ४०० से कम नहीं होगी वहाँ महिला कवियों की यह संख्या एक दम नगण्य है इससे पता चलता है कि महिला समाज में कभी साहित्यिक चेतना नहीं रही या फिर उनके द्वारा निबद्ध साहित्य की उपेक्षा की गयी और उसको संग्रहीत नहीं समझा गया। इसलिये १६वीं-१७वीं शताब्दी में होने वाली कवयित्री अजीतमति से हिन्दी साहित्य निःसंदेह गौरवान्वित हुआ है।

बाई अजीतमति

अजीतमति ने अपने आपको बाई अजीतमति लिखा है। वह भट्टारक वादिचन्द्र (१६वीं-१७वीं शताब्दी) की प्रमुख शिष्या थी। उन्हीं के संघ में ब्रह्म-चारिणी साध्वी के रूप में रहती थी। वादिचन्द्र स्वयं अपने समय के प्रसिद्ध विद्वान् भट्टारक थे। जो मूलसंघ के भट्टारक ज्ञानभूषण के प्रशिष्य एवं प्रभाचम्बर के शिष्य थे। स्वयं वादिचन्द्र एक समर्थ साहित्यकार थे जिन्होंने संस्कृत एवं हिन्दी में कितनी ही रचनायें निबद्ध करने का श्रेय प्राप्त किया था। साध्वी अजीतमति ने इन्हीं के संघ में रहकर शिक्षा प्राप्त की थी।

कवयित्री अजीतमति हुंवर जाति के ब्राह्मण कान्ह जी की पुत्री थी कासूजी अपने समय के प्रभावशाली व्यक्ति थे। वे हुंवर जाति के शिरोमणि थे। उनका निवास स्वान सम्भवतः सागवाडा था जिसका उन्होंने एक गीत में निम्न प्रकार उल्लेख किया है—

“सागवाडा नयरे छि बहु अवास, शीय संघती पुरखो स्वामी आस”

इसके अतिरिक्त कवयित्री का जन्म कब हुआ, कहाँ हुआ इस सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं मिलती लेकिन उसके स्वयं का हाथ लिखा हुआ जो गुटका मिला है उसमें कवयित्री द्वारा रचित सभी पाठों का संग्रह है। गुटका का लेखनकाल संवत् १६५० (सन् १५९३) है इससे उसके जन्म काल का कुछ अनुमान लगाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त उसने गुटके में जो पाठ लिखा है वह ऐतिहासिक तथ्यों से युक्त है इसलिये यदि उसकी आयु उस समय ४० वर्ष की भी होगी तो उसका जन्म संवत् १६१० (सन् १५५३) के आस पास हुआ होगा।

अजीतमति की शिक्षा दीक्षा के बारे में भी कोई जानकारी नहीं मिलती लेकिन क्योंकि उसके गुरु भ. वादिचन्द्र स्वयं अच्छे विद्वान् थे, ग्रन्थों के निमाता थे। संस्कृत, हिन्दी एवं गुजराती में ग्रन्थ रचना करने में प्रवीण थे। इसलिये अजीतमति की शिक्षा दीक्षा भी अच्छी होनी चाहिये। इसके अतिरिक्त जिस तरह की उसकी रचनायें मिली हैं उनसे भी पता चलता है कि उसने सभी रचनायें स्वान्तः सुलयाय लिखी थीं।

कवयित्री के जिस गुटके में उनकी रचनायें मिली हैं उसमें बीच-बीच में ऐसे पाठ भी हैं जो अविर्काश गुटकों में नहीं निम्ते हैं। उसकी लिपि भी क्लृप्तिपूर्ण नहीं है जितनी एक महिला कवि की होनी चाहिये। फिर भी जैन समाज का यह सौभाग्य है कि उसमें ऐसी विदुषी कवयित्री ने जन्म लिया और अपनी रचनाओं से एक रिक्त स्थान की पूर्ति की। राजस्थान के अवशिष्ट शास्त्र मण्डारों की यदि सघन खोज की जावे तो सम्भवतः और भी कुछ कवयित्रियों के नाम एवं उनका साहित्य मिल सकता है।

कवयित्री अजीतमति द्वारा निर्मित तथा एक ही गुटके में संग्रहीत रचनाओं के नाम निम्न प्रकार हैं—

१. अध्यात्मिक छन्द
२. घट पद
३. भक्ति परक पद—७
४. इतिहास परक घटनाओं का वर्णन—

उक्त सभी रचनाओं का संक्षिप्त परिचय निम्न प्रकार है—

अध्यात्मिक छन्द

आध्यात्मिक विषय पर प्रायः सभी जैन कवियों ने थोड़ा बहुत अवश्य लिखा है। यदि किसी कवि ने स्वतन्त्र रचना नहीं लिखी हो तो उसने अपनी अन्य कृतियों में ही अध्यात्म विषय का वर्णन किया है। कवयित्री अजीतमति ने भी “अध्यात्मिक छन्द” निबद्ध करके अपनी आध्यात्मिकता का परिचय दिया है। इसमें केवल ३० पद्य हैं लेकिन सभी पद्यों में आत्म रस भरा हुआ है जो मानव को अपनी आत्मा का ज्ञान कराते हैं। अपनी आत्मशक्ति की वास्तविकता को बतलाते हैं और उसे सचेत करते हैं। क्योंकि यदि शुद्ध दृष्टि से अपने आप को देखा जावे तो अपने भीतर ही हमें आत्म प्रकाश मिल सकता है।

जो खरी दृष्टि करी लिलावि, ज्ञान जोत घट भीतर पावि ॥२॥

कवयित्री अजीतमति ने आगे चलकर कहा है कि यदि “तुम्हें देखना ही है तो अपनी आत्मा को देख। दूसरे को देखने से आत्म ज्ञान की प्राप्ति अथवा आत्म दर्शन कभी नहीं हो सकता। क्योंकि दूसरों के कपड़ों को धोने से अपने कपड़े कभी नहीं धुल सकते अर्थात् अपने कपड़ों का मैल कभी साफ नहीं हो सकता—

जो जूयि तो अण्णः जूयि, पर कि जूयि जान न होयि ।

पर का उजवस क्या सु धोयि, अण्णः बैल करि नही खोहोयि ॥७॥

बाई अजीतमती ने इसी अध्यात्म छंद में आगे कहा है कि यदि तेरा मन भगडालू है तो दूसरों के भगडों में जाकर क्यों पड़ता है । दूसरों के भगडों में तुझे किञ्चित् भी स्थान अर्थात् सद्गति प्राप्त होने वाली नहीं है क्योंकि तू अपना भगड़ा निपटाने अथवा शांत करने के स्थान पर दूसरों का भगड़ा शांत करने में लगा हुआ है ।^१

यह बत्ती वाला दीपक सभी को देखता है किन्तु यदि उसमें बत्ती न हो उसे कोई नहीं देख सकता लेकिन यह आत्मा तो बिना बत्ती का ही दीपक है जो स्वयं तो सबको देख लेता है और दूसरा इसे कोई नहीं देख पाता । वह स्वयं ही अपने ज्ञान के द्वारा अपने को देख सकता है ।^२ अपनी इसी बात को कवयित्री ने आगे के पद्य में फिर दुहराया है और जो अधिक स्पष्ट है—

जाती दीपक सबको जाणिए, बिण जाती कोई न पिछाणिए ।

तो अण्णः तो अण्णसु ध्यायि, बिण जाती का दीपक पायि ॥११॥

मानव का यह मन बहुत ही भटकता है स्थिर रहना तो मानो जानता ही नहीं । अधिक डोलने से वह अपना मार्ग ही भूल गया है । अनेक जातियों में वह फिर चुका है जन्म ले चुका है लेकिन अभी तक उसे सद्बुद्धि नहीं आयी है क्योंकि वह आत्मा से परे रहता है और आत्म ज्ञान के बिना उसे सुख नहीं मिल सकता ।

एह मन मेरो बोहोत डोलाणो, फरी फरी जो बिलरी भूलाणो ।

बहु अकस ज्योहो गति फरी जायि, अण्णः बिण कही सुख न पायि ॥२२॥

आत्म ज्ञान मानव के लिये आवश्यक है । जैसे सिङ्गलप में आत्मा निवास करती है उसी प्रकार शरीर में भी आत्मा का निवास रहता है इस प्रकार जो

१. जो भगडु मन होयि तेरा, पर कि भगडि जायि खोरा ।

पर कि भगडि ठोडन पायि, अन्तर खोबी उर कुं ध्यायि ॥ ॥

२. आत्म दीपक सबको देखे, बिण जाती कोई नहीं देखे ।

अण्णः अण्णः न्यास करि ध्याया, बिण जाती का दीपक पाय ॥१७॥

आत्मा को जानता है । वही आत्म सुख का अनुभव कर सकता है और जन्म मृत्यु के बन्धनों से मुक्त हो सकता है ।

इस प्रकार अध्यात्मिक छंद के सभी पद्य आत्म रस से ओत प्रोत है । इससे मालूम पड़ता है कि अजीतमति का जीवन पूर्ण वैराग्यमय था तथा आत्म चिन्तन में उसकी अधिक रुचि थी ।

इसमें ३० पद्य हैं । अन्तिम पद्य में कवयित्री ने अपने गुरु वादिचन्द्र को नमस्कार किया है । भाषा यद्यपि अधिक परिष्कृत नहीं है किन्तु कवयित्री के भावों को समझने के लिये पर्याप्त है । भाषा पर गुजराती का प्रभाव है ।

२. छठ पद्य-- यह लघु कृति है जिसमें केवल पांच छंद हैं और प्रत्येक छन्द में पांच छह पंक्तियां हैं । विषय की दृष्टि से इसमें किसी एक विषय का वर्णन नहोकर एक से अधिक पर चर्चा के रूप में है । प्रथम छन्द में आत्म का वर्णन है तो दूसरे छन्द में भगवान् आदिनाथ के माता-पिता, शरीर प्रमाण एवं वंश का उल्लेख हुआ है । यह छन्द नमस्कार के रूप में है ।¹

तीसरे पद्य में भट्टारक वादिचन्द्र का परिचय दिया गया है । वादिचन्द्र ने बड्डिल वंश में जन्म लिया । उनके पिता का नाम थिरा एवं माता का नाम उदया था जो रत्नाकर के समान थी । वे जब प्रवचन देते थे तब उनकी वाणी मेघ के समान गर्जना करती थी । वादिचन्द्र साधुओं के शिरोमणि थे ।

चतुर्थ पद्य में भी अपने गुरु वादिचन्द्र का ही और अधिक परिचय दिया गया है । वादिचन्द्र मूलगुणों एवं उत्तरगुणों सभी का पालन करते थे । अपने समय के वे प्रसिद्ध साधु थे जिन्होंने मोह एवं काम दोनों पर विजय प्राप्त की थी । उनमें विद्वत्ता भी खूब थी इसलिये कुवादियों के लिये वे सिंह के समान थे । वे भट्टारक प्रभाचन्द्र के पट्ट पर विराजमान थे ।

असं बड्डिल बिल्ह्यात, ह्यात थिरा सुत सुन्दर
रूप कला चातुर्प्य, चतुर चारीग्रह मन्दिर
उदयो उदरि तास, तास जननी रत्नाकर
वाणी गात्रि मेघ, मेघ सहु जन रत्नाकर
मुखाकर यतीवर जयो, श्री वादिचन्द्र वाविन्द्रवर
बाई अजीतमती एवं बढती सकलसंघ ध्यानकर

अन्तिम पद्य में पंच परमेष्ठी की शरणा ही एक मात्र उत्तम शरणा है इसी भाव को उसमें बतलाया गया है ।

३. बाई अजीतमति ने कुछ पद भी लिखे थे जिनकी संख्या अभी तक सात है ।

प्रथम पद में चौबीस तीर्थंकरों को नमस्कार किया गया है लेकिन पद शैली में लिखा होने से “नेमजी तू मुझ बहलाओ” स्थायी अन्तरा है । यद्यपि इसमें पद का कोई सम्बन्ध नहीं है । इसमें १३ अन्तरें हैं । भाषा एवं शैली दोनों ही सामान्य हैं । इस पद को सम्भवतः उज्जैलगढ़ में जो पर्वत शिखर पर स्थित था, लिखा गया था । कवयित्री ने इसका निम्न प्रकार उल्लेख किया है—

उज्जैलगढ़ गिरिजर तराणे मैत्री बिनराध ।

कर जोड़ अजीतमती कहि, नित सेवुं रे पाय ॥१३॥

दूसरे पद में ऋषभदेव की स्तुति की गयी है । तीसरा पद भानव को चेतावनी के रूप में है । चौथा पद नेमिनाथ स्तवन है जिसे कवयित्री ने सागवाडा नगर में निमित्त किया था । इसमें ६ अन्तरें हैं । पंचम पद में धन यौवन पर हमने बहुत अभिमान किया इसका वर्णन किया गया है । छठा पद उपदेशी है तथा सातवां पद पार्श्वनाथ स्तवन के रूप में है । भाषा एवं भावों की दृष्टि से सभी पद सामान्यतः अच्छे हैं ।

४. ऐतिहासिक लेख

यह एक ऐतिहासिक लेख है जिसमें वृषभनाथ के पोत्र मारिचि द्वारा दूसरे मतों की स्थापना से प्रारम्भ होता है । भरत चक्रवर्ती के द्वारा ब्राह्मण मत की स्थापना की गयी । तीर्थंकर शीतलनाथ के पीछे यज्ञशालाओं की स्थापना हुई थी । भगवान् पार्श्वनाथ के युग में पिहितारुव के शिष्य बुधिकीर्ति द्वारा बृद्ध मत की स्थापना की गयी । जो मांस मद्य सेवन में दोष नहीं मानते थे । विक्रमादित्य के पीछे सम्वत् १३० में मत्स्याचार्य भद्रबाहु के शिष्य जिनसुन्द ने श्वेतांबर सम्प्रदाय की स्थापना की थी । जो स्त्री की मुक्ति, केवली कयलाहार, आहार और नीहार, गर्भापहरण, केवली उपसर्ग आदि मान्यताओं को मानने वाला है । ५३६ वर्ष पश्चात् पूज्यपाद के शिष्य वज्रनन्दि द्वारा द्वाविड़ संघ की स्थापना, संवत् ७४३ में कुमारसेन द्वारा काण्ठा संघ की स्थापना, चमरों की पीछी का ग्रहण, इसी तरह विक्रम संवत् २००

के पीछे माधुर गच्छ की स्थापना । संवत् १८०० के पश्चात् लोग विपरीत क्रिया करने लगेंगे ऐसा भी लिखा है ।

उक्त लेख स्वयं अजीतमति द्वारा संवत् १६५० में लिपिबद्ध किया गया था ।

इस तरह साठवीं अजीतमती ने यद्यपि लघु रचनाएं निबद्ध की हैं लेकिन वे उसकी काव्य शक्ति की परिचायक हैं । ये सभी रचनाएं एक ही गुठके में लिपि बद्ध हैं जो स्वयं अजीतमति का था । हो सकता है अभी राजस्थान के शास्त्र भण्डारों में कवयित्री की और भी रचनायें संग्रहीत हों । एक महिला कवि द्वारा इतनी सारी काव्य रचना करना प्रशंसनीय है ।

कृतियों की भाषा गुजराती प्रभावित है । अलंकार शैली एवं भावों की दृष्टि से सभी रचनायें सामान्य हैं ।

अध्यात्मिक छन्द

भार्या

परमाण्डं नरवा अनिभारति देवी गुणं धरीया ।

छंदो परमाणंदो भारणंदो एहि गुणकंदो ॥

हृषि छंद

आतम आपज दृष्टि जोवि, परम जोत घर भीतर होवि ।

जो खरी दृष्टि करी लिलावि, ज्ञान जोत घर भीतर पावि ॥१॥

गीत कवीति क्या लिखाया, गुणी छोडि निर्गुणी कुं ध्याया ।

गंध वरण रस उसका नाही, परम जोत सोहे घट मांहि ॥२॥

घट छोडी उर क्या तुं चाहि, घट मांहि न्यान पट सोहि ।

घट भूला तुं फरे सायणा, घट मा सुता चतुर सुजाणा ॥३॥

नीर विकल्प तुं काहे नही ध्यावि, विकल्प सेथि क्या लिलावि ।

एह विकल्प छि जीव का जाणा, परम जोत कुं नहीं समाणा ॥४॥

रे आतम चित्त किहां फिरावि, जे न्या हालि सो घट मां पावि ।

एक समी जब रुदि पेस्वे, ज्ञान जोत घर भीतर देख ॥५॥

न्यान छोडी जीव उर कुं ध्यावि, बीखया सेथि चिन्ह चलावि ।

इसि मन कुं तुं अंतर ल्यावि, परम समाधी समिमां पावि ॥६॥

जो जूयि तो अप्पा जूयि, परकि जूयि ज्ञान न होयि ।

परका उजबल क्या तुं थोवि, अपणा मेल कदि नही खोहोवि ॥७॥

जो भगडु मन होयि तेरा, पर कि भगडि जायि घरोरा ।

परकि भगडि ठोडन पावि, अंतर छोडी उर कुं ध्यावि ॥८॥

रे जीव ज्ञान काहा तुं जोवि, जे जूयि सो घटमां होवि ,

सूता जे मन जाइ जमाया, मन मारी अपणी घरे आया ॥९॥

मन रुंवी करी कां नहि राखि, बीखया फल या फरी फरी जाखि ।

जाय्या जब अपणी घरि भावि, तब होबी लगता नही आवि ॥१०॥

जो रे जीव मन ठोडन पावि, ज्योहा जायि त्याहा भागा आवि ।
 एक समो चेतन लिलावि, जाहां जायि त्याहा बोदी न आवि ॥११॥

रे जीव मन कुं काहि न होंडडि, इहु मन हम सुफरी फरी मंडि ।
 एक समो अपरि घरि जाग्या, मन का विकल्प सघला भाग्या ॥१२॥

रे जीव उबका काहि मारि, जे दूँडि सो घट मांखा हाणि ।
 दूँड कांड ज्योहो दीसि आया, बिण दूँडि घर भीतर पाया ॥१३॥

रे जीव ज्ञान काहांति जाण्या, पर घर जूयि खरा भूलाण्या ।
 न्यान नयण लेइरू दिपेखे, बिण बाती घर भीतर देखे ॥१४॥

रे तता परम सुपिखे, जायि काल बहुतो न देखे ।
 एक समो अपरि घरि आया, अनंतकाल जे बाद जमाया ॥१५॥

अनाद का शिख विकल्प भाइ, शीर विकल्प कुं रहा समाइ ।
 शीर वीकल्प कुं जो मन लावि, निरविकल्प सामि मा पावि ॥१६॥

आत्म दीपक सबको पेखे, बिण बाती कोइ नहीं देखे ।
 अप्पा अप्प न्यान करी ध्याया, बिण बाती का दीपक पाया ॥१७॥

रे जीव ध्यान धरे सब कोइ, ज्ञान बिणा नबि जाण सकोइ ।
 जो पंडी तजि करि वीचारा, घर की जोत लाखेते सारा ॥१८॥

घर की जोत न जाणि कोइ, भंग पछो पग न्यान न होइ ।
 रे जीव फरी फरी विकल्प ध्यावि, विकल्प ध्यानि न्यान न पावि ॥१९॥

एह विकल्प जे जीव का नाहि, निरविकल्प कुं कहा न जाहि ।
 जेह जोगी जोगीश्वर जाण्या, उसका गुण मही मांहि बिखाण्या ॥२०॥

बाती दीपक सबको जाणि, बिण बाती कोइ न पिछाणि ।
 सो अप्पा सो अपसु ध्यावि, बिण बाती का दीपक पावि ॥२१॥

मूली रह्या जग मां सह कोइ, पर की दृष्टि ज्ञानन होइ ।
 स्वकीय ज्ञान दृष्टि करी पेखे, पर की दृष्टि कुं सेहेजे देखे ॥२२॥

एह मन मेरी जोहोत डोलाणो, फरी फरी जो बिखरी भूलाणो ।
 बहु अकल ज्योहो गति फरी आवि, अप्पा बिण कही सुख न पावि ॥२३॥

रे जीव मनति श्रुती ललचायो, फरी फरी भमति बहु दुःख पायो ।
 फरी फरी भमी ओहो जुगमि आयो, अपणा घर बिण जोइ न पायो ॥२४॥

उपसम कुं तु काहेनी बुधि, उपसम तेरे घट मां सुयि ।
 अपणा सूता जोति न जाणया, पर का सूता सेहज वखाण्या ॥२५॥
 सांची दृष्टि करी कांन नीहालि, जे चाहि सो नही देवालि ।
 सांची दृष्टि करी अंतर न्याहाल्यां, करम कीटवणि तत क्षिण जाल्या ॥२६॥
 रांक दृष्टि करी काहे देखे, घर की अंतर काहे न पेखे ।
 घर घर जोत रहि घर भीतर, घर छोडी उर नहीं अंतर ॥२७॥
 शब्द ज्ञान सब कोइ जाणि, पंडित ने निःशब्द पिछारी ।
 तिस की बुधि वया सहनायु, अंतर छोडीउ रंक्या घ्याउ ॥२८॥
 जेसो सीधालि तिसो देहालि, जेसो करी जे नर नीहालि ।
 अप्पा आत्म सुख बहु पावि, जनम जरा उठा कु नही आवि ॥२९॥

इति कलस

सोहि जगमां तेह जेह अंतर लिलावि
 सोहि जगमां तेह, जेह सुन्य ध्यानि ध्यावि ।
 सोहि जगमां तेह, जेह अप्पा गुण गावि ।
 सोहि जगमां तेह जेह घरी सिव पद पावि ॥
 सोहि जगमां जंतु काहि सुभ बिना असुभवहि ।
 बादीचंद्र नभी कहि अजितमती लब्ध बिना ते नवि लहि ॥३०॥
 इति अध्यात्म छंद समाप्तः ।

षट पद

सुह नीरंजन एकअनेक आतम व्यवहारि
 नहि सोधि रत, अनेक गुरु विहारि
 ध्यान धरे सुभ एक, अनेक न्यानहु विस्तारी ।
 न्यान जोत जंतु काह्लि, न जाणिए क्या हम रहि ।
 बाइ अजितमति एवं वदति धर्म बिना ति नबि लहि ॥१॥

अजोध्या नयरी नरेंद्र, नाभिनंदन हेम प्रभ ।
 मरुदेवी सुत वृषभ, वषभसेन वंदति जित वृषभ ।
 उत्तम धनुष सत पंच, पंच कल्याणक सुखाकर ।
 इष्वाक वंस विशात, क्षात उदये दीवाकर ।
 श्री आदीदेव आदि जयो श्री बादीचंद्र सेवे सदा ।
 बाइ अजीतमति एवं वदती, जनम जरा नाबि कदा ॥२॥

वंस बडिल विशात, क्षात थिरा सुत सुन्दर ।
 रूप कला चातुर्य, चतुर चारीअह मंदिर ।
 उदयो उदरि वास, ताग जनुनी रत्नाकर ।
 बाणी गाजि मेघ, मेघ सह जन सुखाकर ॥
 सुखाकर जतीवर जयो, श्री बादीचंद्र बादिंदर ।
 बाइ अजीतमती एवं वदती सकलसंघ आरंभ कर ॥३॥

मूल उत्तरगुणसार सार क्रीया सुभ मंडित ।
 जग मां जतीवर एह, मयण मोहमद खंडित ।
 विद्वजन मो एह, एह मोहि सुभ पंडित ॥
 कुवादी गज सिंघ सिंघ चठवीह करी वंदति ।
 श्री बादीचंद्र बादि निपूण श्री श्री प्रभाचन्द्र पट्टाभरण
 बाइ अजीतमती एवं वदती सकल संघ मंगल करण ॥४॥

पंच परम गुरु तेह, जेह पंचमी गइ पामीय ।
 पंच परम गुरु तेह, जेह जन सह जयकारीय ।
 पंच परम गुरु तेह, जेह भुगती वर गामीय ।
 पंच परम गुरु एहवा जे भवीअण नीतरू देह क्षपि ।
 बाइ अजितमती एवं वदती भव सागर ते नर तरे ॥५॥

राग केदारो

तू तो वृषभ जिनेस्वर वृषभ जन सहु कृत
 वृषभ लांछन सोवनमि काया करी सोहि राया
 वृष मगट कही राजसहु परहरी भुगति रमणि सुति चित्त लाया ॥१॥
 कुमार पदवी सलाख पूरवगयो, त्रिसिद्ध लाख पूरव काल सुखमि हुयो ।
 एक लाख पूरव काल जब रह्यो, तब जिनवर बैराग भयो ॥२॥
 लोकांतिक देव जय जय कारतु हि, जीव जीवतु नंद नंद ।
 तप कुठार करी कर्म कान्त वन, लेहू नी कीघो स्वामीतिनी कंद ॥३॥
 नृत्य नीलजंसा देखी नी मीत करी, संजम श्री सुतिचित्त घरी ।
 कर जोडी बाह अजीतमती कहि, भुगति रमणि जिन बेग वरी ॥४॥

राग केदारो

तू चेतै चेतन चतुर नरा, मेरा ब्रह्म भूलो नही चिन्त थीरा ।
 कर्म नो कर्म आबरिण आछादीयो, ते सुर सुभट तू जीत धिरा ॥१॥
 रुदय कमल सेज्यामि सुवतु हि, जागत ऐनस पास नावि ।
 जनम जरा मरण दूरी करी, ते नर सिव पुरी बेगे जावि ॥२॥
 दूष दमि जिम कांचन विराजनु हि, तेम देह मां देही तु परम देवा ।
 त्रिकाल जोग बीरी कर्म सहु नजिरी भ्रमति रमणि तुभ करइ सेवा ॥३॥
 अतुल बल वीर्य पराक्रम पुरतु, तुभ सम नही कोइ परम जीया ।
 कर जोडी बाह अजीतमती कहि, तुभ समरे मुनी भुगति गया ॥४॥

राग बसन्त

श्री सरसति देवी नमीय पाय, गाएसुं गुण श्री नेमि जिनराय ।
 जेह नामि सौख अनंत थाय, भूरी पातिग भर दुरे पलायि ॥१॥
 सौख नारी मुं नेम रमि बसंत, अतिसि सजनि वीघो गुणवंत ।
 न्यान सरोवर सांत रसि भरयू माहंत, मुनी हंसी करी सरोवर सोहंत ॥२॥

समुद्र विजय मित्रादेवी एतद. तीन सुवन माहि रे हवो आणंद ।
 तुं जनमि बाध्यो धर्म कंद, तुम चरणि नमि देवता वंद ॥३॥
 हरिवंस नभसी तु उग्यो सूर, नेमीनाथ तुरे बलवंत भूर ।
 जेणे जोवन परिण तजि नारी दूर, मोह मयण रायतितो कीधा चूर ॥४॥
 चारित्र्य सुर सुभट सुंराय, सुन भाद वन मांहि पातोय जायि ।
 क्रम लांवां तीतर चरणे चंपायि, ध्यान मोर दहुका रंग उपायि ॥५॥
 सागवाड। नयरे बि बहु अवास, श्रीय संधनी पुरवो स्वामी आस ।
 सुभ असुभ कर्मनो करो कीनास, बाइ अजीतमती ए बोली भास ॥६॥

पद

धन जीवन ठुकरी बहुत परी । तेहु अतीत हुये ।
 तीन भुवनि के रायजलि बल सबहि अतीत भये ॥१॥ धन॥
 चेतो चेतो रे तह्यि बापु रे, लक्ष चौरासि बहु तफ आये ।
 कबहि न ठाडे भये । धन जीवन ॥२॥
 धरसन ज्ञान चरण तप बहुत वार लहे ।
 मोह मयण रायि जब कोप्पो तब मुक्त कु न रहे ॥धन॥३॥
 हूं किसको नहि को नहि मेरो जब सुन्य ध्यान धरे ।
 कर जं डी बाइ अजीतमति कहे तेस के काज सरे ॥धन॥४॥

राग बसन्त

हूं बलिहा ी चेतन की, जो चेतन मु बिलजाये रे ।
 बसुकवाद लि आछाधे तो ते सह विकटी जाये रे ॥१॥
 मोह फांद गति फांदीयो, तोह जु अनचेते काय रे ।
 अकल अरुपी ज्ञान सरुपी, ते तुरु क्यो न सुहाय रे ॥२॥हुं॥
 जे विनासि पवारण दिसी ते उपरि बहु रंग रे ।
 मोहनि करमिहु लपटाणो, तो फी फी पम्प्यो मंग रे ॥हुं॥३॥
 जासु पयास भवदु सर तरी शुभ सुंदर सीपु जाय रे ।
 कर जोडी बाइ अजीतमति कहि, सुद्ध भाव धरो मन लाइ रे ॥हुं॥४॥

राग सारंग

नमो नमो पास जिह्मदह पाय

नील बरण शुभ सुंदर काय, पूजतां पातिग जाय ॥१॥

अश्वसेन वम्मादेवी नंदन वंदन, जन जन आघार ।

सुर नर फणीपती खगपती वमली करे जिन जय जयकार ॥२॥ नमो॥

नयर वरणारसि जनम्यो एह प्रभु, सतगुरु सतमु आय ।

हस्ता नव सोहि उन्नत काय, इक्ष्वाकवंस को राय ॥३॥

धाति अधाति कर्म सब नीजं नी, पोहोती मुगतीवास ।

करि जोडी बाइ अजितमति कहि, पूरवो हमारी आस ॥४॥ नमो॥

४. इतिहास परक घटनाओं का वर्णन

श्री वृषभनाथनिवारि मरीचि अनेक दर्शन अनेक मतनी स्थापना कीधी । भरत चक्रवर्ति ब्राह्मणानी स्थापना कीधी । श्री सीतलनाथ पछि पर्वनि यागनी स्थापना कीधी । पहिलि मुंडशालापणि दश कु दाननी स्थापना कीधी । श्री पार्श्वनाथनिवारि पहिलाश्रवस्य शिष्य बुध्नीकीति ते सो बुद्धनी स्थापना कीधी । मांस मद्यना दोष न मानि । श्रीमहावीरनिवारि मसक पूर्ण मुनीस्वरि तर्कनी स्थापना कीधी । राजा बीक्रम पछि वर्ष १३६ गते भद्रबाहु शिष्य प्रत्याचार्य तास शिष्य जिनचंद्रेण स्वेताम्बरनी स्थापना कीधी । स्त्रीनि मोक्ष गृहीनि मोक्ष । तीर्थकर ने आहार न्याहार रोग वस्त्र केवलीनि उपसर्ग गर्भ संचार कहि । तीर्थकरी करी कहि महावीर ब्राह्मणी गर्भ संचार कहि । मांस भक्ष गहे आहारनी छोटिनमानि । वर्ष २०५ जाते श्री कलसेन आचार्य आपुनी गच्छनी स्थापना की थी । पछि वर्ष ५३६ गते श्री पुज्यदाद शिष्य वज्रनंदी द्वादह संघनी स्थापना की थी । बीज अन्न पासी सचीत्त न मानि । क्षेत्रा दीसावद्य न मानि । बीक्रम पछि ७५३ दिनवसेन शिष्य कुमारसेन सन्यास संग करीनि काष्ठ संघनी स्थापना कीधी । पीछे कठण चमरनी लीधो । स्त्रीनि पुनरपी दीक्षा । झूलकनि वीरचरी । एहु अणुव्रत कहि । बीक्रम पछि २०० जाते मधुराया रामसेने माथुग गच्छनी स्थापना कीधी । नपीछीया । दक्षण देसे बिभ देसे पुष्यलावती नगरे श्रीरचंद्र मुनिता तेन करीष्यति भीलसंघ । बीक्रम पछी वर्ष १८०० जाते श्रीया वीपरीत करीस्यती । संवत् १६५० वर्ष पंचमी दिने लखीत बाई अजीतमनी निज कमेअयार्थ ॥

कविवर परिमल्ल

परिमल्ल १६वीं-१७वीं शताब्दी के कवि थे । उनका जन्म खालियर में हुआ लेकिन उनकी जवानी एवं बुढ़ापा आगरा में व्यतीत हुआ । कवि का परिवार एवं पूर्वज अत्यधिक प्रतिष्ठित एवं राज्य द्वारा सम्मानित थे । उसने अपने पूर्वजों का निम्न प्रकार उल्लेख किया है—

चन्दन चौधरी
|
रामदास चौधरी
|
आसकरन चौधरी
|
परिमल्ल चौधरी

चन्दन चौधरी खालियर के महाराजा मानसिंह द्वारा सम्मानित व्यक्ति थे । सम्भवतः वे मानसिंह के विश्वस्त उच्चाधिकारी अथवा नगर सेठ थे । उनका यश एवं ख्याति सारे देश में व्याप्त थी । उनके पुत्र रामदास जो कवि के बाबू थे अपार सम्पत्ति के स्वामी थे । जीवन में उन्होंने अपार सुख प्राप्त किया । उनके पुत्र एवं परिमल्ल कवि के पिता आसकरन अपने कुल के दीपक थे और अपने परिवार की ख्याति एवं प्रतिष्ठा को पूर्ण रूप से बनाये रखा था ।^१ ऐसे परिवार में जब परिमल्ल का जन्म हुआ तो चारों ओर प्रसन्नता छा गयी । परिवार एवं माता-पिता का उन्हें पूरा लाडल्यार मिला । खालियर में ही उनकी शिक्षा दीक्षा हुई और यहीं अपने पिता की छत्रछाया में उनका बाल्यकाल समाप्त हुआ ।

कवि दिगम्बर जैन बरहिया जाति के थावक थे । उस समय खालियर में बरहिया जाति के अच्छी संख्या में घर थे । सभी वैभव सम्पन्न मर्यादा पूर्ण एवं यशस्वी थे । लेकिन कवि के पूर्ण होने वाले महाकवि रङ्गू ने बरहिया जाति का

गोवरि गिरि गढ़ उत्तिम थान, भूरवीर तहां राजा मान ।
ता आगं जाँदन चौधरी, कोरति सब जग में बिस्तरौ ॥१५॥
जाति बरहिया गुनं गंभीर, अति प्रसाप कुल राजे धीर ।
ता सुत रामदास परवीन, मंदन आसकरन सुभ दीन ॥१६॥
ता सुत कुल मंजन परिमल्ल, बसै आगरे में तजिसल्ल ।

कोई उल्लेख नहीं किया। १८वीं शताब्दी में होने वाले पंडित बख्तराम साह^१ ने चौरासी जातियों के नामों में बरहिया जाति का कोई उल्लेख नहीं किया लेकिन यदि बारहसेनी जाति ही बरहिया जाति का दूसरा नाम है तो इसका उल्लेख तो यत्र तत्र मिलता है। फिर 'वि. सं. १५४५' के एक भूविज्ञान^२ में बरहिया कुल का उल्लेख अवश्य मिलता है इससे यह तो स्पष्ट है कि बरहिया जाति दिगम्बर जैन धर्मानुयायी थी और उसका ग्वालियर एवं आगरा क्षेत्र में अच्छा प्रभाव था।

परिमल को अपने पिता एवं बाबा का कब तक प्यार मिला तथा तब तक उनकी छात्रछाया में ग्वालियर में रहे इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता लेकिन वे ग्वालियर छोड़कर अपने परिवार के साथ आगरा आकर रहने लगे थे इस घटना का कवि ने अवश्य उल्लेख किया है। आगरा में वे शल्य रहित होकर रहने लगे थे इसका कवि ने निम्न पंक्ति में उल्लेख किया है।

“ता सुत कुल मंडन परिमल, बस आगरे में तजि सल”

आगरा में उनका जीवन शान्तिपूर्ण था। जब उन्होंने श्रीपाल चरित्र की रचना प्रारम्भ की थी उस समय देश में अकबर बादशाह का शासन था। कवि ने अकबर के शासन काल का उल्लेख ही नहीं किया किन्तु उसके तेज एवं प्रताप की भी प्रशंसा की है। उसने समस्त पृथ्वीनल को अपने वश में कर लिया था तथा उसकी चारों ओर दुहाई फिरती थी। इसी के साथ परिमल कवि ने बाबर एवं हुमायुँ का भी उल्लेख किया है—

बाबर शतिसाहि होई गयो, तासु साजि हमाऊं भयो।

ता सुत अकबर साहि प्रधान, सो तप तप्यो दूसरी भाँज ॥३२॥

तार्क राजन कहूँ अनोति, बसुधा सकल करी बसि जीति।

जंझूष तास की आभ, दूजौ अवरोन ताहि समान ॥३३॥

रचना कास

अधिकांश प्रशस्तियों में रचना समाप्ति के समय का उल्लेख होता है लेकिन श्रीपाल चरित्र में कवि ने रचना के प्रारम्भ करने का उल्लेख किया है जो संभवतः

१. बुद्धिविलास—बख्तराम साह पृष्ठ संख्या—८६

२. संवत् १५४५ वर्ष वैशाख सुदि १० चंद्र दिने श्रीमूलसंघे.....भ.

जिनचंद्रदेवाः बरहिया कुलोद्भव साहु लेखे भार्या कुसुमा-तेन अर्जुनेनेदं
आदीश्वर विम्बं स्वपूजनार्थं करामितं। भट्टारक सम्प्रदाय—पृष्ठ संख्या १०४

१६५१ आषाढ सुदी अष्टमी शुक्रवार है। रचना समाप्त कब हुई और उसमें कवि को कितना समय लगा इसका कवि ने कहीं भी उल्लेख नहीं किया।

संवत् सोलहसँ ऊपर, सावन इक्यावन आगरँ।

मास अषाढ पहली आई, चरित को कहै बडाइ ॥३०॥

पक्ष उबाली आठे जानि, सुकरवार बार परबानि।

कवि परिमल्ल शुभ करि खित, आरंभ्यो श्रीपाल चरित ॥३१॥

श्रीपाल चरित्र के अतिरिक्त कवि ने और कितनी रचनायें निबद्ध की इसका भी कहीं नामोल्लेख नहीं मिलता और न शास्त्र भण्डारों में परिमल्ल की श्रीपाल चरित की अतिरिक्त कोई रचना प्राप्त हो सकी है। जिसका अर्थ यही है कि प्रस्तुत कृति ही कवि की एक मात्र कृति है जिसको उसने अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में लिखी थी।

श्रीपाल चरित की पूर्व कृतियाँ

जैन धर्म में श्रीपाल का जीवन अत्यधिक लोकप्रिय है। सिद्ध चक्र पूजा के महात्म्य के कारण श्रीपाल का कुण्ड रोग दूर हुआ था इसलिये पूरा समाज श्रीपाल और मैना सुन्दरी के पावन जीवन से प्रभावित है और यही कारण है कि प्राकृत, अपभ्रंश, संस्कृत एवं हिन्दी सभी भाषाओं के कवियों ने श्रीपाल चरित को कविता बद्ध करने में अपना गौरव समझा। अपभ्रंश भाषा में निबद्ध जयमित्रहल, पंडित नरसेन एवं पंडित रघू के 'सिखवाल चरित' पर्याप्त लोकप्रिय रहे हैं। संस्कृत भाषा में महामक सकलकीर्ति एवं पंडित नेमिदत्त के श्रीपाल चरित्र समाज में चर्चित ग्रन्थ रहे हैं। हिन्दी भाषा में परिमल्ल कवि के पूर्व ब्रह्म जिनदास एवं ब्रह्म रायमल्ल (संवत् १६१५) के नाम उल्लेखनीय हैं। यही नहीं परिमल्ल के साथ साथ भ० चादिचन्द्र ने भी उगी वर्ष (संवत् १६५१) में श्रीपाल आख्यान मिलकर समाज में श्रीपाल के जीवन से प्रेरणा लेने का आह्वान किया।

लेकिन जितनी लोकप्रियता परिमल्ल के श्रीपाल चरित को प्राप्त हुई उतनी अन्य कवियों के काव्यों को नहीं मिल सकी। यही कारण है कि राजस्थान के शास्त्र भण्डारों में कवि के श्रीपाल चरित की पाण्डुलिपियाँ सर्वाधिक संख्या में मिलती हैं। अभी तक उपलब्ध पाण्डुलिपियों में साहित्य शोध विभाग (वर्तमान जैन विश्वसंस्थान

१. देखिये—राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों की ४१ सूची भाग चतुर्थ—
पृष्ठ संख्या ७७२.

श्री महावीरजी) के एक गुटके में संग्रहीत पाण्डुलिपि है जिसका लेखन काल संवत् १६६० द्वितीय वैशाख शुक्ला दोश है।^१ उक्त प्रति के अतिरिक्त १७वीं १८वीं शती में लिपि की गयी निम्न पाण्डुलिपियां भी उल्लेखनीय हैं।

१. शास्त्र भण्डार दि. जैन तेरह पंथी मन्दिर, दीसा पत्र सं. १८० लिपि काल सं. १६६६ कारुण सुदी १३

२.	“	दि. जैन मन्दिर चेतनदास दीवान		
		पुरानी डीग	गुटके में है	सं. १७५७
३.	“	वि. जैन बीस पंथी मन्दिर बीसा	६७	१७७४
४.	“	दि. जैन तेरह पंथी बड़ा मन्दिर जयपुर	१५८	१७७६
५.	“	दि. जैन मन्दिर गोबी का, जयपुर	८५	१७९०
६.	“	दि. जैन मन्दिर वैर (भरतपुर)	१५८	१७९६

लेकिन संवत् १८०० के पश्चात् लिपि की हुई पचासों पाण्डुलिपियां राजस्थान के कितने ही शास्त्र भण्डारों में संग्रहीत हैं। किसी २ शास्त्र भण्डार में तो ५-६ पद्यवा इससे भी अधिक पाण्डुलिपियों का संग्रह मिलता है। राजस्थान के अतिरिक्त आगरा, देहली, मैनपुरी आदि नगरों के शास्त्र भण्डारों में भी श्रीपाल चरित काव्य की अच्छी संख्या में पाण्डुलिपियां मिलनी चाहिये।

पद्य संख्या

श्रीपाल चरित की विभिन्न पाण्डुलिपियों का तुलनात्मक अध्ययन करने के पश्चात् यह निष्कर्ष निकल सकता है कि उनमें पद्यों की संख्या समान नहीं है। दि. जैन मन्दिर चौधरियों की पाण्डुलिपि में २२२२ पद्यों की संख्या दी गयी है जबकि राजमहल [टोंक] की पाण्डुलिपि २२०० पद्य, बयाना की पाण्डुलिपि में २२६० तथा गोधा मन्दिर जयपुर वाली पाण्डुलिपि में पद्यों की संख्या २३४१ दी हुई है। यह संवत् १७६० की पाण्डुलिपि है। इस तरह अन्य पाण्डुलिपियों में पद्यों की संख्या में अन्तर हो सकता है।

भाषा—श्रीपाल चरित वज्र भाषा का काव्य है। आगरा वज्र भाषा का प्रमुख केन्द्र रहा है इसलिये परिमल कवि ने भी अपने काव्य में वज्र भाषा का प्रयोग किया है।

आपस में सब मसी कराहि, आबो बीरबनन पें जाहि।

जो भाईस बेहे हन ओण, सोई भाजि सेहु सब सोण।। १४०।।

भोती रत्न बार भरि लाए, सब मिलि वीरवचन पैं गए ।

बाई भेंट ला आने धरी, नाइ सोस विनती है करी ॥१४१॥

यात्री, कोहूँ, गरी, जा देखै (५०/१५) ताकी (७३/१६) जैसे शब्दों को अधिकता है ।

काव्य की विशेषताएं

श्रीपाल एवं मैमासुन्दरी पर हिन्दी में अब तक जितने भी काव्य लिखे गये हैं उनमें प्रस्तुत काव्य सभी दृष्टियों से उत्तम है । भाषा एवं वर्णन सौंदर्य दोनों ही आकर्षक हैं । कवि ने नायक, नायिका एवं उपनायिकाओं के जीवन में घटने वाली घटनाओं का सरस वर्णन किया है । कवि की वर्णन शैली से काव्य के सभी पाठों का चरित्र विकसित हुआ है तथा पाठकों में उनके प्रति सहानुभूति, करुणा अथवा रोष के भाव जाग्रत होते हैं ।

काव्य का नायक श्रीपाल है जो कोटिभट है । असंख्य योद्धाओं की शक्ति का प्रतीक है । विपत्तियों एवं संकटों के सामने वह कभी हार नहीं मानता है किन्तु अपनी शक्ति, सहस्र एवं सूझबूझ से उन सभी पर विजय प्राप्त करता है । वह युवा-वस्था में ही राज्य शासन चलाता है लेकिन कुछ ही समय के पश्चात् वह भयंकर कुष्ठ रोग से पीड़ित हो जाता है । यह कुष्ठ रोग उसके साथ ही अंग रक्षकों के भी हो जाता है । खाना, पीना, उठना, बैठना, नहाना, धोना, वस्त्र पहिनना आदि सभी क्रियाएँ दूसरों द्वारा की जाती हैं । रजस्र एवं पीप की दुर्गन्ध से सारा वातावरण दुर्गन्धमय बन जाता है । नाक एवं अंगुलियाँ गिरने लग जाती हैं । कवि ने कुष्ठ रोग पीड़ा का बहुत अच्छा वर्णन किया है—

बहु राघ पीड़ियो सरोर, होई दुर्गन्ध बहुत समीर ।

कोइ उदमर बड़यो अति राई, नाभि अंगुरी गरि गए पाई ॥१२१॥

रक्तपीत जाके तन बीस, ठारे चौर राई कैं सोस ।

मरें प्रसेहु खन्न सौं गहूँ, बेह दाव मण्डारी रहूँ ॥१२२॥

स्थाम दाव जाके असमान, सौं राखौं हि खवाब पान ।

मरहन करे जाहि गही काम, लखुवा करवाई असनाम ॥१२३॥

श्रीपाल राजा थे लेकिन प्रजाजटसल थे । अपने कुष्ठ रोग के कारण जब प्रजा को दुख होने लगा, नगर दुर्गन्ध से भर गया, तथा उनका खाना पीना हराम हो गया तब मन्त्रियों ने राजा से विस्तार पूर्वक प्रजा की व्यथा बतलायी । तत्काल श्रीपाल ने कुष्ठ रोग से मुक्ति पाने तक राज्य का समस्त भार अपने चाचा वीर-

वसन की मीन के निषेध किया। इस अवसर पर कवि ने प्रजा के महत्त्व पर बहुत गुन्दर प्रकाश डाला है—

रक्षति बिन सोभा नहीं रहै, रक्षति बिन को राजा कहै ।
बिन पंखनि है पंखी जिसी हूँ रक्षति बिन दोसी तिसी ॥१५२॥

× × × ×
रक्षति की हम अपर छाह, रक्षति बस हमारी बाह ॥१५३॥

असै कहे समाने लोच, राजा प्रजा बराबरि बोल ॥१६०॥

मैनासुन्दरी जब सौलह वर्ष की हुई तब रूप एवं सौन्दर्य की राशि बन गयी। जिसने उसके रूप को देखा उसी ने बातों तले झंगुली बना ली। मैना सुन्दरी का कवि के शब्दों में सौन्दर्य देखिये—

घोबस वरव चढ़ी परवान, कोउ रूप न ताहि समान ।
साको रूपसो हेम करहु, भानो सरव पूम्हीं को खंडु ।
लोचन अवन सुबनत अति बने, क्यौ चकृत मृग साधक तने ॥१६॥

कण्ठाक्ष दृष्टि मानु यह जान, मुकुटी कुटिल मनमथ कमान ।
मार्थ भाग बिराजे बार, मानो मागनि के अनिहार ॥२७॥

कवि ने मैनासुन्दरी के प्रत्येक अंग के सौन्दर्य का वर्णन किया है जब मैना सुन्दरी को कोठी के साथ विवाह करने के समाचार सुने तो चारों ओर राजा को धिक्कारने तथा मति भ्रष्ट होने, विनाश होने के ताने भुनाने को मिले। इसी प्रसंग में अपने र कर्तव्य का पालन नहीं करने के कारण कित र का विनाश होता है इसका काव्य में बहुत ही सुन्दर वर्णन मिलता है।

बिनसे मंत्री संकाधरै, बिनसे राव मन्त्र सो टरै ।
बिनसे भासिनी छाइसु तजै, बिनसे सूक देखि रण मजै ॥४०४॥

बिनसे बैसु कोहु परहरै, बिनसे ताबु धातु जा करै ।
बिनसे दाता तजै बिबेक, बिनसे बाढन बलै बिन एक ॥४०५॥

श्रीपाल का कुष्ठ रोग मिश्रचक्रवर्त पूजा के प्रभाव से गया था। मैना सुन्दरी ने पूर्ण आस्था एवं विधि के साथ इस व्रत का विधान किया था। अन्तिम तीन दिन तक गन्धोदक से स्नान करने पर श्रीपाल का कुष्ठ रोग दूर हुआ था।

कवि ने इस व्रत के मण्डल बाँडने, फिर उस पर पूजा करने आदि क्रियाओं का विस्तृत वर्णन किया है। इससे पता चलता है कि परिमल कवि पंडित भी थे।

तीन दिवस गंधोबक गृह्य, कोट्टु विनठि पर्यौ लहराय ।
कंचन वरण भयो तनु ईसौ, सोहतु काम देवकी जिसी ॥

श्रीपाल जब विदेश गमन करने लगे तो मैना मुन्दी कीव धर्मात्मा होने पर भी पति विरह के दुख को सहन नहीं कर सकी और पति को अपनी विरह व्यथा निवेदन करने लगी—

यह कहि गवनु कीयो बरधीर, कामिनि व्याकुल भई शरीर ।
लोभन भरे बिल उमह्यौ, मनु गाढी करि घंचलु गह्यौ

श्रीपाल की बलि देने के लिये उसे धवल सेठ के पास ले गये। श्रीपाल सुंदरता की प्रतिमूर्ति होने पर भी धवल सेठ के हृदय में किञ्चित् भी दया नहीं आयी। और उसने उसकी बलि देने की स्वीकृति दे दी। लोभ मनुष्य का गला काटता है। इस प्रसंग में कवि ने लोभ रूपी पाप का विस्तृत वर्णन किया है—

लोभ बंध जो मानसु होई, पाप पुन्य जानै नहि सोई ।
लोभ बंध आर्क हैं प्राण, मलिन भाव नहि तर्क निदान ॥६०१॥
लोभ बंध जो प्राणी बिल, सो घर उबो न बसै जिस ।
लोभ बंध आर्कौ मन रहै, सो न भली काहू को कहै ॥६०२॥

श्रीपाल का जीवन विदेश में भी पूर्णतः धार्मिक था। जहाँ भी उसे जिन चंत्पालय मिलता, वह दर्शन करके ही भोजन करता। यदि सुनिराज होते तो फिर उनके भी दर्शन करता।

जिन चंत्पालौ बंधी जाय, तब ही भोजन करि ही जाय ।
अब मुनिवर के बंधे पाय, भोजन करौ लवारी जाय ॥

धवल सेठ ने जब रतमंजूषा के रूप को देखा वह कामान्ध बन गया और पिता पुत्र के सम्बन्ध को भुला बैठा। वास्तव में मनुष्य जब काम का शिवार बन जाता है तो वह भाई बहिन, माता पिता, पुत्री के सम्बन्ध को भुला बैठता है इसी को कवि के शब्दों में देखिये—

काम सुदृग् लज्जा परहरै, कर्चहोत कछु चिया न करै ॥

सुरा पात ते सुखि सहु जाय, क्या हीन हूँ आनिषु काम ॥१२५०॥

× × × × × ×

कासी जन बाँधे परमारि, कासी जन मन भावे गारि ।

कासी जन छाई गुह रोय, पातै कसत न दूरै वेद ॥१२५०॥

कासी जन जनक उलटो रीति, उत्तम तबै मध्यम सौं प्रीति ।

कासी जन कै मितु न बंधु, मैतनि देखै सदा निरंधु ॥१२५०॥

श्रीपाल फिर संकट में फँस जाता है । घबल सेठ द्वारा वह समुद्र में गिरा दिया जाने के पश्चात् वह सागर तीरकर दूसरे द्वीपमें आ जाता है । वहाँ सागर तटपर राजा के सिपाही उसका स्वागत करते हैं । और सागर तीर कर अपने के उपलक्ष में राजा द्वारा अपनी लहकी गुणमाला से उसका विवाह कर दिया जाता है । वे दोनों कुछ समय तक सुख से रहते हैं लेकिन जब घबल सेठ का जहाज उसी द्वीप में आ जाता है । श्रीपाल को देखकर घबरा जाता है और एक नयी चाल खेसता है । वह भांडों को बुझाकर राज दरबार में श्रीपाल को भांड पुत्र सिद्ध कर देता है । जिस व्यक्ति के घुरे दिन आने लगते हैं तो अपनी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है तथा वह धर्म का मार्ग छोड़ देता है । कवि ने इसका अच्छा वर्णन किया है—

यह सुनि सेठ बिचरै तबै, जिनस हाऊ होहु नर लबै ।

पहले नति ताकी तखि जाय, कूजै बसु बलै ब्रुहसाय ॥१२५०॥

तीकै सतु बलै धुनि सीसु, पीसु छीनि लेख जगदीसु ।

महिमा ताकै पास न रहै, बालु साहि तखि भारगु गहै ॥१२५०॥

संजम सीसु तजे धुनि साहि, क्या बिबेकु बलै चित साहि ।

पहले बुरमति बेसै घाय, बेरै बसुभु ब्रु कंठ लगाय ।

बहोरि होय बहया सी प्रीति, बहोरि असरय करै नति जीति ॥१२५०॥

भांडों ने राज्य सभा में श्रीपाल को अपनी जाति का तथा अपना लहका सिद्ध कर दिया । भांडों द्वारा किये हुए प्रदर्शन को देखिये—

कोउ कंठ सागि मोघय, कोउ मुसु पीछे बिहसाय ।

कोउ ताकै धकरै पाय, कोउ बाह गहै अकुताय ।

कोउ ताकै पीछे अंगु, साहि देखि हख्यौ ससु संगु ।

कोउ कहै बनि भूपाल, पाकी भयो जहां प्रतिपासु ॥

भांडों ने विविध प्रकार से राजा को समझा दिया कि श्रीपाल उन्हीं का पुत्र

है । श्रीपाल को फिर अशुभ कर्मों ने घेर लिया । राजा ने क्रोधित होकर चंडालों को श्रीपाल को मारने का आदेश दे दिया ।

वह सुनि राख कोय छति भयो, चांडलनि की आपसु बपी ।

मारो इह जीव मैं मति करो, या पापी तै सूरौ घरी ॥१५८२॥

इसके पश्चात् रैनमंजूषा से श्रीपाल का पूरा परिचय सुनने के पश्चात् राजा ने श्रीपाल से क्षमा मांग ली और फिर से नगर में उसका जोरदार स्वागत किया गया । इसके पश्चात् तो विभिन्न द्वीपों से श्रीपाल के सामने विवाह के प्रस्ताव आने लगे और श्रीपाल ने भी सभी प्रस्तावों को स्वीकार कर अपनी उदारता का परिचय दिया ।

श्रीपाल को राजकुमारियों से विवाह करने से पूर्व उनकी समस्या पूर्ति भी करनी पड़ी । कोकन पट की जाठ राजकुमारियों द्वारा गयी समस्या का श्रीपाल द्वारा निम्न प्रकार से पूर्ति की गयी ।

समस्या—जहां साहसु तहां सिधि (शृंगार गांरी द्वारा)

पूर्ति—सत्त सरीरह आपत्तौ, प्रगटै छोरु सुबुधि ।

सील सुभावन परहरै, जहां साहसु तहां सिधि ॥१७१८॥

समस्या—गो पेखंतह सबु (पडलोमी द्वारा)

पूर्ति—नवि पूजा नवि दान हित, अनिथापो यो बव्य ।

वृथा जनम गवाइयो, गयो पेखंता सब्ब ॥१७१९॥

समस्या—ते पंचायण सिह (पडलोमी द्वारा)

पूर्ति—सील बिहुना जोवि नह, तिन की देह मनीन ।

जे चारिन्ह निमला, ते पंचायण सिह ॥१७२०॥

समस्या—कासु पिवाउ खीर

रावन बिधा सीकिपी, दणमुख एक सरीर ।

तास माय धधे परी, कासु पिवाउ खीर ॥१७२१॥

इसके पश्चात् और भी देश की राजकुमारियों के साथ श्रीपाल ने विवाह कर लिया । एक दिन अचानक उसे मैतासुन्दरी की याद आ गयी और किया हुआ वायदा । वह तत्काल गुणमाला और रैनमंजूषा के पास आ गया और वहां से चलने की तैयारी कर ली, दलपट्टन के राजा ने उसे निम्न प्रकार सैन्य बल दिया—

चलत राव तूण्यो बिहसंतु, एक हजाय बए गजवंत ।

अयारि सहस बर बए सुरंग, बीने छत्र बबर बर बंग ॥

अनेक देशों में होता हुआ श्रीपाल उज्जैनी पहुँच गया जहाँ मैना सुन्दरी उस की प्रतीक्षा कर रही थी । उसके दीक्षा लेने के समय में केवल एक रात्रि बाकी थी । मैनासुन्दरी के लिये एक रात्रि की प्रतीक्षा भी कठिन हो रही थी । मैनासुन्दरी एवं उसकी सास के मध्य होने वाले वार्तालाप को सुनकर श्रीपाल ने घर में प्रवेश किया । दोनों को वह रात्रि को ही अपने कटक में ले गया और अपनी माता एवं रानी को अपनी विशाल सेना एवं अपनी पत्नियाँ बतलाई । उमने सबके सामने मैनासुन्दरी को पट्टरानी—महारानी घोषित किया तथा रैन मञ्जूषा, सुरामाला, चित्ररेखा को रानियाँ घोषित की । मैनासुन्दरी का हृदय प्रसन्नता से भर गया और उमने श्रीपाल से निम्न प्रकार निवेदन किया—

मेरे पिता करम नहि गन्यो, मानभंग कीजे ता तनों ।

कंबर पहिरि कुहारी कंध, कर पीता की मरी संबंध ।

असो बिधि जब मिलि है तोहि, तब ही मुझ उपजोगो मोहि ॥

दूत ने तत्काल जाँकर राजा से इसी प्रकार के वेश में श्रीपाल से भेंट करने का आग्रह किया । राजा ने क्रोध में आकर दूत को पकड़ लिया । लेकिन गन्यो के कहने से उसे छोड़ दिया । राजा पट्टपाल ने उगी तरह श्रीपाल से मिलने की बात मान ली लेकिन मैनासुन्दरी ने जब राजा का मान भंग होता सुना तो श्रीपाल से पुनः अपने पिता को राजा के तरीके से बुलाने के लिये कह दिया । दोनों में जब परस्पर मिलन हुआ तो चारों ओर आनन्द छा गया ।

राजा पट्टपाल ने जब मैना सुन्दरी एवं श्रीपाल के वैभव को देखा तो उसके आँखों में आंसू बह चले और निम्न शब्दों में मैना सुन्दरी की प्रशंसा करने लगा—

भो पुत्री सबही गुण ज्ञान, सील धुरंधर मुख निधान ।

तुं अति श्यावतं जीय जोय, तो सम भूषी और न कोष ॥

मै तेरी देख्यो अब करमु, अब आराध्यो जिनवर धरमु ।

अभी श्रीपाल को अपना स्वर्ग का राज्य और लेना था जिसे वह अपने चाचा को दे आया था इसलिये जब उसने अपना राज्य दूत भेजकर मांगा तो उसे निम्न प्रकार उत्तर मिला—

बिनु भुजबल बिनु रुडगप्रहार, बिनु रण सुरे न करे प्रसार ।

जीलौ एहु करम नहि होइ, तो लौं राज न पावै कोय ॥ १६४६ ॥

श्रीपाल ने एक बार दूत भेजकर अपने चाचा की समझाने का प्रयास किया तो वह और भी क्रोधित हो गया और दूत को ही मारने का आदेश दे डाला—
दुष्ट दे याको निग्रह करी, बँगे खालि काटि भुस भरी ॥

लड़ाई की तैयारियाँ होने लगी और उसने तत्काल आक्रमण करने का आदेश दे दिया ।

भावे मार मार तिहु बार, हय गय साजी ले हथीघार ।
यो संग्राम मिटै हम धाइ, जैसे जीवत एक न थाइ ॥१६८८॥

यहै कहत करी उपरी चढ्यो, करि लै लडग चल्यो रिस बह्यो,
ता देखत ही सबै जुझार, धाए काल रूप तिहु बार ॥१६७६॥

मैनों की पत्नियाँ जब अपने अपने पति को युद्ध के लिए विदा किया तो उन्होंने निम्न प्रकार अपने विचार प्रगट किये—

कोउ प्रिया मांगै रतिदान, हम तुम कंत जनम है आन ।
कोउ कहै दुहुं भुज तनी, वरसावै पिय बल आपनी ॥१६६६॥
कोइ सीख वेई कुल भाँम, जुझ हारि मति आवो धाम ।
बहुत घोस जो लायो माल, स्वामी काज सब करो हलाल ॥२०००॥
कोउ कहै संखिनी नारि, भजियो पीय जो जानि हारि ।
एक कहै मुक्तनि के हार, सब पाटंबर धीर अपार ॥२००१॥

दोनों में युद्ध होने लगा । गज से गज, अश्व से अश्व एवं पायक से पायक भिड़ गये । शाम हो गयी लेकिन कोई परिणाम नहीं निकला । मन्त्रियों के परामर्श से अन्त में यह निश्चय किया गया कि श्रीपाल एवं वीरदमन में परस्पर युद्ध होने पर जो जीत जायेगा वही राजा पद प्राप्त करेगा । दोनों में भीषण युद्ध होने लगा ।

तब ए कोप चढे दोउ राइ, भिरे मल्ल ज्यों दोऊ धाय ।
बाधा बाधी करे दोउ धीर, लोटै गिरै परे धर धीर ॥२०२८॥
अंस बहुत वेर जब गई, श्रीपाल की अति रिस मई ।
ताके बीउ पकरे पाय, अति आसुर ह्वै लयो उठाइ ॥२०२६॥
भरती पटकन लाग्यो जबै, जे जे जे सबद कीयो सुर सबै ।
कुसुम माल नाई ता गरै, हन्त्र अगवि सब यो उचरै ॥२०३१॥

वीरदमन ने अपनी हार मान ली और श्रीपाल को राज्य भार सम्हाल कर स्वयं ने जिन दीक्षा धारण कर ली। श्रीपाल ने सब राज्य सुख भोग और धर्म नीति के अनुसार राज्य किया। कवि ने धर्म की बड़ी महिमा गायी है। धर्म का प्रभाव एवं तेज अपूर्व होता है जिसके हृदय में धर्म उतरता है उसे चारों ओर से सुख शांति एवं अपूर्व आनन्द प्राप्त होता है—

धर्म एक त्रिभुवन में सार, धर्मै कुगति विनाशन हार ।

धर्म एक सब सुख को कंदु, धर्म एक भई कुल दंडु ॥२०२५॥

धर्म पसाय गज गुजरै, धर्म पसाय हीस होय धरै ।

धर्म पसाय चंचर सिर हरे, धर्म पसाय छत्र सिर धरै ॥२०२६॥

अन्त में श्रीपाल एवं मैनासुन्दरी दूसरे सहस्रों राजाओं एवं रानियों के साथ जिन दीक्षा धारण कर ली। मैनासुन्दरी की ओर तपस्या का बहुत ही अच्छा वर्णन किया है—

अब वन मारग सो पशु धरै, शीघ्र रितु सिकता पर जरै ।

सरद सीम सम बढनी विकासु, पोमनि करती पोष पिपास ।

शीघ्र हल माह परभात, हो ती मलिन सोत को घास ॥७॥

इस प्रकार श्रीपाल चरित हिन्दी का उत्तम काव्य है। इस काव्य से हिन्दी काव्य जगत् को गतिशीलता मिलती है। महाकवि तुलसीदास की रामायण के पूर्व दोहा, चौगई में रचित श्रीपाल चरित से तत्कालीन समाज में हिन्दी का अध्ययन अध्यापन, काव्य निर्माण में कवियों एवं विद्वानों की रुचि बड़ी थी। परिमल काव्य का आगरा केन्द्र था और ब्रज भूमि में हिन्दी का प्रचार प्रसार करने में जैन कवियों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया था।

श्रीपाल चरित में काव्य के नायक द्वारा जिन जिन देशों एवं द्वीपों का भ्रमण किया था उनके नाम निम्न प्रकार हैं—

१. राजगृह—राजा श्रेणिक की राजधानी, समकाल महावीर के बिहार का प्रमुख केन्द्र ।

२. चम्पापुर—अंग देश की राजधानी, श्रीपाल के राज्य की राजधानी, भगवान् वासुपूज्य की निर्वाण स्थल ।

३. उज्जैन—मालवा प्रदेश की राजधानी, मैना सुन्दरी की जन्म स्थली ।

श्रीपाल द्वारा कुष्ठी जीवन यापन, वन में सिद्ध चक्रवर्त की पूजा से कुष्ठ निवारण ।
कवि के शब्दों में—

देस मालवो सब मुख घामु, मध्यलोक मैं प्रगट्यो नाम ।

दुख नहि जिहि है वासर रैन, सुबस बस तहां नगर उज्जैन ॥६॥

४. कौशांबीपुर—श्रीपाल उज्जैन से कौशांबीपुर पहुँचा जहाँ उसकी ध्वल सेठ से भेंट हुई । यहीं से वह सेठ के साथ आगे व्यापार के लिये गया ।

५. हंस द्वीप—यात्रा का प्रथम पड़ाव । श्रीपाल ने इसी द्वीप में स्थित जिन मन्दिर के वज्रकपाट खोले थे तथा उसका रैनमंजूषा से विवाह हुआ था ।

६. कुंकुम द्वीप—दलपट नगर—समुद्र को तैरता हुआ श्रीपाल इसी द्वीप के किनारे पहुँचा तथा दलपट नगर के राजा द्वारा अपनी लड़की गुरुमाला से उसका विवाह कर दिया । ध्वल सेठ के साथ आगे पाँड़ों द्वारा श्रीपाल की लपटा पड़का बतलाने पर राजा द्वारा श्रीपाल को सूली लगाने का आदेश दिया । लेकिन रैन मंजूषा के पहिचान के कारण श्रीपाल सूली से बचा तथा पुनः सम्मान प्राप्त किया । ध्वल सेठ की वहीं मृत्यु हुई ।

७. कुण्डलपुर द्वीप—हंस द्वीप में कुण्डलपुर द्वीप पहुँच कर चित्ररेखा के साथ विवाह हुआ ।

८. कंचनपुर—बिलासवती का जन्म स्थान ।

९. कोकण पट्टन—यहाँ श्रीपाल ने पहुँचकर आठ राजकुमारियों की समस्या पूर्ति करके उनके साथ विवाह किया ।

१०. पंडीय देश—कोकण पट्टन से श्रीपाल पंडीय देश में पहुँचा ।

११. मेवाड़ देश—पंडीय देश से मेवाड़ देश में पहुँचा ।

१२. तिलिग देश—श्रीपाल की यात्रा का अन्तिम देश ।

१३. सौरठ देश (सौराष्ट्र)—तिलिग देश से श्रीपाल वापिस कुंकुम द्वीप के दलपट नगर में पहुँचा तथा वहाँ कुछ समय विश्राम के पश्चात् रैन मंजूषा, गुरुमाला आदि रानियों के साथ उज्जैन के लिये प्रस्थान किया । तथा सौराष्ट्र में पहुँचा ।

१४. सौराष्ट्र से श्रीपाल वहां के राजाओं से कर वसूल करता हुआ भरत (महाराष्ट्र) देश में पहुंचा ।

१५. उज्जयिनी—महाराष्ट्र से श्रीपाल उज्जयिनी नगरी में पहुंचा जहां मैनासुन्दरी उसकी १२ वर्ष से प्रतीक्षा कर रही थी ।

१६. चम्पापुरी—उज्जयिनी में कुछ समय अपने श्वसुर के यहां ठहर कर अन्त में वह चम्पापुरी पहुंचा । यहां उसका अपने चाचा वीरदमन से युद्ध हुआ और अन्त में विजय प्राप्त करके अपना राज्य प्राप्त किया ।

काव्य की विशेषता

श्रीपाल अतिशय अधिक रोचक काव्य है । कवि ने घटनाओं के वर्णन के साथ और भी ऐसे वर्णन प्रस्तुत किए हैं जिनके कारण काव्य और भी सुन्दर बन गया है । श्रीपाल का पूरा जीवन ही कर्म प्रधान है वह भाग्य के सहारे भागे बढ़ता है इसलिए निम्न भाव्यता में वह अपना पूर्ण विश्वास रखता है :—

विधना जो कछु लिख्यो लिसार, शुभ अरु अशुभ अंक शुभ सार ।

जैसी निमित्त जास कं होइ, ताहि सिटाइ सकै नहि कोई ॥३०३॥

इसमें आगे कवि और भी अपने भाव निम्न शब्दों में प्रस्तुत करता है :—

पूरब ते पछिम रवि उबै, नर फुनि मेरु चूलिका खुबै ।

सायर हू पै घूरि उडाइ, भाबी तक न मेशो जाइ ॥३०५॥

भविष्यता में इस प्रकार अटल विश्वास के साथ श्रीपाल आगे बढ़ता है । मैनासुन्दरी का भविष्यता में सबसे अधिक विश्वास है अपने पिता के बार बार आग्रह करने पर भी वह अपने विचारों में दृढ़ रहती है और कुष्ठ रोगी के साथ विवाह के अपने पिता के निर्णय को सहर्ष स्वीकार करती है । विवाह मंडप में बैठने के पश्चात् जब उसका सारा परिवार रुदन करने लगता है, मौन हो जाता है तब वह साहस पूर्वक कह उठती है कि जिस प्रकार उसकी बड़ी बहिन के विवाह में मंगलाचार गाये गये थे उसी प्रकार उसके विवाह में भी गाये जाने चाहिये :—

तब सुन्दरी उठि ठाड़ी भई, निज परियन माता पै गई ।

सुरसुन्दरी की गायो जिसो, भोकी क्यों नहि गावौ तिसो ॥१२०॥६१

पुत्री के विवाह में जो कुछ पिता द्वारा कन्या को दिया जाता है उसे हम दहेज संज्ञा देते हैं । मैनासुन्दरी के विवाह में भी श्रीपाल को ढेर सारा दहेज मिलता है

लेकिन आज के युग की तरह उस युग में मांग ठहराव अथवा जोर जबरदस्ती कुछ भी नहीं होता था जो कुछ भी दिया जाता उसे सहर्ष स्वीकार करने की परम्परा थी। और इसी परम्परा से समाज जीवित भी रह सका। श्रीपाल को भी दहेज में अपार चल एवं अचल सम्पत्ति मिलती हैं कवि ने उसका अच्छा वर्णन किया है।

छत्र चमर बीम्हे भंडार, बीने सौगल तुरीय ते सार ।
पादंबर बीए बहु घोर, जिने सगे निर्मोक्षिक हीर ॥१३४॥
सहस्र बास सुन्दर गुन देह, बीए सिरीपाल को तेह ।
सेखग भले भले जो भए, बहुत और सेवा की वए ॥१३५॥

पत्नी के लिए पति चाहे कंसा ही क्यों न हो वही उसका देवता कहलाता है। श्रीपाल ने विवाह के पश्चात् मैनासुन्दरी से दूर रहने के लिए कहा क्योंकि वह उस समय कुष्ठ रोग से पीड़ित था। कहां रूप लावण्य की खान मैनासुन्दरी और कहां कुष्ठ रोग से पीड़ित श्रीपाल। लेकिन मैनासुन्दरी ने श्रीपाल को जो उत्तर दिया वह बहुत भाषिक एवं पढ़ने योग्य है :—

बिधिना मोहि यह लिखि बियो, सोहि मोकीं निरचं भयो ।
तुम मेरे प्रीतम भरतार, तुम मेरे माननि आधार ॥१४३॥
तुम अति रूपवंत गुनवंत, तुम ही मुख सागर बलिवंत ।
लोचन मुखो जो लोए चार, तो लौं बेखं तुमैं निहार ॥१४४॥

श्रीपाल जब विदेश यात्रा के लिए रवाना हुआ। उसके पूर्व उसकी माता ने सुखद यात्रा के लिए कुछ बीज मंत्र दिये। ऐसी शिक्षा श्रीपाल के लिए ही नहीं सभी के लिए हितकारी सिद्ध हो सकती है कवि ने इन सबका बड़ा अच्छा वर्णन किया है —

अन दीनो मनि लीजहु वित्तु, परदारा भति लावहि चित्तु ।
तौं ते बड़ी नारि जी होय, मात बराबर जाणियँ सोय ॥७७०॥
होय त्रिया जो ताहि समान, ताहि जानि जो बहिन समान ।
जो कामिनि तौते लघु आहि, पुत्री सम जो जाणिजो ताहि ॥७७१॥
गुणिजन मन को घरियो मानु, दुखी दीन जन दीजो दानु ।
बहुत बात का कहै सुजान, बलियो व्रत संजम परवान ॥७७२॥

श्रीपाल पुण्यशाली था। इसलिये जब विदेश प्रस्थान के पञ्चान् वह पुरपट्टन नगर में पहुँचा तो उसे सहज में ही तीन विद्यायें सिद्ध हो गयी जिससे उसकी विदेश यात्रा में बहुत सहायता मिली। इन विद्याओं के नाम थे शत्रु निवारिणी, जन तारिणी। प्राचीन काल में मंत्र विद्याओं पर जन सामान्य को पूर्ण आस्था थी और वह उनके चमत्कारों से पूर्ण प्रभावित थी।

धवल सेठ का जब समुद्र में जहाज नहीं चला तो उसे मनुष्य की बलि देने के लिए कहा गया इससे पता चलता है कि उस समय उपसर्ग निवारण के लिये मनुष्य तक की बलि देने का प्रचलन था। बलि के लिए श्रीपाल जैसे युवक को पकड़ लिया गया।

ताते मन मैं उपज्यो सदेहु, मंत्री मंत्र विचारयो गहु।

एक पुरुष बलि दीजै आये तब यह चले परोहन वाय ॥७७३॥

प्राचीन काल में समुद्री लुटेरे यात्रियों को लूट लिया करते थे। वे जहाज तक डुबो दिया करते थे। धवल सेठ के जहाज के ऊपर भी लुटेरों ने हमला कर दिया था जिसके कारण पूरा व्यापारिक संघ ही संकट में पड़ गया था। यदि श्रीपाल नहीं होता तो पता नहीं धवल सेठ की क्या हालत होती।

श्रीपाल कोटिमट्ट था। पुण्यशाली था। इसलिये उसके हाथ लगते ही वज्र के किवाड़ खुल गये। जिनके खुलने का अर्थ था वहाँ के राजा की कुमारी रैनमंजुसा के साथ विवाह। श्रीपाल का भाग्य चमक उठा और विदेश में उसे सफलता पर सफलता मिलने लगी। इसके पूर्व वह जहाज को अपने बाहुबल से चलाकर लुटेरों को पकड़ ने में सफलता प्राप्त कर चुका था। यह तीसरी सफलता उसके उज्ज्वल भविष्य के लिए वरदान सिद्ध हुई। श्रीपाल ने रैनमंजुसा जैसी सुन्दर राजकुमारी ही नहीं किन्तु विवाह में अपार सम्पत्ति भी प्राप्त की इसका एक वर्णन पढ़ने योग्य है :—

रैनमंजुसा गुणहृ विमल, श्रीपाल व्याही मुकुमाल ॥

सोवो दीयो तूठि के राय, चौर छत्र हय गय अधिकाय ॥८६२॥

दीनो मणि रत्ननि भण्डार, दासी दास ग सुभसर ॥

और बहुत को धके बढाय, दीनो नोसन महल कराय ॥८६३॥

श्रीपाल के जीवन में फिर संकट आ जाता है और वह समुद्र में गिरा दिया जाता है। उस समय रैनमंजुसा के दुःख का कोई धाह नहीं रहता। वह भी

अपने पूर्व कृत कर्मों को रोती है और निम्न प्रकार पश्चात्ताप करती है :—

कैं मैं पर पुरुषह मन धर्यो, कैं मैं आयसु जीयते टर्यो ।
 कैं मैं काहें की विसु हरयो, कैं मैं भविजन भावन कर्यो ॥११८१॥
 कैं मैं निहो जिनवर धर्म, कैं मैं अशुभ कर्मयो कर्म ।
 कैं मैं जीव दया परहरी, कैं हूं कहुं अग्नि मैं जरी ॥११८२॥
 कैं मैं निध्या दुह सेइयो, कैं मैं पावरी राव न निहो ।
 कैं मैं कहू उचार्यो अंगु, कैं मैं कियो वस्तु को मंगु ॥११८३॥
 कैं गुरु कही न लीनो मानि, कैं मैं भूँठी बोल्यो जानि ।
 कैं मैं परगुण मेढ्यो पाय, कैं हूं बूझी नदी मैं जाय ॥११८४॥

श्रीपाल का व्यक्तित्व पूरा अमाशील था । जन्म को जीतने पर भी वह उसे क्षमा कर दिया करता था । उसने सर्व प्रथम समुद्री डाकुओं को धवल सेठ के जहाज पर हमला करते समय पकड़ कर लाने पर भी उन्हें क्षमा कर दिया । तथा स्वयं धवलसेठ को उसे समुद्र में गिरा देना एवं भांडों द्वारा पुत्र बतलाने के षडयंत्र का पसा लगने पर भी धवल सेठ को क्षमादान दे दिया । श्रीपाल ने अपने जीवन में कभी ऐसा कोई कार्य नहीं किया जिससे उसके जीवन में कसक लगता हो । इस प्रकार श्रीपाल अरिश्त शिक्षाप्रद काव्य है जिसमें एक ओर कर्मवाद (भाष्यवाद) की प्रधानता है तो दूसरी ओर पुरुषार्थ को भी गौरव नहीं किया गया है । स्वयं श्रीपाल राजा होने पर भी वैभव, धन संपत्ति अर्जन के लिए देशाटन करता है । वह अपने सिद्धान्तों पर चलता है और उनका कभी उल्लंघन नहीं करता ।

श्रीपाल का अन्तिम जीवन माधु जीवन के रूप में व्यतीत होता है। अपने अपार राज्य एवं वैभव, आठ हजार रानियों के भोगों को हेय समझ कर मुनि दीक्षा धारण करता है अर्थात् अन्तिम जीवन में त्याग को प्रधानता देता है । जो वर्तमान भौतिक जीवन व्यतीत करने वालों के लिए अच्छा उदाहरण है । मानव को अपनी वृद्धावस्था में त्यागमय जीवन अपनाना चाहिये इसी में उनका कल्याण और आगामी जीवन के लिए शुभ लक्षण है ।

विद्याध्ययन

श्रीपाल को आठ वर्ष का होते ही विद्याध्ययन के लिए मुनि के पास भेजा गया जहाँ उसने गुणोत्कृष्ट, अक्षर विद्या, अंक विद्या (गणित), न्यायशास्त्र, सामुद्रिक शास्त्र, व्याकरण, ज्योतिष, वैदिक आदि विद्यायें सीखीं । यही नहीं जल में तिरना, घुड़सवारी, हाथी की सवारी, रथ की सवारी एवं संगीत आदि की विद्यायें भी अध्ययन किया। इसी तरह मैनासुन्दरी एवं सुरसुन्दरी ने भी विद्यायें सीखीं इतना अवश्य है कि मैनासुन्दरी ने जिन मन्दिर में आशिका के पास जाकर जैन धर्म

की शिक्षा प्राप्त की जिससे उसके मन में कर्मवाद की प्रधानता स्वीकार करने का प्रभाव पड़ा और मुरसुन्दरी ने 'शिवगुरु' से शिक्षा प्राप्त करने के लिए उसके दूसरे ही संस्कार बने । इस प्रकार जैसा शिक्षक मिलता है बालक के उसी प्रकार के संस्कार पड़ जाते हैं । मैनासुन्दरी ने जिस प्रकार की शिक्षा प्राप्त की उसका एक वर्णन देखिए :—

जोतिष पदघो इसी परवानि, आगम अरु अध्यात्म जानि ।

सीख्यो तिन संगीत पुरान, नाटिक साटिक करै बसानि ॥

तर्क छंद पुत्री पढ़ि लियो, छह रासन तिन उत्तर दिवो ।

भाषा सोजु अठारह पढी विद्या करि दिन ही नित बढी ॥२२७॥

इस प्रकार परिमल कवि का श्रीपाल चरित्र उत्तम प्रबन्ध काव्य है जिसका जितना गहरा अध्ययन किया जावे, उतना ही श्रेष्ठ एवं सुखद है ।



श्रीपालचरित्र (परिमल्ल कृत)

चौपई

मंगलाचरण

श्रीसिद्धचक्र विधि केवल रिद्धि । गुण अनंत फल जाकर सिद्धि ॥
प्रणमों परमसिद्धगुरु सोइ । भविक संग ज्यों मंगल होइ ॥ १ ॥
सिद्धपुरी सिद्धनि कौ धाम । सिद्धपुरी आनंद निधान ॥
प्रगट जोति त्रिभुवन में आहि । अलख देव को लखै न ताहि ॥ २ ॥
अंजन रहित निरंजन जानि । हीन बुद्धि क्यों सकैं बषांनि ॥
जय जिनंद आदीसुर देव । सुर नर कित पद पंकज सेव ॥ ३ ॥
जय अजितेशुर गुनह निधान । मान रहित मिथ्यातम भान ॥
जय जिन संभव हरैं धिकार । सुभिरत अति आनंद दातार ॥ ४ ॥
जय अभिनंदन नंदन वीर । गुन गरिष्ठ भव भंजन भीर ॥
जय सुमतीसुर परम उदास । सुमय प्रकाशन कुमय विनास ॥ ५ ॥
जय जय पद्मप्रभ पदु जाहि । श्री संजुत कवलासन आहि ॥
जय सुपास उपहास निकंद । प्रणवत दूरि होइ अम फंद ॥ ६ ॥
जय चंद्रप्रभ केवल नाम । होहु कृपाल सबै सुख धाम ॥
जय पुष्पदंत जीत्यों जिहि मार । दुर्धर धर्यौ चारिबह भार ॥ ७ ॥
जय जय सीतलनाथ मुनिद । असुर जक्ष सेवै सुर बृंद ॥
जय शीयांस रहित विघनेस । उदित मुक्ति बंधू परमेश ॥ ८ ॥
जय श्री बासपूज्य अत लीन । जैन धर्म उपदेश प्रवीन ॥
जय श्री विमलदेव मति चंग । विमल वर्ण गुण विमल अमंग ॥ ९ ॥
जय अनंत जिनवर सुभ धाम । भन वत्त दम जानियो प्रमान ॥
जय श्री धर्मनाथ सुखगेह । कंचन वर्ण विराजित देह ॥ १० ॥
जय श्री शांति पयासिय शांति । दुःख हरन मूरति सोभांति ॥
जय श्री कुंथ कुंथ विनास । केवल उदित ज्ञान परकास ॥ ११ ॥

जय श्री अरहनाथ जगनाह । अति बलिष्ठ जिह्मोह नसाह ॥
जय श्री मल्लि मल्ल्यौ जिह्म मान । पुन तीरथ सहि जो परधान ॥ १२ ॥

जय श्री मुनिसुव्रत मुनिराह । इन्द्र अमर सेवहि तिस पाइ ॥
जय जय नमि रतनत्रय धार । मन के छाँड़े सकल विकार ॥ १३ ॥

जय श्री नेमिनाथ गुराखाँन । तजि राजमती गए निर्वाण ॥
जय श्रीपारस नाथ जिनंद । फनि मनि मंडित त्रिभुवन चंद ॥ १४ ॥

जय श्री बद्धमान जिनराह । केहरि लच्छिन भासन छाड़ ॥
चतुर्विंश जिन जे गुनमाल । प्रनयत दूरि होइ भ्रम जाल ॥ १५ ॥

अरु जे मुक्तिपंथ मुनिगए । निरभय अलख अगोचर थए ॥
कीनों नमसकार परिमल्ल । जिनते दूरि होइ भव सल्ल ॥ १६ ॥

जिनमुख अंबुज तैं उछरी । त्रिभुवन माँहि कला विस्तरी ।
द्वादशांग भासन भगवती । जास प्रसन्न होइ बहुमती ॥ १७ ॥

विमल वराँ वेदनि में कही । निज निपेछ अमंग भारही ॥
निरगुण ताहि कहै बहु चंग । गुणतामें राजै सरबंग ॥ १८ ॥

स्वामिनि जिन पर होइ दयाल । बढै कथा ज्यौ होइ रसाल ॥
मूरिष थैं पंडित पद सहौ । सारद गुन गाढी करि गहौ ॥ १९ ॥

षट वंसन मुख मंडन सार । मिथ्या कुमति विनासन हार ॥ २० ॥

दोहा

असुख हरन जग बंदनी, बंदी केवल संग ॥
देहु बुद्धि ब्रह्मादनी, ज्यौ होइ उक्ति नवरंग ॥ २१ ॥

चौपई

तोहि सुमरि कर लेखनि गहौ । सिध अक्र विधि वरनन कहौ ॥
ज्यौ सारद पसाउ मति लहौ । नवरस कथा प्रगट करि कहौ ॥ २२ ॥

गुरु गौतम मोहि देहु पसाउ । बाढै कथा होइ मन चाउ ॥
धुनि परमेष्ठि पंच गुरजानि 'मन क्रम' करि कहौ कथानि ॥ २३ ॥

पंच परमेष्ठी स्तवन

जय जय नमों देव अरिहंत । हैं प्रसिद्ध गुण जाहि अनंत ॥
 जय जय नमों सिध वर देव । अलख रूप त्रिभुवन करि सेव ॥२४॥
 जय जय घाचाणिज मुनिराइ । अमर खबर जन बंदहि पाइ ॥
 जय जय नमों परम उरभाइ । उदीमत गुंन जा अगनाइ ॥२५॥
 जय जय साध लोथ वर बीर : अमृत बुधि बषांनै धरि ॥
 तिमकौ नमसकार कर जोरि . छार्त जनमन होइ बहोरि ॥२६॥
 पढत सुनत मन उपजै चाउ । कहि परमल हीऐं धरि भाउ ॥
 कैसें श्रीपाल औतरयो । कैसें कुष्ट व्याधि करि भरयो ॥२७॥

श्रीपाल के जीवन को जानने की उत्सुकता

कैसें बन उद्यातह गयो । कैसें सिद्धचक्र अत लयो ।
 कैसें सागर बूझ्यो जाय । कैसें कोइ गयो निकुताय ॥२८॥
 कैसें दल तिन प्रगटयो धनी । कैसें प्रगटयो बलु आपनी ॥
 कैसें राजकीयो परवान । कैसें वाको चली पुरान ॥२९॥

रथना काव्य

संदत सोलहसें उपरै । सांवल द्रव्यावन आगरै ॥
 मांस असाठ पहुँतौ आइ । वर्षारित को कहै बडाइ ॥३०॥
 पक्ष उजाली आठै जानि । सुकरबार बार परवानि ॥
 कवि परमल जगुध करि क्षित् । आरंभ्यौ श्रीपाल चरित् ॥३१॥
 बाबर पतिसाहि होइ गयो । तासु साहि हमाउ भयो ॥
 ता सुत अकबर साहि प्रवान ॥ सो तप तण्यौ दूसरी मान ॥३२॥
 ताके राज न कहूँ अनीति । वसुधा सकल करी बसि जीती ॥
 जंबुदीप तास की अति । दूजौ अकबर न ताहि समान ॥३३॥
 ताके राज क्या यह करी । कवि परमल प्रगट विससरी ॥
 जंबुदीप प्रगट सुप्रधान । जोजन लक्ष नाम परमान ॥३४॥

जा चहु फेरि सिंध जल बहै । कोऊ जाको पार न लहै ॥
तामैं भरहथेत परवान । सब ही क्षेत्रनि मैं परधान ॥३५॥

मगध के राजा श्रेणिक का वर्णन

मगधह नाम राज' तिह देस । भूमंडल में सुजस असेस ॥
नथर राजिगर सुजस बसाइ । ताको सोधा कहीं न जाइ ॥३६॥
अमरपुरी अमरनि की जिसी । है प्रसिद्ध महिमंडल तिसी ॥
सुन्दर गृह सतयने अबास । बाडी बाग कुवा चहुं पास ॥३७॥
श्रेणिक राव तिहां अरिसल्ल । करै राज प्रगट्यौ भुव मल्ल ॥
एक छत्र निवसै इह रीति । बमुधा सकल करी बसि जीति ॥३८॥
कथा नाथ है ताको नाम । पुन्यवंत सबको सुषधाम ॥
ताकें सत्तसील जानियै । धरमात्मों बसै बानियै ॥३९॥
कोऊ ताकें दुषी न लोइ । दया दान पालै सबकोइ ॥
ताकें बहुत महासुत जान । तामैं बारिषेन परधान ॥४०॥
तसु रांगी चेलणा परधान । सत्तसील अरु गुणह निधान ॥
कछु सुन्दरता कहीयन परै । दरस होत पापनि को हरे ॥४१॥
मिथ्या दरसन रीति सुजांनि । समकित की परतीति बषांनि ॥
अरु अति जनधर्म की लीन । दया दान पालन परबीन ॥४२॥
करै राज श्रेणिक नर पार । बहुत राइ सेवै दर बारि ॥
एक दिवस सिधासनि आइ बैठ्यो सिर परि छत्र धराइ ॥४३॥
सेषग लाभ सेव ता करै । हय गय गाह चौर ह्वै करै ॥
तिह अवसरि आयो वनपार । हर्षकंत मनमोहि अपार ॥४४॥

श्रेणिक के दरबार में वनपाल का आगमन

छह रित के जु फूल भए । अति मनोग राजा को दए ॥
विपुलागिर परबत परवान । आयो समोसरण तिह धान ॥४५॥
चतुर्विंशतमौ क्षीर जिनंद । दरस होत दुख दुरति निकंद ॥
कोतूहल कछु कछो न जाइ । सुगं लोक तिह कां रह्यो आइ ॥४६॥

इंद्र चन्द्र धरनिद फुनेस । तिनको बहुत आहि अलबेस ॥
अस्तुति करत जोरि दो हाथ । ठाढ़े रहत सुनी हो नाथ ॥४७॥

श्रेणिक द्वारा महावीर बन्दना

अमर खचर गन ग्रंथप जिते । सेव करन आवत है तिते ॥
अंसो सुनि आनंछी राउ । साँझ ताहिं तिहू किथी पसाउ ॥४८॥
कर कंकन आभरन अपार । दीनों ताहि न सार्ह बार ॥
आसन ते उठि ठाढ़ी भयो । मनकी भरम सब भजि गयो ॥४९॥

तिहू ठा उपज्यो सुख असेसु । तीन प्रदक्षणा दई नरेसु ॥
वाधिए ज्यौं मनमै सुष पाइ । फलि गयी सो अंगिन भाइ ॥५०॥
आनंद भेरि धाइ सुख लह्यो । परजन सहित राइ उमगह्यो ॥
पाठवर्द्धना गुणनि अंगि । नारि चेलणा ताकै संग ॥५१॥
गुण बरतत सो पहुँचौ तहां । समोसरण श्रीजिन को जहां ॥
द्वादस कोठा देखन आए । धनपति आइ आप निरमए ॥५२॥

तिनकी सोभा बरनि जौ कह्यो । कहत कथा कछु अंत न लह्यो ॥
मानस्यथ देखियौ राइ । अति आनंछी चित्तन समाइ ॥५३॥

तब जिनवर युक्ति लाय्योकरण । जय जय जरा जनम मी हरण ॥
जय जय उदति नभ जोति जिनेस । जय जय मुक्ति बधू परमेस ॥५४॥
जय जय छियालीस गुणमंड । जय अतिसै चौतीस प्रचंड ॥
तीन लोक की सोभा जाहि । कोऊ और न उपमा आहि ॥५५॥

जय जय केवलज्ञान पयास । जय जय निर्वासन भव आस ॥
जय जय मोन रहित जिनदेव । नर सुर असुर करै जा सेव ॥५६॥
जय जय अस्तुति राव करेइ । बारंबार प्रदक्षणा देइ ॥
नयों प्रतक्ष दुःख भजि गयो । मन जब काय सुष अति भयो ॥५७॥

भीतम स्वांभी गणहर आहि । नमस्कार वीर्यी नृप ताहि ॥
जिहू ठा अजिकानि को साथ । बंदन करै तहां नर नाथ ॥५८॥

अरु पुल्लक तहां जुरै आहि । समाधान तिन पूछै राइ ॥
साके हृदै कछु न कुभाव । नर कोठा तहां बैठ्यो राव ॥५९॥

श्रेणिक द्वारा सिद्धचक्रवर्त्त कथा जानने की इच्छा प्रकट करना

श्रेणिक पूछे वीर जितेसु । सिद्धचक्र कस कहि परसेसु ॥
गुण अनंत राजे सरबंग । वाणी तब उच्छरी अमंग ॥६०॥
गोतम स्वामी गुणह निधान । लागी परिछन केवलनांन ॥
सुनि सुनि श्रेणिक राज प्रबानि । सिद्धचक्र अत कहौ बषानि ॥६१॥

कथा का सारगम्य

जवूदीप मनोनि उदार । जोजन लच्छि तास विसतार ॥
छार सिधु ता चहुं धां बहे । अति अयाह को पारन लहे ॥६२॥
ता मै भरह क्षेत्र भो गार । नब ही क्षेत्रनि मै अधिकार ॥
तामहि अंगवेश परवान । अवर देन ता गम नहि आन ॥६३॥

चम्पापुरी का वैभव

तहां नगर चंपापुरी वस । देखत जाहि चित्त उत्तहस ॥
सोहैं गृह सतषने अग्राम । द्वारे कंचन काजस निवास ॥६४॥
घर घर प्रति चौतरा सुठान । अति उज्जल ते फटिक समान ॥
विचि विचि हींगुर कन्यों सुरंग । ते चमकत देगियौ सुचंग ॥६५॥
घर घर सब लोग परधान । लक्ष्मीनेन गरव गुन जान ॥
घर घर सुर वेद धुनि धरै । सहैसकत भाषा उच्चरै ॥६६॥
सामोदक व्याकरण पुरान । घर घर कीजे अरथ बषान ॥
जोतिम अरु वैदक गुन लीन । सब नर कोक कना परबीन ॥६७॥
सब को दया धर्म व्योपरै । परसंग नहि कोऊ करै ॥
अति रमनीक हाट बाजार । बसै तहां नर साहु सा धार ॥६८॥
विराजै नग निरमोलिक चुंभी । तिनको अस बोळै सब हुंभी ॥
कहुं होइ बालक देखनौ । सो कछु ताहि कहत नहि वनौ ॥६९॥
कहुं कहुं नाचक नाचै ठाट । कहुं कहुं जाचै वंभन भाट ॥
कुली छतीस बसै तहां लोइ । कुल की रीति न छांडै कोइ ॥७०॥

अपनै अपनै पित सब सुखी । तिह पुर कोऊ नाही दुखी ॥
 भास पास खातिका सुवान । बहुत बावरी कुवा निवान ॥७१॥
 अरु तिहां बागर बांमे खरे । सघन दाष दारूचौं दुम फरे ॥
 बहुत भांति भूमत फल रुख । देषत जिनै न लागै भूख ॥७२॥
 फरे नारियर अंब अमंग । बहुत करि नारिगि सुरंग ॥
 अगिनत केला प्रीर थिजूर । रहे विजौरे जहां तहां पूर ॥७३॥
 कुसुम कदम रहे बहु फूल । रहे अमर तिनके रसभूल ॥
 तिहकी सोभा कहियन जाइ । जोजन वास रही महकाइ ॥७४॥

वस्तु बन्ध

केवरो केतकी मरओ मोगरी अरु जाइ,
 गुलाब कुंजौ अवर करणी रह्यौ तहां महकाइ ।
 मंजरी अरु जुहो चंपौ राइ बेलि सुवास,
 पाबर निवारी राइ चपी देखत बढै उल्हास
 फूली चंभेली सरपडी मचकुंद सोभित भूल,
 अबर एक सुमंघ जित कित बहुत फूले फूल ॥७५॥

श्रीपई

महा फूल फूले बहु भाइ । सोभा कछु कही नहि जाइ ॥
 कोकिल बोलत भवुरी भाष । सारो सूबा अगनति साथ ॥७६॥
 पांडुक पुमरी अवर चकोर । कहूंक बोले विचि विच मोर ॥
 जो सब पंषी वरनन कहौ । कहत कछु इक अंत न लहौ ॥७७॥
 अरु तहाँ सुभर सरोवर भले । मानौं उमगि प्राप ही चले ।
 तिनमैं अंबुजु बहुत विसाल । तैत वास लुबधे अनिमाल ॥७८॥
 चकवी चकवा केलि करांहि । जल कुकरी तहां फहरांहि ॥
 जिनकी सोभति मधुरी चाल । रहै निकट बहु जूथ मराल ॥७९॥
 जलचर जीव रहै जहाँ जिते । बढै कथा जो वरनौं तिते ॥
 हँ मनोगि सबही विधि धरी । मानौं इंद्रपुरीधि सिपरी ॥८०॥

अरिदमन राजा

करै राज अरिदमन नरैस । ताकी बहुत आहि अलबेस ॥
 वीरदमन लहुरी ता बीर । कोटी भट यहु साहस धीर ॥८१॥
 हय गय पाइक अगन अपार । परिगह बहुत लहै को सार ॥
 सूर असंघि रहै दरबार । जे काबै छत्तीस हथियार ॥८२॥
 आग्या बेस दिसांतर दूरि । सुजस रह्यो मही मै भरि पूरि ॥
 पट्टण गढ नगर भूपाल । तिनकी आवै बहुत रसाल ॥८३॥

कुन्दप्रभा रानी

एक छत्र सो आहि नरेंदु । मानी सोहै दुजो इन्दु ॥
 कुन्दप्रभा ताकै अरबंग । पाटप्रधानि गुणनि आभंग ॥८४॥
 सीलबति सुंदरि अति सोइ । ता सम और जिया नहीं कोइ ॥
 जैसे रामचंद्र कै सीय । प्रगट पुरांन जनक की धीय ॥८५॥
 जैसे ससि कै रोहणि नेह । जैसे कंजला हरि के गेह ॥
 समयै समये के यहु सुष जिसी । बिलसति पियके संगति तिसी ॥८६॥
 एकै दिन सौरनि अवास । सोइ गई करि भोग बिलास ॥
 सीनि जाम निसि बीती तवै । चौथी जाम आइयो जबै ॥८७॥
 भयो परफूलत ताकी हियौ । अति उत्तिम सुपनी पैधियौ ।
 धवल महागिर कंचन बर्न । कल्पवृक्ष देखियौ रवन ॥८८॥
 तवै तहां अंधकार मिटिगयो । यहु फाटी जब पगडौ भयो ॥
 बहु बुधिवंत सयांनी परी । नाह पासि भावै सुन्दरी ॥८९॥
 सत्रदवन भरीं सुनि सुन्दरी नारि । सुपने की फल कहीं विचारी ॥
 भूधर सुरतरु धवल जु दिठ । ह्वै सो फल मन को इष्ट ॥९०॥
 बहुर्यो जंपै राइ सुजांन । महा कुसल अरु बिनै प्रवान ॥
 सकल परिगह को सुषकार । ह्वै है सुन्दर तोहि कुवार ॥९१॥
 कंचन गिर सम ह्वै है धीर । सोभत नृभम होइ सरीर ॥
 कल्पवृक्ष सम होइ उदार । दुषी बनहि को करै प्रतिपार ॥९२॥

धरमधुरंधर लीनहु जानि । बहुत कहा हीं कहाँ बखानि ॥
 यह सुनि दंपति बहु सुख भए । निवसत धर्म करत दिन गए ॥६३॥
 स्वर्ग धकी सुर चय करि गिर्यौ । राणी गर्भ प्राय संचर्यौ ॥
 भुह पाछर देधापोरवन । पुत्र होहरा भयो जपन ॥६४॥

श्रीपाल का जन्म

धूल पयोद स्तन पय मरे । अकृता नैन देखिए हरे ।
 दसमास भयो गर्भ परवान । अति उदित रवि किरण समान ॥६५॥
 जनम्यो तंदन कुलह पयास । दुर्जन जनको प्रश्रयो त्रास ॥
 सज्जन जन मन भयो आनंद । लसनवंत पायौ कुलचंद ॥६६॥
 ताको भुष देखियौ नरेस । मनबंधित सुख भयो प्रसेस ॥
 कंसाल ताल बाजै अनिवार । वंमन बेद पढे भुनकार ॥६७॥
 भयो उदार अति फूल्यो गात । धन बिलसत को कहँ कछु बात ॥
 हीन दीन जे दुःख निधान । जिनने सुष व्यापे दिनमान ॥६८॥
 हय हाटक मुक्ता भरिधार । बहु धन दीयो मंगन हार ॥
 तब तिन जनम सुफल कै भयो । बालक तीस दिवस को भयो ॥६९॥
 रानी राजा भयो सुष चंग । बालक लयो उठाइ उछंग ॥
 श्रीजिन भवन पहीतौ जाइ । परस महा मुनीसर पाइ ॥१००॥
 जाकी निविकार हीं हियौ । भव सुष सखल छाडि तिन दियौ ।
 ताकै चरननि पार्यो बाल । रुपवंत सो महा गुनाल ॥१०१॥
 मुनिवर आन बोलियौ सीइ । धर्मवृद्धि दीनी मुख जोइ ॥
 नीकै करि मुनिवर सो दीठ । ह्वै है यह सब ही को ईठ ॥१०२॥
 भाष्यो मुनिवर सुषदातार । याहि नाम श्रीपाल कुमार ॥
 अरु याम गुन है अधिकार । बरनत मोहि होइगी बार ॥१०३॥
 यह सुनि निमसकार तब कर्यौ । पहुते धरि मन की दुःख हर्यौ ॥
 जननी जनन लाडियौ जानु । बरस आठ की भयो प्रदानु ॥१०४॥

श्रीपाल की शिक्षा

मुनिवर पास पठन सो गयी । अंशकार प्रथम ही लयी ॥
 गण अक्षर मत्तह भयी लीन । तर्क वितर्क भयी कोक प्रवीन ॥१०५॥
 सामोदिक सीष्यौ सुभ सार । पढ़्यौ ग्रंथ व्याकरण कुमार ॥
 सबही विधि सो कला विनान गीष्यौ बहु सो अर्थ पुरान ॥१०६॥
 कथा बहूँतरि प्रगट विनान । नाद करै गंधर्व समान ॥
 हय गय वाहन रथ विधि आहि । गुन छतीस प्रसिद्ध ताहि ॥१०७॥
 जख तिरिधौ सीष्यौ तिहु बार । तर्क वितर्क पढ़्यौ अनिवार ॥
 जोतिग वैदक गुन सीष्यौ । आगम अध्यातम पढ़ि जियौ ॥१०८॥
 हे प्रसिद्ध विद्या पद जिती । पढ़्यौ कुंभर मुनिवर रें तिती ॥
 जोवन करि आरुद्धौ ब्रह्म । राजा चित्त अल्हस्यौ तबैं ॥१०९॥
 महाबली श्रीपाल सुजान । रूपवंत अरु गुनहु निधान ॥
 अति प्रचंड कोटीमटु सोइ । जाकै दरस अब क्षय होइ ॥११०॥
 कवहुँ मूर्ति न भाई कूर । साहस घोर धरम कौ मूर ॥
 श्रैसी जुगति काल कछु भयी । राजतिलक श्रीपालहु द्यौ ॥१११॥
 भयी निगल्ल को कहै बडाइ । आप काल बसि हूयौ राइ ॥
 हे हैकार कियौ संसार । वीरदमन दुख कियौ अपार ॥११२॥
 श्रीपाल राजा दुप लह्यौ । हृद विचारि सोच करि कह्यौ ॥
 तीन लोक देख्यौ अथगाहि, इहें मारग सबही कौ आहि ॥११३॥
 यह विचारि अपनै जिय धर्यौ । मन कौ सोक दूरि सब कर्ष्यौ ॥
 कुंदप्रभा रासी समभाइ । देखि विचारि रीति यह माइ ॥११४॥
 जो अथ माता कीजै सोग । तौ सब हंसै देस में लोग ॥
 छत्री कुल जाकौ अवतार । श्रीपाल यौ कहै कुबार ॥११५॥
 ताहि सोक पूछिएन जानि । बहोत कहा हौ कहों बधानि ॥
 मोते कछु होइगी जिती । मांजी सेवा करिहौ तिती ॥११६॥
 बात सुनत सुप ताकी भयी । हृद सोक माता कौ गयी ॥
 करै राज श्रीपाल प्रचंड । लीधौ सब रादनि पैदंड ॥११७॥

ताकी सेव सातसं बीर । ते बहु सई जूझ की भीर ॥
 ताकी कीरति भई असेस । कीन बसि और सब देस ॥११७॥
 धर्मरूप राजा व्योहरै । परधन परश्रीय लोभ न करै ॥
 दुर्जन सकल जीति बसि कीए । महा दंड तिन पै तै लिए ॥११८॥

धीपाल के कुष्ठ रोग होना

कोउ अदर न ता अंगर ॥ एक छत्र प्रगट्यो चक्कर ॥
 ऐसी भांति काल कछु जाइ । पूरब पाप उदै भयो आइ ॥११९॥
 कुष्ठ व्याधि राजा कौ भई, हरै हरै सो बरधत गई ॥
 संग सातसं है अति नेह तिनहुं कोठ धियापी देह ॥१२०॥
 बहै राधि पीडियौ सरीर । होइ दुग्ंधा बहुत समीर ॥
 कोठ उमारै बेढपौ राइ । नासि अंगुरी गरि गए पाइ ॥१२१॥
 रक्त पीत जाकै तन दीन । डारै चौर राइ के सीन ॥
 भरै प्रसेदु छत्र सो गहै । देह दाध भंडारी रहै ॥१२२॥
 स्याम दाध जाकै असमान । सो राणै हि छवाबै पान ॥
 मरदन करै जाहि नही कान । पजुवा करवाबै असनान ॥१२३॥
 वरण फबारौ घरै मजेज । भूपति की सु विछावै सेज ॥
 कंठ गुंभ सोहै कुतवार । मूरज बगै सूर अवसार ॥१२४॥
 जाकी कहुं कहुं गर्थी सरीर । सो तर वंकी आहि उजीर ॥
 और दुरगंधि मुप आवै जान । सो निरंद कोहै परधान ॥१२५॥
 काछ दाध जाकै तन आहि सोदल पै सब देखे चाहि ॥
 बहै नांक असमानी मनि करै । ते राजा के पानी भरै ॥१२६॥
 जिनके गात गए खसि वार । ते पाइक देषिए अपार ॥
 ते सिरतेरु पाइते गले । ते निसान बजावै भले ॥१२७॥
 जाकै रक्त बैब तिस वास । सो तर वंकी आहि खवास ॥
 जाकै हरष गिरा बहु करै । बहुतक जन ते नृति करै ॥१२८॥
 महा वाउ बादर भुनकार । जरदौनिया बजावै तार ॥
 जाकै मापी लागै दौरि । दोन बजावै तार मरोरि ॥१२९॥

गरं पांषरे गावै गीत । पातरि नाचै पुर विपरीति ॥
 असी तिहां अपारी होइ । सबनि कोठ जानै सब कोइ ॥१३०॥
 जो सब कोठ दरनि कै कहौ । कहत कहत कछु अंत न सहौ ॥
 इह सामिग्री राज कराइ । सगरी सभा जुहारै आय ॥१३१॥
 कबहुँ न निकरै सैल बजार । गैर महल कै सभा मझार ॥
 सेवग साह जुहारै जिते । राजै देखि बिसूरै तितै ॥१३२॥
 जनमन कहै सब सति भाउ । एह श्रीपाल महाबल राव ॥
 अह यह दया धर्म परवान । राजनीति पालै गुन जान ॥१३३॥
 ताकौ कहा कर्म यह भयो । कुण्ट रोग जाकै तन तयो ॥
 कछु कर्म गति कहियन जाइ । महाभीष नीचनि को राइ ॥१३४॥
 उत्तिम कौ मध्यम गति करै । मध्यम कौ उत्तिम पद धरै ॥
 तूपस्यौ ते नहि कछु कहाइ । घर घर जायस नै पिछताइ ॥१३५॥
 महा कोठ राजा कै अंग । कोठी अंग सात सै संग ॥
 बहु दुर्गंधता बढी अपार । फैलिगई सब नगर मझार ॥१३६॥
 जत्र बयारि बढै नहि घटै । तब सांक सबही की फटै ॥
 बहुत आत को कहै बढाइ । कोऊ नगर न भोजन खाइ ॥१३७॥
 कोऊ बिनती सकै न मांछि । बहुत लोग गए घर छांछि ॥
 घर घर एक दुलाबो फिरयो । रघति लोग नगर को घिरयो ॥१३८॥
 जो आत्रे सो कहौ विचारि । महा दुष बयौ सकै सहारि ॥
 कोऊ कहै भजौ हरिवार । जैसै राजा लहै न सार ॥१३९॥
 कोऊ कहै असी न करेहु । आइस मांनि राइ पै लेहु ॥
 बनिये भाजै छांछि धनधाम । मरिहै दुष देखि बेनाम ॥१४०॥
 आपस में सब मती कराहि । आवो बीरदमन पै जाहि ॥
 जो आइस देखै हम जोग । सोई मांनि लेहु सब लोग ॥१४१॥
 मोती रतन थार भरि लए । सब मिलि बीरदमन पै गए ॥
 जाइ भेट ता आगै धरी । नाइ सीस सब बिनती करी ॥१४२॥
 महादुष सबको संदेह । स्वामी हमको आइस देहु ॥
 तेरै देश अंत कहूँ रहै । राजा सौ बयो निकसन कहै ॥१४३॥

जाकै राज सुख हम लयो । दुख दरिद्र सब ही को गयो ॥
 जाकै राज धर्म की वास । सबै करतु हें भांग बिबास ॥१४५॥
 जाकै राज पाप की हांनि । जाकै हिरदै दया की षांनि ॥
 जाकै राज सूल सब गये । हम धन परियन परे भए ॥१४६॥
 जाकै राज सुवस ह्वैं बसे । कबहूँ दुर्जन दुषन केसे ॥
 जाकै राज सबै जन सुखी । जीव रूप कोऊ नहि दुषी ॥१४७॥
 कुष्ट रोग अब ताकौ भयो । नासा पाइ अंगु गरि गयो ॥
 अब जे अंग सातसैं बीर । तिनहूँ को गरि गयो सरीर ॥१४८॥
 तिनकी महा दुगंधा होइ । सब ही पुर में फैली सोइ ॥
 दिन द्वै च्यारि अंत बिनि भए । कछुक मूए कछू भजि गए ॥१४९॥
 जो अैसी कहूँ सुनिए कान । तौ भोजन नहि जाई खान ॥
 फैली वास नांक रुधि रही । अब ज्यों हम तुमस्यौ नहि कही ॥१५०॥
 महा कष्ट भूले सब बाउ । सब ही नगर भयो कहूँ राउ ॥
 क्यों हूं कोऊ धीर न धरैं । स्वांसी हम पै राखी नहि परैं ॥१५१॥

प्रजा का महत्व

सुनि मनमोहि जितवैं राउ । अब यहू कीजै कहा उपाउ ॥
 जो घर में श्रीपाल रहाइ । तौ मोते सब रइयति जाइ ॥१५२॥
 रइयति बिनि सोभा नहि रहै । रइयति बिनि को राजा कहै ॥
 बिन पंषनि है पंपी जिसी । हूं रइयति बिनि दीसैं तिसी ॥१५३॥
 बिन पाननि तरवर जो चाहि । रइयति बिन जो राजा चाहि ।
 बिन पानी है जिसी तलाव । रइयति बिन है तैसो राव ॥१५४॥
 जैसी है उडगन बिनु बंद । रइयति बिन है तिसो नरिंदु ।
 बिन रुखनि जैसी वनु जानि । बिन रइयति भूपति त्यों मानि ॥१५५॥
 जैसी सघन घटा बिनु मेह । रइयति बिन त्यों राजा एह ॥
 बिन हथ्यार ज्यों सुभट अनूप । तैसी रइयति बिनि है भूप ॥१५६॥
 बार बार बिचारैं राउ । अब तैसी कीजिय उपाउ ॥
 जैसैं सब रइयति जो चहै । श्रीपाल अब मारगु गहै ॥१५७॥
 रइयति की हम उपरि छांह । रइयति बसै हमारी बांह ॥
 अैसैं कहै सयाने सोइ । राजा प्रजा बरावरि दोइ ॥१५८॥

बीरदमन यह चित्तै धरी राखै रहयति राज उपमरै ॥
 बीरदमन जैसी मनि लाइ । मंत्री लीने पासि बुलाइ ॥१५७॥
 तुम कहौ श्रीपाल सौं जाइ । जैसी वार्क हिए समाइ ॥
 रहयति कं मनकौ दुख जिसी । कहियौ भांति भांति करि तिसी ॥१५८॥
 तब मंत्री नृपकौ सिर नाइ । बिनयो श्रीपाल सौं जाइ ।
 कछु बलन जो मनमें रही । मंत्री जाइ राइसौं कहीं ॥१५९॥
 सुनन बात भ्रान्त्यौ राइ । मनमें कछु न कियौ कुभाइ ॥
 समो देखि मंत्री उठि गयी । देम बटी को कारण थयो ॥१६०॥
 तीज पान कौ बीरा लबी । आपुन श्रीपाल को दयी ।
 वन उद्यानि साइस धीर । जाइ असुभ भुंजौ बरवीर ॥१६१॥
 जीलौ कुष्ट व्याधि तुम अंग । जीलौ अंग सातसै संग ॥
 इह असुभ भुंजौ बर वीर बनमें जाइ मठ देवल तीर ॥१६२॥
 जीलौ उदै कुवर तो पाप । तीलौ नहि कीजिए संताप ॥
 जीलौ शुभ न प्रसिद्धै आइ । तीलौ घर मति आवै राइ ॥१६३॥
 होइ पुन्य प्रगटै तुम तनी । आइ राज कीज्यौ आपनी ॥
 जाकौ राज भार तुम देहु । सोई करै धरै जिय नेहु ॥१६४॥
 यह सुनि श्रीपाल उचर्यौ । कछु कुभावन जिय में धर्यो ॥
 कर्म तनीं जान्यौ सुभ भाव । मनमें विचार कियौ सब राइ ॥
 सुनहु तात भाष्यौ व्योहार । मेरो ऊहो इह विचार ॥१६५॥
 मेरी बडी दुर्गंधा धनी । होत हूँ नगरी सो तनीं ॥
 बिनती करि न सकै को आइ । मेरै चित धोती इह भाइ ॥१६६॥
 मेरी दुःख विधाप्यौ हियौ । मैं हूँ बन ही को मनु कीयौ ॥
 भली भई तुम निकसन कह्यौ । या को सुप बहुत मैं लख्यौ ॥१६७॥
 तुम सब लेहु राज को भार । परजा कीज्यौ सकल प्रतिपार ॥
 न्याव नीतिं करि कीज्यौ सुषी । सुनिन कोई होइ न दुषी ॥१६८॥

सौरठा

जो उबरैगे प्रांन, कुष्ट रोग जो नासि है ।
 तीहूँ इंद्र सभान, राज करौंगो आइकै ॥१६९॥
 जो लग पूरब पाप मी, उदै फिरंगी साथ ॥
 ती लग अपनौ भुंजि ही, राज तुम्हारै हाथ ॥१७०॥

बोहा

चौपई

सबै राज सैं दीजौ तोहि । मन सैं तात राखिजौ मोहि ॥
कुंदप्रभा को देकर भार । निकस्यौ तब श्रीराल कुंवार ॥१७१॥
ताकैं बनी सात सैं अंग । कोही सबै लागिगैं संग ॥
बुरे भेस दीसैं सब जनां । सोई कमर को वोढ़ता ॥१७२॥

श्रीपाल का नगर श्याम

राज विभूति जिसी वरनई । सामग्री सब गोहन भई ॥
जब थे गांव बाहिरे भए । लोचन वीरदमन भरि लए ॥१७३॥
शेवैं सब नग्री को लोग । विधनां तैं कित क्रियो वियोग ॥
घर घर सोय सबै जन धरै । अति बिलषाइर करनां करै ॥
घर घर करै अमंगलचार । मूल्यौ सखति सुख अभिकार ॥
घर घर मूँननां होइ गई । पुर सैं राति चौस तैं भई ॥१७४॥
वे चलि दूरि पहुँते जबै । कुंदप्रभा सुदि पाई तब ॥
तिन मनमें दुख कर्यौ असेस । आजि मूर्यौ अरिदमन नरेस ॥१७५॥
गैह भरि नैननि मूँकी धाह । अब हूँ निश्चिं भई अनाह ॥
विधनां इह दूभिण न तोहि । पूत बिछोह दियौ कात मोहि ॥१७६॥
वीरदमन राषि समझाइ । कछू कर्मगति कही न जाइ ॥
सुभ अरु अशुभ जु लिखी बिलार । को है ताहि मिटावन हार ॥१७७॥
अब यह होनहार सो भई । सब सामग्री देखन गई ॥
कर्मयोग क्यों भेट्यौ जाइ । तागों कहै बात समझाइ ॥१७८॥
जौ लौ अशुभ जोग तनु दहै । ती लौ श्रीपाल बन रहै ॥
बहुर्यौ सुष देखंगौ घनौ । आइ राज करि है आपनौ ॥१७९॥
माता मूलि करी सति सोय । दांता देवनि पर्यौ वियोग ॥
मानस कौन वांनमें जांनि । सुविनौ सो तू मर्ममें आनि ॥१८०॥
कुंद प्रभामन गाडीं कियो । धरम ध्यान परिचित राखियो ॥
लेइ जाय जिनवर संभर्यौ । मुनिवर दांत मान आचर्यौ ॥१८१॥
श्रीपाल पहुँचौ ज्ञान । रहै गवैं मठ देवल धान ॥
राज विभूति सबै ता संग । कांढारुढ रावनि कौ अंग ॥१८२॥

इति श्रीपालचरित्रे महापुराणे भव्यसंग मंगलकरणां ॥
 बुधजन मन रंजन पातिस गंजन सिधचक्र विष दुषहरणां ॥१८३॥
 त्रि भूवन सुषकारण, भवजल वारण, चौपई बंध परिमल्लकृत ॥
 सातसै अंग ताकै संग, श्रीपाल उद्यान भ्रमे ॥१८४॥

द्वितीय सर्ग

चौपई

श्रीपाल उद्यान में रहै । कुष्ट व्याधि व्यापै दुख सहै ॥
 इतनी कथा रही इह ठौर । अंतरकथा सुनो अब और ॥१८५॥
 नीकै करि हौ करी बधान । पंडित भव्य सुनो डै कान ॥
 देस भालबो सो सुषधान । मध्य लोक मै प्रगट्यौ नाम ॥१८६॥

उज्जयिनी वर्णन

दुःषनि जिहू ठी बासुर रैन । सुबस बसै तहां नगर उजैन ॥
 नौ कोसकी बसै चकराइ । बारहू कोसो बसै लम्बाई ॥१८७॥
 श्रीनिवास महाजन जहां । चौथी काल प्रवसै तहां ॥
 बनय रयण मणि मंडप जरी । अतिरबनीक मनोहर खरी ॥१८८॥

पुहपाल राजा

राजकर पुहपाल नरेस । ताकै परिगह बहुत असेस ॥
 जोधा बहुत सेवता रहै । रण संग्राम जुबै निरबहै ॥१८९॥
 एक छत्र सो राज कराइ । ताकी कीरति कहीय न जाइ ॥
 ज्यो माता सुत उपरि भाउ । त्यो परिजा प्रतिपाल राउ ॥१९०॥
 ताकै कामिनि बहुतक गेह । अति गुनवंत रूपकी रेह ॥
 जी सब नाम तरनि कै कहौ । कहत कथा कछु अंत न लहौ ॥१९१॥

पट्टराभी सुन्दरी

पाट परधान नाम सुन्दरी । भनौ आइ रम्भा प्रीतरी ॥
 अति सरूप देवगनां कही । कामदेव ज्यो रतिपति अही ॥१९२॥

संकर कै ज्यो पारवती रती । अति सरूप सीता सम सती ॥
ताके गरम सुता द्वै रही । रूपवंत द्वै पंडित सही ॥१६३॥

दो कन्याओं का जन्म —

दोऊ अति गुनग्य औतरी । अति लावनि विराजै षरी ॥
प्रथम कुंवरि सुरसुन्दरि आहि । बहुत रूप सोमित है जाहि ॥१६४॥
परि सिवधर्म बसै ता चित्त । कुगुर कुदेव सुध्यावै नित ॥
कछु बिबेक ताहि नहो होइ । इछं ससारह सुष सोइ ॥१६५॥

मैनासुन्दरी

लघु कन्या मैना सुन्दरी । रूपवंत अरु सब गुन भरी ॥
अंग अंग की सोभा जिसी । बड़ कथा जो बरनी तिसी ॥१६६॥
अरु अति जैनधर्म परबीन । सीलवंत रत्नत्रय लीन ॥
निर्मल जाको हिरदो जोइ । कपट बचन बोलै नहि सोइ ॥१६७॥
बहुत विवेक चित्त ता रहै । मिथ्या बचन भूलि नही कहै ॥
सब सखियन में सोमै खरी । ज्यों सरिता मोहै सुरसरी ॥१६८॥
मधुर बचन बोलै बिहसाइ । सब कुटुंब राजै सुखपाइ ॥
आए घाए प्रिय अंकी भरे । रहसि खिलाइ लगावै गरे ॥१६९॥
और बहुत को कहै बषांन । तिहकीं उपज्यौ बहुत सयानु ॥
आपन मंत्री विचारै राइ । अरु तिन लीनी प्रिया बुलाय ॥२००॥
जुगल रवानी दोसै एहु । देषत नैननि उपजै नेहु ॥
मेरै जिय इह कहौ विचारि । इनै पढावै सुनि वरनारि ॥२०१॥
सुनौ राइ इन भावतो जहां । दोऊ कुंवरि पढावौ तहां ॥
तिनै बिहसि करि पूछै राउ । पुत्री कहौ आपनी भाउ ॥२०२॥
जो गुर भावहि तुमहि सुबांन । तापै विद्या पढी पुरांन ॥
सुरसुन्दरी कहै सुनि तात । सांखी कहौ आपनी बात ॥२०३॥

सुरसुन्दरी का विद्याध्ययन

दिन दिन बुधि होइ गुन बढ़ी । अब हूं निज सिषगुर पै पढी ॥
राजा भली भली वरनई । कुंवरि उठाइ उद्योगह लई ॥२०४॥

शिवगुर तब वा लियो बुलाय । नाउ करण सु को कहै बढाउ ॥
 बोल्यो निकट कहै तब राज । विद्या सुरसुन्दरी पढाउ ॥२०५॥
 जितनी होइ कला अह भ्यान । सब सिपाइ ज्यों अरथ पुरान ॥
 भली भली पांडे उचरि । सो परि कथा गुसाई करी ॥२०६॥
 जो सौप गुण हो है राइ । याहि पढाउ सवनि कु ताइ ॥
 सुनी वात सब तुल्यो राइ । कछुक ताको कियो पसाय ॥२०७॥
 तब तिह भूपहि दइ असीस । जुग जुग जीवो कोडि बरीस ॥
 महिमंडल मैं प्रगटौ आन । राज तेज बडौ दिनमान ॥२०८॥

सोरठा

जौ लौ ससि अह भान, जल गिर मेरु सहि उपर ॥
 ती लघु इन्द्र समान, मंगल होहि नरेस घर ॥२०९॥

चौपई

विप्र गयी घरि कुंदरि लिवाई । लाग्यो ताहि पढावन जाइ ॥
 मैनासुन्दरि स्यो नृप कहे । पुत्री कहा तोहि मनु रई ॥२१०॥

मैनासुन्दरी की शिक्षा

सुनी तान हो कही सुभाइ । पढिहो जिन चैत्यालय जाइ ॥
 दंपति सुख सब भयो अभंग । पुत्री लई उठाइ उचंग ॥२११॥
 रानी राउ और जनभए । पुत्री लं देवाल गए ॥
 पूजा अष्ट प्रकारी ठई । जैसी परम गुरनि बरनई ॥२१२॥
 जल गंधाक्षत पुष्प अनूप । नईवेद दीपक अह भूप ॥
 नाना विध फल घरे बनाइ । दियो अरघ मन बच अह काय ॥२१३॥
 पुनि तिह ठां पैषियो मुनिद । जय जय तब उचरं नरिद ॥
 बंसी सुधभाव जिएराज । भवसमुद्रह तिरन जहाज ॥२१४॥
 ध्यावैं चैयण गुण जु अषंड । तीन गुपति पालन गुरामंड ॥
 भव्य कुमुद परफूलण चंद । बरसत ताहि बडै आनन्द ॥२१५॥
 मिथ्या तिमर विनासन आन । जिन निजुक छांड़्यो भय थांत ॥
 सद्यु मित्र जाकै इकसार । मन के जिह सब तजे विकार ॥२१६॥

बाईस परीसा सहन समय । केहरि दलन पंच मृग मथ ॥
 तीन प्रदक्षिना दई समीप । नमस्कार सब कियो महीप ॥२१७॥
 हरषवंत मनमांहि अपार । बंदे चरन कवल नरपार ॥
 दंपति पुत्री मैनासुन्दरी । बैठी तहां मुद मन खरी ॥२१८॥
 जंप राउ हरष अति गत । स्वामी सुनी कही इक बात ॥
 लहु पुत्री मैनासुन्दरी । अपने जिय एह इच्छा करी ॥२१९॥
 पुत्री कहै जोरि द्वै हाथ । विद्यादान देहु अगनाथ ॥
 नरपति कहौ सुनी मुनि जाम । दया करी ता उपरि ताम ॥२२०॥
 अजिया एक सील का पांथ । दया धर्म छिह लोथी जानि ॥
 मन बच काय सुधता चित्त । जाने एक सत्र अरु मित्त ॥२२१॥
 रत्नत्रय व्रत पालन आहि । मुनिवर पुति समर्पौ ताहि ॥
 रानी राख हरष अति गए । नमस्कार करि घर तब गए ॥२२२॥
 मैनासुन्दरि कै मन चाउ । अजिया को ता उपरि भाउ ॥
 प्रथम पढायी बेंवकार । दुःख हरन त्रिभुवन में सार ॥२२३॥
 पढ़िया बारह मल बितेस । जातै उपजै बुधि असेस ॥
 पढ़ि लीनों नीक करि चाहि । लघु दीरघजे अक्षर आहि ॥२२४॥
 जानी लोथह थित्ति बिचित्त । पढ़िया चरित पुरान पबित्त ॥
 गन अरु अगन मिलेई जानि । काठ्य अनेक मुकहै बषानि ॥२२५॥
 जोतिष पढ़्यो इसी परवानि । आगम अरु अध्यातम जानि ॥
 लोथ्यो तिन संशीत पुरान । नाटिक साटिक करै बषानि ॥२२६॥
 तर्क ब्रह्म पुत्री पढ़ि लियो । छह दरसन तिन उत्तर दियो ॥
 भाषा सोजु अठारह पढी । विद्या करि दिन ही दिन बढी ॥२२७॥
 कला बिनान बिचछन भई । पुनि मुनिवरह पढावन लई ॥
 चारि ध्यान अणुवत जु पंच । सोलह कारन भावना संच ॥२२८॥
 रत्नत्रय विधि गुनह निधान । दह लछिन जो घरम प्रवान ॥
 जो कछु द्वादशम मै कही । सो विद्या सब सुन्दरि लही ॥२२९॥

दोहा

मुनिवर पै सब गुन पढ़्यो, कियौ कुंवरि आनन्द ॥
 मन, बच काय त्रिबुद्ध हूँ, बांन्यी पाप निकन्द ॥२३०॥

मन में पुत्री कियौ आनन्द । जान्यौ निहचै पाप निकन्द ॥
श्रीजिन पूजा करि मनु लाइ । मुनिवर के बंदे तिन पाइ ॥२३१॥

दोनों का अध्ययन समाप्त कर आना

निज जननी हू बैठी अहां । सुरसुन्दरि पढ़ती तहां ॥
प्रथम पुत्री बहु पढ़ै पुरांन । सामुद्रिक व्याकरण सूत्रान ॥२३२॥
कोक कला नाटक गुन जिते । पढ़े कुंवरि सुरसुन्दरि तिते ॥
पांडि गुनि, महा विचक्षण भई । तब पांडेस्यौ गोहनि लई ॥२३३॥
राजा पासि पढ़ती जाइ । पुत्री देखि राज बिहसाइ ॥
तबहि विप्र बोल्यौ करि सेव । मेरी बात सुनौ हो देव ॥२३४॥
पुत्री के मन को तम गयो । बिद्या दान याहि सैं दयो ॥
और कहा हूँ कहूँ बचानि । करौ परीक्षा आपुन जानि ॥२३५॥
तब राज अति हर्षित भयो । बहुत दान पांडे कौ दयो ॥
दे असीस सिखगुण घरि गयो । पुत्री सभा देखि सुखभयो ॥२३६॥
जो जो बात पयासै कोइ । सो सो निरभासै कहि सोइ ॥
चपल चित्त जोवन श्रीलही । राजा पासि बात तिन कही ॥२३७॥
अरध सिधासन जाइ बईठु । दह दिशि जौवै चंचल दीठु ॥
राजा कही समस्या तेन । लहिमै कहा कुंवरि पुन एन ॥२३८॥

बोहा

पुन्यह लहिए एह, बिद्या जोवन रूप धन ॥
घरि परियन कैं नेह, मनबंधित सुष पाइये ॥२३९॥

शोपई

तब नृप रह्यो मुहां मुंह चाहि । नीक करि मन चरख्यो ताहि ॥
मांगि पुत्री वरु जो मन बसै । देषत ताहि चित्त उल्लसै ॥२४०॥

सुरसुन्दरी का विवाह

सुनौ तात हौं भाषी तिसी । मेरे मन में बर्तत जिसी ।
कौसम्बीपुर को नृप जान । बहुत सैन है सुमै समांत ॥२४१॥

ता नन्दन हरिबाहन बरी । ताही रूप मोही सुन्दरी ॥
 नीकी बरु मो भायी तात । सांची कहौ आपनी बात ॥२४२॥
 सुनि करि राउ बिचारे हियँ । वाही जोग वने वा दियँ ॥
 वोल्थी विप्र राइ यौ भनी । शुभ दिन जोग महरत गनी ॥२४३॥
 ताकी बिधि सौं कियो विवाह । सबही जन मन भयी उछाह ॥
 उनहू सुष मन भयी अनन्त । कौशम्बीपूर गए तुरन्त ॥२४४॥

मैनासुन्दरी का चापिस श्राव

मैना सुंदरि पहुँती तहां । नंदीसूर की प्रतिमा जहां ॥
 तूना करी सुग गनु दियो । १२ दि देना गंधोदिक जियो ॥२४५॥
 कछु न चित्त विचारी और । गई तहां राजा जिह डोर ॥
 आव आव राजा उच्चरयो । गंधोदिक लै आगैं धरयो ॥२४६॥
 हाथ हि हाथ अठोत्तर भरे । आइ जिनेसुर कै सिर डरे ॥
 इसौ गंधोदिक है अतूप । सुर नर नाग लियो करि चूप ॥२४७॥
 कहै राउ कहि पुत्रि बिचारि । यह कहि आहिनु कहहि कुवारि ॥
 मैना सुंदरि उचरै बात । गंधोदिक जिनवर को तात ॥२४८॥
 होइ दुर्गंध देह जादनें । सुंदर दिव्य होइ जा लगै ॥
 नैन निरंघहु नर औतार । नैक लगै देखै संसार ॥२४९॥
 नैक लगै अरि कर्म निकंद । जाकी इच्छ करत है इंद ॥
 जनम भयी तीरथंकर जब । साइर लै सुर लाए तब ॥२५०॥
 हाथ हि हाथ अठोत्तर भरे । आइ जिनेसुर कै सिर डरे ॥
 सुर अरु असुर इंदु हरसियो । बारंबार अंग परसियो ॥२५१॥
 तात सुनहि गंधोदिक सोइ । करै बंदना परमगति होइ ॥
 तब भूपति लै बंदनां करी । धरमलीन पुत्री है खरी ॥२५२॥
 राजा हर्षित हूवो जांम । अर्घ सिंघासन बैठि ताम ॥
 मां सिर चूंबि पूछि भरि तेह । पूत्री कहौ परीछरा एह ॥२५३॥
 कीजै पुन्य चित्त धाइयै । तातैं कहां लवधि पाइयै ॥
 सुनि सुनि तात पयासौं तोहि । जौ नीकैं करि पूछौ मोहि ॥२५४॥

दोहा

जिन सासन निरगंध गुरु, व्रतह निर्मल देहु ॥
 मुक्ति धाम सब सुख करन, पुनहु लमै एहु ॥२५५॥

चौपई

सुनि निरंद भए लोचन भीन । कही साधु पुत्री परवीन ॥
फुनि तिन भाष्यो मन अदिवेक । भलिन वचन तिन बील्यो एक ॥२५५॥

दोहा

अति सुन्दर गुनबत अरु, जो को भावै तोहि ।
आज सु उत्तर समझिकै दीजे पुत्री मोहि ॥२५६॥

चौपई

इन नरनाह माहि जो कोइ । मन भायो वर मांगहि सोइ ॥
ताहि समझ्यो जोगु ज आहि । सबो संन देऊ बहु ताहि ॥२५७॥
तात वचन जब सुनियौ कान । तब चित माहि गए श्रीमान ।
मनमें मयी बहुत अनुराड । मानौ भयो वर को घाउ ॥२५८॥
ऐसी बोल सब नही कहै । चहुं दिशि ओवें चुप करि रहै ।
बार बार सो लेइ उसास । बोलि न सकै राइ के नास ॥२५९॥
राइ वचन मन धर्यो दिखाइ । तापें कछु कह्यो नहीं जाइ ॥
मनमें दुष्ट दुष्ट उच्चर्यो । कहा पाप इन जिय मैं बर्यो ॥२६०॥
अति अकिलेक लीन सो जानि । कुल मारग तिह तज्यो प्रवानि ॥
अलिखी बोल बयो भतिहीन । मूरख कछू लाज नहि कीन ॥२६१॥
बहुत बात को करै बढाइ । याकी है सब नीच सुमाउ ॥
जाकं नही कुल मारग देव । जानै नहीं दह लक्षित भेव ॥२६२॥

मैना सुन्दरी की वशा

जाकं गुर निरगंय न कोइ । ताहि विवेक कहाँ ते होइ ॥
यह पुत्री मन में चितई । नीची दिष्टी न ऊंची भई ॥२६३॥
रही मुरझि मैनासुंदरी । अति विचित्र सबही गुन भरी ॥
तातहि उत्तर कछू नहीं दियो । पिसुन बात तैं कोषी हियो ॥२६४॥
भावे नैक न बात विचारि । संसै दह मैं अरि कृपारि ॥
घरती पीदै दुचिती भई । फुनि नर वंसो पृथ्वी लई ॥२६५॥

सुनि पुत्रि पर उत्तर भासि । कहां चित्त चितई प्रकासि ॥
 जैसै सुरसुंदरि बंछियो । मांग्यो नाह ध्याह करि दियो ॥२६६॥
 त्यों तू काहू राजहि जांनि । परनि कुंदरि मनके सुषमांनि ॥
 बार बार तात यों भर्नै । कुवरी धिरकारै अलगनै ॥२६७॥
 चित्त सुख अजाण्यो राउ । अलि निष्ठष्टु मूरिष अधिकाउ ॥
 जिसो निराकुस अत्त गमहु । करै आप आयो मतिमहु ॥२६८॥
 जैसी बालक होय अयांन । जो सो बोले कछु न जान ॥
 जैसै अंशु बहुत दुष यहै । चहुं दिसि जोवै पंथ न लहै ॥२६९॥
 त्यों नृप लाज दई छिटकाइ । जोय रुचत सो कहत बनाइ ॥
 निज गुर कचन निपोषी अवे । संतोषी परिजन सब तबै ॥२७०॥
 अहं सुंदरि चितई सुमान । सील धुरंधर गुनह निधान ॥
 जपै तात सुनौ करि नेहु । अजुगत बात कही तुम एहु ॥२७१॥
 जिनसूत्रनि मुनिवर नहि भयो सुनहुं तात सबही अवगच्छी ॥
 वर सुंदरि जो होइ कुलीन । लोक लाज नहि तजै प्रवीन ॥२७२॥
 अपजस धाम आहि जो बात । सोई तुम भाषत हो तात ॥
 लोक विरुध आहि यह कम्मुर । मन बांछित वर रहै न धम्मुर ॥२७३॥
 मन भायो जो करै विवाह । लोक सुहांती हास्य उछाह ॥
 कछु रहै नहि कुल की रीति । सब को भावे महा अनीति ॥२७४॥
 अरु चितही तित होइ विचार कोउ न धरै सील की भार ॥
 यहै फेर सब कोऊ न करै । आपु न बंछि बरहि जो वरै ॥२७५॥
 और कहां नो सुनि हो राइ । तो सौं कहीं कथा समझाइ ॥
 श्री आदीश्वर प्रथम जिनंदु । ताकै बारै पाप निकन्दु ॥२७६॥
 प्रगट पुराननि मैं बरनय । कछु सुकछु द्वै राजा भए ॥
 तिनकै भई सुभद्रा दोइ । नंद सुनंदा जानौ सोइ ॥२७७॥
 जोचन वंत भई ते बाल । रूपवंत अरु गुनह विसाल ॥
 तिनहू पै न बंछि बरकियै । रही सदा कुल रीति जु लियै ॥२७८॥
 तात बुधि ताकौं जो दई । आइ सुरन ताकौ परनई ॥
 ते भई लीन जिनेस्वर पाइ । बहुत बात को कहै बढाइ ॥२७९॥
 सो मारग प्रसदयो सुनि बात । मोपै छांड्यो जाइ न तात ॥
 पुंनि ब्रह्मी सुंदरि द्वै पुति । नंदिहि भई सब गुन जुति ॥२८०॥

माता पिता नहि दीनी कासु । तिन सब छांड्यो भोग विलासु ॥
 मन में लाज भई अतिगाह । दुहंनि छांड्यो छिन में व्याह ॥२८१॥
 भई अजिका ते सुभ चित्त । जानै एक सनु भर मित्र ॥
 भेदाभेद कछु नहि जानि । जानै सब जिन धर्म बषानि ॥२८२॥
 लोक विरुद्ध व्याह की लाज । भव सुष छांडि दियो सुभ काज ॥
 अरु सुनि उत्तर कही विचारि । जं बंछी मित्र नैन निहारि ॥२८३॥
 तुमही बेधी सुरसुंदरी । हीन बुधि तिन मनमें धरी ॥
 ताहि दोष नहि दीजै राइ । यह कारन सब गुरु पसाइ ॥२८४॥
 जैसे जीव विचक्षण जानि । है त्रैलोक्य मांहि परधान ॥
 षोढै संग करमकै रहे । निस वासुर महादुष सहे ॥२८५॥

कर्मों की विचित्रता

छिन में नीच कहावै सोइ । छिन ही में उत्तिम पद होइ ॥
 छिन ही में दुष पावै घनों । छिन ही में सुष ह्वै तुम सुनौ ॥२८६॥
 छिन ही में सु कहावै राइ । छिन ही में महारंक ह्वै जाइ ॥
 छिन ही मूक महा भय भरै । छिन ही में संका पर हरै ॥२८७॥
 छिन ही में सौ दुर्गति जाइ । छिन में स्वर्ग पहुंचै भाइ ॥
 जितनै दुष पावै जड एहु । तितनौ कहा कहीं धरि नेहु ॥२८८॥
 दे कछु जीवै खौरिन जानि । कर्म कुसंगति को फलु मानि ॥
 सुरसुंदरी कुमति त्यों लही । कुगुरु पढाई तैसी कही ॥२८९॥
 अरु सुनि राइ बचन दै कान । जानै सुखस होइ परवान ॥
 माइ बाप जाइ गुन सार । कुल उत्तिम जाको औतार ॥२९०॥
 जोवनवन्ति देखै राउ । छिन छिन मन चितवै सुभाउ ॥
 मन बंछ्यो वर मांगै सोइ । सोलवन्त नहि गनिका होइ ॥२९१॥
 बाप विचारै जाको चित्त । पुत्री को जब देखै नित्त ॥
 निर्मै होइ यह दीजै कास । कोबरु जोग सुकलह पयास ॥२९२॥
 यह चित्त परिजन जु महंत । सकल बोल कीजै सुभवन्त ॥
 उत्तिम कुल सोधिजै प्रवानु । विद्यावन्तरु आपु समान ॥२९३॥
 सुज्जन जन सब मंगल करै । होइ व्याह दो कुल उधरै ॥
 कन्या दान भास तव लेइ । सौबो तूठि बहुत करि देइ ॥२९४॥

बिनती करे जोरि दो हाथ । सब कुटुंब सौंपे जो साथ ॥
 भावें अंध होइ मतिहीन । भावें होइ कला परवीन ॥२६५॥
 भावें कुबज होइ तनु बुरी । भावें गूंगु होइ पांगुरी ॥
 भावें रोगी व्यापत पीर । भावें कुण्ठी होइ सरीर ॥२६६॥
 भावें बालक होइ अयान । भावें होइ सर्व गुन जान ॥
 भावें रुद्ध होइ विकराव । भावें जोगी होइ गवार ॥२६७॥
 सब परियन सौंपे जा बांह । चलै कुलीनु तास की छांह ॥
 यह कुल कर्म सुनौ चित लाइ । अरु बिभ्रमु दै सब छिटकाइ ॥२६८॥

कर्म की महिमा

बलि हौ कुल मारग सुनि तात । ह्वं है कर्म लिखी जो बात ॥
 कर्म ही तैं होइ है राइ । कर्महि तैं जु रंक होइ जाइ ॥२६९॥
 कर्महि तैं अस होइ अशंक । कर्महि तैं नर चढ़ै कसंक ॥
 होइ कर्म तैं आछी भाम । कर्म हि तैं पावै सुख धाम ॥२७०॥
 कर्महि तैं त्रिय होइ सुहाग । कर्म रूप होइ प्रगट भाग ॥
 अरु अति सुख कर्म तैं लोइ । दुषी दुहागनि करम ते होइ ॥२७१॥
 कर्म हि तैं जु होइ तन भंग । कर्मतैं होइ सोमित अंग ॥
 यह परपंच कर्म को सर्व । कोऊ और करी मति गर्व ॥२७२॥
 बिघना जौ कछु लिख्यो लिलाव । शुभ अरु अशुभ अंक शुभ सार ॥
 जैसो निमित्त जासको होइ । ताहि मिटाइ सकै नहि कोइ ॥२७३॥
 अमर लखर अरु गरा गंधर्व । आसुर सुर गुर रवि ससि सर्व ॥
 जो ए सब मिली करे सहाव । कर्मरेष नहि मिटि है काव ॥२७४॥
 पुरख ते पछिम रवि उवै । नर फुनि मेरु चूलिका छुवै ॥
 सायर हू पै धरि उड़ाइ । भावी लऊन मेटी जाइ ॥२७५॥
 पवनी जु महि भंडल परिहरै । प्राणी काल हू पै ऊधरै ॥
 आसुर तैं जु निशा फुनि होइ । भावी लिपी न भेटे कोइ ॥२७६॥

पिता का उत्तर

अैसे बचन सुने जब राइ । मन कीर्पत भयी अनुराइ ॥
 सुनि सुनि पुत्री तजौ अयान । कहा कर्म तेरी दिनमान ॥२७७॥

पंचामृत साल्यो दिन होई । छहरस भोजन हम वै सोई ॥
 ते सुष पुत्री भुगतन लेई । तू ती कहै कर्म मो देई ॥३०८॥
 मौ कौ आदि बहुत संदेह । तेरे गुरनि पढायो येह ॥

मैना का प्रत्युत्तर

जब नृप निन्दा गुरु की करी । तब बोली मैनासुंदरी ॥३०९॥
 सुनि अशिवेकी तात बिचारि । तो सौ कहैं कथा विसतारी ॥
 मैं सुभ कर्म कमायो सार । तेरे घरि पायो अवतार ॥३१०॥
 तातैं भोजन भुगतो सुख । पावती नहीं नैकहू दुःख ॥
 कीयी हौं ती अशुभ मैं कर्म । नीच घरं ती लेती जनम ॥३११॥
 तहां दुःख लहती अधिकाइ । सुष तू तहां न देतो भाइ ॥
 कहां अमान होइ नर नाथ । शुभ अरु अशुभ कर्म कं हाथ ॥३१२॥
 तुमती रूपबंत को देहु । अरु श्री तात सर्व गुंनगेहु ॥
 अरु जो होइ महा जड़ मूर । कालहि कोडि कातर कूर ॥३१३॥
 यह तुम सुनो बात सब ठौर । विध्वानि करै और की और ॥
 माता पिता बहुत हित करैं । भावी लिखी न टारी टरै ॥३१४॥

पिता द्वारा रोष प्रकट करना

पुत्री वचन सुनें सब सार । राजहि रिसि उपजी अधिकार ॥
 मन में घरत दुष्ट मति गयो । मुंह करि करि कछु न उत्तर दयो ॥३१५॥
 कवि परमल्ल कहै सत भाउ । मनमें इहै चितयो राउ ॥
 अब हूं निज के परषो तिसौ । देखौ याहि कर्म फल किसौ ॥३१६॥
 जाकी कियो बहुत दिठाउ । देखौ तास करम की सहाउ ॥
 जीयमें इसो पिसुनता धरी । मुंह कहि घनि मैना सुंदरी ॥३१७॥

मैना की सुन्दरता

पुत्री उठि चाली निजगेहु । करी पारनो बीनी देहु ॥
 तात वचन सुनि उठी तुरंत । परफुल्लित मनने बिहसंत ॥३१८॥
 पंथ मांहि सो निकसी जाइ । पुरजन रहे देखनि कुताइ ॥
 धोष रहै मुहांमुह चाहि । यह घौ कुंवरि कौन की आहि ॥३१९॥

काहूतो भैसी बरनई । सुरकन्यां सुरगतें चई ॥
 कोऊ कहै नहीं इह सीइ । यह तो नाग सुता फूनि होइ ॥३२०॥
 काहू कहू इम भैसी भनी । यह पुत्री विषना घर तनी ॥
 काहू तो यह उपमा दीय । काहू आहि जक्ष की घीय ॥३२१॥
 कोऊ कहै को देवी आहि । पटनर दई न सकै हम ताहि ॥
 षोडस बरस चढ़ी परदान । कोऊ रूप न ताहि समान ॥३२२॥
 मैना को जस बरनै इय । ताकी मुष सोहै मकरंद ॥
 लोचन अरुन अवन अति बने । ज्यौ चक्रित भृग स्यावज तने ॥३२३॥
 करे कटाक्ष दृष्टि धनुं बान । भ्रुकुटि कुटिल मनमथ कमान ॥
 मार्थ मंग विराजै बार । अति कोमल अति स्याम सुदार ॥३२४॥
 अवननि कुंडल राजत कंद । मानौ बात कहै द्वै चंद ॥
 नीकै सौभित अधर अभंग । विद्रुम उपम विराजहि अंग ॥३२५॥
 ऊंची नांक इसी जनहारि । जानौ कंचनि घरी सवारि ॥
 दसन पंति दीसै चमकति । कुंडली दाहिम कीसी भति ॥३२६॥
 छोटी ग्रीव मुक्ति की भार । ताकी जोति जग अधिकार ॥
 उर उपरि द्वै सुबनित गुंभ । मानौ मैं कै कंचन कुंभ ॥३२७॥
 मृगपति लंक भव्य अक्षीन । त्रिदलि तरंग सोभ करि लीन ॥
 कोमल पान कमलतर बाल । बाहु जुगल सोमै सुबिसाल ॥३२८॥
 जंघ जुगल कदली कै दूल । कोमल पवा गौर बनफूल ॥
 शंखक बर्न पुष्प तन जानि । अति कोमल को कहै बषाणि ॥३२९॥
 अति सुगंध तासु की सरीर । आबै लपटै बहुत समीर ॥
 अति कुल सँवअसै दिन रैन । चितवत चितचोरै गजनगैनि ॥३३०॥
 महि पर भंद भंद पग धरै । देवत मनमथ को मन हरै ॥
 हंस चाल सी पहुँसी तहाँ । निज घर जननी जोवति जहाँ ॥३३१॥
 दिव्य वस्त्र पहरे सति सची । तब जिनवर की सूजा रची ॥
 अष्ट प्रकारी जिय धरि नेह । मद बच काइ छांडि संदेह ॥३३२॥
 द्वारापेधन भाव तिन कियौ । मुनि कोऊ न तहाँ देख्यो ॥
 भावना भाई पूजी आस । फुंनि भोजन को मइ आवास ॥३३३॥
 स्मृत्यौदन छह रस शुभचिता । पारनै रस तज्यो पवित ॥
 अति सुंदर मुख सोधि जो लई । तदरुचि सी उठि ठाड़ी भई ॥३३४॥
 ऐसें मुष मुंजै बहु बाल । सीलवत अरु गुनह बिसाल ॥
 गाहा दोहा छंद बवेक । परस पग्य भावै सु अनेक ॥३३५॥

मनवांछित सुख लहै प्रबोधन । रहै भक्ति मुनिवर पद लीन ॥
 कबहु न बात पाप की कहै । निस दिन दया धर्म में रहै
 कबहु बात रूसि नहि कहै । सांघी होई सुहिर दै चहै ॥ ३३६॥

दोहा

सुख जननी परियन सयल, श्री जिनवर सुमरंत ॥
 ऐसे बीते बहुत दीन, निजगृह में निवसंत ॥ ३३७॥
 इति श्रीपाल चरिते महापुराणे भव्य संग मंगल करणं ।
 बुध जन मन रंजन पतित मन गंजन सिद्ध चक्र विधि दुषहरणं ।
 त्रिभुवन सुख कारण भव जल तारण । चौपई बंध परिमल्ल कृतं ॥ ३३८॥

चौपई

राजा की श्रीपाल से भेंट

मैंना सुंदरी प्रति उत्तर दियो । तातैं तात निर्भीटयो गयो ॥
 राजा के मन उपज्यो कोह । जंपैं होनहार सो होह ॥ १॥
 एक दिन सब सैन पलायन । हय गय रथ को कहै बषायन ॥
 नगर निकास मेल्यो जाइ । मंत्री लीने संग लगाइ ॥ २॥
 बहुर्यो कथा गई तिहु यान । श्रीपाल जहां मन उद्यान ॥
 नासा पाइ गए गरि हाथ । ऐसे अंग सातसैं ली साथ ॥ ३॥
 अमृत अमृत सौ पहुंचतो तहां । राजा वर चितत ही जहां ॥
 देखि राज उठि ठाढ़ी भयो । मंजिन के मन घोखी गयो ॥ ४॥
 देखत मंत्री सबनि भई लाज । यह कोटि भेद्यों किहु कांज ॥
 सगरे रहे मुह मुंह चाइ । कोऊ पूछि सकैं नहि राइ ॥ ५॥
 तब तिहु ठा बोल्यो यों राउ । मंत्री सुनी कहो सत भाउ ॥
 या परि मेरी है अति चिन्त । यह मेरी प्रीतम है मित ॥ ६॥
 याकी ढिग तैं नेक न ठरो । या परि नेह निरंतर बर्यो ॥
 मंत्री कहैं सुनी हो राई । गर्यो सरीर हाथ अरु पाइ ॥ ७॥
 रही दुरगंधा जित तित पूरि । याहि देखि भजिए दूरि ॥
 तास्यो मिले कहा धारि नेहु । याकी आगे बड़ी संदेहु ॥ ८॥
 यह सुनिकैं भूपति यों भनै । मंत्री मैं तुम मूरधि गनै ॥
 सुख की कही न समझत बात । क्यों जानौ को है उस तात ॥ ९॥

या भेद जानै नहि कोइ । हीन बरको चित्त सोइ ॥
 ऐसी कथा कहत ते रही । कवि परमल्ल प्रगटि करि कही ॥१०॥
 मुख की कही न समझत बात । क्यों जानैगे मन की बात ॥
 यह कहि तहां पहुंचतै राउ । पुनि पुनि अबजोकी धरि भाउ ॥११॥
 पूछै तापहु भूपाल नरेस । को तू आहि बहुत अलखेस ॥
 हंडत मंहि डोलै तन भंग । बहुत परिगह तेरे संग ॥१२॥
 क्यों इह नगर कियो परनाम । सांचो कहो आप व्योहार ॥
 तब श्रीपाल कियो परनाम । हम सुनि आए तेरी नाम ॥१३॥
 दयावंत सब कोउ कहै । अति उदादता तो जिय रहै ॥
 तातै सुनि आये हम राइ । बहुत कहा हम कहै बनाय ॥१४॥
 पुर गिरवर सरवर नावंत । अब हम पहुंचते आइ तुरंत ॥
 चिता रोग सोग सब गयो । सुम्हरी नृप जब दरसन भयो १५॥
 यह सुनि नृप फूल्यो सब गात । सुनि कुष्टी नृप मेरी बात ॥
 मंगि मंगि अबि तूझी अबै । बहुर्यो त्याग लेइ मी काबै ॥१६॥
 बिलम न कीजै ओसर एह । मनकी छाडि देहु संदेह ॥
 जोई भू मांगैयो दान । सोई देउ राखिही मान ॥१७॥
 तब तिन जंघ्यी पुत्रि देह । राजा प्रगट पुहमि जस लेह ॥
 यह सुनि राउ कोप अति भयो । पुनि अपनै मनमै चितयो ॥१८॥
 यह तो निमत्त पहुंचतौ आइ । बहुत कहा हूं कही बढाइ ॥
 देवौ सुंदरि की हो कर्मु । याहि देह भजै सब अम ॥१९॥
 २०॥
 २१॥
 २२॥
 २३॥
 २४॥
 २५॥
 २६॥
 २७॥
 २८॥
 २९॥
 ३०॥
 ३१॥
 ३२॥
 ३३॥
 ३४॥
 ३५॥
 ३६॥
 ३७॥
 ३८॥
 ३९॥
 ४०॥
 ४१॥
 ४२॥
 ४३॥
 ४४॥
 ४५॥
 ४६॥
 ४७॥
 ४८॥
 ४९॥
 ५०॥
 ५१॥
 ५२॥
 ५३॥
 ५४॥
 ५५॥
 ५६॥
 ५७॥
 ५८॥
 ५९॥
 ६०॥
 ६१॥
 ६२॥
 ६३॥
 ६४॥
 ६५॥
 ६६॥
 ६७॥
 ६८॥
 ६९॥
 ७०॥
 ७१॥
 ७२॥
 ७३॥
 ७४॥
 ७५॥
 ७६॥
 ७७॥
 ७८॥
 ७९॥
 ८०॥
 ८१॥
 ८२॥
 ८३॥
 ८४॥
 ८५॥
 ८६॥
 ८७॥
 ८८॥
 ८९॥
 ९०॥
 ९१॥
 ९२॥
 ९३॥
 ९४॥
 ९५॥
 ९६॥
 ९७॥
 ९८॥
 ९९॥
 १००॥

श्रीपाल को मैनासुन्दरी देने का प्रस्ताव

कुष्टी राइ बात सुनि मोहि । मैनासुन्दरी दीनी तोहि ॥
 तेरे मन की भायो भयो । तो की मुंह मांग्यो धर दयो ॥२१॥
 चलो सीधहि पर नहि कनि । मन बंछित सुख देखिनि बनि ॥
 जब यह बचन राइ की सुण्यो । तब सब मंत्रिन माथी धुन्यो ॥२२॥
 ए नरनाह कियो कहा कर्मु । कियो गुप्त न कहियो मर्मु ॥
 यह कुष्टि तन भंग बिकार । पुत्री दे जी कहा बिचार ॥२३॥

जनम जनम को चढे कलंक । हसि है सबे राउ भर रंक ॥
 राउ सुनिबि जंपे अब तास । मंत्री क्यों निदत सुपयांस ॥२४॥
 यार्ह सब सामग्री सिसी । होति और भूपति पै जिसी ॥
 सिर पर छत्र चंबर छँदरे । आगे सूर खडग कर धरे ॥२५॥
 मंडारी राखै मंडार । बेसर बांहन भगन अपार ॥
 दुखी लोग सेवतहैं पास । भागे नितुं होत है रास ॥२६॥
 गाहा गीत वाद बहु भेद । सौंधी बहुत अरगजामेद ॥
 अरु सब भांति देखिये सूर । भूलि न कबहुं भार्य कूर ॥२७॥
 अरु देखिये दया अधिकार । दान देत है चित्त उदार ॥
 पापे कोष उदं कछु कीर्यो । सुष अरु दुःख अचानक दियौ ॥२८॥
 यह सबहि विधी पूरी आहि । ऐसी बर तजि दीजे काहि ॥
 बारंवार गयंपे राउ । याहि ऊपरि मेरी भाउ ॥२९॥
 यह भुनि मंत्री उठे रिमाइ । अजुगत कहा कहत ही राउ ॥
 मन में संक डात तुम कहै । बारंवार चरन ते गहैं ॥३०॥
 राजा सुनी करी मत कीह । कीजै कछु सुता की मोह ॥
 दुमलौ करत कहाणी इसी । काहु मूढ कीर्यो हैं जिसी ॥३१॥
 पायी नग निर्मोलिक एक । ताको कछु न कियो विवेक ॥
 काग जिहां जहि बैठ्यो आइ । सो बि डारियौ ताहि चलाय ॥३२॥
 काहु आय भेद जब दयौ । ताको पिछताबी रहि गयौ ॥
 होत कहानी तैसो एहु । कन्या मति कोंदी फौ देहु ॥३३॥
 अपजस फेजि देख मैं जाइ । अंतपि तौ पिछरत हो राइ ॥
 आयी सोच काम जो करै । नातैं चूक कबहुं न परे ॥३४॥
 अपजस ताकी देख न कोइ । नीकैं करि देषी जिय सोइ ॥
 और सुनी जंपे भूपाल । पाथर ले मति आपी लाल ॥३५॥
 कहा कर्म पुत्री की करै । सोई होइ वातु जिय धरै ॥
 नीकैं करि तुम देषी चाहि । वा मैं कछु न धोखो आहि ॥३६॥
 यह सुनि बीतयो राइ प्रचंड । एण वचन मो लागत डंड ॥
 तुम मंत्री जानौ उनमान । यह कारिजु ही इहै परमान ॥३७॥
 मति जंपी तुम बारंवार । को समर्थ जु फेरन हार ॥
 बहु भोजन श्रीपालह द्यौ । पुर बाहरि सु गोपि राधियो ॥३८॥

मेनासुन्दरी से शोपाल के साथ विवाह करने का प्रस्ताव

मनमें हरषवंत विकसाइ । राजा गेह पहुंची जाइ ॥
 जिह ठाहीं मैना सुन्दरी । तासों प्रथम बात उच्चरी ॥३६॥
 पुत्री उत्तर देहु बिचारि । अजहं अपनी करम निवारि ॥
 पानि गृहन करी तजि लाज । सुन्दरी जंपे मुनि महाराज ॥४०॥
 कहा कहत है हीनी बात । मुस्थ चित्त होइ मुनि ही तांत ॥
 जो मुनि क्रियावंत अति होइ । दरसण भिष्ट कहा कीजै सोइ ॥४१॥
 कीजै कहा धर्म जो गहे । जार्क चित्त दया नहि रहै ॥
 कीजै कहा ध्यान करि एत । जार्क हिरदै गही विरोड ॥४२॥
 कीजै कहा त्याग बहु दीये । जार्क क्रोध प्रगट है हिये ॥
 कीजै कहा पुत्ति गुन रात । मेटे मातयिता की बात ॥४३॥
 बार बार को करै वषांन । तात बचन भेरं परवांन ॥
 निठुर चित्त रानी गह गयो । दुष्ट कहानी तासों कह्यौ ॥४४॥
 मैं कीनी पुत्री पिय जानि । कुष्टी राउ परनि सुषमनि ॥
 सुन्दरि सुनै तात के बोल । तेई मनमें धरे खडोल ॥४५॥
 मनमें कीयी हरिष अगार । बिहसत जंपे बारंबार ॥
 बिधी निर्मयी हीन गुनवंत । सुनहुं तात वह मेरी कंत ॥४६॥
 सुंदर नर नरेन्द्र जे आन । ते सब देखी तुमहि समान ॥
 यह तो मीन करम निरजोस । काहू स्थी कलु राग न रोस ॥४७॥
 शुभ अरु अशुभ अजी हैं संग । कोऊ मति मूलौ भ्रम रंग ॥
 हरत परत परलौघ्यौ मुझै । राजा कछु दोस नहि तुझै ॥४८॥
 पुत्री सुनियो जंपे राव । तेरै पोते दुष्ट सुभाव ॥
 अजहं न तजहि कर्म अति गह । अंती लागै हौन विवाह ॥४९॥
 विप्र एक बिचा करि लीन । रामोद्रिक जोतिक परबीन ॥
 लीयो बुनाय आप नर नाह । हरषवंत पुत्री कै व्याह ॥५०॥
 दिन सुभ वरि महूरत सारि । लगन धर्यौ जोयमि आरधि ॥
 भाष्यो विप्रह तजै निरस । शुभ करि वासर आजि पवित्त ॥५१॥
 सूर्य सति हर सुर गुरु चाहि । बर कन्या कौ उसिम आहि ॥
 बरस दीस जो सोषो राइ । अली दीस न पहुचो आई ॥५२॥

त्याग लेत ता हाथ न बहै । बारंबार विप्र यों कहै ॥
 बात कहैं सो करै न संक । सुनि हो राइ करम कै शंक ॥५३॥
 ताको कछु न दीजे धौरि । प्राणी बांध्यो विघ्नी की डोरि ॥
 जित अंचलित ही लै जाइ । या मैं कछु न घोषी राई ॥५६॥
 जा परि ताको दुष निरमयी । कोह पै सुष जाइ न दयो ॥
 जों पुत्री सिरजी सुषकाज । को दुष देवे सुनि हो राज ॥
 अपनी कियो कछु जो होइ । तँ काहू को बधे होइ ॥
 बिषनां शंक जु लिष्यो लिलार । ते निरबहै ठोर इकसार ॥५३॥
 भूलि गवँ कोऊ मति करो । करता बली तहां मनि डरो ॥
 तिरणस्यो बज्र पलक से धरै । पलमें बज्र ताहि विष करै ॥५८॥
 करतै पहल कांस चितबै । यहै और की और कछु ठवै ॥
 सोधे पंडित सुनै पुरांन । ताको अपजस होइ निदान ॥५९॥
 यह अजुगति कछु कही न परै । राजसुता क्यों कोढी बरै ॥
 जाकै रूप जगत माहिए । सो क्यों कुष्टी को सोहिए ॥६०॥
 रम्जा हीन बात जीय घरी । तेरी बुधि विधाता हरी ॥
 असो ते आरंभ्यो काज । जान्यो बूझ्यो चाहत राज ॥६१॥

विनासके कारण

विप्र गयो धरि लयी न वित्त । लागी प्रगटन एहु चरित्त ॥
 मंत्री बरजै फुनि फुनि तास । स्वामी एतौ धर्म विनास ॥६२॥
 विनसै शंघी संका मन धरै । विनसै भोमिन आइस टरै ॥
 विनसै राव मंत्र जो तजै । विनसै सुभट देखि रन भजै ॥६३॥
 विनसै ईसुक्रोध परिहरै । विनसै साध क्रोध जो करै ॥
 विनसै दाता जो न दिवेक । विनसै वाढ चलै दिन एक ॥६४॥
 विनसै अति पंकज की बास । विनसै रागी रहै उदास ॥
 विनसै चोर पयासै भेव । विनसै त्रिवटे में को देव ॥६५॥
 विनसै साहू उधारी देह । विनसै मनिका जौ द्रत जेह ॥
 विनसै अति कामातुर देह । विनसै दावद नीरी गेह ॥६६॥
 विनसै पाश क्रिया जो हीन । विनसै तपा लोभ करि लीन ॥
 विनसै रांड राग चित धरै । विनसै गीगी घात न डरै ॥६७॥

बिनसै जोमी घर घर फिरै । बिनसै पैरा पावस तिरै ॥
 चिन्ह सैं बंद न नारी गहै । बिनसै खेवट थाह न लहै ॥६८॥
 बिनसै सखी हरिज कहै । बिनसै ग्राह चोर दिग रहै ॥
 बिनसै रूप नदी के तीर । बिनसै राजा बिना उजीर ॥६९॥
 बिनसै आप लड़ावें पूत । बिनसै जो संकें मन दूत ॥
 बिनसै काजी लालच करै । बिनसै कुल कपूत ओतरै ॥७०॥
 बिनसै कीर पीजरै पढै । बिनसै नादु जो ऊंचें चढै ॥
 बिनसै ठग कुठोहर वसै । बिनसै पांन हलै घालसै ॥७१॥
 बिनसै करिबर काइर हाथ । बिनसै कायव दुजै साथ ॥
 बिनसै चोरी दिन अनगवै । बिनसै घर जो जेठ न खरवै ॥७२॥
 बिनसै चोर थाह बिन घसै । बिनसै ग्राह न मारी ससै ॥
 बिनसै दिन को गीषी जार । बिनसै कान हीन कुतवाल ॥७३॥
 बिनसै वन्दन पुनि पुनि घसै । बिनसै बहू जो हडहड हंसै ॥
 बिनसै काजु करण जो कहै । बिनसै राज कुमन्त्री वडै ॥७४॥
 बार बार मंत्री मन कहै । काहू को वरज्यो नहीं रहै ॥
 जिम मांती मैगल बलि परी । आंकुस रहै न एकी घरी ॥७५॥
 अवज्यो चलते मंत्र प्रवांन । अब कछु तुम होइ गए अमान ॥
 नदि निरूपगनियर परधान । सौपति कुण्ठी कौन संमान ॥७६॥
 मां ती बात कोहु छिटकाइ । अंतहु दुख पावोगे राइ ॥
 तब रानों बोलैं मति मंग । मंत्री मति मूलो अम रंग ॥७७॥
 मूग्धि हिए विचारी सुद्धि । केहो गई तिहारी बुद्धि ॥
 मैं तो तिलक किछी धरि मीन । भेटन हार ताहि घी कौन ॥७८॥
 तब मंत्रीगण चबै निरसक । कुल निर्मल मति देहु कलंक ॥
 मनिष जनम गदवा पद पाइ । सो तुम अब मति हारी राइ ॥७९॥
 तुम में कोहु दवानल दहै । मति तुम कोहु दवानल लहै ॥
 बात बढ़ावैं कहै क्यों और । मति गाढ़ह सिर बांधी मोर ॥८०॥
 श्रुति करि कोपु भयी मति राउ । कुण्ट भाइ बोझिया कुभाउ ॥
 राजरीति को धर्म न होइ । मंत्री तुम देखी जिम जोइ ॥८१॥
 अक्ष जों तो राख्यो सनमान । अब सरवाऊं करी निदान ॥
 मो मन और कहौ तुम और । अक्षकें बोलैं मारी ठोर ॥८२॥

तब मंत्री बोलैं कर जोरि । स्वामी हमैं न दीजैं धोरि ॥
 हम मंत्री बोलैं नृप जीति । गहै हमारे कुल की रीति ॥८३॥
 स्वामि धर्म इह बाहर होइ । राची बात पयासैं होइ ॥
 जो हम लाज करें सुनि राइ । तो कुल रीति हमारी जाइ ॥८४॥
 अरु राजनि कौ इह सुभाव । जब जानत है दसऊ दाउ ॥
 तब मंत्री लीजिये बुलाइ । । बूझै ताहि भेद निकुलाइ ॥८५॥
 जोह बात कहै समझाइ । सोई करै सबै छिटकाइ ॥
 और न मन त्यागै अधिकार । ऐसै नृप कुल के आचार ॥८६॥
 तातैं बार बार उज्जयि । छू जिय को लालच करै ॥
 ब्रूक हमारो कछु न आहि । नीकै करि देखी चित चाहि ॥८७॥
 मनमें समझ्यो कछु दक राइ । मुड करि तिनसीं उठ्यो रिसाइ ॥
 और बात मति त्याग्यो चित । सामग्री तुम करौ पविस ॥८८॥
 सुन्दरि बर कौ सीमा धरौ । बेगे होह बार मति करौ ॥
 सुनत दुःख मंत्री जन भयो । हरे बांस मंडर अर ठयो ॥८९॥

लगन मंडप का वर्णन

चारि पंभ कंचन के बने । चमकै तन निर्मोलिक घने ॥
 चारि कलस इस सोवन जरे । ते सोहै जहं धूँटह धरे ॥९०॥
 अरु सोभा तिह विध प्रकार । मुक्ताहस की बंदरबार ॥
 चौक सवासनि देहि सुचंग । अति उज्जल देखियो अभंग ॥९१॥
 अरु तहां निह सुरंग उछार । तिनकी सोभा जगै अपार ॥
 नैन्ही चूनी बई फैलाई । ते चमकै कछु कहियन जाइ ॥९२॥
 सबै सिवासनि रुदन कराहि । सोभा चौक संवारति जाहि ॥
 सज्जन लोग जुरैं सब आइ । मलिन चित्त को नहि बिकसाइ ॥९३॥
 ठांठा घेर करै सब कोइ । अजुगति बात न ऐसी होइ ॥
 विषना कछु एह निरमई । राजा की मति बिधु हरि लइ ॥९४॥
 राजा राइ जुरे सब जिते । अशुपात करै तहां तिते ॥
 अरु बाजैं वाजिअ अपार । भेरि मृदंग तुर सहनार ॥९५॥
 गहर सबद बाजैं नीसान । मलिन सबद अति सुनिएँ कान ॥
 विप्र वेद बुनि पढ़ै अपार । नरनारि रोवैं अधिकार ॥९६॥

राजा कहै व्याह के चार । बेगे करौ बहोइ अवार ॥
 मेरी मन को इष्ट सु चाहि । बेगि जवाँई ल्यावो चाहि ॥६७॥
 करीं सेव जो मोते होइ । बार बार यी भाव सोइ ॥
 मंत्री गये सीस धुनि जहां । नगर निकासह बरही जहां ॥६८॥
 देख्यो अहीन अति बिपरीति । तन मन जाको है गल पीति ॥
 न आए अति कुष्टी देह । बहै राखि अरु लागी बेह ॥६९॥
 जो देखे सो हंसी करे । दिखी सो छोट न डार्यो टरे ॥
 देखत राजा अति सुख कियो । कंचन कलस न्हावन दियो ॥१००॥
 सोधौं सर द्यौ बहूत अबीर । तोभी बास न तजे सरीर ॥
 कंकन कर बांध्यो सेहुरी । मूरिष राउ भयो बाउरी ॥१०१॥
 कामनि घोरी गावैं जबै । दूल्हा व्याहन चलियो तबै ॥
 बचल तुरी चढावन लियो । मंत्री चाहै हांसी कियो ॥
 बहडिठ बाग सही कर चाउ । राजवंस कयी मिटै सुभाउ ॥१०२॥

श्रीपाल की धारात

अली बरात उडी तहां घूरि । रही तहां घर धंवर पूरि ॥
 रतन जलित सिर उपरि छत्र । ठरैं छत्र सोभले महसु ॥१०३॥
 श्रीपाल मन हर्षित भयो । मंडफ द्वारें ठाडी भयो ॥
 परियन सयल देखियो आइ । तिनके वदन गये कुमिलाइ ॥१०४॥
 मांती अंबुज हुए तुसार । भानों तखवर हुए कुठार ॥
 अंसी भयो चित्त अनराउ । मांती भयो कज्र को घाउ ॥१०५॥
 ते बहु रुदन करै सह भरैं । राजा की ते निदा करैं ॥
 नारी नर अंतेवर जिते । अति बिलषाहि बिसूरै तिते ॥१०६॥
 तिनकें बिलषै कहा सिराइ । राजा मनमें धरो लजाइ ॥
 मूंड रख्यो नीची करि नारि । काहू तन नहि सकै निहारि ॥१०७॥
 माता कहन धरी सह भरैं । हैहकार लोगु सख करैं ॥
 माता महा दुःख तन गयी । पुत्री के एह कंठह लागी ॥१०८॥
 हा पुत्री दुःख सागर धरी । कयी है तिर मैना सुन्दरी ॥
 पूरब कहूँ कियो तैं पाप । जातैं कयी नाह संताप ॥१०९॥

भीमासुन्दरी द्वारा सभभाजा

सुन्दरी बोली जिन मत लीन । सभभावं परियन परवीन ॥
 कोउ दुःख करौ मति खोगु । शुभ अरु अशुभ कर्म को जोगु ॥११०॥

जो प्राणी आयो संसार । ताकै गरै दुख की मार ॥
 जित ही देखै नैन पसारि । तितही बांधी दुख की पारि ॥१११॥
 यह साहर संसार असार । बिरलौ कोळ पावै पार ॥
 मात पिता सुत बंधव मित्त । हय गय वाहन रय जु पवित ॥११२॥
 माया और आहि अधिकार । मिथ्या सब रखी करतार ॥
 काको पिता कौन को माइ । जीव प्रकेली आवै जाइ ॥११३॥
 बैठे रहै हितू पचास । बार बार जोबै चोपास ॥
 काहू पासि न होइ जपाइ । जब कर केस गहै जम आइ ॥११४॥
 सोई बडौ हितू सुनि माइ । अरबराइ सरघट ले जाइ ॥
 भजै खीरि देहु मति कोइ । हौनहार सोई परिहोइ ॥११५॥
 प्रतिबोध्यो सगरी परिवार । गावन कह्यो व्याह की चार ॥
 आपुन हरषि उठाइ सुलियो । ससि वदनी सेहर बांधियो ॥११६॥
 मरिणमय कुंडल पहरे कन । करकंकन सोहिये रक्खन ॥
 नेवर पहरे अति भुंनकार । पहरी गलि मौलिन की मार ॥११७॥
 सूरति बास मरदियो सरीर । पहरपौ अंग कसू मिल चीर ॥
 करि शृंगार पहुंती जांस । सिरीपाल मंडक गयो ताम ॥११८॥

मैना का विवाह मंडप में होठना

मैना सुंदरी बैठी आइ । परियन रहसि दियो छिटकाइ ॥
 तिहुठा रुदन करै सब कोइ । टकटक रहै मुहां मुह जोइ ॥११९॥
 तब सुंदरि जठि ठाडी भई । निज परियन माता पै गई ॥
 सुरसुंदरी को गायो बिसौ । मोकों बघों नहि गावौ तिसौ ॥१२०॥
 पुत्री जंपे बारंबार । करौ उछाह रु मंगलचार ॥
 यह कहि कै पुत्री बैसियो । माता बहन हियो भरि लियो ॥१२१॥
 डरै चौर दूलह कै सीस । जै जै सकद करै नर ईस ॥
 बाजै जहां गहर बाजने । जाचिग जन बिरदावलि भनै ॥१२२॥
 खंदन मरघटि दई लिलार । पहरे पाटवर सुभसार ॥
 नाचै गांवहि मंगलचार । बंभन वेद पठै फुंकार ॥१२३॥
 भावरि सात फिरी सुभ जदैं । राजा गंधवौ लिनौ तबैं ॥
 मैनासुंदरि पकरी हाथ । सौपी श्रीपाल नर नाथ ॥१२४॥

कन्यादान लियी नरनाह । तब भरि हीयो मूँकी चाह ॥
मंथी जन सब लए बुलाइ । मेरी मुँह मति देयो आइ ॥१२५॥

राजा द्वारा परचाताप करना

है है हूँ पापी वरवान । है है हूँ मतिहीन अमान ॥
महादुःख पारयन की दारि । अखस सकल लोक में भयो ॥१२६॥
बार बार ऐसे उच्चरै । ऐसे काम नीच नहीं करै ॥
सबै गुवाई कुल की रीति । नरभों षोयी करी अनीति ॥१२७॥
अब कहां वदन दिपाऊ लोइ । चही कालिमां मेटे कोइ ॥
है है पुत्री सब गुन लीन । जैन धर्म पालन पश्वीन ॥१२८॥
मो निर्मल मति षोटी भई । तू कन्यां कोही की दई ॥
पुत्री कहैं सुनौ ही तत । मिटे केम जिन भाषी बात ॥१२९॥
कछु पोरि नहीं दीजे तोहि । उदै कर्म आयी सुनि मोहि ।
जो कुछ निमित्त होइ जिह काल । तेई अंक लिखे सम भाल ॥१३०॥
गहलं विधनां यह जीय धरी । पीछैं हौं गरभ संचरी ॥
जो कछु आप करै करतार । ताको कीजं कहां बिचार ॥१३१॥
कछु पास न भाषी जाइ । अजहं कहा होयगी राइ ॥
ऐसी बचन भूप जब सुन्यो । मन पिछतानों मांथो धुन्यो ॥१३२॥
नीकं करि देषों चित चाहि । अपनी चूक सुनावीं काहि ॥
गह चितत दोनी ज्योनार । सोवो दीन्हो अगन अपार ॥१३३॥
अब चमर दीन्हे भंडार । दीनं मेगल तुरीय ते सार ॥
पाटवर दीए बहु भीर । जिनं लगे निर्मोलिक हीर ॥१३४॥
पाँडस वर्षनि भीनै अंग । पहरे कंचू सब सुरंग ॥
अति सुंदरि दासी गनि लई । एक सहस्र सुंदरि की दई ॥१३५॥

दहेज

सहस दास सुंदर मुन रेह । दीए सिरीपाल की तेह ॥
मेवग भले भले जे भए । बहुत और सेवा की दए ॥१३६॥
पुत्री देषि बिसूरै राइ ॥ बार बार मनमें पिछताइ ॥
कंचू दीन्हे कही न जाइ । बहुत दीए आभर्न गढ़ाइ ॥१३७॥

बाई सात रबी चहुं पास । नौतन दीए कराइ आवास ॥
 पुर बाहरि राखियो नरेस । दिए बहुत पुर पट्टन देस ॥१३८॥
 बहुत दीए बाजन निसान । दियो सुबो बिना उनमान ॥
 राजा दियो अति जन जितो । कबि परमल्ल न बरन्यो तितो ॥१३९॥

प्रजा द्वारा बुख प्रकट करना

सई कुंवरि चौडोर चढाइ । सिरीपाल धरि गयो लिवाइ ॥
 यह सुनि नगर भयो कहराउ । सभी कहै छग छग यह राउ ॥१४०॥
 रोवै परियन बे उनमान । रोवै मंत्री अरु परधान ॥
 रोवै रह्यति कुली छत्तीस । रोवत पशु पंछी सब दीस ॥१४१॥
 तू बिधनां अति षोटी आहि । बुरे भले नहि देखै चाहि ॥
 घर घर बेर करै बिलषाहि । राजइ गारि देहि पिछताहि ॥१४२॥
 बहुत बात को करै बिचार । भुष निबसै श्रीपाल कुंवार ॥
 मैनासुंदरि मन की ईछा । एक दिन एकासन विछा ॥१४३॥
 तब श्रीपाल कहै ए नारि । प्रांन पियारी देखि विचारि ॥
 तू त्रिसुख गुन सील अमंग । रूपवंत कंचन मैं अंग ॥१४४॥
 चन्द्रमुखी सुनि अभी निवास । मति आगछै तू मेरे पास ॥
 जौलीं असुभ उई मो कर्म । तौ ली राखि आपनी धर्म ॥१४५॥
 बार बार हूं बिनऊ तोहि । सुंदरि मति आलस्य मोहि ॥
 ए बलभा तुम सुषसातार । संगति बाढै दोष अपार ॥१४६॥

संगति का महारम्य

संगति गुनी निरगुनी होइ । संगति होत कुबुधी लोइ ॥
 संगति तपा भृष्ट बत तजै । संगति पाइ सुरभी भजै ॥१४७॥
 संगति साधु सुरा आचरै । संगति ही चोरी नर करै ॥
 संगति सीहू स्थार होइ जाइ । संगति श्रावक आमिष पाइ ॥१४८॥
 संगति विप्र तजै बट कर्म । संगति से ह्वै धर्म अघर्म ॥
 संगति सील तजै बरनारि । भामनि मनमें देखि विचारी ॥१४९॥
 संगति कोड चढै दुष लहे । सिरीपाल सुंदरिस्सी कहै ॥
 मेरी संस बुरी मनि भानि । सुंदरि बात हमारी मानि ॥१५०॥

बोली नारि बँन सुनि एह । मन में जपज्यौ अति संदेह ॥

श्रीपाल से मैनासुन्दरी का निवेदन

बालम सुनौ कहौ अथ तोहि । कर्कस बचन कहौ मति मोहि ॥१५१॥

नीकँ करि सोची मन मांह । जौ लो उदै कर्म की छांह ॥

तौलो भृगवी दुष सुष संत । मूलि न काइ रहूँ कंत ॥१५२॥

विधिना मोहि पट्ट लिधि दियो । सोई मोकी निश्चं भयो ॥

तुम मेरे प्रीतम भरतार । तुम मेरे प्रांतनि आधार ॥१५३॥

तुम अति रूपवंत गुनवंत । तुम ही सुष सागर बलिवंत ॥

लोचन सुखी जौ धौए पार । तौलो देरी नुरि निहार ॥१५४॥

तौलो पवित्त रहै शुभ ठाम । जौ लो जपौ तुम्हारी नाम ॥

तौ लो हाथ धन्य सुनि राय । जौ लो प्रछालो तुम पाइ ॥१५५॥

बांह धन्य कछु कहौ न आइ । जौ आलंबी कंठ लगाइ ॥

हौ विष धन्य तौ लो जिष धरो । जौ लो सेव तुम्हारी करौ ॥१५६॥

सील बिहूनी नारि जु होइ । पिय की निदा करि है सोइ ॥

पतिव्रता सब ही गुन भरी । हौ तौ सीलवंति सुंदरी ॥१५७॥

सील की महिमा

सीलहीरूपी मेरी अति चित्त । सील पिता बंधु अरु मित्र ॥

सील परिग्रह मेरी संग । सील रूप मेरी सरबंग ॥१५८॥

सील वादस आभरन बिचार । सीलै है नख सत शृंगार ॥

सीलै जीवन सीलै मदन । सीलै सब सु सीलै सरन ॥१५९॥

सीलै मेरे लग उनमान । तौलो तजौ न जौ लो प्रांत ॥

सबंस जाइ सील जौ रहै । त्रिभुवन में सोभा सो लहै ॥१६०॥

श्रीपाल का प्रसन्न होना

यह सुन सिरीपाल हरषियौ । धनि मैनासुंदरि तेरी हियौ ॥

धनि भामनि तेरी औतार । जिह दिग धर्यौ सील की भार ॥१६१॥

श्रीसी विपति मांहि विहसंत । बहुत दिवस बीते निवसंत ॥
 कोठा खूब रहै जहुं पास । सुंदरि देखै लेइ उसास ॥१६२॥
 ए बिषना दोषन के राइ । तेरी भास न करनी जाह ॥
 तेरी सरन आइ जिह लयी । ताकी दुःख बहुत तैं दियौ ॥१६३॥
 अरु जे फिर्यौ दुष्ट तो साथ । ताकी भले लगाए हाथ ॥
 तेरी आस रह्यौ जिय सोइ । अंतकाल ताकी दुःख होइ ॥१६४॥
 जिह काहू तो को मृग दियौ । ताकी बुरी सर्वथा कियौ ॥
 जिह तेरी सेयो पर संग । ताकी सदा भयो सुख भंग ॥१६५॥

बोहा

जिह मार्यौ तू दुःखदे, रे विधि अष्ट प्रकार ॥
 सो पहुँचै वंकुठ कौ, तेरे मुख ई छार ॥१६६॥
 जिह तेरी आसा तजी, कीनों मूल बिनास ।
 तिह भव दुषसागर तज्यौ, लह्यौ मुक्ति घर बास ॥१६७॥

चोपई

नखा बहुत करम की करी । और न काहू ऊपर धरी ।
 मैना सुंदरि उट्टी सुरंत । दिव्य अंबर पहरे विहसंत ॥१६८॥
 सीलवंत अघ गुनह निर्धान । निज बालम संजुत समान ।
 मनमैं उपज्यौ सुख असेस । श्री जिन भुवन कियौ परवेस ॥१६९॥
 तीन प्रदक्षणा उत्तम बुधि । कीनी मन वच काय त्रिसुधि ॥
 दंपति लागे अस्तुति कर्न । जे जे मुनिवर भव भय हर्न ॥१७०॥

मैनासुंदरी एवं श्रीपाल द्वारा मृनि के पास जाना

जे मिथ्यातम हरन पतंग । सेवत मुर नर बेचर अंग ॥
 निरद्वंद निरामय नोहन कोष । छय कीने अष्टादश दोष ॥१७१॥
 अतंत चतुष्टय गुनह निवास । इन्दी वेदन सदा उदास ॥
 गदित सप्त तस्वारथ भास । बखदंड मोहारि बिनास ॥१७२॥

रत्नत्रय भूषण सुभ चित्त । एकरूप दीवण अरि मित्त ॥
 आनंदकरण जै जै जगदीस । जै जै कृष्णासर सिव ईस ॥१७३॥
 सुभ चित्त दोऊ सिरनाह । बैठे चरन कमल तट जाइ ॥
 तब मुंदरि बोली करि भाख । हौं गपिनी मोहि समभाउ ॥१७४॥
 भो स्वामी कछु ज्ञान पयासि । संसै मेरै चित्त कौ नासि ॥
 जै जै मुनि श्रीपाल निहार । नाह भीष दे चित्त उदार ॥१७५॥
 कछु धरम स्वामी कहि सोइ । कुष्ट व्याधि जातै क्षय होइ ॥

मुनि द्वारा संबोधन

मुनिवर कहैं पुत्ति सुनि एह । अणुघत गुंण समकित तूँ लेह ॥१७६॥
 पुंनि सिप्यावत सुनहु विचारी । पभनै मुनिवर पक्षाहारि ॥
 गुरुवो धरम प्रगद्यो जो आहि । नीकै करि सुनि भाषों ताहि ॥१७७॥
 मुनीश्वरोवाच हे पुत्री भूयता ।
 धर्म मतिर्भवति कि बहुना श्रुतेन ।
 जीवे दया भवति, कि बहुभिः प्रदानैः ॥
 शान्तिर्मानो भवतु कि कुजनैश्चतुष्टैः ।
 आरोग्यमस्तु विभवेन बलेन किवा ॥१७८॥
 बुद्धेः फलं तस्यविचारणं च ।
 देहस्य सारं व्रतधारणं च ॥
 अर्थस्य सारं किल पात्रदानं ।
 वाचः फलं प्रीतिकरं नराणां ॥१७९॥

सिद्धचक्र व्रत लेने के लिये कहना

चौपई

निर्मल सिद्धचक्रव्रत नेहु । अष्टान्हिका बडो व्रत एहु ॥
 तब तापै मुनिमो बिधि साधि । बसु दिन सिद्धचक्र आराधि ॥१८०॥
 प्रथमहु मंडल कीजै बांनि । अकार प्रथम हि जानि ॥
 चहुं कुरी लिपि सोलहु अट्ट । मक्ति पंच परमेष्ठि गगराट्ट ॥१८१॥
 दल दल ते लिपिष्ट बसु वर्ग । अ क च ट त प य स ये बसु अर्ग ॥
 दल अंतर अंतर सुवनाय । दरसन ज्ञान चरित्र सुभाय ॥१८२॥

पुनि चक्कीय ज्वालामालिनी । अंबा परमेस्वरी पीकिनी ॥
 च्यार्यो लिखिजे गुनहू विसाल । सिधिए तहां दसौ दिगपाल ॥१८३॥
 गोमुख जरघेसुर लेखिए । बाहरि मानभद्र थापिए ॥
 दशमुख को थापिए सारंग । दसौ द्वार उद्योत अभंग ॥१८४॥
 वसु दिन पालही सील सुभाउ । इंद्रिनी को उपसरगु मिटाउ ॥
 मूल मंत्र वसु दिन भाषिए । होउ नचीत भाउ राखिए ॥१८५॥
 संवेपह विधि यह मैं कही । पुत्री सुनत भई गह गही ॥
 कुण्ट कुण्ट तन नोको होइ । रोग सोग सब डारें पोइ ॥१८६॥
 बितर प्रेत मैं न कछु करै । बसीकरन मोहन सब हरै ॥
 होई जसु धन बढ़े अपार । पुत्र कलित्र बाढें परिवार ॥१८७॥
 नर अरु नारि सब सुख लहै । दुःख दारिद्र तहो नहीं रहै ॥
 सुनि पुत्री पूजा विधि जिसी । तो सौं वरन कहौ हौं तिसी ॥१८८॥
 कात्तिग फागुन असाढ़ अश्विनि । श्वेत पक्ष निर्मल अति जान ॥
 अष्टमि दिन कीजे उपवास । कीजे इंद्रिन को सुख नास ॥१८९॥
 वसु दिन ब्रह्मचर्य मंडिए । घर की बिता सब छांड़िये ॥
 सिद्धचक्र वसु दिन तजि मांनु । कीजे पूजा मिटै अवसानु ॥१९०॥
 नीकै करि थिर मनु राखिये । मूल मंत्र पुनि पुनि भाषिये ॥
 मनबांछित फल पावै जबै । उद्यापन विधि कीजे तबै ॥१९१॥

सप्तका उद्यापन

कीजे आठ भुवन जिन तर्न । घरिए आठ बिब अति वनै ॥
 कीजे सिध जंत्र सुभ अष्ट^१ । थार्ये मुनिवर गुनहू गरिट्ट ॥१९२॥
 भलरि मुकट चमर सुम धान । कीजे आठ आठ परवान ॥
 कीजे आठ प्रतिठणसार । बहु धन परचै चित उदार ॥१९३॥
 पूजा आठ करी घरि भाउ । अथवा एकै मन करि चाउ ॥
 उद्यापन कछु होइ न चाहि । तो पुनो व्रत कीजिए निवाहि ॥१९४॥

बित्त जोग बहु दीजै दान । जीसंघह धरिए अति मान ॥
 अजिका नैं सारी पहराइ । घाठ घंघ कीजिए लिखाइ ॥१६५॥
 दुषी दीन दालिद्री जिते । करि सममान पोषिये तिते ॥
 सुंदरि अरु श्रीपाल कुंवार । सुनि मनमें सुख कियो अपार ॥१६६॥
 गुरु कौ निमसकार करि घनै । गए निज मंदिर दोऊ जने ॥
 रहै सुषसु बहु बडे उन्हास । आय पहुंतो कातिग मास ॥१६७॥

कार्तिक की अष्टाहिका

ससि पक्षह अष्टमी दिन भयो । अति निर्मल फासू जल लयो ॥
 न्हाए अंग पहिर्यौ वस्त्र । अति उज्जल देखिये समस्त ॥१६८॥
 सर्व द्रव्य लिए धरि भाउ । अति हृषित मन उपज्यौ साउ ॥
 इच्छिमुक्ति गए जिन गेह । शीतराग बंधा सुभ देह ॥१६९॥
 तिहुं गुप्ति मम बस अरु काय । पराखिवि श्री जिन सासण पाय ॥
 थिरमन होय कियो अति गाह । विधिस्यौ पूज्यौ श्री जिनताह २००॥
 वसु दिन प्रति विधिस्यौ सांख्यौ । राग रोस दोऊ छांडियौ ॥
 जानै सम सो सनु अर मित्र । ब्रह्मचर्य पाल्यौ इक चित ॥२०१॥
 मुनि पै लीन्हौ कियो उपास । उपज्यौ दुष्ट कर्म को मास ॥
 नीकै सिद्धचक्र पूजियौ । सुषभाव गंधोदिक नियो ॥२०२॥

मन्थोदक लगाना

अति सुगंध को करै विचार । बंछित गई जहां भरतार ॥
 सिरतैं तथे न्हाव्यौ सोइ । प्रथमहि दिन कछु नीकौ होइ ॥२०३॥
 श्रीपाल अरु सातसैं जु अंग । देखियौ पुन्यह फल जु अभंग ॥
 वसु विधि पूजा राज करेइ । मानौ सुरग निसैनी देइ ॥२०४॥
 ठरै चोर बाज्रै कंसाल । जलधारा दीन्ही मुकुमाल ॥
 मलियागिरि सों कुंकम गारि । चरच्यौ जितवर दिब निहारि ॥२०५॥
 ससि सम धवल अछत लिह सखी । सुंदर पुंज मनोहर दिए ॥
 पहूप मनोहर माना रूप । अति सुगंध देखिये अनूप ॥२०६॥

कछक कीन्ही सुन्दर माल । स्वेत अरुन देखिए विसाल ॥
 कछ कुसुम अति छूटे सए । भरि भरि अञ्जुरि जिन को बए ॥२०७॥
 नहवेदक पकवान अपार । श्री जिन आगै रचे अपार ।
 बारि धरे तहां दीप अनूप । जेयो वर कृष्णानर घूप ॥२०८॥
 नाना विधि फल धरे सवारि । मनबंछित को कहै विचारी ॥
 श्रीपाल पूजा की जहां । आठौं ब्रह्म चढाए तहां ॥२०९॥
 कुसमांजुलि दे सिर नाइयो । दुष्य जलांजलि पानी दयो ॥
 प्रथम ज पूजा इक गुनि करी । दूजे दिन दह गुन बिहारी ॥२१०॥
 तीजे सौं गुनि पूजा सची । सहस्र गुनी चौथे दिन रची ॥
 पंचम दससहस्र गुन भनी । सप्तगुणी षष्ठे दिन तनी ॥२११॥
 सातें दिन दसलक्ष गुणी जानि । अष्टम कोटि गुणी परवानि ॥
 ठावे सब सुर कौतिल हार । मनमें कीयौ हरिष अपार ॥२१२॥
 अति सुकंठ लीनी जेमाल । उपज्यौ कौनूहल तिहु काल ॥
 सुंदरि महा आरती रचै । इंद्र इन्द्रादनि बोक नचै ॥२१३॥
 सुर बाजे बाजे अनिवार । मधुरी धुनि सोभा अधिकार ॥
 जिनके नाम न बरते जाहि । नाचै किनरि अति सुसर्गाहि ॥२१४॥
 अमरेशुर सब चढे विमान । पहुंचे आप आपने धाल ॥
 पूजा करी भरम सब भग्यौ । कोटीमट आठौं निलि जख्यौ ॥२१५॥

कुष्ठरोग नष्ट होना

तीन दिवस गंधोदक न्हाइ । कोठ मिट्यो पर्योषह राइ ॥
 कंचन वन भयो तनु इसी । सोहत कामदेव को जिसी ॥२१६॥
 और जु बली सातसै मित्त । तिनहु के तन भये पवित ॥
 और जु कुष्ठ देह हे जिते । गंधोदिक नीके भये तिते ॥२१७॥
 झूत पिसाच निसाचर मंत । नामै गंधोदिक परसंत ॥
 मोहन बसीकरण जे आहि । बिसहर कोइनि सांइनि आहि ॥२१८॥
 नैननि रंघ अघन विनि जिते । नीके भए सबै नर तिते ॥
 अरु जे कुष्ठ कर्म दुष दगे । सुष पावै गंधोदिक लगे ॥२१९॥
 नर नारी मन बच करि कोइ । सिद्ध बक्र आराधै जोइ ॥
 सो प्रगटे तिहुं लोक मझार । सो सुंजै बहु सुख अधिकार ॥२२०॥

बाहें बिभी बिना उनमान । करे राज सो इन्द्र समान ॥
 नाना फल मिलसै सुखपाइ । मरि कं बहुखी मुक्तिह जाइ ॥२२१॥
 जाके जल न्हायै कवि कहै । कुष्ट व्याधि नहि तन में रहै ॥
 याको डचरज कछु न आहि । जा करि है सो पावै ताहि ॥२२२॥
 मैनामुंदरि पिय की देह । देखत गह भरि आई नेह ॥
 सब तासी मुनिवर यी कहाँ । यह फल ते सब तुरत ही लखी ॥२२३॥

मुनि की बन्दना करना

स्वामी सुम प्रसाद सब एह । बहुत बिनति कीयो घरि नेह ॥
 चरन कमल मुनिवर के बंदि । दोऊ घरि आए आनंदि ॥२२४॥
 गयो मशुम सब धर्म सहाय । बाहुनी सुख की कहै बढाय ॥
 धर्म एक त्रिभुवन में सार । धर्म दुःख विनासन हार ॥२२५॥

धर्म की महिमा

धर्म हि ते नर भी आइए । धर्म हि कुल उत्तिम पाइए ॥
 धर्म हि ते कीरति विस्तारै । धर्म हि ते कोऊ बर न करै ॥२२६॥
 धर्म हि ते बाढैं परिवार । पुत कालिस्त रु बिभी अपार ॥
 धर्म हि यह व्यापै नहि कोइ । धर्म हि ते सब कारिज होइ ॥२२७॥
 धर्म हि ते नहि बढै कलंक । धर्म हि ते नर सुर रंक ॥
 धर्म हि ते नर बर न बहै । धर्म हि ते कोई बुरी नबि कहै ॥२२८॥
 धर्म तिह ठाँ लेह छिडाउ । जब जमु नाम दिपायै आइ ॥
 गहँ केस बपछोहँ जबै । धरम रावि भेस है तबै ॥२२९॥
 धर्म हि ते सब मिटै किलेस । धर्म हि ते मरि होइ सुरेस ॥
 बहुत बात को कहै बढाइ । धर्म हि ते नर मुक्तिह जाइ ॥२३०॥
 कवि घरमल्ल कहैं चित चाहि । धर्म बिना को हिमू न आहि ॥
 प्राणी तजि परपंच विकार । करहु धर्म ज्यों उतरै पार ॥२३१॥
 और कछु सब दुख की घाम । धर्म एक जु सुख की नाम ॥
 धर्म हि ते श्रीपालहु रूप । मकरध्वज सम भग्री अनूप ॥२३२॥

कुण्ट व्याधि तें लथी उबारि । भयह नहू अन्तेहुनि नाहि ॥
 दूहें परसपर मुख अपार । भोग भोगवै विविध प्रकार ॥२३३॥

जिन मंदिर दिन दिन पग धरै । निज गुरु की ते अस्तुति करै ।
 बिलसैं जिभी देहि बहुदान । गुनी जन गर्व लहै तिहा मान ॥२३४॥

अहि निसि सिध जंत्र गुण गाहि । मूल मंत्र जप पूजैं ताहि ॥
 महासुख उपनौ नीरंग । सेवा करै सात सैं अंग ॥२३५॥

इति श्रीपाल चरित्र महापुराणें भव्य संग भंगल करणें ।
 बुधजन मन रंजन, पातिग रंजन, सिधचक्र विधि बुध हरणें ॥

त्रिभुवन सुख कारण, भवजल सारण, श्रीपई भंज परिमल्ल कृतं ॥
 अरु सुंदरि पाई, विद्या गुमाई, श्रीपाल सुख राज करै ॥

इति

× × × × × ×

इसके पश्चात् श्रीपाल का जीवन ही बदल जाता है । वह विदेश यात्रा करता है । बारह वर्ष तक विभिन्न द्वीपों में भ्रमण करता है । उसे यात्रा के मध्य में अनेकों विपत्तियों का सामना करना पड़ता है । लेकिन अन्त में वह पूर्ण सफलता प्राप्त करता है । अन्त में पूर्ण वैभवा एवं सेना के साथ वह वापिस मैनासुन्दरी के पास लौटता है । कुछ समय तक अपने ससुर के यहां रहने के पश्चात् वह वापिस अपने देश को लौट जाता है ।

× × × × × ×

श्रीपाल चरित्र का अन्तिम पाठ

चौपई

श्रीपाल की सेना

वीरदमन सो सुकलिह गयो । परमसिध सिधाल भयो ॥
 श्रीपाल भुंज सुषराज । सिद्धचक्र फल को शुभ साज ॥१॥
 सरख जीव की रक्षा करै । पुंन्य भाव सब जीय मैं धरै ॥
 मनमें परिग्रह संख्या करी । और विमूर्ति सब परहरि ॥२॥
 आठ सहस्र अतिवर संत । बीस सहस्र हाथी मैमंत ॥
 बीस लाख राधिया सुरंग । सोलह लाख रथ बर चंग ॥३॥
 पैदल संख्या कहीयन जाइ । बहुत रिधि को कहै बढाठ ॥
 संख्या सकलवर्गि जो कहौ । कहत कथा कछु अंत न लहौ ॥४॥

दोहा

प्रशुभ कर्म भयो दूर सब, शुभ प्रगट्यो जु अखंड ॥
 राज करै बिलसै विभौ, श्रीपाल बलि बंड ॥५॥
 कीयो सुजस मुख लोक मैं, दुर्जन के डर सल्ल ॥
 सकल जीव रक्षा करन, श्रीपाल भुव मल्ल ॥६॥
 एक छत्र सो भयो नरेश, जाको परिजन बहुत असेस ॥
 दीपानी ते नृप आए साथ, बहु सुख दे सम दे नरनाथ ॥७॥

चौपई

सत्त राज पारै घर वीर । दुष्ट जननि मर्द बरवीर ॥
 दयावंत नहीं ताहि समान । कोऊ भिंटि न सकई आन ॥८॥
 तिनसौं नेह कियो असमान । बोली श्रीपाल की मान ॥
 सेवक ह्वै अपने बनि गए । ते निरमै सदाही ते भए ॥९॥
 भरथ चक्रधर पाली जिसी । राजनीति कह पारै तिसी ॥
 जिनकी नाम पढ़ै चित्त । अतुल सुष सो भुंजै नित्त ॥१०॥
 इह विधि राज करै नरनाह । सब ही जनमल भसौ उछाह ॥
 दीन दुषित जन पोषै प्रभ । कोटि टका दिन बीजै अन ॥११॥

पुत्र प्राप्ति

बहुत दिवस यों बीते जाय । रह्यो घरभ सुंदरि कौ ताम ॥
 मैनासुंदरि के एत काज । भयो दोहरो निर्मल भाज ॥१२॥
 दोन पुंन्य परि राखे बित्त । आराधे जिन नाम पबित्त ॥
 पुंन दोहरो उपज्यो जिसौ । सिरीपाल सब पुरखों तिसौ ॥१३॥
 पूरे भए जब दस मास । जिन गुन गावत सुष विलास ॥
 भयो पुत्र सब लखन सार । कुल ससिहर उगयो कुंवार ॥१४॥
 सब कुटुंब भानंदित भयो । अतुल द्रव्य जाचिग जन दयो ॥
 कहाँ जोयसी सब सुषधाम । धनपाल है याकौ नाम ॥१५॥
 महीपाल ता पीछे भयो । तीजो पुत्र देवरथ ठायो ॥
 चौथो भयो महारथ बरी । ज्यारि भये मैनासुंदरी ॥१६॥
 मंजुसा जाए सुत सात । दुष्जन भंजन जिनके गात ॥
 पांच पुत्र जाए गुंनमाल । अति बलिष्ठ अरु गुनह विमाल ॥१७॥
 सब सुंदरी नि सुत उर धरे । एक हि एक रूप भागरे ॥
 कोटी भट सब सुत बरनए । बारसहस आठसै भए ॥१८॥
 बाढे दिन दिन सबै कुवार । और ही रूप और व्योहार ॥
 मंडलेश्वर श्रीपाल नरिंद । दीसै मनौ दूसरी इंद ॥१९॥

बोहा

जानै ऐसो फल भयो, मिट्यो अशुभ सब कर्म ॥
 यहै जानि नरलोक हों, पाली जिनवर धर्म ॥२०॥

धर्म का महारम्य

चौपई

धर्म एक त्रिभुवन में सार । धर्मै कुगय विनासन हार ॥
 धर्म एक सब सुष की कंदु । धर्म एक भंजै दुह दंडु ॥२१॥
 धर्म पसाइ गज गुंजरै । धर्म पसाइ हीस हय करै ॥
 धर्म पसाइ खबर सिर ढरै । धर्म पसाइ छत्र सिर धरै ॥२२॥
 धर्म पसाय सुष अधिकार । धर्म पसाइ सबै नरपार ॥
 धर्म पसाइ सुजस बिस्तारै । धर्म पसाइ सकल दुष हरै ॥२३॥
 धर्म पसाइ रूप अधिकार । धर्म पसाइ सेवै नर पार ॥
 धर्म पसाइ सुजस बिस्तारै । धर्म पसाइ सकल में हरै ॥२४॥

धर्म पसाइ सुरभि तनु होइ । धर्म पसाइ जाइ गद गोइ ॥
 धर्म पसाइ मित्र बरनारि । ससि बदनी रंभा उनिहारि ॥२५॥
 अमृत वैभ सुष कौ धाम । सील बुरंवर सेवै काम ॥
 धर्म पसाइ हौहि सुन घने । जिनकी सोभा कहत न बनै ॥२६॥
 धर्म पसाइ सेज सुष बसै । धर्म पसाइ काल नहि डसै ॥
 धर्म पसाइ न बैरी लरे । धर्म पसाइ छिद्र नहि छरै ॥२७॥
 धर्म पसाइ सिध बसि होइ । धर्म पसाइ जाय गज गोइ ॥
 धर्म पसाइ ज्वाला नहि जरै । सो प्राणी अतुर हँ परै ॥२८॥
 धर्म पसाइ शेर मरि जाइ । धर्म पसाइ परै सब पाइ ॥
 धर्म पसाइ न मूसै चोर । धर्म पसाइ न व्यापै घोर ॥२९॥
 धर्म पसाइ होइ जल पार । नदी सरोवर सागर धार ॥
 धर्म पसाइ न दाँहै घाउ । धर्म पसाइ मिटै बल भाउ ॥३०॥
 धर्म पसाइ देव बास रहै । धर्म पसाइ मली सब कहै ॥
 धर्म पसाइ उचाटन लगै । धर्म पसाइ देखि रिपु भगै ॥३१॥
 धर्म पसाइ अथ मुंचन लहै । धर्म पसाइ सोक सब बहै ॥
 धर्म पसाइ धरम मति होइ । माया मोह निवारै सोइ ॥३२॥
 धर्म पसाइ देह बहु दान । धर्म पसाइ मिटै अवसान ॥
 धर्म पसाइ पंचव्रत धरै । भव के दुःख सर्व परिहरै ॥३३॥
 धर्म पसाइ डिगै नहि चित । आराधै जिन नाम पबित ॥
 धर्म पसाइ कर्म कौ नास । धर्म पसाइ जान परकास ॥३४॥
 धर्म पसाइ बहुल कौ कहै । प्राणी मुक्ति जाय बर लहै ॥
 इंद्र आदि सब सेवै पाइ । बहुरि न भव में आवै जाइ ॥३५॥
 धर्म पसाइ मोक्ष गति होइ । धर्म पसाइ मुक्ति बर सोइ ॥
 धर्म पसाइ पंच पव होइ । तातैं धर्म करी सब कोइ ॥३६॥

बोहा

प्राणी सुनौ जरित सब. अरु देखौ जिय जोइ ॥
 धर्म हितु संसार में, जातैं सित्र पद होइ ॥३७॥

एकहू दिन श्रीपाल नरेस । बैठ्यो संवासन अलबेस ॥
 वाम अंग मैनासुंदरी । रूपवत सब ही गुन भरी ॥३८॥
 करे चमर सोहै सिर छत्र । हर्षित चित महा सुभ सत ॥
 आग नाटिक नर्च अपार । गीत विनोद हो हि अधिकार ॥३९॥
 बुधजन भाये महापुरान । सुनिये ताकी अरथ वधान ॥
 कस्तूरी चीवा अरु मेद । कपूर जवादि कासकी भेद ॥४०॥
 कुंकुम सों मदै बसु अंग । चहुंघां फैली वास अमंग ॥
 इह सुष आसन बैठ्यो जाम । आ बनमाली प्रणम्यो ताम ॥४१॥

मुनि दर्शन

अैसे भाष्यो पराई सेव । थो कूपति ब्रह्मामनि देव ॥
 ले फल फूल छहों रितु तनै । जिनकी सोभा कहत न बने ॥४२॥
 उपवन सब परिकूलित भयो । बेबत ही मेरौ दुष गयो ॥
 आवागमन भयो मुनि तनै । वा सोभा कैसे कर भनो ॥४३॥
 यह सुनि श्रीपाल तुडियो । सिधासन ते उठि हरषियो ॥
 सात पैड उतर्यो तब सोइ । प्रोध्यनयो मनमें सुष होइ ॥४४॥
 बस्त्राभरन उतारे सबै । बनमाली कौ दीए तबै ॥
 पुनि बैठ्यो राइनि की राउ । तीन समांन सु उपज्यो आउ ॥४५॥
 अति उदार ताकी चित भयो । बहुत दर्ब बनपालदयो ॥
 आनंदमेरि दिवाई तबै । नगर लोग चलि आए सबै ॥४६॥
 चउरंग दल चली अमंग । अंतेवर सब लीयो संग ॥
 ते परफूलित चली बिसाल । जिन गुन गावत आछी बाल ॥४७॥
 करे संग सब मंगलाचार । बहुत परिगह चली अपार ॥
 पंथ न सूर्य छिपियो भान । सिरीपाल मनमें रंजान ॥४८॥
 अैसे दलसों पहुतो तहाँ । उपवन महा मनोहर जहाँ ॥
 कुसमित कुसुम वृक्ष अधिकार । जह तह वासु खेत अलिमार ॥४९॥
 मंद पवन अति सीतल बहै । अति सुवास मन कौ दुष दहै ॥
 कछु कदम मोर कछु हरे । कछु रुब फूले कछु फरे ॥५०॥

रति बसंत सोहत बन जिसौ । मुनिवर पुन्य भयी बन तिसौ ॥
द्रुम असोक सुंदरता मांहि । ताकी अति सुंदर शुभ छांहि ॥५१॥

सब सुष करि श्रीपाल हि खीठ । ताकी लाग्यो मन को ईठ ॥
ता करि मुद बिस्त दुषहंत । मुनिवर बैठ्यो महा महंत ॥५२॥

देख्यो श्रीपाल परमेस । मनमें उपज्यो सुष असेस ॥
एक परम पद जानै जोइ । चेतन गुन आराध सोइ ॥५३॥

मुनि बर्णन

राग रोस नहि जाकी बिस । संयम केवल पालै निस ॥
तीन गुपति पालै परमत्थ । रत्नत्रय भुषत समरत्थ ॥५४॥

तीन सल्लि फेबन सिवकंत । रयांग धरन जगुवल्लम संस ।
भय जलनिधि तारन जिहाज । पंच महाव्रत धर मुनिराज ॥५५॥

मकरध्वज ध्व्यो धरि भाउ । छहौं दरबगुन भासन राउ ॥
अट्ट कर्म माया मद हरण । अट्ट सिद्ध गुन धारण सरण ॥५६॥

नवविधि ब्रह्मचर्य प्रतिपाल । दसलक्षण गुण धरण दयाल ॥
एकादस प्रतिभा जिय मांहि । द्वादशांग भासन जो आहि ॥५७॥

बारह विधि तप करै प्रमान । द्वादस अनोदित धरन सुजान ॥
बाइस परीसह सहन जभार । पंच महाव्रत पालन हार ॥५८॥

देवत उपजै हवि विसाल । असी मुनि बंधो श्रीपाल ॥
तीन प्रदक्षणा दीनी ताहि । निमसकर कीयो ता काहि ॥५९॥

आपन अतेवर परवान । नगर लोग संजूस समान ॥
बैठ्यो ता मुनीस कै पास । अति आनदित भयी उल्लास ॥
सब मिलि अस्तुति कीनी जवै । धर्मवृद्धि मुनि दीनी तबै ॥६०॥

बहुय्यो निमस्कार करि राउ । पूछन लागी मन धरि भाउ ॥
भौं मुनि कहना सरवर बीर । कहौ घर्म बुद्धि गुनगंभीर ॥६१॥

जातै जीवन मरन न होइ । जातै भौन सरीरह होइ ॥
दुरगति पंच निवारन हार । असी मर्म कहौ सुभ सार ॥६२॥

मुनि द्वारा धर्मोपदेश

यह मुनि मुनि जंपै सुभ कंद । सुनौ राइ निज कुलके चंद ॥
 धर्म वृद्धि हौं भाषीं पिसी । श्रीजिन आपुन भायो जिसी ॥६३॥
 बडौ धर्म दस लक्षण जानि । गुन अनंत को कहै वषांति ॥
 अरु समिक दरसन सुभ जोइ । धर्ममूल है प्रथमह सोइ ॥६४॥
 अनुल लखि समिकत ते सब । समिकत ते जहिए सिव दर्भ ॥
 समिकत तीर्थंकर पद करै । समिकत गुन अनंत संवरै ॥६५॥
 सम्यकु सर्व होष दुष नास । सम्यकु सबही सुषको बास ॥
 समिकत बिन दुष बाधें तब । सम्यक बिन नर भवर्षे भर्मे ॥६६॥
 सम्यक गुन जाकै मन आहि । सर्व गुन आलंबै ताहि ॥
 तपु जपु संजमवृत अरु पुन । सम्यक एक बिना सब मुन ॥६७॥
 अरु मुनि थावक अत हो राइ । सपेपी कहौ समझाइ ॥
 मन बच काइ विसुध्दौ चित्त । जीव भइ न कीजिए नित्त ॥६८॥
 धावर बिनु कारन ठारिए । प्रथम अनोवृत यह पारिए ॥
 सचं भुष सचं जो रहै । मिथ्या वचन मूलि नहि कहै ॥६९॥
 अलिखौ बोल बोलिए जव । जीव विराधत उबरै तब ॥
 पुरपट्टन मारग मै जाइ । परधन दिष्टि परै जो आइ ॥७०॥
 लेइ अदत्तन अतिम सोइ । जिन समान देव जिय जोय ॥
 कबहुं न चोर संग जाइए । ताकी हूर्यो न धनु छाडिए ॥७१॥
 परदारा न देखिए नैन । माता बहन सम बोलहु बैन ॥
 हय गय रथ अरु दासी दास । वस्त्राभरन श्रीर घरवास ॥७२॥
 गाइ भैसि अरु धेत वषांति । इन संख्या कीजिए प्रवर्तन ॥
 अनोवरत एकावस सार । श्रीर दया गुन यं व प्रकार ॥७३॥

बोहा

जो को पारे भाव धरि, सुष भुंजै मन सोइ ।
 भव दुष सकल निकंदिकै, मुक्ति श्रीफल होइ ॥७४॥

पुनि अनोवृत सुनि हो राइ । जिसि अरु विदिसि भ्राम कौ जाइ ॥
 इनकी संख्या लै है जोइ । एक प्रथमगुन जानौ सोइ ॥७४॥
 हीन भलेछे बसत हैं जहां । कबहुं भूलिन जश्यै तहां ॥
 पुन प्रभावना जहां न सोइ । तहां विवेकी लोग न कोइ ॥७५॥
 नपी संजार स्वान जिय जिते । भोजन इच्छ महन हो तिते ॥
 तिनपै ते लीजिए छिड़ाइ । बड़ी एक गुण है यह राइ ॥७६॥
 मैंन सोह लाष अरु राल । महु बासिए भूत हरिताल ॥
 अरु तिन मै बसिए परवान । धर्मवत सयं गुन जाल ॥७७॥
 यह उद्यम सबही ते हीन । अरु इन दंडिन लेइ प्रवीन ॥
 प्रथमहि जिन चैत्याल जाइ । तब उदिम आरंभे आइ ॥७८॥
 कं प्रतिमां पूजै निज मेह । तब भोजन सौ पोषै देह ॥
 उत्तर दिसि सनमुख सुभथान । पालिक सैन करी नर जान ॥७९॥
 कीजै सामाहक त्रिग काल । मूलमंत्र जपियै सुबिसाल ॥
 राग दोस दीजै छिटकाय । पंच परमगुर चित्त गुणाय ॥८०॥
 संजम तरवार बैसी छांह । सुभ भावना घरी मन्मांह ॥
 तिहता आसन मांडी सार । पौन न जहां बहै पैसार ॥८१॥
 एक मांस मै पंचह बार । कीजै ब्रत मन सुध विचार ॥
 बक्षा भरण रैन अरुधाम । पान सुगंध भोग अभिराम ॥८२॥
 इंद्री पोषन कीजै भाव । इनकी संख्या कीजै राव ॥
 असी विधि ते बाडै धर्म । तासैं सकल पाप अरि कर्म ॥८३॥
 मुनि अजिया आवक बहुवास । अरु जे रोग लीन जन पास ॥
 च्यारि प्रकार दान जो देइ । मनवांछित फल सोज लहेइ ॥८४॥
 द्वारापेयन करै निहारि । जौ लौं बजै पहर परि चारि ॥
 करै सोधि घर भीतरि जोइ । सोई जानौ आवक लोइ ॥८५॥
 सब जीव करतां रापियै । अमिल बोल सबसौं भाषियो ॥
 जौलौ अपनी कछू बसाइ । जौउ बिराधत लेहु छिड़ाइ ॥८६॥
 तौ करना मनमाहि अनाइ । समकित धरिफैं नीकें भाइ ॥
 हाइ हाइ मुषतैं उचरी । दया भाव उर अंतर धरी ॥८७॥
 निसल्ल मरन करि भ्रमो त्रिवेह । काल पाइ पावै सब रेह ॥
 ए बारह ब्रत विविध प्रकार । या संसार माहि जो सार ॥८८॥

कहै सुनिदं सुनीं श्रीपाल । इनते धर्म बड़े अनिवार ॥

हरष्यो नृप इह सुनिपों जबै । पणविनि मुनिवर पूछ्यो तबै ॥५६॥

श्रीपाल द्वारा प्रश्न

तोहू:

भो ज्ञान दिवाकर परमगुरु, गुन रत्नाकरि जांनि ।

हमें भवातर है जिसे, तैसें कहों बधांनि ॥५७॥

चौपई

कौन कर्म करि कोटि भयी । क्यों मैं सिद्ध चक्र घृत लयी ॥

क्यों हूं पर्यो समद मैं जाइ क्यों भुजबल तिरयो निकुताइ ॥५८॥

कहौ कर्म स्वांसी सो तनी । भांड बिगोवों कीनीं घनीं ॥

बावन कर्म ते मेटियो सोंहि । यह संसी मेरै मन होहि ॥५९॥

मुनि द्वारा प्रश्न का उत्तर

यह सुनि मुनिवर जंपै तबै । सुनि श्रीपाल कर्म निज सबै ॥

भरत क्षेत्र सब सुषह निर्धान । जामैं कोटिगम परधान ॥६०॥

तामैं रत्न बंधापुर जांनि । वन उपवन करि सोभित मांनि ॥

जह श्रीकेतराज बलि बंड । विद्याधर सोहिधै प्रचंड ॥६१॥

विद्या जानैं अति चतुरंग । कुल जल रुह सारंग अभंग ॥

तसु भामा श्रीमती सुजान । सब अंतोवर मैं परधान ॥६२॥

अह निसि पिय मन रंजन करन । रूपवति सोभति मति हरन ॥

जैन धरम पालन परबीन । पात्रहि दान भक्ति अति लीन ॥६३॥

अनह दिन नृप ताहि समान । गयो जिन मन्दिर मन कल्याण ॥

महामुनिस्वर बंधो जाइ । फिर ताद्विग बैठ्यो सुष पाइ ॥६४॥

मुनि सु प्रसन्न भयो तिहवार । लाग्यो भाषन धर्म विचार ॥

पुन्य पाप जैसी फलु आहि । कह्यो प्रगट राजा सौ चाहि ॥६५॥

मुनि नृप मनमें हरष्यो जोनि । जैसी मुनिवर कही बधांनि ॥

प्रानंछो राजा घर गयो । जैन धरम पारै सुष भयो ॥६६॥

बहुर्यो अशुभ उदे भयो आइ । आवक वृत्त दीए छिटकाइ ॥

जोवन मद श्रीमद भयो राउ । भयो बिकल कैकहै बढाइ ॥६७॥

मिथ्या कर्म उदै भयो तास । सेवै गुरु मिथ्या श्री पास ॥
 कपहुं जैन पंथि नहि जाइ । मिथ्या ग्यान सुनै चित लाइ ॥१०१॥
 एकै द्यौस सातसं अंग । वन श्रीछा पहुतो तै संग ॥
 मुनिवर एक देखियो इसी । जानै चेतन गुन है जिसी ॥१०२॥
 सहै परीसा बाईस सार । मलिन देह घीनी अधिकार ॥
 हेम पटल सौ रहियो छाइ । रति आकार न अरनि जाइ ॥१०३॥
 ध्यानांरुढ मुद्ध मनधीर । देह जोग ठाडौ गंभीर ॥
 ताहि देखि तिम्र अमुगुन कियो । कौही कोही जपन लियो ॥१०४॥
 सागर मै डरबायो सोइ । ताको मन चलु नैक न होइ ॥
 पुनि करुना बसजो मन आइ । जलमें तै निकसायो घाइ ॥१०५॥
 कछु पाप की बंध ह्वै गयो । निज मन्दिर मो आवत लयो ॥
 अंतह दिन वन मयो तुरन्त । देख्यो तिन मुनिवर आवंत ॥१०६॥
 पर मत नु जानै मुनिराउ । राग रोस छाड़्यो वरि भाउ ॥
 घोर बीर तइ घीनी अंगु । भरयो घूरिसौ दीसै अंगु ॥१०७॥
 रत्नत्रय व्रत ध्यावै चित्त । मांस एक बित आहार निमित्त ॥
 आवत हौ सो नगर मझार । देखि राइ दुष कियो अपार ॥१०८॥
 पोह्यो मुनिवर सौ तिहवार । तै कत घोई लाज गंवार ॥
 नांगो भयो फिरत बेकाज । काया मैलो अति बेसाज ॥१०९॥
 मार मार करि उठियो चाहि । असिबर लै सिर काटो चाहि ॥
 बहु उपसर्ग तास कौ करयो । बारंबार भृष्ट उषरयो ॥११०॥
 प्रति हास्य कियो ता सनौ । कवियन कहै कहाली भनो ॥
 बहुदुर्यौ कृपावंत अति मयो । ताहि वंचि आगै चलि मयो ॥१११॥
 महा पाप बंध ह्वै गयो । काहु तै श्रीमती सौ कह्यो ॥
 अजुगत बात करत तो कंत । मुनि निदित डौलत बिहसंत ॥११२॥
 कबहुं जलमें देत डराइ । भांड भांड उपसर्ग कराइ ॥
 यह सुनि रानी विकरल भई । यहै बात सोचन नई ॥११३॥
 कौन पाप यो करत गवार । जानत नहि धर्म व्योहार ॥
 महा कुसंगसि सो क्यों भई । हा बिधि करम कहा तै ठई ॥११४॥

बीहा

यह चितति रानी हियै, मलिन भई बिलषाइ ॥
 निवा अपनी करत सो, पीढि रही मुरजाइ ॥११५॥

चौपई

राजा आय गयी तिहु बार । पहुँच्यो सो रांनी बंधार ॥
 जो देखै ती बिलसी आइ । लागी पूछन सकुचत ताहि ॥११६॥
 प्राण पियारी ए बरनारि । कारन कहा सु कहहि बिचारि ॥
 हसइ न बोलै जी मुरझाइ । रांनी कहि विरतंत सुनाइ ॥११७॥
 बोली एक चेटिका तबै । राजा बात सुनीं यह अरै ॥
 तुम आवक व्रत दीयो छांडि । तुम मुनिवर निदे ननभाहि ॥११८॥
 अर जल मैं दीने डरवाइ । करि उपमं तबैलिए कढाइ ॥
 बाहु भोसैं कहियो आइ तारैं । पौडि रही मुरझाइ ॥११९॥
 यह सुनि राजस लज्जित भयो । अपनी चूक जानि परनयो ॥
 बार बार जंपै हे त्रिया । मो पापी अकर्म सब किया ॥१२०॥
 जो तैं अशुभ उदय भयो आइ । सेए मिथ्या गुर के पाइ ॥
 ताकी सीष नीकें सुनि लई । नांठी सुमति कुमति अति भई ॥१२१॥
 हूं पापी पातक को भूर । हों गुन हीन महा जड़ कूर ॥
 हों अभिमान महा मद भरी । देषत अंध कूप मैं परो ॥१२२॥
 तुम सौ कहा कहों हो साखि । नकं पंथ तैं ले मो राखि ॥
 रांणी वचन सुणो ए जबै । दयावत हूं बोली तजै ॥१२३॥
 स्वामी तुसी सब अजुगती करी । धर्मकथा मन तैं बीसरी ॥
 मुनिवर निदे अति दुषदयो । सुनि कैं मोहि महा दुष भयो ॥१२४॥
 अब तुम सुनहु धर्म की रीति । बहुत न्याई मति राख्यो प्रीति ॥
 जिन सासल व्रत निबै जोइ । भवमैं चहुंमति भ्रमि है सोइ ॥१२५॥
 जो पापी निदै बहु भाइ । सो निहचै करि नकंह जाइ ॥
 पंच प्रकार सु देषहि दुःष । किंचित कहून पावै सुख ॥१२६॥
 सो प्रांनी पीडिये दुषाइ । कंपित सूली दीजै जाइ ॥
 पुंति उपल मैं छरियै सोइ । मूर मेट जब ताकी होइ ॥१२७॥
 बहुर्यो उपजै ताहि सरीर । बहु दुःष पावै प्राणी कीर ॥
 संडासनी तन तोरै मारि । नीदै ताहि देइ बहु गारि ॥१२८॥
 गाली रांग ताको मुष भरें । कुसपाइनि मुहुं कूं चौकरैं ॥
 दहदहाति अति पुतरी लाइ । भेटावै गर कंठ लगाइ ॥१२९॥

परत्रिय रावन लेहु सुष एह । भोग करहु यासों करि नेह ॥
 कछु जीय मति करहु संताप । सो कहि यौन कियो तैं पाप ॥१३०॥
 तैं जिन अत मेढ्यौ मन डर्यौ । तैं परधन हषित छै हरयौ ॥
 तैं मुनिवर निदे अनिवार । बिन कारन दुष दये अधिकार ॥१३१॥
 तैं पर हर्यौ सीलव्रत जानि । तू केवल पापिन की षानि ॥
 यह दुष मुंजि जाह संसार । करहि धरम हव अंछि गवार ॥१३२॥
 सुंनि स्वामी नरकह दुष इसौ । लो सौं मैं जु प्रकास्यौ तिसौ ॥
 या भवमें कछु पुंन्य उपजाइ । मुंनि पै जिनवर व्रत लै जाइ ॥१३३॥
 यह सुंनि राजा त्रिया समान । पहुच्यौ जाइ जिनेश्वर शान ॥
 तहां मुनीसर देख्यौ वीर । सुष की निधि अरु गुंन गंभीर ॥१३४॥
 ग्यान घरण त्रिसुध उदास । बंदे चरण कयल सुभ जास ॥
 जेपें राउ जोरि द्वं हाथ । हौं पापी अति मुनि हौं नाथ ॥१३५॥
 बहुत पाप मैं कियो विचारि । नरक पडते लेहु उबारि ॥
 धर्म पयासि पंचव्रत धरत । अबहं आयो तेरी सरन ॥१३६॥

श्रीपाल द्वारा पूर्वभव में सिद्धचक्र व्रत ग्रहण

यह सुंनि मुनिवर भयौ दयाल । सिद्ध चक्र व्रत लै सूपाल ॥
 तासौं होइ पापको छेद । ताकी जुगति सुनी यह भेद ॥१३७॥
 कातिक फागन भास असाढ । स्वेत पक्ष सब सुष की बाढ ॥
 अष्टमी दिन उपवास कीजिए । वसु दिन सिद्ध चक्र पूजिये ॥१३८॥
 अंतह निसि जागरन करेइ । दान सुपात्रहि सो पुन देइ ॥
 वसु दिन शील बरत पारिए । भेदाभेद चित्त धारिए ॥१३९॥
 पुनि उजोवन करै धरि भाउ । करै प्रतिष्ठा आठ बनाउ ॥
 अथवा सांतिक विधिकों करै । श्री जिन पूज करै भौ हरै ॥१४०॥
 अजिघा सारी दीर्घ जानि । पुस्तक दीजे मुनिवर मानि ॥
 भृंगार तारवल दीजे इते । आठ प्रवांन कहे हैं जिते ॥१४१॥
 श्रीगराहर भाष्यौ व्रत एह । करै जोइ सुख भूजे सिद्ध गेह ॥
 यह सुंनि राउ जिनेश्वर बदि । त्रिय संयुक्त ग्रह गयी अनेदि ॥१४२॥
 गह्वरी व्रत मन बच अरु काय । पूजै सिद्ध चक्र सुष पाय ॥
 तीन धार सो देइ प्रवानि । जनम जरा नासन सुष पानि ॥१४३॥

कुंकुम अरु कपूर वर गारि । चंदन लेह पवित्तनिहारि ॥
 अरु अखंड अक्षत बहु लेह । उज्जल पुंज मनोहर देह ॥१४४॥
 वर केवरी केतुकी माल । चंचेली अरु बेली गुलाल ॥
 चंपक जुही मालती मार । अविलसुगंध अंबुज मन्दार ॥१४५॥
 नाना विधि के पहूप अपार । पूजै भरी अंजुरि सुभ सार ॥
 घटरस नरसिंह सुभ जोड़ । बहु पकवान चढ़ाव सोड़ ॥१४६॥
 कपूर दियो तहां धरै प्रजारि । बहु किस्तागर खेवै वारि ॥
 नानाविधि फल पूजै भाउ । जल गंधाक्षत पहूप वनाउ ॥१४७॥
 नईवेद दीपक अरु बूग । सुंदर फल तहां धरै अनूप ॥
 देह अर्घ्य पूजै सुभ चित्त । सिद्ध जंत्र आराधन नित्त ॥१४८॥
 पुनि उजबन करै धरि भाउ । करी प्रतीष्या धर्म सहाउ ॥
 पूज्यो निमलआइकै जबै । संन्यासह तनु छाड्यो तबै ॥१४९॥

दोहा

दिव्य देठ सुरगह भयो । मुंज्यो सुष अधिकार ॥
 भाउ मुक्ति चं आइयो, सो तू है श्रीपार ॥१५०॥

चोपई

सुनि श्रीमती अनोखत पारि । पहूती सुगं देह तजि नारि ॥
 तहां तै जे आइ गुन भरी । सोई है मैनासुन्दरी ॥१५१॥
 अरु ए देषि सात सैं अंग । पूरब मित्र जु रहते संग ॥
 मुनिवर सौं तैं कुण्ठी कह्यौ । तातैं कुण्ठी अहे दुष सह्यौ ॥१५२॥
 तैं मुनि जलवोरन उचर्यौ । तातैं तू सागर में पर्यौ ॥
 दयावन्तहैं काढ्यौ सार । ताही ते तैं पायो पार ॥१५३॥
 जो तैं भिष्ट भिष्ट करि भयो । तातैं भाड विगोवो भयो ॥
 असिबर सौं मुनि मारन कह्यौ । तातैं त्रास महा तैं सह्यौ ॥१५४॥
 पुज्य भवांतर सुनि हो दाद । दुःष सुष यहै भ्रम छिड काय ॥
 यह सुनि मुनि बंधौ श्रीपार । अस्त आचर्यौ सुष अधिकार ॥१५५॥

उपदेश के बाद गृहागमन

आदि अंत पूरव भव सरन । दुःष विनासन सुभगति करन ॥
 बारंबार नवायी सीस । वर आपनै गयो नर ईस ॥१५६॥

सिध चक्र आराधे चित्त । जैन धरम प्रतिपालै नित्त ॥
 पुत्र कलित्र मित्र सुभ ठान । करै राज चक्रवै समान ॥१५७॥
 इच्छित काम भोगरस लेइ । मैनासुंदरि मान घरेइ ॥
 नाटिक नचै बेद घुनि होइ । सत्र राज पारै नृप सोइ ॥१५८॥
 दुरजन बसि कीए बलि बंड । हय गय नग लीजै बहु डंड ॥
 इन्द्र तुल्य सुष जाइ न गिन्यौ । महाराज सब ही विधि बन्यौ ॥१५९॥
 बहुत काल गयी इह रीति । वसुधा सकल करी बसि जीति ।
 गज गुंजरै महामदमंत । हय हीमै देधियै अनन्त ॥१६०॥
 सेवै पाइ बहुंत नर पाल । निति प्राते आवै सरस रसाल ॥
 अष्ट सहस सुंदरि भोगवै । जा प्रताप महि मंडल तबै ॥१६१॥
 बाँचै वृधजन काव्य पुरांत । गुनियन जन को राय मान ॥
 गुनियन जन राखै दरवार । पावै हय गय विभी अपार ॥१६२॥

वीराग्य भाव उत्पन्न होना

एकह दिन आसन विहसंत । चोहूँघा चौकियो जोबंत ॥
 उनकापात भयो अति जांम । देखत ही चित चित्यौ ताम ॥१६३॥
 ज्यों चितत यह गयी बिलाय । त्यौही मो विभूति सब जाय ॥
 राज भोग धन जोवन गर्व । असे ही मो जैहै सर्व ॥१६४॥

पुत्र को राज्य देना

यह मनमै चितवै नरेस । सो उदास मन भयो असेस ॥
 धनपाल सुत लयो बुलाय । कह्यौ राजभार लै सुष पाइ ॥१६५॥
 रत्त राज पाजौ धरधीर । हम निज काज सबारै बीर ॥
 यह सुनि बिलष्यौ भवन कुंवार । एहु बचन तैं कह्यौ असार ॥१६६॥
 बालापन सुष लह्यौ न जानि । हय सुष गय सुष लह्यौ न मानि ॥
 बहै निहचिंत न कीयौ भोग । राज भार हौं नाहीं जोग ॥१६७॥
 तुम बिन राज न मोपै होय । महादुष को देखे जोइ ॥
 तासौ राव कहै सुनि धीर । कुल मारग प्रगटौ बर बीर ॥१६८॥
 पून न बहै पिता को राज । कहा सरघौ तिन जाऐ काज ॥
 जे सुत पिता सुख नहि दैहि । अरु कुटुंब को भार न खेहि ॥१६९॥
 अरु जे कुल कलंक नहि हरैं । ते सुत मही भार न अंतरैं ॥
 ता सुत जाये हो इक सुत । तातैं दपरो भलो अपूत ॥१७०॥

जननी भार धरें दस मांस । दुर्जन डरें न ताकें वास ॥
 जाबिग जाकी आस न करै । ते सुत गर्भ मांहि किन गरै ॥१७१॥
 तुमलो सब लायक गुन सार । सीध लेहु राज को भार ॥
 लज्जित रहे जु नवाबो सीस । अति रूपो देख्यो नर ईस ॥१७२॥
 यह सुनि कुंवर कियो धिर चित्त । राज भार तब लयो पवित्त ॥
 राइ हरष सुत कौ मुष चाहि । राज पट्ट बांध्यो सिर ताहि ॥१७३॥
 कहै राऊ सुनि कुंवर मुजान । नीकै करि मिख लै परवान ॥
 सील भार जे अंचहि बंध । पररव नीकौ देखत अंध ॥१७४॥
 मिथ्या दरसन देखत जाहि । लोचन सकल सदा सरमाहि ॥
 विषे राग कबहुं नहि सुनै । मिथ्या कथा न मनमें सुनै ॥१७५॥
 अर कबहुं न सुनै परपीर । तेइ सफल भवनसुनि बीर ॥
 नाना विधि के पहुँ अपार । जिन की अति सुबास अधिकार ॥१७६॥
 तिन ने प्रमुदित होइ गुनित । नासा सफल जानियो नित ॥
 कबहुं होन बात नहि चबै । कबहुं गुन थासाय न तबै ॥१७७॥
 स्वाद प्रमाद न मानै सोइ । रसना सफल मानिये जोइ ॥
 सुरत संग नहि बंधे चित्त । इंद्री सफल भहा सुनि निर ॥१७८॥
 दया भाव मनमें राखियो । मधुर बँन सबसौं भाषियो ॥
 न्याय पंथ पर लिए न जानि । तजिए नही धर्म की बानी ॥१७९॥
 सुष रहिये माया के पास । पुण्यवंत सौ रहै उदास ॥
 पिसुन बात सुनिये नहि काम । जीबें में न दोषिये जान ॥१८०॥
 पर उपगार कीजिए प्रीति । वीलें सांच राज की रीति ॥
 कबहुं लोभ न कीजे चित्त । परधन परदारा परामित्त ॥१८१॥
 बहुत देस पुर पट्टन जिते । मुजबल जीति कीए बसि तिते ॥
 सुत संतोष चित्त मति करौ । बेरी विभो नषा मति धरौ ॥१८२॥
 बहुत सीप दीन्ही अधिकार । आपन बन पग धारें सार ॥
 बन गच्छत जानियो नरेश । धायो पुरजन सकल असेस ॥१८३॥
 कोऊ रुदन करै विलषाह । कोऊ बिलसै अति सुषपाह ॥
 कोऊ कहै बुरी अति भई चंपापुर की सोभा गई ॥
 दयावंत सब सुष कौ धाम । रूपवंत मानै सुर काम ॥१८४॥
 महाबली मुजबल उदारि । दल सुडौल पक्ष कर्षे विचारि ॥
 राजरीति धधर्षसी राम । महि मंडलमें जाको नाम ॥१८५॥

जाकै राज सबे सुष लहै । कबहुं दुःख दागिद न गहै ॥
 जाकै राज दान सब दए । कबहुं मान हीन नहीं भए ॥१८६॥
 जाकै राज आठ मद मते । जाकै राज भोग रस रते ॥
 जाकै निबह्यो कुल आगर । भांथिनि दरयो सीन फँस मर ॥१८७॥
 जाकै राज न भूषे चोर । जाकै राज न व्यापे चोर ॥
 जाकै राज यदुथो परिवार । दुषी दीन जनको आधार ॥१८८॥
 जाकी कहै कथा सब कोड । अंसी हूजो भयो न होइ ॥
 ये गुन सुमिरि अह लानिचाहि । नरनारी घर घर पिछताहि ॥१८९॥

मैनासुन्दरी द्वारा दीक्षा ग्रहण करना

मैनासुन्दरी दिख्या काज । चजियो धरी जिनेश्वर लाज ॥
 आठ सहस्र भामिन जे आन । तेऊ संग भई परवान ॥१९०॥
 सकल परिगह सुख छिटकाइ । चाली श्रीपाल की माइ ॥
 पुरवासी और नरनारि । दिख्या धारन बली विचारि ॥१९१॥
 कोटीभट बन पहुँच्यो जवै । महा मुनिस्वर देख्यो तबै ॥
 बंद्यो ग्यान धरम परमेस । लाग्यो अस्तुति करन नरेस ॥१९२॥
 जय भविजन जलरूह के भोन । जय धूर्सति धारन परवान ॥
 जय जय सिव रवनी गलहार । जय जय रत्नजय व्रत धार ॥१९३॥
 विषयन बन मूरन गज दंत । जय जय गुण रत्नाकर संत ॥
 जय जय सर्व दीप दुष हरन । जय भव जलनिधि तारन तर्न ॥१९४॥
 जय जय मोह पार पग राज । जय जय कल्पतरु सुष साज ॥
 जय जय कोह दधानल भीर । जय जय निर्वासन भवभीर ॥१९५॥
 जय जय मोह पास हत भीर । जय जय नभ कुंजर हरि भीर ॥
 जय जय अट्ट कम्म कुल नास । जय जय केवल ज्ञान पमास ॥१९६॥
 जय जय सुर नर सेवै पाय । जय जय केवल भजन राइ ॥
 जय जय सुर नर सेवै वृंद । जय जय कहणा रस जिनचंद ॥१९७॥
 जय जय वृत्त भूषन मुनि राइ । जय जय सुर नर सेवत पाइ ॥
 जै जै क्षमावंत शुभ कंद । जै जै प्रभु नासन दुह दंद ॥१९८॥

दीक्षा

ओ भुन सागर परमगुरु, सरण आईयो लोहि ॥
 या सत्तार सगुद मै, बूढ़त रायो मोहि ॥१९९॥

चौपई

मो की वृत्त दीज सुभसार । जो चहुंगति कुल छेदन हार ॥
यह सुनि मुनिवर जपै एह । धनि तू जिन यह कियो नेह ॥२००॥

श्रीपाल द्वारा मुनि दीक्षा ग्रहण करना

बहुरयो तू भव दुष न लहै । जामन मरन सब भो दहै ॥
यह सुनि श्रीपाल जीव धर्यो । त्रिमां त्रिमंतर सबस्यो कर्यो ॥२०१॥
मित्र भाव सबगो परपासि । राग रोस दोष जिय नाषि ॥
पुनि सेहुर मणि नूषित सीस । छिनमें लयो उत्तारि नर ईस ॥२०२॥
कंकन कुंडल दीए डारि । मूँके वस्त्राभरण उत्तारि ॥
पंच महाव्रत पर चित्त दियो । पंच मुठि सिर मुंचन कियो ॥२०३॥
वास्यास्यंतर शुष संभयो । अति निर्गंध भयो गंधु गयो ॥
जो हौ सब सुष सेवन जानि । तिन दिव्या लीनी परवानि ॥२०४॥
कुंदपहू रानी सुभ चित्त । अजियो की वृत्त लियो पवित्त ॥
मैनासुंदरि सब सुष कर्न । दिव्या लीनी जिनवर सन ॥२०५॥
बस्त्राभरण भोग सब गवुं । छिनमें छांडि दियो तिह सवुं ॥
रैनमंजूसा अर गुन माल । तिनहुं दिव्या लई गुनाल ॥२०६॥
चित्तरेह पीमा परधान । और ज अंतेबर कछु आन ॥
दीक्षा सबनि लई घर भाउ । माया को सब तज्यो उपाउ ॥२०७॥
और जु हुते सातसं अंग । दिव्या तिन हूं गही अंग ॥
जो कछु राज मित्त है और । दिव्या सबनि लई तिह ठौर ॥२०८॥
नब श्रीपाल अमें बनराइ । महा मुनिसर भयो शुभाइ ॥
ताके सिर परि ग्रीषम भांन । महा तप को कहै बषान ॥२०९॥
बर्षा सीत परं असरार । सहै दुष मनमें अधिकार ॥
कृष्णागर बहु कुंकुम गारि । तन चरचतो निहारि निहारि ॥२१०॥
सीत तुसार छाया ता देह । तपसी तो जान्यो अति नेह ॥
चाल महावृषा की छांह । इन्द्रो वन डाल्यो छिन माह ॥२११॥
दिक्क चरित्र धर्यो जिय जोइ । अठाबीस गुन पारै सोई ॥
निज पद आराधै गुन राउ । अमें अकेली चित्त शुभाउ ॥२१२॥
देइ जोग धन भीतर जाइ । बहुत सहै उपसगं सुभाइ ॥
धरं ध्यान अति धीरी चित्त । ठाडी मानो धेर पबित्त ॥२१३॥

मास एक दिन लेह अहार । सहै परीसा बाईस सार ॥
 पावस रित द्रुम तरि सौ रहै । ग्रीष्म रित गिर परि दुष सहै ॥२१४॥
 सीत मास सागर के तीर । जोग देह दुष सहै सरीर ॥
 बहुत भई अति धीनी देह । छांड़े सब सुष भव नेह ॥२१५॥
 हिम पटल तन छाँयो ताहि । सब सुष लहिए तात न चाहि ॥
 एक ध्यान ठाढ़ी सो रहै । कोऊ ताकी भेद न लहै ॥२१६॥
 कोऊ कहै चित्र निरमयी । काहु तन पाहन को चयो ॥
 कोऊ कहै काऊ की देह । मन बच क्रम धर्म धरि नेह ॥२१७॥
 बनचर जीउ न भी मन धरै । तासौं देह घसै सुष करै ॥
 पंथी बैठे अरु उड़ि जाहि । ताकी संक न कछु कराहि ॥२१८॥
 हंस तूल्य की सेज्या बीर । जो सोवतौ साहस धीर ॥
 गिर कंदरा सैन सो करै । कछु न दुष अपने मन धरै ॥२१९॥
 जो चलतौ बहु दल बल साजि । ह्य उपरि जो चढतौ गाजि ॥
 बिनहि सुखासन चलतौ राउ । छत्र छांह चलतौ धरि भाउ ॥२२०॥
 ताके सिर पै ग्रीष्म भाँन । महा तप को करै बषाँन ॥
 वर्षा सीत परै असरार । सहै दुष मनमें अधिकार ॥२२१॥
 कृष्णागार बहु कूंकम गारि । तन चंचली निहारि निहारि ॥
 सो तुसार छाँयो ता देह । तवते अय यासौं अति नेह ॥२२२॥
 अट्ट सहस्र त्रिय रमतौ जोइ । सहै परीसा बाईस सोइ ॥
 मन बच काय बिचारै चित्त । जानै एक सत्त अरु मित्त ॥२२३॥

दोहा

श्रीपाल मुनि को केवल्य प्राप्ति

तप करंत मन सुद्धवर, कियो करम की नास ।
 ताको उपज्यो विमल पद, केवल ध्यान पयास ॥२२४॥

चौपई

गंधकुटी की रचना

आसन कंठे देवनि तनै । आए सब सुर जै जै भनै ॥
 धनपति निर्माणी सुभयान । गंधकुटी रचियो परवान ॥२२५॥

कंचन मणि रतननि सौं जरी । अति रवनीक विराजै षरी
 उभय चमर दीपै सिर छत्तु । चौ संघह बंदियौ महंतु ॥२२६॥
 तीन प्रदक्षिण दे सुर राह । भयो करन अस्तुति धरि भाउ ॥
 जै जै अष्ट कर्म निरदलन । जय जय प्रभु त्रिभुवन के सरन ॥२२७॥
 जय जय श्री मंडल परमेस । जय जय मुनिगन व्रत उपदेस ॥
 सिद्ध चक्र फल पावन देउ । जै सुर नर असुरनि कृत सेउ ॥२२८॥
 जनम जरामृत नासन हार । जै मिथ्यामत धंडन सार ॥
 जै जै सीतल भग्न बीर । जै जै प्रसूनासन भव भीर ॥२२९॥
 जै जै काम कंज हीम पूर । जै जै अष्टम नासन सूर ॥
 जै जै पंच महाव्रत धारन । जै जै मोहवली बल हारन ॥२३०॥
 जै जै कोह सिध हत बीर । जै जै बम्म घुराधर धीर ॥
 जै जै चोगम कंद निकंद । जै जै जगभंजन दुह दंड ॥२३१॥
 जै जै आरज तन सुभ संत । जै जै मुक्ति बधू बरकंत ॥
 जै जै चरन घराधर सेस । जै जै भासुर मन हर नेस ॥२३२॥
 जै जै ग्यांत फौस मुनिराइ । जै जै त्रिभुवन जीव सहाइ ॥
 जै जै सम्यक दरसन सूर । जै जै लोह महीछह चूर ॥ २३३॥
 इह विधि स्तुति करि अनिवार । इन्द्र आदि सुर नरअपार ॥
 पन बिजि सुरलोका गए सबै । निज थानहु मुनि बैछ्यौ तबै ॥२३४॥
 लोयालोय पयासै सोय । निरमल वांणी ताकी होय ॥
 भव्य जीव प्रति औधै जेन । मिथ्यातिमर बिनास्यो तेन ॥२३५॥
 सिद्ध चक्र व्रत प्रगट्यौ करयो । राग रोस तिन सब पर हरयो ॥
 धर्माधर्म प्रकासक संत । भाष्यो जिन व्योहार महंत ॥२३६॥

निर्वाण प्राप्ति

सुर नर पसु पंथी गन जिते । जिनवर मंगल गावैं तिते ॥
 कर्म धानिया चूरै सबै । दीरघ काल गयो कछू तबै ॥२३७॥
 पुनि श्रीपाल निमल पद गयो । अमर मुक्ति सिध सोभयो ॥
 अहु महा गुन पाई सिद्धि । परमानंद भयो लहि रिधि ॥२३८॥
 जमम जरा तिन चूर्यो मन । सो भयो स्वामी त्रिभुवन सर्न ॥
 समकित रागण दसैं दीर्य सुमंहत । अवगहरा अगुरुलहु अव्वाहत ॥२३९॥
 सिद्ध विराजै जीति निधान । सुख अनंत निवसै तिह धान ॥
 सुर नर गन मंघव धरि भाउ । आराधै मनमैं करि आउ ॥२४०॥

बोहा

सिद्ध चक्र व्रत प्रगट करि , पंच मयहात मंडि ॥
 श्रीपाल मुक्तिह गयो, भव सुह सयल बिछंडि ॥ १४१ ॥
 इति श्रीपाल चरित्र महापुराणो भव्यसंघ मंगल करण ।
 बुधजन मन रंजन, पातिग गंजन सिद्धचक्र विधि दुखहरन ।
 त्रिभुवन सुष कारण भवजल तारण चौपई बंध परिमल्लकृत ।
 वह राजभि किनउ जग जस बिनउ बहु विभूति को बरनि कहै ।
 पुर पट्टन सख्य परहरिगख्य पंचमहावत सार लय ।
 सुभ त्यान उपायो त्रिभुवन गायो कोटीभटु सो मुक्ति गय । ११६४ ॥

चौपई

मैनासुन्दरी की तपस्या

पुनि मैनासुंदरि व्रत लीन । करै महातप बन अति धीन ॥
 सती परित कही न जाह । नाना विधि जो कहै बनाव ॥ १ ॥
 कंचन बरन देह श्रीतरी । कूंकम मंडित ही पल धरी ॥
 कामातुर रहती पिप संग । सो बन बसै सहै दुष संग ॥ २ ॥
 अति सुवास कूंकम रस भारि । मूषन बहुत पहरती नारि ॥
 सरद महल रहती सुषवास । कुमुम सेज सोवती उल्हास ॥ ३ ॥
 दीपग जोति धहति ही जाहि । सुष रहती रैन दिन चाहि ॥
 मंद पवन बहती दिन राति । कुसुमनि को बीजनी सुहाति ॥ ४ ॥
 आप आप बोरै सुजांन । दासी सेवतिही दिन मान ॥
 भीन बस्त्र पहनती सरीर । बहती तहां स्वेद की भीर ॥ ५ ॥
 अंजन मंजन मूषन साज । तन भूषती प्रीति प्रिय काज ॥
 अंबुज दल रहती कर लयै । रहती पालकनि परि पग दयै ॥ ६ ॥
 खाती अति सुगंध बन सार । तऊ तपति करतौ अतिमार ॥
 सो ठाडी गिर परि सुकमाल । सिर पर तपे भांन तिहकाल ॥ ७ ॥
 पालिक पर रहती मन चाह । भुवि परि भूलि न धरती पाउ ॥
 कोमल कमल नैन अधिकार । पग नेवर पहरै खुंनकार ॥ ८ ॥
 महि उपरि मुचती शुभशाल । तऊ पग बेती मनौ मराल ॥
 स्याम वदन छिपती तिह चाह । अरुनाइ बढ़ती बहु भाइ ॥ ९ ॥

इह विधि दिन वीर्य लै जाइ । पुनि अंरती कुवन सुखरह ॥
 अथ सो बन मारग पग धरै । शीषम रिति सिकता पर जरै ॥१०॥
 क्षरदै सोमवदन बिकास । मल निवारती देखिय पास ॥
 शीषम महल महा परभात । हो तो मलिन सीत कै घात ॥११॥
 हिम पटलनि करि छापी सोइ । पंडुर वरन कहै सब कोइ ॥
 इह विधि कष्ट सहै वर नारि । नाना विधि को कहै बिचारि ॥१२॥
 संन्यासहि तिन तज्यौ सरीर । निज परजाइ छेदियौ बीर ॥
 अच्युत स्वर्ग देव भयो तेह । अपछरि कोटि भई ता गेह ॥१३॥
 बार्दस सागर घाउ प्रधान । विलसै सुख को कहै वषांन ॥
 कह्यो चै जैहै शिव ध्यान । हूँहै सो परमेस प्रवांन ॥१४॥
 कुंद प्रभा रानी सुभ चित्त । वैही विधि तप चर्यौ पवित्त ॥
 तप छांड़्यौ केवल पद जोइ । तँ ही सुरग भयो सुर सोइ ॥१५॥
 रैनमज्जसां तप अति कर्यौ । पहंती सुरग महा सुभ धर्यौ ॥
 कर्यौ महातप और ज नारि । सुभ गति सब को भई बिचारि ॥१६॥
 इह सिरि सिद्धचक्र फल सार । सोभव दुःख विनासन हार ॥
 सब ही जीवनि कौ हैं सन । जनम जरा नासन सुभ कने ॥१७॥
 भो मगधेस सुनौ धरि भाउ । जहां श्री सिद्धचक्र व्रत धाउ ॥
 श्रीसी विधि श्रेणिक नर पार । गनहर पै सुनियो सुभसार ॥१८॥
 मनमै कहाँ व्रत धरि साउ । नाना विधि मन उपज्यौ चाउ ॥
 मन बच क्रम बंधी जिन नाहु । पहंती नगरी बध्यो उछाहु ॥१९॥
 हृथ गय रथ अरु दासी दास । अतुल लछि बहु भोग बिलास ॥
 करै राज सो इन्द्र समान । कीरति महि मंडल परवान ॥२०॥

बोहा

मुंज्यौ सुख संसार को, श्रीपाल इन्द्र समान ॥
 सिद्ध चक्र व्रत पारि करि, अमर्यो मुक्ति मिलान ॥२१॥

चौपई

सिद्ध चक्र व्रत का महात्म्य

अथ नर नारी उत्तम सोइ । सिद्ध चक्र प्राराधै जोइ ॥
 मन को भरम देइ छिट काइ । पूजै जंत्रहि धिर मन लाइ ॥२२॥

जल गंधाक्षत पुहुप अनूप । नेवज दीपक अरु सुभ घूप ॥
 फल नाना विधि अरुष चडाइ । अष्ट प्रकारी पूज कराइ ॥२३॥
 ताकी रोग सोग नहि रहै । अग्नि रूप दारिद्रनि रहै ॥
 पुत्र कलिज बियोग न होइ । भूह पिसाख दुखवै कोइ ॥२४॥
 डाइन साइन जोगन जानि । जे मसान भाजै दिन राति ॥
 इनकी मै न ताहि संचरै । जो को सिद्धचक्र व्रत धरै ॥२५॥
 नैन निरंध नैन द्वै लहै । रसना हीन वेद घूनि कहै ॥
 अवन हीन सब सुनै सरूप । कुण्ठी तन सौ होइ अनूप ॥२६॥
 कनक बरन तन ताकी होइ । मन बच क्रम व्रत पालै सोइ ॥
 सुष अपार भुंजै अहार । पार्वै रूप मग बरुम अहार ॥२७॥
 पार्वै रतन हीर मनि चंद । पार्वै हेम पेस सुष कंद ॥
 अतिवर अपछरा उनिहारि । पार्वै इच्छ जु मनह मभारि ॥२८॥
 होहि दास अरु दासि बनै । सेवै पति महि मंडल बनै ॥
 वंत गहै तिन मानै हारि । आइस नैक न सकई टागि ॥२९॥
 भुंजै सुष जो मनमै धरै । इन्द्र समान राज सो करै ॥
 अति महिमा को कहै बडाइ । निहचै सो नर मुक्तिह जाइ ॥३०॥
 श्रीपाल जैसो फल लहौ । कवि परिमल्ल प्रगट करि काह्यौ ॥
 भविजन सुनी सुफल तिय जानि । यह व्रत भारावै परवानि ॥३१॥
 एक चित्त राखी मन ध्यान । सुष निधि उपजै सौग्यान ॥
 या संसार सयल सुख लहै । बहुरूपी मुक्ति पाइ दुष दहै ॥३२॥

काव्य

उषं गोपरी रंजदुर्गमगडं रत्नं वरं भूषितं
 जं धीरं कृतिमंवरं मदगलं पाषाण एरावतं ।
 तन्मध्ये श्रीमानसिंह अधिपते भूलोकदर बंधते ।
 तन्प्राज्यं सुरनाथ सुल्यगवितं तत् केन संवर्ष्यते ॥३३॥

सुजस रजत कुसलो नामेन चंद्रनयं ।
 तत्पुत्री गुरु रामदास विपुल मुक्तं त भोग्यं सदा ॥
 तत् सुनुकलदीपकस्तु प्रकट नामा सकरणी मुग्धं ।
 तत्पुत्रं परिमल्ल घमंसदनं ग्रन्थं इयं क्रीयते ॥३४॥

प्रशालि

चौपह

गोवरि गिरि गढु उत्तिम धान । सूरबीर तहां राजा मान ।
ता आमैं चांदन चौधरी । कीरती सब जगमैं बिस्तरी ॥३५॥
जाति बरहिया गुन गम्भीर । अति प्रताप कुल राजे धीर ॥
ता सुत रामदास परवीन । नंदन भासकरन सुभदीन ॥

नर सून कूल मंडन परिमल्ल । बस आगरे मैं अरि सल्ल ॥
ता सम बुद्धि हीन नहि धान । तिन सुनिमौ श्रीपाल पुरान ॥३७॥

ताकी छाहि कछु मति भई । तब श्रीपाल कथा बरनई ।
कीनी चौपई बंध बषान । नवरस मिश्रित गुनह निषान ॥३९॥
होइ अशुद्ध जहां पद हानि । कोरि संवागे कविजन आनि ॥
बार बार अपोंकर जोरि । बुध जन सोहि देहु मति खोरि ॥२२२२॥

नंदौ गुरु जे गुण के मूर, जिन ते होयमान आपूर ।
नंदौ जिनबानी सोहनी, जाते सुरगति होय अति छनी ॥

नंदौ कविकुल गुनह निवासु । जिहि पुरानु प्रगट्यो सुखवासु ॥
नंदौ पण्डित करै बषान । नंदौ श्रोता लोग सुजान ॥

नंदौ जैन सभा चिरकाल, नंदौ जीवदया प्रतिपाल ।
छेव कथा को अयो भबै, जिनवर धरम आराधी सबै ॥

जो भव दुख बिनासन हारु, जो त्रिभुवन के जीव सिगारु ।
जो त्रिभुवन वर मंगल करन, आदि अंत जीव की सरारु ॥

जो शिव रमणी की वरु भयी, जो जिनदेव सभा को जयी ।
ताकी कथा निरन्तर भई, कवि परिमल्ल कथा वरण ॥

थिर मनु कथा सुनै जे कोई, मन वांछित फल पावै सोइ ।
अरु जो पढ़ै पढावै सोय, ताकै पोतै असुभ न होय ॥

अरु जो मरु नारी अनु करै, सो बहुत गति को अमणु हरै ।
अध्यनको उपदेस बताय, निहचै सो नरु मुक्ति हि जाय ॥

इति श्रीपाल कथा परिमल्ल कृत भाषा चौपाईबंध संपूर्णम्

छन्दः

नगर आगरे मधि रहे आलसगंज भांही ।
 संवति पैंसठि साल जेठ सुदि दशमी भांही ।
 लिख्यौ चरित्र श्रीपाल मांस एक मैं ।
 निजु पर हेत की काज मिटे क्रोधादिक जी की ।
 यह शरथ बांछी सुनै, सील छिमा घोरज गहै ॥
 शुभ गति पावै केम्पही, कर्मकाटि रिषभ कहै ॥

॥ श्री ॥

मिति पौष बुध १० दीतवार सं. १८८६ ॥

समाप्त

❀❀❀❀❀❀

कवि धनपाल

धनपाल कवि अब तक हमारे लिये अज्ञात एवं अचर्चित हैं। कवियत्री बाई अजीतमति के समान प्रस्तुत पुष्प में ये दूसरे कवि हैं जिनका यहां परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है। धनपाल कवि की रचनाओं का संग्रह टीक जिले के प्रमुख बंष्णव तीर्थस्थल डिग्री नगर के दिगम्बर जैन मन्दिर के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत एक गुटके में उपलब्ध हुआ है। लेखक ने जून १९८३ में जब नगर के शास्त्र भण्डार के सूचीकरण का कार्य किया तब इस महत्वपूर्ण कवि की रचनाओं का पता लगा सका।

धनपाल प्राचीन कवि देल्ह के सुपुत्र थे। ये वे ही देल्ह कवि हैं जिनकी अब तक लुहिः प्रकाश एवं विद्या कीर्ति गीत नामक कृतियां उपलब्ध हुई हैं। दोनों ही लघु रचनाएँ हैं। इनके एक पुत्र ठक्कुरसी बड़े अच्छे कवि थे जिसकी अब तक १५ कृतियां प्राप्त हो चुकी हैं। कविवर ठक्कुरसी का विस्तृत परिचय एवं उनकी कृतियों के मूलपाठ हम श्री महावीर ग्रन्थ अकादमी के दूसरे पुष्प में देख सकते हैं। ठक्कुरसी के परिचय के आधार पर धनपाल कवि संभवतः देल्ह कवि के दूसरे पुत्र थे। इसलिए ये भी ढूँढ़ाड़ के प्रसिद्ध नगर चम्पावती के रहने वाले थे। कवि जालि से खण्डेलवाल दि० जैन एवं गोत्र से पहचानाये। धनपाल कवि ने अपनी अधिकांश कृतियों में अपने बड़े भाई ठक्कुरसी के समान अपने आप को "देल्ह नन्दन" लिखा है।

समय—कविवर ठक्कुरसी का समय हमने संवत् १५२० से १५६० तक का माना है धनपाल ठक्कुरसी के छोटे भाई थे इसलिये इनका समय संवत् १५२५ से १५६० तक का माना जा सकता है। स्वयं कवि ने अपनी कृतियों में रचना काल काल का उल्लेख नहीं किया इसलिये उक्त समय ही ठीक जान पड़ता है।

कृतियाँ—धनपाल कवि की ठक्कुरसी के समान अधिक रचनाएँ तो उपलब्ध नहीं हो सकी हैं लेकिन एक ही गुटके में उपलब्ध कवि की रचनाएँ निम्न प्रकार हैं—

1. देखिये—कविवर बूचराज एवं उनके समकालीन कवि

लेखक एवं सम्पादक—डा० कस्तूरचंद कासलीवाल, पृष्ठ सं. २३५-२६५

१. मुनिसुव्रत जिनवन्दना

२. नेमिजिन वन्दना

३. वर्धमान गीत

४. आदि जिन गीत

इस प्रकार मुटके में कवि की चार लघु कृतियों का संग्रह मिलता है। राजस्थान के अथवा शास्त्र भण्डारों में हो सकता है धनपाल कवि की और भी रचनाओं की उपलब्धि हो जावे। उक्त चारों कृतियों का परिवय निम्न प्रकार है:—

१. मुनिसुव्रत जिन वन्दना :—

कवि की यह एक ऐतिहासिक वन्दना है जिसमें राजस्थान के बूंदी जिले में स्थित केशोराय पाटन के प्रसिद्ध जैन मं में विरा. भगवान मुनिसुव्रतनाथ की वन्दना का वर्णन है। वर्तमान में केशोराय पाटन नाम से प्रसिद्ध नगर पहिले पाटन नाम से और इसके पूर्व आश्रम पत्तन नाम से प्रसिद्ध था। स्वयं कवि धनपाल ने पाटन को अतिशय क्षेत्र लिखा है जहां भक्तगण वन्दना के लिए आते रहते हैं और अपनी मनोकामना पूर्ण करते रहते हैं। ऐसे पाटन नगर में मुनिसुव्रतनाथ का अतिशय क्षेत्र है जिसकी वन्दना के लिए मुनि आर्यिका, आयक आर्यिका सभी आते रहते हैं। इसके पश्चात् कवि ने भगवान मुनिसुव्रतनाथ के पिता सुमति राजा, माता पद्मावती एवं उनके लांछन कछुवे का उल्लेख किया है। इसी तरह उनके शेष जीवन का भी छन्दों में उल्लेख किया है। पूरी वन्दना चार छन्दों में पूर्ण होती है और अन्त में कवि ने अपने पिता एवं स्वयं के नामोल्लेख के साथ भगवान मुनिसुव्रतनाथ की कृपा की याचना की है :—

पद कमल सेवित देलु नदरा धनपाल किया करो।

मनसुव्रतां जे जात आर्व सदा मंगल स्याह धरो ॥१॥

अर्थात् कवि के समय में भी भगवान मुनिसुव्रतनाथ के दर्शनार्थ सपरिवार आने की परम्परा थी कवि ने उक्त वन्दना को राग मलार/मल्हार में लिखा है।

२. नेमि जिन वन्दना—

कवि की यह दूसरी ऐतिहासिक कृति है जिसमें भगवान नेमिनाथ की वन्दना की गयी है। इस गीत में जयपुर राज्य की प्राचीन राजधानी आमेर के दि० जैन मन्दिर सौदला बगवा के (नेमिनाथ स्वामी) स्तवन के पश्चात् नेमिनाथ स्वामी के माता पिता, जन्म स्थान, तोरण द्वार से लौटने की घटना, राजकुल व स्थाप

गिरनार पर्वत पर तप, कैवल्य एवं निर्वाण कल्याणक का वर्णन किया गया है। १५वीं शताब्दि में आमेर के सांवला बाबा के मन्दिर में स्थित नेमिनाथ स्वामी की मूल नायक प्रतिमा अत्यधिक प्रसिद्ध एवं सतिशय युक्त मानी जाती थी। कवि ने जिसका निम्न प्रकार वर्णन किया है :—

जाहि नाम लीया दुरित नरसौ, गुणह रत्नत ॥ पात है
अंबावती प्रतिव्यंब, शोभिता स्माम वर्ण गहीर ।
वन्दहु सुभ विमहु नेमि जिणवरु, दोइ अद्भु शरीर ॥१॥

इस वन्दना में पांच छन्द हैं। कवि ने इस गीत में अपने भासको देख तनय लिखा है।

३. वर्धमान गीत :—

यह कवि का तीसरा ऐतिहासिक गीत है। इस गीत में कवि ने जयपुर से १२ किलो मीटर दक्षिण में स्थित प्राचीन नगर सांगानेर के संघी जी के मन्दिर में विराजमान महावीर स्वामी की स्तवम के रूप में भगवान महावीर का माता पितर, गर्भ, तप कैवल्य एवं निर्वाण स्थान पावापुरी का उल्लेख किया है तथा गीतम आदि ग्यारह गणधरों का एवं अन्य घटनाओं का वर्णन किया है। गीत में पांच छन्द हैं। सांगानेर में संघी जी के मन्दिर का निर्माण १२वीं शताब्दि में हुआ था। मन्दिर अपनी कला एवं शिल्पों के लिए पूरे राजस्थान में प्रसिद्ध है।

४. आदि जिम गीत :—

यह कवि का चौथा गीत है जिसमें प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ का स्तवन किया गया है कवि ने टोडारायसिंह के दि. जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी की प्रतिमा को अपने युग में अत्यधिक महत्वपूर्ण गिनाया है। गीत के शेष भाग में इसी तरह का वर्णन है जैसे उक्त तीन तीर्थंकरों के गीतों में वर्णन किया गया है।

इस प्रकार चारों ही गीतों में कवि ने स्थान विशेष के मन्दिरों में विराजमान प्रतिमाओं का नामोल्लेख करके उनमें इतिहास का छुट दिया है। कवि का मुख्य निवास चम्पावती था लेकिन वहाँ के किसी मन्दिर की प्रतिमा का उल्लेख नहीं करके पाटन (केशोराय) आमेर, सांगानेर व टोडारायसिंह के मन्दिरों के महात्म्य का वर्णन किया है।

भाषा—गीतों की भाषा अपभ्रंश प्रभावित राजस्थानी है। कवि का मुख्य कार्य क्षेत्र दूँडाड़ प्रदेश था इसलिये गीतों की भाषामें दूँडारी भाषा का भी प्रयोग हुआ है।

गीतों के मूल पाठ

मुनिसुव्रता जिन भगवता

रागु मलार

सकल जिणोसर पणउ सरसैं धरि ध्यानो जी ।
ए जह पाटण नगर भलै तहं अतिशय धानो जी ।
इक थानु अतिसय वेनु जाणिवि भविक जन बंदे घणा ।
ए तुरिय संभ आनंद उपजं होइ महोछा जिण तणा ।
परमासु पूरै विघन चुरै प्रगट जिणवरु जाणि जे ।
पाटण चानकि सुथिरु बैठै सुव्रता जिन बंदिजं ॥१॥

ए जो सुमति नरेसर नंदण पदमावती मातो जी ।
तसु लच्छनि काछिव सोहैं स्याम सरीरो जी ।
इक स्याम वरुणहि अति मनोहर देखतां मनु मोहिए ।
इंद्रादिकह जामण महोछा मेर सिंहरो सोहिए ।
गायंति किन्नर अवर अछरि आणि माय सम्मपए ।
वीसमै जिणवरु वांदि सखी हे मनह बंछितु अप्पए ॥२॥

ए जहि जाणै हो जोषनु जंतु भयैं शैयरागो जी ।
ए जहि जीतै हो मदन भयंकरु उपसम रागो जी ।
उपसम रागो मदन जितैं पंच आश्रव टालए ।
दंशण शरण चरित्तमय जीम शरण केवल पालए ।
दश अठ गणहर मलि आदिहि समोजरण छज्जए ।
मनसुव्रतां जिन चरण बंदै दुरित शयलां गजजण ॥३॥

ए जो थसु गुण मंडित जिणवरु मुकति दातारो ।
चउतीसाति अयारां जोभिता गुणह अपाराजी ।
अपार गुणह न पार लार्भ विविध जीव हितं करो ।
मनवष अम नरनारि सेवी जनमि जनमि सुखं करो ।
पद कमल सेवित देखह नन्दन धन्नपाल क्रिया करो ।
मनसुव्रतां जे जात आशै सदा मंगलु त्याह घरौ ।

२. नेमीजित बंदना

राग सोरठी

पणओ आदि जिणंदो जहि पणायो होइ अनंदो ।
 गुण प्रगट करं निशिचंदो, है गाउं नेमिजिणंदो ।
 गुण गाइसे श्री नेमि जिणवर, सयल सुल दातार ।
 जहि नाम लीया दुरित नासै, गुणह गणत न पार ।
 अंघावली प्रतिव्यज भोमिता स्याम वर्ण गहीर ।
 बंदहु सुभ वीयहु नेमि जिणु, दोइ अटु अनुप शरीर ॥१॥

सूरीपुरहु उपओ, राइ समद विजै सुत बन्तो ।
 वर लक्षण गुण संपुनो, सिबदेकी कृषि रतन्तो ।
 सिबदेवी माता उरि उपन्तो, सयल सुरपति भाइया ।
 से मेर सिहरां करि महोछा, इंद्र आगे तन्विष्या ।
 तिहु ग्यान करि संजुत, दीसै सुन्दरा आकार ।
 बंदहु सुभ वीयहु नेमि जिणवर, जादम वंस सिरामार ॥२॥

हलि समदविजै गोविंदो, तुमे उग्रसेणि धी मंसो ।
 राजमती खरीय सुबंगो सा परणं नेमि जिणंदो ।
 नेमि जिणवर व्याहरा चढिया, तोरणि ताम पराइया ।
 हकारि सारथि बैसि पूंछा, जीव कांइ पुकारिया ।
 ए भगति होइसी तुम्ह तरणी राय उग्रसेणी अणदिया ।
 रथु मोडि पाछै चलै जिणवर, जाइ चढै गिरनारिया ॥३॥

सो जाइ चढै गिरनारे जहि लजीये राजमती नारे ।
 सब अथिह जाणि संसारो, मुणि धरं महाव्रत भारो ।
 व्रत भार से छद्मस्तु रक्षिये लोयंती यह पर्ससीये ।
 वरदत्त धरि पारणो कियै, प्रथम गणह्य आइयै ।
 बाणीय सरस बिसा कोमल, भवि जनह नमंसीये ।
 बन्दौ हु शुभदियो नेमि जिणवर, सब्बजीव अभो दियो ॥४॥

छायाल गुणह संजुतो, वाइसमु जिणवर पत्तो ।
 दश अठ घोश धे चत्तो, पुणु अठ गुणह संयुत्तो ।
 तिहु लोक बंदिल चरण जिणवर, संख लंछण सोभिया ।
 गिरणारि गिरि निर्वारण थारण अठमी पुहवी गयो ।
 नरनारि जे गुण कहहि स्वामी, सफल जन्मह त्या तता ।
 कवि बैलह तन धनपाल प्रणमि ते भेटियो मय नेमि जिण ॥५॥

३. वर्धमान गीत

रागु मसार

सकल जिणेंसर ध्याउं, सरस आधारे जी ।
 गुण गांठ श्री बीर जिणेंसर बुद्धि अणुसारे जी ।
 गुणा गाइसें श्री बीर जिणेंसर, बुद्धि के अनुसारि ।
 तसु नाम लीया होइ नय निधि भेटिया भवपार ।
 सांगानदरि प्रतिबिम्ब सोभिता, हेम बरुं गहीर ।
 बंदहु शुभ वीरहु बीर जिणेंसर, सत्त हय सरीर ॥१॥
 ए जो कुंडल पुरिहि अवतरे भयंक अनंदी जी ।
 रणगी निरुपम दे लज्जि रूपनी सिद्धारथ नंदी जी ।
 तिशलादे माता उरि उपरुं राय सिद्धारथ नंदणो ।
 तसु इन्द्र आगै आइ तच्छे देव दुंदभी वाजणो ।
 जिम मेघ गजित मोर नाजित चात्रिग करति अनंदु ।
 तिम देखि भवियहु बीर जिणेंसर, चैदसमउं जिणेंदु ॥२॥
 ए जो तीस वरस जगु जिणेंसर, मुख्यो ग्रिह वासो जी ।
 पुणु ज्जुण तिगु समु जाणिरु, लीयै वन वासो जी ।
 वनवासु ते व्रत भार धरियै, लीयंतीयहु जु हारीयै ।
 दश अट्ट दोणहु रहितु स्वामी, जीव गणु सा आरीयै ।
 दोइदश वरिस छद्मस्त रहियै, इन्द्र आसणु कपियै ।
 सो वर्धमान जिणेंद बंदहु, सब भव खय कारियै ॥३॥
 ए जो केवल ग्यानु ऊपाया, मुनिजन भाया जी ।
 तहु गोत्तम आदिहि ग्यारा मणहर आया जी ।
 गोत्तम श्रोत्तम अरु निरीत्तम मयल मणहर आइया ।
 वाणीय के परमासु हूवो, अमरगण जय कारीया ।
 सो अतिमै जिणु नभो भवीयहु चंतीकैती रायरु ॥४॥
 ए जो तीस वरस किरि जिणेंसर संबोध्या मानो जी ।
 पुण अंत कालु आयै जाणिरु पूरा सुभ ध्यानो ।
 शुभ ध्यान पूरा कम्म चूरा पंचमी गति पाइया ।
 पावापुरिहि निर्वाण आनकु भव्यजन नसांसिया ।
 कवि देखु नंदणु मनि अनंदणु धन्वपाल गाइया ।
 महु मयल बंछितु होऊ स्वामी बीर जिणु जै कारिया ॥५॥
 ॥ इति श्री वर्धमान गीत समाप्ता ॥

४. आदि जिन गीत

राग गौडी

सो जिगुसमरहु भावधरि अहि सु चाहो भवनार हो ।
 मरु दे माता उरि धरै नाभि घरों अवतार हो ।
 सो नाभि नंदनु भविक बंदे, तोड़ नयनरि मभारि ।
 पंचसं धनुष प्रमाण काया त्रिष लांछण धारि ।
 सत्त्वार्थसिद्धि ये आदया ईसाक वंशह जाणि ।
 अजोष्यः पगले भयो जिगु रिगभ गुण की खानि ॥१॥
 जनम चैत्र वदि नवमी की, कंचनवरण शरीर हो ।
 इन्द्र महोर्ध्व आदया, मेर न्हायो वीर हो ।
 इकु मेर सिंहरां हयो जिगुवरु इंद्र नाचै बहु परे ।
 सचीसदहथां हलेविणु, आणियो माता घरे ।
 कुमरै पणो वसि सक्ष पुरब, तेसठि रजु करेइ ।
 निवेउ पायो पेखि अपछरे लोयंतीम हसरैइ ॥२॥
 आखातिजाहा पारणो धरि श्रेयांस नरेसहो ।
 वरस सहस छदमस्तु भी केवल फागुण ग्यासिहो ।
 फागुण ग्यारसी हुवा केवलु समोसरण विराजये ।
 द्विषभ सेणह आदि गणहृष धारि दुंदभी गात्रियो ।
 तपु लक्ष पुरष जेणिपालयो छहै हरिहि नमंसिवो ।
 सो आदि जिगुवरु वंदहु भवियहु धम्म पारग दंसियो ॥३॥
 डंडक पाटक पुरणा पुरमा ध्यान चियारिहो ।
 गिरि कपलासह सिध हुवा अठ गुणाह विचारिहो ।
 कैलास गिरि निर्वाण धानकु अठ गुण संजुलीया ।
 जोति में जोति समाय पंठा पठाह सुगहि ति धनुजिया ।
 कवि देरुह नंदण सुगति मांगै धनपालह गाइया ।
 श्री आदि जिगुवरु नमो भवियहु तुरिय संघ मनि भाइया ॥४॥

भट्टारक महेन्द्रकीर्ति

महेन्द्रकीर्ति नाम वाले एक से अधिक भट्टारक हो गये हैं लेकिन भट्टारक पट्टावालयों के अनुसार अब तक निम्न प्रकार परिचय मिलता है :—

(१) भट्टारक महेन्द्रकीर्ति	(१) अजमेर गादी के भ० देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य	(सं० १७६६)
(२) "	(२) अजमेर गादी के भ० देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य	(सं० १७६०)
(३) "	(३) " भ. देवेन्द्रकीर्ति (द्वितीय) के शिष्य	(सं० १९३६)
(४) आचार्य महेन्द्र कीर्ति	(४) सूरत गादी के भट्टारक मल्लभूषण के शिष्य	(सं० १५७०)

उक्त चार महेन्द्रकीर्ति नाम वाले विद्वानों में से कौन से महेन्द्रकीर्ति प्रस्तुत पदों के रचयिता हैं। जिस गुटके में इन पदों का संग्रह मिला है उसमें भी कोई लेखन काम नहीं दिया। लेकिन गुटका १७ वीं अथवा १८ शताब्दि में लिपि बद्ध हुआ लगता है इसलिए प्रस्तुत महेन्द्रकीर्ति भ. देवेन्द्रकीर्ति (द्वितीय) के शिष्य तो नहीं हो सकते क्योंकि वे तो अभी १०० वर्ष पूर्ण ही हुए थे। सूरत गादी के भट्टारक मल्लभूषण के शिष्य आचार्य महेन्द्र कीर्ति भी इन पदों के रचयिता नहीं हो सकते क्योंकि पदों की भाषा एवं शैली १६वीं शताब्दि जैसी नहीं है। अब शेष दो भट्टारक रहे एक अजमेर गादी के, दूसरे अजमेर गादी के। डिगरी नगर जिसमें प्रस्तुत गुटका संग्रहीत है वह अजमेर गादी के भट्टारक का नगर न होकर अजमेर गादी के भट्टारक के अन्तर्गत आता था इसलिए प्रस्तुत पदों के रचयिता भट्टारक महेन्द्र भट्टारक विद्यानन्द के शिष्य थे जिनका पट्टाभिषेक संवत् १७६६ में हुआ था।

संवत् १७५१ में भट्टारक रत्नकीर्ति ने अजमेर में पुनः स्वतन्त्र भट्टारक गादी की स्थापना की थी और अपना पुनः पट्टाभिषेक महोत्सव आयोजित किया था। भट्टारक रत्नकीर्ति के पश्चात् विद्यानन्द (संवत् १७६६) में और भट्टारक

महेन्द्रकीर्ति सं० १७६६ में भट्टारक गाथी पर अभिलिखित हुए थे ऐसा उल्लेख भट्टारक पटावलिखों में मिलता है। महेन्द्रकीर्ति के चार वर्ष पश्चात् ही संवत् १७७३ में भट्टारक अनन्तकीर्ति का पट्टाभिषेक होने का उल्लेख मिलता है जिसमें महेन्द्रकीर्ति का समय संवत् १७६६—१७७३ तक (सन् १७१२ से १७१६) तक निश्चित होता है और इसके आधार पर उनके सभी पद १८वीं शताब्दि के प्रथम चरण में निहित लगते हैं।

महेन्द्रकीर्ति भट्टारक थे। पदों के मूल्यांकन से पता चलता है कि वे आध्यत्मिकता की ओर अधिक रुचि रखते थे। अभी तक इनके जितने पद उपलब्ध हुए हैं लेकिन वे सभी पद भाव भाषा की दृष्टि से उत्तम पद हैं।

- (१) भ्रमस्युं भूलि रह्यो संसार—प्रस्तुत पद में कवि ने प्रत्येक अन्तरे में उदाहरणों द्वारा यह प्रमाणों मोह मगन होकर आत्मा को किस प्रकार भूल बैठता है इसका अच्छा वर्णन किया है। यह प्राणी व्यर्थ ही मोह के वश होकर अपने आपको परतन्त्र कर लेता है और उलटे कार्य करने में ही सुख मान बैठता है। यह मानव बन्दर, तोता, स्वात, सिंह, हाथी, हिरण्य आदि के समान विपरीत कार्य करने पर भी अपने आपको सुखी मानने लगता है और भृगु तृष्णा के समान दिन रात फिरता रहता है।
- (२) मेरो पन विषयाही स्युं राख्यो—पद में कवि ने मानव की वास्तविक स्थिति प्रस्तुत की है कि वह जीवन भर मृत्यु के अन्तिम क्षण तक स्त्री, कुटुम्ब, धन संपत्ति आदि में ही मगन रहता है और अपने आत्म अन्वेषण की ओर तनिक भी ध्यान नहीं देता।
- (३) साधो अद्भुत निधि घर मांही एवं साधो अद्भुत निधि धरि पाई—इन दो पदों में मानव को अपनी निधि को पहिचानने का आग्रह किया है। यह मानव अपनी आत्मा को मूलकर उसे अन्यत्र ढूँढने का प्रयास करता है। जब कि आत्मा का शरीर में तिलों में तेल, काष्ठ में अग्नि के समान वास रहता है।
- (४) देखो कर्म की गति न्यारी—इस पद में कवि ने रावण, मन्दोदरी, राम सीता, यशोधर राजा अश्वत्थ देवी राखी, माता चन्द्रमती आदि के जीवन में घटित घटनाओं की ओर पाठक का ध्यान आकृष्ट करते हुए कर्मों की विविध लीला का अच्छा चित्र उतारा है और अन्त में भगवान् जितेन्द्र की आराधना में ही कर्मों के जाल से छुटकारा मिल सकता है इसका वर्णन किया है।

- (५) सेवत विषय तृपति नहि मानें—प्रस्तुत पद में कवि ने संक्षिप्त रूप में मानव स्वभाव पर प्रकाश डाला है कि वह संसार में विषयों के सेवन करते रहने पर अपने भाषको अतृप्त मानता है और दिन रात उन्हीं के पीछे दौड़ता रहता है।
- (६) सब दुःख मूल है मिथ्यात्व—इस पद में कवि ने मिथ्यात्व को ही मानव के जग में भ्रमित होते रहने का प्रधान कारण माना है तथा पच्चीस दोषों को छोड़ने एवं पंच परमेष्ठी का ध्यान ही मिथ्यात्व को दूर करने एवं सम्पत्ति प्राप्ति का उपाय बतलाया है।
- (७) कल्याण करौ भगवंत जिनेश्वर पय नहुं—यह पद भक्ति परक है जिसमें प्रभु भक्ति से सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है इसका वर्णन किया गया है। जिनैन्द्रदेव की महिमा वेद भी बखान करने में असमर्थ रहें हैं इसलिए उन्होंने 'नेति नेति' शब्द के द्वारा उनके महात्म्य को प्रगट किया है। वेदों के नेति नेति शब्दों का वर्णन कवियों ने भी वर्णन किया है।
- (८) 'चितन काहे भरण मूलाना' एवं चेतन केतन क्यूं नहि मनमें—इन पदों में कवि ने बहुत ही रोमांचक शब्दों में मानव को सावधान रहने का आग्रह किया है। वह प्राणी आत्म स्वभाव को छोड़ कर पर स्वभाव में लग जाता और रतन को छोड़ कर काँच के टुकड़े में ही लुभाता रहता है।

इस प्रकार उक्त पदों के मूल्यांकन से पता चलता है कि भट्टारक महेन्द्र कीर्ति आध्यात्मिक संत थे जो अपने प्रवचनों एवं साहित्य रचना के द्वारा सदैव समाज को नैतिकता एवं आत्म स्वरूप को पहिचानने का पाठ पढ़ाया करते थे। उनके सभी पदों में आत्मचिंतन एवं आत्मज्ञान की जो धारा दिखायी देती है वह अत्यधिक स्वाभाविक है। ऐसा मालूम पड़ता है जैसे महेन्द्रकीर्ति को रात दिन आत्मज्ञान प्राप्त करने की चिंता सताती रहती थी और उसी चिंता को उन्होंने अपने हिन्दी पदों में व्यक्त किया है। कवि के पदों में महाकवि बनारसीदास के पदों की छाप दिखायी देती है तथा कबीर एवं दूसरे निर्गुण पंथी कवियों की भलक दृष्टिगोचर होती है लेकिन इतना अवश्य है कि कवि ने इन पदों में अपने सैद्धान्तिक ज्ञान का भी अच्छा उपयोग किया है।

भाषा—महेन्द्रकीर्ति के पदों की भाषा राजस्थानी के समीप है। १८वीं शताब्दी में जिस प्रकार भाषा में निखार आने लगा था वही रूप में हमें इन पदों की भाषा में दिखाई देता है लेकिन फिर भी राजस्थानी के शब्दों की बहुलता है स्युं, राच्यो, माच्यो जैसी क्रिया पद शब्द राजस्थानी भाषा के साथ अपनी अधिक निकटता प्रदर्शित करते हैं।

भट्टारक महेन्द्रकीर्ति रचित पद

१

राग आसावरी

अमस्युं मूलि रह्यो संसार ।

मोह मगन आतम गुण भूष्यो, भज्यो न जिनव्रत सार ॥अ०॥१॥

सीत व्यथा पीडित ज्युं मरकट, ताप गुंजा हार ।

ऊँच भुल नलनी को सुबटा, कुंसा पटव्यो डार ॥अ०॥२॥

ज्युं नर मूढ रात्रि विसयामिष, मगन भयी तिहुं काल ।

सुष को सेस कहूँ नहि सुपनै, नरक निगोचामार ॥अ०॥३॥

जैसे स्वान भूसै मंदिर मैं, केहरि कूप गुंजार ॥

फटक सिला मैं देखि आप गज, कीन्हौ दशन प्रहार ॥अ०॥४॥

ज्युं मृग वन मैं देखि भाङली, मानि सरोवर धार ॥

चहुं दिसि फिरयो न पायी जलकण, फूट्यो कांस भवार ॥अ०॥५॥

पायकुटंभ भयी ग्रह घोरी, सब सिर धारयो भार ॥

एकलडो दुष्ट सहै निरंतर, जामण सरण अपार ॥अ०॥६॥

२

राग आसा

मेरो मन बिषयाहीं स्पुं राच्यो ।

सुष को साज नहीं सुपनामै, परग्रिय देखि देखि नाठघाँ ॥

वनकी त्रिषा प्रीति वनितास्युं, देखि परिग्रह मांच्यो ॥मे०॥१॥

जब लग पत न करै भवि प्राणी, अशुभ कर्म नहि पांच्यो ॥

महेन्द्रकीर्ति तब कहा करोगे, नरक निगोदिनि पांच्यो ॥मे०॥२॥

३

राग सारंग तथा पौर

देखो मोह तरंगी अधिकाइ, सो मोह कहियन जाइ ॥
 जिह दुष दीयो अनादि ही कालहि, फिरि फिरि तिह लपटाई ॥दे०॥
 दहै दुष्ट दुर्गति दुखदाता, नरक निगोदि निसाई ॥
 छेदन भेदन ताइन तापन, सूला सेज लुटाई ॥दे०॥२॥
 चहुंगति अम्यो महा दुष पायो, पराधीन भयो भाई ॥
 पर की संगति सागै झीझै, निज गुण भई घटाई ॥दे०॥३॥
 तातै सम्यक दर्शन सेवो, मव्य जीव सुषदाई ॥
 महेन्द्रकीर्ति तब होइ निरंजन आवागमन भिटाई ॥दे०॥४॥

४

राग आसावरी

साधो अद्भुत निधि घर मांही ।
 इत उत फिरै करै नहि सोधी, भ्रमते जानत नांही ॥सा०॥१॥
 जैसे भृग कस्तूरी कारण वनमै हिङ्गत डोलै ।
 मोह मिथ्यात विकल भयो प्राणी, परम धर्म नहि तोलै ॥सा०॥२॥
 पर पुरसारथ भोजन सीद्धा, घरमै घलि कुं भटकत अंधा ॥
 त्र्युंध्यौ जीव भ्रमत सुष कारण, लामि रह्यो गृह अंधार ॥सा०॥३॥
 सत्तन कोडावनीडी सागर, मोह महाधिति भागी ॥
 कारण तीन करि समकित राख्यौ, तब आत्म निधि जागी ॥सा०॥४॥
 सप्त प्रकृति अवलम करि राखी, अथ तै साधिक राई ॥
 वेदक तै निज पर गुण वेदै, यही भोजन की साई ॥सा०॥५॥
 दर्शन मोह कीयो सत चूरण, त्रैसठि प्रकृति बिनासी ॥
 महेन्द्रकीर्ति प्रभु जयौ जिनेश्वर शोकालोक बिकासी ॥सा०॥६॥

५

राग आसावरी

साधो अद्भुत निधि घरि पाई ।

तैं गिनु जगो वरनो बहुरंगि, श्री जिनराज बताई ॥सा०॥१॥

ज्युं अपना पुरुषा की धूणी, घणा काल की रापी ॥

बीजक सहीत पत्र ज्यों निकस्यो, सांप्रत भयो सुसापी ॥सा०॥२॥

ज्युं परमात्म देह भूमि में, त्पुं कंचन पापाणे ॥

अग्नि काष्ठ तिल तेल ही बासो, तूँ आत्म निधि जाणो ॥सा०॥३॥

अष्ट कर्म रज मू आछादी, भेद बिना नहीं पावै ॥

सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण बल, सद्गुरु यतन लषावै ॥सा०॥४॥

सो गुरु चौतिस अतिसय जाके, अनन्त चतुष्टय सोहै ।

अष्ट प्रातिहार्य प्रभु सोभित, भव्य जनन मन मोहै ॥सा०॥५॥

निकट भव्य सो महा उपसमी, भद्ररूप परिणामी ॥

महेन्द्रकीर्ति आत्म निधि परसै, मुक्ति नयर पदगामी ॥सा०॥६॥

६

राग आसावरी

देखो कर्मन की गति न्यारी ।

नही ढरल कहौ नहि टारी ॥

रावन सरीखे सुभट महानर, कहै मंदोदरी राणी ।

सीता सती देहु रघुपती की, राज करौ अती जाणी ॥दे०॥१॥

अनेवर जाकै सहस अठारा, रूप कला गुण सोहै ।

विद्याधर पुत्री अति सुंदर, अहनिश पिय मन मोहै ॥दे०॥२॥

राव यशोधर विष दे मारघो अजित देवी राणी ।

अद्रमती माता की संगति, मिथ्या बुद्धि धवासी ॥दे०॥३॥

श्रीर असंख्य भए महागजा, तेहु कर्म बलि हारे ।

सम्यक् भाव बिना जीव जेतै, चहुंगति मांही मारे ॥दे०॥४॥

इसो जानि जिन धर्म आराधो, हितू न दूजो कोई ।

महेन्द्रकीर्ति जिन चरण शरण तैं जन्म मरण नहीं होई ॥दे०॥५॥

१७

राग कानरौ

परमेश्वर निस्तारो ।
 करुणा करि मोहि तारो हो प्रभु ॥परमे०॥
 परमदयाल परमपद गामी, अघमोचन अवटारो ॥
 बीतराग अरहंत जिनेश्वर, मुक्ति रमनि वर स्यारो ॥हो प्रभु०॥१॥
 अघम उधारण सिव सुषकारण, भव्य जीव आधारो ।
 महेंद्रकीर्ति कर जोरि वीनवै, आवागमन निवारो ॥हो प्रभु०॥२॥

८

राग कानरौ

क्युं करि भक्ति करौ प्रभु तेरी,
 अष्ट कर्म घन बेरी ॥हो प्रभु०॥१॥
 मोह मिथ्यात महा रिपु बेरघो, छोडत लार न नेरी हो ॥
 बहूंगति मांहि भूम्यो शिरकाल, तुम सरणागत हेरी हो ॥हो प्रभु०॥२॥
 जिन अनंतगुण स्मरण, आत्म शक्ति सुं सेरी हो ॥हो प्रभु०॥३॥
 महेंद्रकीर्ति अरहंत ध्यान तैं, मुक्तिवधू अति नियरि हो ॥हो प्रभु०॥४॥

९

राग कानरौ

मव सागर अमती दुष पायौ, मोह मिथ्यात महाभित लायौ ॥
 यो संसार समुद्र अपरमित, अध जल भरघो पार नही पायौ ॥
 काम क्रोध मव लोभ महामद, जन्ममरण नक बक भरायो ॥भ०॥१॥
 बहूंगति बडवानस अति तापै, नरक पताल मांहि संतायो ॥
 जैन घरम तह परम परीहण, भव्य जीवनि मन भायौ ॥भ०॥२॥
 भाव्य विशेष पाइ द्विद रायै, समकित हित अति पवन सुहायो ॥
 महेंद्रकीर्ति सिव रत्न दीपकुं, श्री जिनराज सुपंथ बतायो ॥भ०॥३॥

१०

राग कानरो

सेवत विषय तुषति नहि मानै,
 मदन महारिपु के मदनपानै ॥
 जैसे स्थान अस्थि चरबैए तै जाटि सखिर मन पै दुष जानै ॥
 अम बसि भूलि गयो आत्मनिधि, मूढ़ और की ओर ही ठारै ॥से०॥१॥
 निज स्वभाव तजि परसंग रांच्यो, मोह विकल भमता चित आरै ॥
 महेन्द्रकीर्ति प्रभु सेइ जिनैधर, पूजै तीनि भूवन के रागै ॥से०॥२॥

११

राग तेजरी

सब दुःख मूल है मिथ्यात ।
 जाके उदै जीव नहीं चेतै करै आत्मघात ॥से०॥१॥
 मोह दर्शन नाम जाकै धरै अति उत्प्रात ॥
 छांड़ि दोष पचीस तम घन होइ समकति प्रात ॥से०॥२॥
 पंच गुरु पद नाम ध्यायो, द्रिढ ह्वै रहै तात रमात ॥
 महेन्द्रकीर्ति सेइ श्री जिनवर, होवो निर्मल यात ॥से०॥३॥

१२

राग केबारी

महिमा अपार जाके गुराको न आरापार.
 जग की आधार इसो देव जिरादेव ध्याइये ॥
 इन्द्रादिक देव जाकी, मन सबकाम करै सेव,
 तीस च्यारि अतिसय बिराजमान गाइये ॥
 अनंत चतुष्टय प्रगट प्रतिभासै सदा,
 आठ प्रातिहाय महाविभूति पाइये ॥
 अहो भव्य बृन्द तजि मोह मान सावा फंद,
 कीतराग पद बंद निरख चित लाइये ॥

१३

राग धनाधी

कहणा कर्ग भगवत जिनेश्वर पथ नवुं ॥
जिनमुण त्रिवु अणार, पार कहि कैमे पावुं ॥
इन्दी बुधि मनहीन कहौ प्रभु कसुं करि गावुं ॥
भेरु चढण कुं पांगुलो उदधि तरण मुज हीन ॥
पंथी उडै आकास में ताहि गिणै दिग छीन ॥जिने०॥१॥

गूंगो मुखि कुवरै, आलसी नभ को पासै ।
सूड हलाहल भवै, अगनि ज्वाला मुख ग्रासै ॥
ज्युं सूर्य जल कुंड में, पकड्यौ चाहै बाल
इमो सुभट नर कोन है जो गहि राखै काल ॥जिने०॥२॥

धीत राग सर्वज्ञ सिद्ध परमात्म स्वामी ।
निर्विकार निर्दोष सुद्ध पद मोक्ष के गामी ।
निज भाषा स्तुति ये करें समदसरण तिरजंब ।
ज्युं जलनिधि जल तै भरयो चिड़ी लेख भरचूंच ॥जिने०॥३॥

दोष भटारह रहित देव अरहंत जिनेश्वर ।
अतिसय वर चौतीस दिव्य सोम परमेश्वर ।
अष्ट प्रातिहार्य भले अनंत चतुष्टय पाय ।
त्रेसठि प्रकृति बिनासिके भए त्रिभुवनपति राय ॥जिने०॥४॥

जिनवर रूप अनंत कह्यो क्युं मनही समावे ।
नेति नेति कह्ये वेव नाहि कछु अंत न आवै ।
अपनी ममता मारिको रहै अंतरि ली लाइ ।
सैत मिटे कुबुद्धी की तब दरसन दे आइ ॥जिने०॥५॥

जाको सम्पक् ज्ञान ध्यान रज कर्म त्रि-सैं ।
सकल तत्त्व को रूप परम हीण परकासै ॥
चिदांतद छिद्रूपहै बिद्विलास चिदधाम ।
महेंद्रकीर्ति मनि नित बसौ सिव पात्रै बिसराम ॥जिने०॥६॥

१४

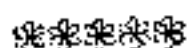
राग सारंग

चेतन काहे भरम भुलाना ॥टेक॥
 सहज स्वभाव राचि निज अपनी छिन मैं गिव पुरि जाना ॥चे०॥२॥
 छाँडि अमोलिक रतन अनोपम, काच की किरच लुभाना ॥चे०॥३॥
 दृष्ट अनिष्ट मिथ्यात महा विष, रचि रचिमेव घराना ॥चे०॥४॥
 स्वपर विवेक महा सुष कारण, सेवो समकित राना ॥
 सहज धतन परगट होइ ऐसे, ज्युं कंचन पाषाणा ॥चे०॥५॥
 जन्म जरा कहं मरण न व्यापै, सुद्ध रूप उहराना ॥
 महेन्द्रकीर्ति तब अंतर कैसे जल कण सिंधु समाना ॥चे०॥६॥

१५

राग सारंग

चेतन चेतन क्यूं नहि मनमै ।
 मोह प्रमाद महापद पीयो छब्यो धरणि घर घन में ॥
 यो जड़ रूप कर्म को दाता, राचि रह्यो तू तनमें चे०॥
 षट्स भोजन बहुविधि पोषो, तो हू नहीं गुणगनमै ॥
 प्रबल मिथ्यात घटा है आडी, सूर्य लखे ना घन मैं ॥चे०॥२॥
 विनु समकित ज्युं तत्व न भासै, कहा भयो जोजनमै ॥
 महेन्द्रकीर्ति कस्तूरी कारण, ज्युं कूँडत मृग वन मै ॥चे०॥३॥



देवेन्द्र कवि

१७वीं शताब्दि में जितनी संख्या में हिन्दी के जैन कवि हुए उतने इसके पूर्व कभी नहीं हुए। देवेन्द्र कवि ऐसे ही कवि थे जो १७वीं शताब्दि के प्रारम्भ में हुए और जिन्होंने हिन्दी काव्यों के लेखन में अपना नाम प्रशस्त किया। वे इस भाग में जिस प्रकार बाई अजीतमति, धनपाल, एवं भट्टारक महेंद्रकीर्ति अब तक अर्चित रहे हैं उसी प्रकार देवेन्द्र कवि भी नामोल्लेख के अतिरिक्त शेष दृष्टि से अर्चित कवि ही रहे हैं जिनका विस्तृत परिचय यहां प्रथम बार दिया जा रहा है।

देवेन्द्र कवि का प्रथम बार नामोल्लेख मैंने राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डार की ग्रन्थ सूची पंचम भाग में किया था और उनकी अब तक उपलब्ध एकमात्र कृति यशोधर रास का उल्लेख किया था। इसके पश्चात् किसी भी विद्वान ने उनका कहीं परिचय दिया हो वह मेरे देखने में नहीं आया। अभी जब मैं नवम्बर ८३ में परमपूज्य आचार्य धर्मरागर जी महाराज के दर्शनार्थ एवं वहां के शास्त्र भण्डार की खोज में प्रतापगढ़ (राजस्थान) गया तो जूना मन्दिर के शास्त्र भण्डार यशोधररास की एक प्राचीनतम पाण्डुलिपि मिल गयी जो अपने रचना काल के ६ वर्ष पश्चात् ही लिखिबद्ध की गयी थी। इस प्रकार देवेन्द्र कवि ऐसे जोड़े अर्चित कवि हैं जिनका यहां परिचय दिया जा रहा है।

देवेन्द्र कवि के पिता भूदेव विक्रम थे जो स्वयं भी कवि थे तथा अपने नाम के पूर्व कवि उपाधि लगाते थे। वे जैन ब्राम्हण थे इसलिए भूदेव शब्द का प्रयोग करते थे। देवेन्द्र के पूर्वज अनन्त पंड्या थे जो भट्टारक सकलकीर्ति के अनुज एवं शिष्य ब्रह्म जिनदास द्वारा सम्बोधित हुये थे। अनन्त पंड्या का राजाघों की तरह सम्मान था। उसने सम्यक्त्व की आराधना की थी तथा जीवदया व्रत का पालन किया था। कुतुबुखान की सभा में उसने जैन धर्म की प्रभावना तथा सर्प को घड़े में डाल दिया था। यही नहीं अनेक जैन मन्दिरों का निर्माण

तथा जीर्णोद्धार करवाया था ^१ तथा प्रतिष्ठा विधान कराये थे ।

अनन्त पंड्या के कउजी पुत्र हुए जो अत्यधिक उदार स्वभाव के थे । इसकी एक पुत्री पद्मावती थी जिसके पति का नाम धरणीधर था । ब्राह्मणों के चौबीस कुलों में वह विशिष्ट माना जाता था । धरणीधर के दो पुत्र थे जिनमें जेष्ठ पुत्र विक्रम तथा कनिष्ठ पुत्र गंगाधर थे । गंगाधर जैन न्याय के विशेष ज्ञाता थे तथा सम्यक्त्व से सुशोभित थे । उसे सोभाग्य से जगत से विरक्ति हो गयी जो बादमें भट्टानक विसालकीर्ति के पद में देवेन्द्रकीर्ति के नाम से विख्यात हुए । उन्होंने कर्नाटक प्रदेश में जैनधर्म की बहुत प्रभावना की थी और जैन राजाओं द्वारा पूजित हुए थे ।

विक्रम वैश्वविघ्न आगमों के ज्ञाता थे इसलिए वे विक्रमभट्ट के नाम से विख्यात थे । महीपाल कीर्ति उनके विद्यागुरु थे । विक्रम की पत्नि का नाम अजवाई था जो शीलवती एवं गुणवती थी । देवेन्द्र उसी का पुत्र था । भगवान् जितेन्द्रदेव का वह परम उपासक एवं जैन शास्त्रों का परम ज्ञाता था ।

देवेन्द्र कवि थे । उन्होंने कितने ग्रन्थों की रचना की थी यह तो अभी ज्ञात नहीं हो सका है लेकिन उनकी एक मात्र रचना "यशोधर रास" का रचना काल

- १ धन धन जितदास ब्रह्मवाणी, सा० प्रतिकोष्या ब्राह्मण राज तो ।
अनन्त पंड्या नाम भलूँ, ।सा०। जागुं जेह ने राज भमान तो ॥६६॥
तीर्णो आदरयो समकीत रत्न ।सा०। यज्ञ जीवदया प्रतिपालतो ।
घट सर्प दीव्य करचूँ ।सा०। कुतुखूखान सभा विसायतो ॥६०॥
- २ जैन धर्म तिहां थापीयो ।सा०। व्यापीयो जस अपार तो ।
वित्र प्रासाद उदार करवा ।सा०। तस सुत कउजी उदारतो ॥६१॥
तस पुत्री पद्मावती ।सा०। धरणीधर तस कंत तो ।
चौबीस ब्राह्मण कुलि ।सा०। सोहि महीमावंत तो ॥६२॥
तस पुत्र दोये पवित्र ।सा०। विक्रम गंगाधर नाम तो ।
जैनवादी विद्या तिला ।सा०। समकित रतन सुहामतो ॥६३॥
गंगाधरे नप उद्धारयो ।सा०। भाग्य सौभाग्य समुद्र तो ।
विसालकीर्ति पाटि हुंवा ।सा०। देवेन्द्रकीर्ति सुरेन्द्रतो ॥६४॥
अकंकक सूरी सींघासने ।सा०। कर्नाटक देस प्रमीध तो ।
जिनधर्म तीहां उद्धारयो ।सा०। जैन राजादिक पूजा कीधतो ॥६५॥
- ३ विक्रम भट्ट विधात तो ।सा०। सील समकित गुण खाण तो ।
तस वि पुत्र वीशारद ।सा०। देवेन्द्र दासुदेव जाण तो ॥६६॥

संवत् १६३८ आसोज सुदी २ शुक्रवार है । रास की रचना महुआ नगर (गुजरात) हुई थी और वह भ० वादिचन्द्र आवेश से लिखी गयी थी^६ ।

देवेन्द्र कवि भगवान मुनिसुब्रत नाथ के परम उपासक थे इसलिए ग्रंथ का प्रारम्भ उन्हीं के मंगलाचरण एवं मंगल भी उन्हीं के द्वारा ही किया है । एकोदश रास ६ अधिकारों में विभक्त है तथा वह प्रबन्ध काव्य के रूप में है । कवि ने रास का प्रारम्भ मंगलाचरण से किया है इसके पश्चात् सरस्वती वन्दना की गयी है और 'गासू' यमोघर रास' के रूप में रास रचने का संकल्प व्यक्त किया है । स्वादाद प्रकासिनी जगन्माता शारदा के स्तवन के पश्चात् चौबीस तीर्थंकरों का २४ पद्यों में स्तवन किया है और फिर तीर्थंकरों के गणधरों की संख्या का उल्लेख करते हुए भगवान महावीर के निर्वाण के पश्चात् होने वाले तीन केवलियों^७ एवं पांच ध्रुतकेवलियों^८ केनामों का स्मरण किया है^९ ।

ध्रुत केवलियों के पश्चात् विशालाचार्य आदि दश पूर्वधारी एवं नक्षत्रादि ११ ग्रह के पाठियों का भी स्मरण किया है । इसके पश्चात् आचार्यों को स्थान दिया है जिसमें कुन्दकुन्दाचार्य, उमाम्बामि समस्तभद्र, पूज्यपाद, शिनसेन, अकलंक, एवं गुणभद्र जैसे आचार्यों का उल्लेख एवं गुणानुवाद किया है ।

एकादशमं सुजाण नक्षत्रादि सोहामणीए ।

अनुक्रमि श्री कुंदकुंद पंच नामि कोडामणीए ॥२०॥

जिन चरण कमल सेवि । सा० करि जिन वास्य अभ्यास तो ।

४ संवत् १६ आठ श्रिसि । सा० आसो सुद तीज बीजि शुक्रवार तो ।

रास रच्यो नवरस भरयो । सा० महुआ नगर मभार तो ॥

५ भवनी अनोपम रूप, बादीचंद तम पाट सोहिए ।

बादी सयल सरागार । भवी अण जन तणां मन सोहिए ॥२६॥

दोहा

एह गच्छपती आदेस थी, रास रचेवा आज ।

उद्यम मांड्यो मन रली, सजन आनन्दह काज ॥१॥४॥

६ अनुक्रमि गौतम स्वामि, सुधर्मचारज केवलीए ।

अतिम केवली जाण, जंबूस्वामि कीरती भलिए ॥१६॥

७ ध्रुत केवली वनी पंच, पंच संसार दुःख हरए ।

विष्णुनंदि मित्र होय, अपराजित विजित स्मरण ॥१७॥

गोवरधन गुरावंत, वाणी भवी अण उदरेए ।

मद्रवाहु बहु भेद, चन्द्रगुपती संसय हरेए ॥१८॥

उमास्वामी मुनि संत समस्तभद्र भाव आंति लोए ।

प्रतिबोध्या सिवकोटि कीच स्वयंभू मुखनि लोए ॥२१॥

पूज्यपाव प्रसीध जिनसेन सासने चंदलोए ।

अनापम अकलंक वीर घरि बोध जीतवा भलोए ॥२२॥

गुणभद्रादि अनेक पूर्वाचारज बहु हुवाए ।

हो ध्याऊं घरी भाव काम बांछित सिद्ध थवाए ॥२३॥

कवि ने आचार्यों के पश्चात् भट्टारकों की परम्परा का उल्लेख किया है जिनमें भ० पद्मनन्दि, विद्यानन्दि, मल्लिभूषण, लक्ष्मी चन्द्र, वीरचन्द्र, ज्ञानभूषण, प्रभाचन्द्र, वादिचन्द्र के नाम गिनाये हैं। ये सभी भट्टारक बलात्कार गण की सूरत शाखा के भट्टारक थे। इस प्रकार यशोधर रास ऐतिहासिक तथ्यों का भाग बन गया है।

भगवान् महावीर का समग्रसरण जब विपुलाचल पर्वत पर आया तो श्रेष्ठिक महाराज पूरे प्रजापतों के साथ उनकी वन्दना को गए। उनका हृदय से स्तवन किया और गौतम गणधर से यशोधर के जीवन वृत्त जानने की अपनी इच्छा प्रकट की इस प्रकार कवि ने प्रथम अधिकार काव्य की भूमिका के रूप में प्रस्तुत किया है जिससे पता चलता है कि कवि में काव्य निर्माण की विलक्षण प्रतिभा थी।

दूसरे अधिकार से नवम अधिकार तक यशोधर की जीवन कथा दी हुई है जो अत्यधिक काव्यमय भाषा एवं शैली में लिखी गयी है। कवि के पूर्व में जितने भी यशोधर के जीवन पर काव्य, रास एवं चरित्र लिखे गये थे उनसे कवि परिचित था या नहीं इस सम्बन्ध में तो हम कोई प्रकाश नहीं डाल सकते क्योंकि स्वयं कवि ने अपने पूर्ववर्ती किसी भी कवि का नामोल्लेख नहीं किया जिन्होंने अपभ्रंश संस्कृत एवं हिन्दी में यशोधर काव्य/रास/चरित्र लिखे थे लेकिन कवि ने यशोधर की जीवनकथा लिखते समय उसी परम्परा का निर्वाह किया है जो उसके पूर्ववर्ती कवियों ने किया था। लेकिन सभी प्रसंगों का वर्णन करते हुए कवि ने अपनी काव्य कौशल का प्रदर्शन अवश्य किया है। इससे काव्य मधुर एवं सरस बन गया है। वैसे भी स्वयं कवि अपने रास को नवरस युक्त रचना कहा है। और "रास रच्यो नवरस भर्यो" जैसे शब्दों का प्रयोग किया है। यहाँ हम कुछ उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं :—

नगर में नारी की सुन्दरता का वर्णन करते हुए कवि ने कहा है कि सुन्दरिय पर भवरे भूमते थे और जब वे उन्हें उड़ाती तो उनकी करघनी शब्द करती थी। उनके मधुर शब्दों को सुन कर स्वयं कोयल लज्जित हो जाती थी।

भरर वारंता कंकण खलके, सारस सरस सुशंत तो ।

कोयल नारी शबद सुणीयतु, लाजी बचन भणंत तु ॥६७॥

कवि ने एक ओर वनशान का जहां वीभत्स वर्णन किया है वहां उद्यान का बड़ा ही मनोरम वर्णन हुआ है । इससे पता चलता है कि कवि की वर्णन शैली सामान्य रूप से अच्छी थी ।

वीभत्स वर्णन :-

चीहायकाए उठ्या बहु धूम, अघं दग्ध कलेवर पड़्याए ।

ठाम ठाम ए पड्या बहुत, गली गयू मांस एह्वां मडाए ॥२॥

विकसयाए मुख दीसि दांत, तूंबली ए घणी रहबडीए ।

मीमालीयाए ताणो तास, आकाशे गृध लेई उडैए ॥३॥

कूतरा एव लागी अपार, बढता माही माहि इह डहिए ।

वायस ए करके बइठ, कागिरा, घणू कल गली रहिए ॥४॥२०॥

प्राकृतिक सुन्दरता .

वाडी वन ठाम ठाम, कपूर कदली कोमल दिसी हेलो ।

नालकेर खजूर, पूग तरां तरु घर ही सेहेल ॥५॥

ताल तमाल हे ताल, सरल सोहि सज्जन समाहेल ।

कोमल मध्य रसाल, देवदास आवि उरामा हेल ॥६॥

तज पत्र नागबेल एलची लची फले करी हेल ।

जायफल संवमह मेरु, मरी बेल छि भूमके भरी हेल ॥१०॥

कवि ने यशोधर राम में सूर्यास्त एवं चन्द्रोदय दोनों का वर्णन किया है । जिनके वर्णन से प्रबन्ध कश्च की महत्ता में वृद्धि होती है । सूर्यास्त वर्णन का एक उदाहरण निम्न प्रकार है :-

प्रस्ताचले रे सूर आवंतो जालीयो ।

निज सीर परि रे मुकुट समो बरवायो ॥४॥

पश्चिम दिसि रे रबी आविह बारातडी ।

पंखी तरा रे सोल ससि करे वानडी ॥५॥

निर अंतरे रे रवि घणं मान पामयू ।

उत्तम नेरे को रिण एक सीस ननामयू ॥६॥

व्यभचारिणी रे गमन रोध रीसि चढी ।

रवि उपरि रे देखाडि आखि रातडी ॥७॥५३॥

उक्त पद्यों में सूर्यास्त होने पर वह किसको कैसा लगता है इसका सामान्यतः अन्धवा वर्णन मिलता है ।

इसी तरह कवि ने चन्द्रोदय का भी अन्धवा वर्णन किया है ।

पूरब दिखी रे गुफा पको ए नीसरी ।

गगन वने रे संचरयो एसी केवरी ॥२१॥

किरण नखे रे अंधकार गज बिदारयो ।

जासी तारा रे मुक्ताफल बिस्तारयो ॥२३॥

मणी भीतल रे अमृत मय कहि बाड तो ।

लाछन मसि रे हर दह्यो काम जीबाड तो ॥२६॥

इस प्रकार यशोधर रास में और भी कितने ही अच्छे एवं काव्यमय वर्णन हैं जिनसे रास के काव्यरस में वृद्धि होती है ।

लेकिन यह भी कहा जाना चाहिये कि कवि की वर्णन शैली अन्य कवियों से एकदम भिन्न है । वह प्रत्येक वर्णन में अपनी छाप छोड़ना चाहता है लेकिन इसमें वह पूरी तरह से सफल हुआ है यह सन्देह युक्त है ।

भाषा—कवि गुजरात का रहने वाला था और गुजरात में ही रास की रचना की गयी थी इसलिए रास की भाषा पर गुजराती भाषा एवं शैली का पूरा प्रभाव है । छन्दों का प्रयोग एवं शब्दों का चयन दोनों में गुजराती का प्रभाव द्योतित है । महाकवि ब्रह्म जिनदास ने जिस शैली का प्रयोग किया था और उसी शैली को यहां कवि देवेन्द्र अपनाया है । १६वीं १७वीं शताब्दि में गुजराती शैली का हिन्दी कवियों पर पूरा प्रभाव रहा । इसीका नमूना यशोधर रास में देखा जा सकता है ।

छन्द—रास में दोहा छन्द के अतिरिक्त और भी भास छन्दों का उपयोग किया गया है । हमें आज एक भास में कितने ही पद मिलेंगे साथ ही दूसरे भास आसुदानी भास हेलानी (१३), भास नारे सुखानी (१५), भास ब्रह्म गुणराजनी (१६), भास चौपई (२४) भास भमारलीनी भास रासनी (३१), भास साहेलीनी (३६), भास बसन्त फागुणनी (४६), भास भूपाल रासनी (५३), भास भद्रबाहुनी (८१) भास पटुललछीनी (८४) भास जीवदानी (६८) आदि भासों का छन्दोंके रूप में प्रयोग किया है । कवि

ने चौपई जैसे स्वतन्त्र छन्द को भी भास चौपई कर छन्द का प्रयोग किया गया है। हां दोहा के आगे पीछे भास का प्रयोग नहीं किया है।

रचना स्थान—जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है कि यशोधर रास की रचना महुआ नगर में चन्द्रप्रभ चैत्यालय में की गयी थी। नगर धनधान्य एवं सुवर्ण से ओतप्रोत था। वहां दशिक समाज के पर्याप्त संख्या में घर थे। बड़े बड़े बाड़ी एवं बगीचे थे जिनमें विभिन्न प्रकार के फलों वृक्ष थे। नगर में श्रावकों की अच्छी बस्ती थी जो नाम पूजा व्रत अभिषेक करने में बड़ी रुचि रखते थे। वहां बड़े २ त्रिणाय जित मन्दिर थे इस प्रकार जिस नगर (महुआ) में कवि रहते थे वह अपने समय का उत्तम नगर माना जाता था।

तेह देस माही सोहि महुआ नयरी असंततो ।

धन कण कणायर तने भरी, महाजन नवसय सहंततो ॥३॥

ब्राह्मण वेदने अभ्यासे नाहि पूर्ण नदी मांही नो ।

अवर वरण घणा वसि सा- नित नित होय उछाहतो ॥४॥

सिंहपुरा कुल मंडण बहि वारिया थायक वसंततो ।

दास पूजा व्रत अभिषेक, बहुपरि व्रत सरंततो ॥१२॥१३२॥

महुआ नगर के मन्दिर की मूलनायक प्रतिमा चन्द्रप्रभु स्वामी की थी। मन्दिर में धरणेन्द्र परावती की प्रतिमा भी थी जिनके दर्शनमात्र से भूत पिशाच की बाधा दूर हो जाती थी मन्दिर के बहार श्रीपाल भी पूजे जाते थे।

महुआ नगर में अनेक श्रावक थे जिनमें संघवी नाकर नन्दन, संघवी सिवदास सघवी दाभाई, साह नाहानकुल चांदली, संघवी जगा, जयवंत संघवी, हंसराज सुत साह कंआरी, नाहन रुत मांगजी, भासजी आदि के नाम विशेषतः उल्लेखनीय थे जिनके नाम कवि ने ग्रंथ प्रशस्ति में गिनाये हैं। इन सबने यशोधर रास की रचना में विवेक प्रेरणा की थी।

संघसी नाकार नंदन ।सा०। संघवी साहि सिवदास तो ।

भूपाल कुल सोहावर ।सा०। संघवीदा भाई गुराराम तो ॥३६॥

साहा नाहा नकुल चांदली ।सा०। दा भाई दान दातार तो ।

सांघवी जना कुल मण्डण ।सा०। जयवंत संघीव उदारतो ॥३६॥

हंसराज सुत साहा कुंआर जी ।सा०। नाहन सुत मांगजी सुचंगतो ।

भासजी आदि संग आदरथी ।सा०। रास दख्यो मन रंगतो ॥४०॥

१ तेह गच्छपती आदेस थी, महुआ नगर मकारतो ।

चंद्रप्रभ चैत्यालय रास रच्यो सुख कारतो ॥

देवेन्द्र कवि भट्टारक सकलकीर्ति के आम्नाय में होने वाले भट्टारकों—
सकलकीर्ति, भुवनकीर्ति, ज्ञानभूषण, विजयकीर्ति शुभचन्द्र, सकल भूषण, सुमति
कीर्ति एवं गुणकीर्ति जैसे भट्टारकों एवं ब्रह्म जिनदास एवं उनके शिष्य शांतिदास
ब्र. हंसराज एवं ब्र. राजपाल के व्यक्तिगत एवं कृतित्व से बड़े प्रभावित थे इसलिए
कवि ने उनका साभार उल्लेख किया है। कवि के समय में ब्रह्म शांतिदास थे जिनके
उपदेश एवं प्रेरणा से कवि की धर्म एवं साहित्य रचना की ओर प्रवृत्ति बड़ी।

यशोधर के जीवन की लोकप्रियता

यशोधर राजा का जीवन जैन समाज में अत्यधिक लोकप्रिय रहा है। द्रव्य
हिंसा के स्थान पर भाव हिंसा भी कितनी पाप बन्ध का कारण बनती है यही इस
काव्य का मुख्य संदेश है। इसलिए महाकवि पुष्पदन्त से लेकर देवेन्द्र कवि तक
निम्न कवियों ने अपनी ज्ञानी एवं भाषा में यशोधर काव्यों की रचना करके यशोधर
के जीवन का एक कीर्तिमान प्रस्तुत किया :—

१. जसहर चरित्र	महाकवि पुष्पदन्त	अपभ्रंश	६ वीं शताब्दि
२. यशस्तलक चम्पू	सोमदेवसूरि	संस्कृत	शक संवत् ५८१
३. यशोधर चरित्र	ब्र. सकलकीर्ति	"	१५ वीं शताब्दि
४. यशोधर रास	ब्र. जिनदास	राजस्थानी	१५ वीं शताब्दि

मून मंथ भारती गच्छ पथनंदी गच्छ राय तो ।

तेह पाटि सोहे दिनकर सकल कीरति गुण ठायतो ॥५०॥

भुवनकीर्ति भूवि विजात, तस पाट साय सगुमार तो ।

ज्ञानभूषण ज्ञानदायक, गोपम सम आचार तो ॥५१॥

विजय कीरती गुरु गच्छपती, वचन सीधी मुनि हंसतो ।

तस पटोवर सुभचन्द्र वादीस्वर वर वंसतो ॥५२॥

हुंवह कुल बडे माजने सकल भूषणो नून पायतो ।

वादीय मान मदन पट् वर्णन वादी रायतो ॥५३॥

तेह पारि सुमती कीरती सूरि, तेह पाटि उदयो भग्न तो ।

भवीया कमल विकासवा, गुणकीरती गुण जायतो ॥५४॥

एह गच्छपति तगि अन्वय, ब्रह्मचारी जिनदास तो ।

शांतिदास तस पट धम, ब्रह्म हंसराज गुणवास्तो ॥५५॥

राजपाल ब्रह्म तेह पाटि, सांमति श्री शांतिदास ।

तेह उपदेस धनगोर श्री जिनधर्म उरुहास तो ॥५६॥

१. यशोवर चरित्र	आचार्य सोमकीर्ति	संस्कृत	संवत् १५३६
६. यशोधर रास	"	हिन्दी	"
७. जसहर चरित्र	पं. रघु	अपभ्रंश	१५ वीं शताब्दि

कविवर देवेन्द्र के पश्चात् संस्कृत एवं हिन्दी कवियों की और भी यशोधर काव्यों की रचनाएँ मिलती हैं जो उनकी जीवन कथा की लोकप्रियता की द्योतक हैं। देवेन्द्र के यशोधर रास की वही कथा है जिसका हम अकादमी के पंचम भाग में सार दे चुके हैं फिर भी पाठकों की जानकारी के लिए यशोधर रास का संक्षिप्त सार यहां भी दिया जा रहा है।

कथासार

भारत देश के आर्य खण्ड में योष देश था जहां की प्राकृतिक सुषुमा निराली थी तथा प्राणीमात्र निर्भय होकर विकरल करते थे। राजपौर नगर में महलों की पंक्तियां एवं मन्दिरों के शिखर दूर से ही नगर की भव्यता एवं सुन्दरता का प्रदर्शन करते थे। नगर में सभी जाति के लोग रहते थे। योष देश के राजा मारिदत्त था जिसका राज्य वैभव निराला था। वह अत्यन्त प्रतापी राजा था। एक दिन उसी नगर में भैरवानन्द नाम का एक जोगी आया जिसके हाथ में त्रिशूल था। यह डमरू बजाता तथा वनचरों की हिंसा करने में आनन्द मानता था। उसने नगर में आते ही अपने ज्ञान विज्ञान के सम्बन्ध में अनेक बातें बतलाई तथा कहने लगा कि उसे राम लक्ष्मण, पाण्डव आदि दिखलायी देते हैं और वह जनता को भी दर्शन करा सकता है। जोगी को राज दरबार में बुलाया गया जहां उसने राजा को प्रभावित कर लिया और जब राजा ने आकाशगामिनी विद्या प्राप्त करना चाहा तो उसने चण्डमारि देवी की भक्ति एवं उसके आगे थलचर जलचर एवं नभचर जीवों के युगलों की बलि आकाशगामिनी विद्यासिद्धि के लिए आवश्यक बतलाया। राजा ने अपने सैनिकों को तत्काल सभी प्राणी युगलों को लाने का आदेश दिया। चंडमारी का मन्दिर पशु पक्षी युगलों से भर गया। हिंसा का घोर वातावरण बन गया। मन्दिर में चीत्कार एवं बिल्लाहट के अतिरिक्त कुछ भी नहीं रहा। इसके पश्चात् भैरवानन्द ने कहा कि जब तक मानव युगल को बलिदान के लिए नहीं लाया जावेगा तब तक विद्या सिद्ध नहीं होगी। राजा के आदेशानुसार उसके सैनिक चारों ओर दोहे और मार्ग में जाते हुए एक ब्रह्मचारी एवं एक ब्रह्मचारिणी को पकड़ कर देवी के मन्दिर में ले आये।

राजा मारिदत्त वहीं था। मानव युगल और वह भी साधु के वेश में तथा सुन्दर तथा कान्तिमान देह युक्त शरीरधारियों को देखकर राजा आश्चर्य चकित

हो गया। नगर के बाहर तीन दिन पूर्व ही दिगम्बर जैन मुनि सुधस्ताचार्य का संघ आया था। आचार्य के तपोबल से चारों तरफ हरियाली छा गयी थी। उसी संघ के ये दोनों साधु एवं साध्वी थे जो आहार के लिए नगर में जा रहे थे।

राजा भारिदत्त जैसे ही तर युगल का बंध करने के लिए तलवार सम्हालने लगा, दोनों साधु साध्वी ने राजा को आश्रीर्वाद दिया तथा उसके दीर्घजीवन एवं यश की कामना की। राजा उनके वचन सुन कर उनसे अत्यधिक प्रभावित हुआ और अल्प वय में ही साधु जीवन अपनाने का कारण जानना चाहा। ब्रह्मचारी ने राजा से कहा कि वह इनके सम्बन्ध में जानकर चला करेगा क्योंकि वह स्वयं तो पाप बुद्धि में फंसा हुआ है। राजा ने तत्काल तलवार छोड़ दी और उनसे पूर्व भाव जानने के लिए आसुर हो उठा।

भारिदत्त तब उपमन्यो, खड्ग मुक्यो तेणि वार ।
कर युगम जोडी करी, करी कोपनी परीहार ॥३॥२४॥

इसके पश्चात् ब्रह्मचारी ने निम्न प्रकार कथा प्रारम्भ की :—

भारत देश के आर्य खण्ड में अंबन्ती प्रदेश था जो अपनी प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए सर्वत्र प्रसिद्ध था। उज्जयिनी उसकी राजधानी थी जो सभी तरह से सम्पन्न नगर था। जिसका कबि ने बहुत ही विस्तृत वर्णन किया है। वहाँ का राजा था यशोध जो क्षत्रिय वंश मूल्य था। राणी का नाम चन्द्रमती था जिसकी देह का निर्माण मानों स्वयं विधाता ने ही किया था। कुछ समय पश्चात् उसको पुत्र रत्न की जब प्राप्ति हुई तो चारों ओर आनन्द छा गया। राजकुमार का नाम यशोधर रखा गया।

नाम यशोधर तेह बीऊए, बहु पिरि करि उछाहूतो ।
रतन जडित मूषण भलाए, पहिरवी घरि ऊमाहूतो ॥२५॥२५॥

पाँच वर्ष का होने पर राजकुमार को पढ़ने भेजा गया जहाँ उसने सभी विद्याएँ सीख ली। न्याय, व्याकरण, छन्द, अलंकार तक संगीत, ज्योतिष, आदि सभी शास्त्रों में पारंगता प्राप्त की। युवा होने पर उसे युवराज पद से सुशोभित किया गया। युवराज के विवाह का प्रस्ताव लेकर बराह देश के राजा सल्लिवाहन के पास भेजा। उसकी पुत्री का नाम अमृतमती था। जब अमृतमती का लग्न लेकर वहाँ का मंत्री उज्जयिनी आया तब अनेक प्रकार के उत्सव किए गए। पत्रियां जिसी गयी और सहस्रों कुटुम्बी जन एकत्रित हुए। नाच गान एवं संगीत समारोह सम्पन्न किए गये। उज्जयिनी से बाराह देश गयी जहाँ उसका इतना अधिक स्वागत आया कि लोग आश्चर्य करने लगे। दहेज इतना अधिक दिया गया जिसका

कोई पार नहीं था। विवाह के पश्चात् राजा यशोध ने राजकुमार यशोधर को पूर्ण रूप से योग्य मान कर उसका अपने ही हाथों से राज्याभिषेक कर दिया।

राजा यशोधर राज्य करने लगे। रानी अमृत मती भी जीवन का आनन्द लेने लगी वसन्त ऋतु आने पर वसन्तोत्सव मनाया गया तथा राजा एवं रानी वन क्रीड़ा करने गये। कवि ने वसन्तोत्सव का सूर्योदय एवं सूर्यास्त दोनों का अच्छी तरह वर्णन किया है। कुछ समय पश्चात् रानी का महलों नीचे रहने वाले कुबड़ा से प्रेम हो गया और वह एक रात्रि को राजा की सोता हुआ जानकर पूरे भ्रमर के साथ अकेली ही उसके पास चली, राजा भी जग गया और उसके पीछे पीछे चलने लगा। वहाँ राजा को यह देख कर महान् आश्चर्य हुआ कि किस प्रकार एक रानी दुर्गन्ध युक्त कुबड़े की मित्रता कर रही है। एक बार तो राजा ने अपनी तलवार से उसे मारना चाहा लेकिन बाद में उसने स्थिति को देख कर वापिस पलंग पर सो गया। कुछ समय पश्चात् रानी भी वहीं आकर सो गयी।

यशोधर राजा को जब दुस्वप्न की शान्ति के लिए एवं सुख समृद्धि के लिए देवी के सामने जीवों का बंध करने के लिए उसकी माता चन्द्रमती ने बहुत समझाया लेकिन राजा ने कहा कि हिंसा करने से पाप लगता है, नीच गति का बंध होता है। उसकी माता ने एक आटे का कूकड़ा बनाया और उसी का बंध करने का आग्रह किया राजा ने माता की बात मानली और आटे के कूकड़े का बंध कर दिया। इससे यशोधर ने बहुत पश्चानास किया और गृह त्याग कर तपस्वी बनने का निर्णय लिया। रानी को जब यह मालुम हुआ तो वह रोने लगी और बिना पति के जीना ही व्यर्थ समझा। उसने राजा से प्रार्थना करी कि वह एक बार उसके यहाँ आहार लेवे उसके बाद दोनों ही तपस्वी बन आयेगे। रानी ने राजा को एवं माता चन्द्रमती को क्षिप के लड्डू खिला दिये जिसके कारण राजा वैद्य २ करता हुआ मर गया। इसके पश्चात् रानी ने रोना पीटना प्रारम्भ किया। और प्रजाजनों को ऐसा आभास करा दिया जैसे राजा की प्राकृतिक मृत्यु हुई हो। यशोधर की मृत्यु से सारे नगर में शोक छा गया। राजा की १०० रानियों में से कितनी ही स्वनः ही मर गयी। कुछ ने वरराग्य धारण कर लिया। राजा का दाह संस्कार कर दिया गया। ब्राह्मणों को खूब दान दिया गया।

ठाम ठाम थी ब्राह्मण माग्या, बहूयेर दान देवाय ।

वन कांचन कण घृत धरा, मणी वस्त्रादि अपार ॥१॥

गज अश्व रथ गो महीसी, आदि बहु दीघां दान ।

बछ बाछर जीवे बाहेया, बह्य भोजन विधान ॥२॥

इसके पश्चात् राजा यशोधर एवं माना चन्द्रमती के भवों का कम प्रारम्भ होता है । राजा यशोधर मर कर स्वान हुआ और चन्द्रमति मोर हुई । एक दिन मोर चन्द्रमती रानी के महल की छत पर था । वहाँ से उसने रानी एवं कुबड़े को कुकर्म करता हुआ देख लिया । मोर ने कुबड़े को अपनी चौंचों से घायल कर दिया यशोमती ने मोर को पाला था जिसने लपकाकर मोरनी की गर्दन दबोच ली । शिममे वह तदकाल मर गयी । कुत्ते को वनमें दोड़ते हुए बाघनीने खा लिया । इसके पश्चात् स्वान मर कर सर्प हुआ तथा मोर मरकर सेहलु हुई । जब सेहलु ने सर्प को देखा तो उसकी पूँछ पकड़ कर चया लिया । अगले भवमें सेहलु मर कर बड़ा मगर हुआ और सर्प रोही (संसुमार) हो गया ।

एक दिन राजा की नत्की तलाब पर नहा रही थी सभी उस मगर ने उसे पकड़ लिया । जब राजा को समाचार मिला तो मगर को पकड़ने का आदेश हुआ । अन्त में उस संसुमार ने मगर को पकड़ लिया और लकड़ी मूसल आदि से उसे खूब मारा । वह अत्यन्त वेदना के साथ मर गया और नगर के समीप ही बकरी हुई । कहीं यशोधर राजा की रानी और वहाँ बशी न ली । लेकिन मत्स्य ककले को मारने से गति प्राप्त हुई । रोहित मर कर बड़ी मछली हुई । जिसे तल २ खाया गया फिर वह मर कर बकरा हुआ । बकरा मर कर पुनः उसी बकरी के गर्भ से बकरा हुआ । बकरा मर कर पुनः वैसा हुआ । जिसे वरदत्त बणजारा भार लावने के काम में लेने लगा । वे फिर दोनों मर कर मुर्गा मुर्गी जी की योनी में पैदा हुए । उन दोनों को मुनिराज से धर्मोपदेश सुन कर जाति स्मरण हो गया तथा व्रत ग्रहण किए ।

तब अहमे बेहू कूकड़े, सुणयूँ अमनि भवांतर सार ।

जाति समर उपनू सही, अहमे पाण नीघा वरत भवतार ॥२६॥१०२॥

दोनों मुर्गा मुर्गी प्रसन्नता से कू कू कर रहे थे तभी राजा ने दोनों को शब्द भेदी बाण से मार दिया । फिर वे ही कुसुमावली रानी के गर्भ से पुत्र पुत्री के रूप में पैदा हुए । जिन का अभयकृति एवं अभयमति नाम रखा गया । कवि ने यशोधर एवं चन्द्रमती के भवों का निम्न प्रकार वर्णन किया है —

अमृतायि जसोधर चन्द्रमती मारया, मोर कुतरा भव भव भागो ॥२४॥

तीहो थी मरी सिहिलो सांप हवा, बली रोहीत संसुमार ।

चन्द्रमती छाली हवा सेह गभीराव छाग हवो वे बार सा ॥२५॥

चन्द्रमती महीष योनि पड्या तहाँ थी कूकड़ा हवा बेह ।

कृतीम जीवहि साफल पाप्मा, भवि भमतां नही छेह ॥सा०॥२६॥

यशोधर एवं चन्द्रमती की पूर्वभवों की कहानी सुनकर कोटवाल एवं मारीदहा राजा अभयभीत हो गए और उन्होंने जैन धर्म स्वीकार कर निम्न प्रकार विचार प्रकट किये :—

आज चिन्तामणि रत्न में पाम्युं, पाम्यो धर्म कल्प वृक्ष ।

जिनवाणी जिनशत गाम्पद, जिरिण जगन्ने ते दक्ष ॥११॥॥३६॥॥१८३॥

राजा यशोमति एक दिन वन में गया जहां सुदत्ताचार्य मुनि ध्यानस्थ बैठे थे राजा ने मुनि दर्शन को अपशकुन समझा और मुनि के ऊपर ५०० कुत्ते छोड़वा दिये । लेकिन मुनि की तपस्या से कुत्ते शान्त होकर बैठ गये । तब राजा तलवार लेकर मुनि का मारने चला । उसी समय उसे कल्याणमित्र मिला जो मुनि की वन्दना के लिए बहाना आया था । राजा से उसने मुनि वन्दना के लिये कहा लेकिन राजा ने कहा कि उनके दर्शन तो अपशकुन है । कल्याण मित्र ने राजा की बहुत गमभाया तथा कहा नान्तर्व तो मरल स्वभावी, त्यागी एवं शुद्ध परिणामी होने का लक्षण है । उसने कहा कि ये कलिंग नरेश सुदत्तराज है राजा और कल्याणमित्र ने उनकी वन्दना की तो मुनि ने धर्मवृद्धि हो ऐसा आशीर्वाद दिया । राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ तथा वह अपने किये पर पछताने लगा । उसने अपना घात करना चाहा लेकिन आचार्य श्री ने उसकी मन की बात जानकर रोक दिया । राजा मुनि से बड़ा प्रभावित हुआ ।

इसके पश्चात् मुनि ने यशोधर राजा एवं चन्द्रमती के पूर्वभवों की कथा कह सुनायी तथा एक आटे के मुँगे का वध भी कितने जन्मों के लिए दुःखदायी होता है । इसका प्रत्यक्ष उदाहरण उसके पुत्र पुत्री हैं बतलाया । राजा को तत्काल वैराग्य हो गया तथा अभय रुचि को राज्य देकर पांचवीं राजाश्री के साथ मुनि बन गया । इसके पश्चात् अभयरुचि एवं अभयमति ने भी जिन दीक्षा धारण करली मारीदहा राजा को उक्त सब वृत्तान्त सुनकर वैराग्यभाव उत्पन्न हो गए । सुदत्तचार्य ने उसके भी पूर्वभवों का वृत्तान्त सुनाया । इसके पश्चात् मुनि दीक्षा धारण कर स्वर्ग प्राप्त किया । चण्डमारी देवी के पुजारी ने भी हिंसाहर्त छौड़ कर जिन दीक्षा धारण करली । देवी के मन्दिर को स्वच्छ कर दिया और जीव हिंसा सदा के लिए बन्द कर दी सुदत्ताचार्य ने समाधिमरण करके १६वां स्वर्ग प्राप्त किया । अभयमती एवं अभयरुचि ने भी कठोर तप साधना द्वारा स्वर्ग प्राप्त किया ।



यशोधर रास

1. रचयिता	—	देवेन्द्र कवि
2. रचना काल	—	संवत् १६३८ (सन् १५८१)
3. रचना स्थान	—	महारा नगर (गुजरात)
4. लिपि कागज	—	संवत् १६४४ (सन् १५८७)
5. पाण्डु लिपि	—	
प्राप्ति स्थान	—	दि० जैन मन्दिर प्रतापगढ़ (राज०)

ॐ नमः सिद्धेभ्यः । श्री सारदायै नमः । श्री गुरुभ्यो नमः ।

वस्तु छन्द

मंगलाचरणा

श्री भुनिमुवत जिनवि नमोवि, क्षेत्र करे जसु सुर निकर ॥
गणहर मुनिवरे जेह पूजिय, तीर्थकर बीसमो जयो ॥
भवीभरा जेह वचनेहि रंजिय, छयतारसीस गुणि भंडियु ॥
खंडीयो कुमत असार ।
सो जिनवर मंगलकरो, त्रिमुवन तारण हार ॥१॥

बूहा

श्री जिन वदन कमल बकी, प्रगटह बीस प्रसीध ।
सरसती सरस वचन दीगु, हंसगामिनी मति बुद्धि ॥१॥
गुणगुरुगुरु ध्यायसू, पायसु सुमति सुभास ।
सयल सजन आनन्द करो, भासू यशोधर रास ॥२॥
नेनयन पूजित त्रिमुवने, विक्षाता त्रिनेत्र ।
वेणु पुस्तक चारिणी, जयमाली पल्ल सुविचित्र ॥३॥
विदिम वाञ्छित वरदायिनि, स्वाहादिनि जगमाय ।
सेवक जनने सारदा, वाञ्छित करो पसाय ॥४॥

भास जसोधरनी

भदीभरा जरा आनंद काज, तीर्थकर देव ।

चोवीस जिनस्तबू जूजू आ बहू भावसूँ हेव ॥१॥

चौबीस तीर्थकर स्तवन

प्रथम जिनेश्वर वृषभनाथ, नाथ्यो जेणि काम ।

धर्म कर्म प्रगटी करी, पाभ्यो सिव ठाम ॥२॥

अजित जिनाधिप विजित कोह, मोह मछर वारण ।

केवल बोध सुखचन दिख्य, भव्य दुरित निवारण ॥३॥

संभव संभयु सव्य पुण्य, पुण्यम शोश सम मुख ।

त्रिसुवन जन उद्धरी करी, करी शिववधू मुख ॥४॥

अवनी अनोपम अवतरयू, हरघो मिथ्याभ्रन्धकार ।

अभिनन्दन जिन जाणो भाण, जाणो कमल विस्तार ॥५॥

सुमति तीर्थकर सुमति दान, मान मातंग केशनी ।

तत्त्वप्रकाशी शिव शयो, जयो सो जिगि बहुपरी ॥६॥

पद्मप्रभ जिन पद्म भास, भाषा जित जलधर ।

धर्माभूत रसि सींचीया, भवीयासस्योत्कर ॥७॥

भरकत कांति सुपार्षददेव, देवेन्द्रवी बंदीय ।

अण्यकाल जसु सिसुपणि, धरिण भूषणें भूषीय ॥८॥

चन्द्रप्रभ जिन पति हवो, तवो अवनी चन्द्र ।

कुमति कमल कोमलाणो साधु, वाध्यु हरल समुद्र ॥९॥

पंच कल्याणें पूजीयो, जयो जिन पुण्यदन्त ।

तनु जीत नारद चन्द्र वृंद, कुंद को कली दंत ॥१०॥

सीतल सीतल वचन वंश, मंग सप्त तरंग ।

वाग्नी गंगा प्रक्षालया, भव्रीमां अंतरंग ॥११॥

श्रेयह दायक श्री श्रेयांस, हंस साण सरोवर ।

सुर नर फराधर करी प्रसंस, संसार जयंकर ॥१२॥

बसुधायक बजुपूजंस, पूजीय पितृबास ।

वासुपूज्य जम पूजीउ, जीतु काम विलास ॥१३॥

विमलजिन प्रभु विमल लक्षण, इक्षण सुखदायक ।

बखशत घाठ सहित अनुद्य, श्री बख खयादिक ॥१४॥

अनंत अनंत सुगुण नीलो, तिलो जैलोक सोहैं ॥
 अनुबिनु जिहं अनुभवुं, तहां बहुत उछाहैं ॥१५॥
 धर्म धोरंवर धर्मनाथ, पाथो निधि गंभीर ।
 अनंत चतुष्टय मन्दिरों, भेद र राग र धीर ॥१६॥
 शांतिकरण जगे शान्तिदेव, सेवि सुर विद्याधर ।
 पट खंडाधिप कोटि काम, गयी रूप मनोहर ॥१७॥
 कुंधु आदि जीवह दयाल, जिन कुंधु समर्थ ।
 मिथ्यामत तम विघटयो, प्रगटयो परमार्थ ॥१८॥
 अर अम्पंतर बाह्य लक्ष, लक्ष्मी करी मंडित ।
 चतुरानन चतुर्पणि, धनुं सेव पंडीत ॥१९॥
 सुर मुकुट स्थित मल्लिमाल, पूज्यो पद पंकज ।
 काम मल्ल प्रति मल्ल मल्लि, जिनगत सत्य व्रज ॥२०॥
 सुव्रत संयुत सुव्रत जिन, दिन दिनपती प्रसी ।
 करय प्रदक्षणा मेरु समो, सम दम कीयु बसी ॥२१॥
 नमि जिन नमीत सुरेंद्रचंद्र, कुंद चंद्र जसोज्ज्वल ।
 तप्त सु कांचन सद्गु वरुण, कर्ण सुखद जेह स्वर ॥२२॥
 धर्म महारथ जैसो नेमि, नेमि जदुकुल मंडण ॥
 सामेल वरुण जिनाभिराम, काम कुमति बिहंडण ॥२३॥
 नील वरुण तनु पार्श्वस्वामि, कामिनि रती दूर ॥
 फणपती पूजित जित मदाष्ट, दुष्ट कमठह चूर ॥२४॥
 वर्धमान जस वर्धमान, त्रिभुवनि विस्तरयो ।
 कलियुग मांहि सौक्ष कूप, उपकारज करयो ॥२५॥

वस्तु

ए चोवीस जिन, जिन त्रिभुवन ईश ।
 अतीत अनागत सहीत सदा, बाहु हूँ हेये भाव आणीय ॥
 संसार सागर तारण, कारण सह मंगलह जाणीय ।
 बेहेरमाण बीसे सहीत, सहीत वचन सुखदान ॥
 श्री संवह मंगल करो, बेवेन्र नुत भिक्षाल ॥१॥

भास दीनसीनी

गणधरों की वन्दना

भास अतल सहीत, दिन भनीअणु नरुं मतिधरीए ।
 गणधर वरगावूं सार, संक्षा सहीत भली परिण ॥१॥
 वृषभसेन छें आदि आदि जिनह चौरासी हवा ए ।
 अजीतह गणधर नेऊं, लेऊं गुण सिंहसेन भवाए ॥२॥
 मंभवनि मत पंच, सहित चारुषेणादिक ए ॥
 व्रजनाभि आदि होय अभीनंदन अतपी अधिक ॥३॥
 सुमति एक सो सोल, चामर मुख्य गणाधिप ए ॥
 पद्मप्रभ सत एक, दस सुवज्र चामर भू स्वामी ॥४॥
 पचासां छे सुपार्श्व, गणापति बलपूर्वक सखी ए ॥
 भाणं चन्द्रप्रभ देव, दत्त प्रमुख सदा भणो ए ॥५॥
 अठयासी पुष्पदंत, सैंत विदभादिक सहीए ॥
 अणगारादि भगोस, सीतलनि एकासी कहीए ॥६॥
 कुंथु प्रधान धेयांस, सत्योत्तर सत्ये भणोए ॥
 आमठ श्री वासुपुज्य, पूज्य धर्म आदि गणुए ॥७॥
 विमल पंचावन मेह, धीरा मेरु आदि कक्षा ए ॥
 गरुणेंद्र अनंत पंचास, आशाजयि जयायें लक्षाए ॥८॥
 त्रयतालीस गरीष्ट, अरीष्टसेनादिक धर्मनिए ॥
 छत्रीस शांति चक्रेश, चक्रायुध आदिशर्मदे ए ॥९॥
 व्यांकुं, पान्नीस गरुणेंद्र, कुंथु शंभू स्वयं प्रमुख ।
 अरनि भीम गरुणेश, कुंथ मुखध्याइं होइं सुख ॥१०॥
 अठ्ठावीस विसाष, पूर्वक गरिमल्लिनि भलाए ।
 मुनिसुव्रत नि अठार, भल्लिमुख सही गुण निछाए ॥११॥
 गणधर सत्तर होय, सुप्रभादिक नमिनायक ए ।
 नेभि जिननि अठ्ठार, वरदत्तादि वरदायक ए ॥१२॥
 दशदिशि यश कीय वास, पासनि यश स्वयंभू मुख ए ॥
 गौतम आदि अम्पार, वीरनि विस्तारित सुख ए ॥१३॥
 एवं कारें जाणि, गणधर संक्षा चौदसो ए ॥
 वावन पावन होय, जोई आगम नित अम्पासो ए ॥१४॥

जिस लहौ मौरूप अपार पार पाभ्यो संसार तरणी ए ॥
रोग विपोग विण्णास, भास ए कवि देवेन्द्र भरिण ए ॥१५॥

केवली एवं श्रुतकेवली

अनुक्रमि गौतम स्वामि, सुधर्माचारज केवलीए ॥
अंतिम केवली जाणि, जंबू स्वामी कीरती भलीए ॥१६॥
श्रुत केवली बली पंच, संसार दुःख हरिए ॥
विष्णुनंदि मित्र होय, अपराजित विजित स्मर ए ॥१७॥

अंग व पूर्व के ज्ञाता

गोवरधन गुणवंत, वाणी भवी अगु उद्धरे ए ॥
भद्रबाहु बहूभेद, चन्द्रगुणती संसय हरे ए ॥१८॥
दक्षपूरव धरधीर, विशाख आदि मुनीवर हवा ए ॥
जिनशासन उद्योत, सबल मिथ्यात निवारवाए ॥१९॥
एकादशांग मुजारा नक्षत्रादि सोहामणाए ॥
अनुक्रमि श्री कुंदकुंद, पंचनामि कोडामणा ए ॥२०॥

आचार्य वन्दना

उभयस्वामि मुनि संत, समन्तभद्र भविष्ठां तिलो ए ॥
प्रतिबोध्या सिव कोटि, कीच स्वयंभू गुणतिलोए ॥२१॥
पूज्यपाद प्रसीध, जिनसेन सासनें चंदलो ए ॥
अनोपम अकलंक वीर, धीर बोध जीतवा भलो ए ॥२२॥
गुणभद्रादि अनेक, पूर्वाचारज बहू हवा ए ॥
ते व्याकुं धरी भाव, कामबांछित सिद्ध थवा ए ॥२३॥

भट्टारक वन्दना

अनुक्रमि श्री पद्मनंदि, पुण्यकंद पदोषरू ए ॥
देवेन्द्रकीर्ति सुसूति, भवीधरानि उल्लव करो ए ॥२४॥
विद्यानंदि मुनेन्द्र, तेह पट कमलदिवाकरू ए ॥
मल्लिभूषण माहंत, बचन सिधगुण आकर ए ॥२५॥

लक्ष्मीचंद्र मुनिचंद्र, तस पद जलबि बुधि करु ए ॥
 वीरचन्द्र विख्यात, अन्न त्यजि जस विस्तरधु ए ॥२६॥
 ज्ञानभूषण मुरूप, भूप सह मानि धरां ए ॥
 लाड न्यात सणगार, शांति मूर्ति गौधम मरां ए ॥२७॥
 तस पाटि उदयोचन्द्र, प्रभाचन्द्र सोहामरां ए ॥
 वादि सरोमणि वीर, हुंवर कुल कोडामरां ए ॥२८॥
 अक्की अनोपम रूप, वादीचंद्र तस पट सोहि ए ॥
 वादी सयल सणगार, भवी अरा जन तरां मन मोहि ए ॥२९॥

रास रचना का संकल्प

बहा

एह गछपति आदेसथी, रास रचेवा आज ।
 उद्यम मांडयो मन रली, सजन आनंदहु काज ॥३०॥

लघु गुण देखी पर तरां, गिरि सम लेखि जेह ॥
 बहू नीज गर्वहु नही, कहीअि सज्जन तेह ॥३१॥

सज्जन प्रशंसा

सुजना मन माखरा समूँ, जे कहि तेह अजाण ॥
 पर संतापि सज्जन तपि, माखरा एह गुण हांण ॥३२॥
 सजनासा करसेजडी, सुनूं सुगंध सुधूप ॥
 बाटीय पीलीय छेदीयु, दह्यो नदाखिक रूप ॥३३॥
 सज्जन नैवली बांसली, भला उपना भलि बंश ॥
 छेद्या भेद्यां बहु परी, मधुर बदि सु प्रसंस ॥३४॥
 सज्जन रचतां कर थकी, खरपा जे परमाणुं ॥
 ते परमाणुं करी रच्यां, मेघ घंदन चंद्र जाण ॥३५॥
 पावस हतु घन ऊपगरें, ग्रीष्मे चन्दन चन्द्र ॥
 सजन सदाए ऊपगरि, सह जन नयनानंद ॥३६॥
 सज्जन सरीसी गोठडी, दिन दिन दीउ देख ॥
 दुज्जरा दूरें दीसि रये, छावम पडो एक खेव ॥३७॥

सजन सरीसो क्षण भलो, नही बरस खल साथ ॥
 मांवा भली क्षण छाहूली, न भली बाजल बाध ॥८॥
 साधु साथि सादज सुखद, नहीं चिर खल खल सूँ बाद ॥
 प्रभुत तथो स्पर्स जु भलो, न भलो विस आस्वाद ॥९॥
 दुज्जण भलि नीपार्ड, अरे विधाता जाण ॥
 काच विना मणि केस लहे, तम विण दिवस बख्शाण ॥१०॥
 दुज्जणा घूहब दोए समा, दोखो दय संतोष ॥
 अंधारो अवगुण गमि, ऊखोति होए रोष ॥११॥
 मात थकी दुज्जण भलो, रवे बखोडो कोय ॥
 मात घोयि मल करी करि, दुज्जण जीभय धोय ॥१२॥
 मनें नलो मुख मीठडो, मूक्यो दुज्जण दूर ॥
 कटिण सिला सेवा नसूँ, लपसि भागू ऊर ॥१३॥
 भण्यो गण्यो पण अवगणो, दुज्जण घरां घरां दूर ॥
 मणि मंडित सूँ नव्यहरि, प्राण कणी अति दूर ॥१४॥
 नीचु न मणो दुज्जणो, देपी विस्वास म आण ॥
 जिम नमतो नीचो भीलडो, बाण मूँकी हरि प्राण ॥१५॥
 विनय करो अर्द्धचन्द्र करो, तेहू पण खल नडे सोय ॥
 सिर पर अरो पाएँ हण्यु, पण फणी बसतो जोय ॥१६॥
 घरां सीखव्यो दिनहस्तव्यो, खल न मूँकि दुष्ट अंस ॥
 दूध धोईयि ओहू घरां, काग न होइहं हंस ॥१७॥
 खल पुखतो गरडो हवो, तोहू दुष्ट पणूँ न जाय ॥
 फल पाका इन्द्र बारणीनां, किमे न भीठा थाय ॥१८॥
 दुज्जण जीवो बरस सो, जेह तापि सटू कोय ॥
 सूधि मारण संचरि, उत्तम मज्जम लोय ॥१९॥
 सूकर दुज्जण दोए जसां, उपकारी महि मज्ज ॥
 सूकर सेरी सूकवि, दुज्जण दोख विसूऊ ॥२०॥
 गुणग्राही सज्जन सदा, दुज्जण दोख अ जोय ॥
 ए एह नोछि सभावडो, दोषम देसो कोय ॥२१॥
 सज्जन दूरधी दिल दुहि, खल मलयो दहिकाय ॥
 बेहू दाहक गुण सम हुवा, कुहो किम भेद कहिवाय ॥२२॥

भूतल उपकारी सदा, सज्जन दुज्जन भेड ।
 तेह भणी समता आणीयि, भला भट भालि भेड ॥२३॥
 दोष लीयितो लेय जो, करो कवित कवि लोय ॥
 जुडका तणि भये करी, बस्व न मूकि कोय ॥२४॥
 सुकवित सुकवी करघु सुणी, को एक पामि उल्लास ।
 कामिति नयन कटाक्ष यी, करय असोक विलास ॥२५॥
 तुछ छे मुझ मति अति घणूं, घणूं प्रेरघो गुरु भास ।
 रास रत्न एह तेह भणी, को मम करसो हास ॥२६॥

बिनय प्रदर्शन

श्रोता मन सुप्त थिर करी, सुणज्यो त्यजो प्रमाद ।
 जोडता पद दोहलूं, मम घरसो अनुवाद ॥२७॥
 सूप समो श्रोता भणो, गुण किहीयो एके जाण ।
 दोष त्यजे दूर करी, गुण आदरि बणाण ॥२८॥
 चालणी समवली जाणीयि, श्रोता बीजा भेद ।
 दोष राखें हादि दूढ करी, गुणकेरो करें छेद ॥२९॥
 एक नर काई लहि नहीं, सभा मांडाहो बाय ।
 मिहिख पडघो जिमि मादणि, आछूं भीरडोहो बाय ॥३०॥
 गुण जाणह आगल गुणी, करे ते विस्तार ।
 दूर यो अति कांज गुण लहि, भेक न लहि बिचार ॥३१॥

भास रासनी

जम्बू द्वीप भरत क्षेत्र वर्णन

जंबू दक्षि उपलक्षीयो ए, लक्ष योजन जंबूदीपतु ।
 दोए चंदा दोए दिनकरा ए, करय उद्योत जेम दीप तु ॥१॥
 सयल दीप सायर माहें ए, महीय मध्ये एहतु ।
 लक्ष योजन उन्नत भणो ए, कणय गिरि नामि तेहतो ॥२॥
 नाम सुदरसन तेह काणु ए, अयुहो वने सोहें जे हतो ।
 अपचरासुं सुरि सेवयो ए, जयो एक सोल जिन मेहतो ॥३॥

पंचोत्तर योजन उन्नत ए, सत योजन आयाम तु ।
 योजन पंचास विस्तारें कह्यो ए, तारय भवीया सुठामनु ॥४॥
 कनक कलस करी खंडीयो ए, खंडीयो कुमतिनो मानतो ॥
 मानस्थंभ आगल भसाए, भली घंटा निधान तो ॥५॥
 सिखर ध्वजा घूघरी घणूं ए, घमकि पवन संयोग तो ॥
 लहलहि मगनैं दूरधी दीसे ए, दीठि दुरति वियोग तो ॥६॥
 कनकमय रतनैं जड्या ए, अष्टमंगल सहित तो ।
 रतनवेदी रली आमणीए, मणीमय बिब समेत तो ॥७॥
 पंचसे घनघ ऊनत सगो ए एक सु आठ प्रमाण तो ॥
 पंचवरण किरणें करीए, जी कीया कोटी भाण तो ॥८॥
 भमर असुर विद्याधर ए, चारण मुनी करें सेवतो ।
 पंच चूरण स्वस्तिक करीए, करय पूजा नित देव तु ॥९॥
 पंचामृत अभिषेक होइ ए, होइ त्याहां नाटारंभ तु ।
 असरी किनरी जिन गुण गावियिए, भांकि नाचि रंभ तो ॥१०॥
 ताल कंसाल मादल भला ए, बाजि अनेक बाजिप्र तो ॥
 भवीअण जन भावि भावनाए, पूजय जिन जग मित्र तो ॥११॥
 तेह मेरू दक्षणा दसिए, दीसय भरत सु क्षेत्र तो ।
 गंगासिंधु विजय करीए ए, सोहि खट खंड विधिप्र तो ॥१२॥
 आरज खंड तिहां जाणीयिए, जाणै स्वर्गह खंड तो ।
 मगध देश तिहां भलो ए, सहू देश माहि प्रचंड तो ॥१३॥

मगध देश वरणन

पुण्य तीर्थें करी अलंकरणो ए, गंगा यमुना मध्यतो ॥
 ठाम ठाम मुनि तपि बलिए, वनैं वनचरछि अबध्य तो ॥१४॥
 सरोवर छे जीहां सोहाभणाए, भामणां कमल विस्तार तो ॥
 परिमलैं बांध्यां भमरलांए, करयते रण भणकारतो ॥१५॥
 निरमल जलि करी पूरीयांए, हंस करें स्वर सार तो ॥
 सारस चक्रवाकीं सगो ए, कलीरव करय अपार तो ॥१६॥
 वनवाडी विवध परी ए, पिरपेर तरु अर जुक्त तो ॥
 आंबा आंबली आमलीए, अशोक अंबती अति मुक्त तो ॥ १७॥
 बोलो वकुल बली बलसरिए, कदंब चंपक कुरंट तो ॥
 बाडी सींचे वा बालकाए, गांवती हाके अरहित तो ॥१८॥

रेहेंद चीत्कार तीरिण सरो ए, श्रुत पूरेछि एह तो ॥
 कवण चतुर नर गावता ए, पावि विकृती न जेह तो ॥१६॥
 जाई जूई जासू अणीए, सोवन केतकी कोड तो ॥
 मोगरा मालती मचकुंद ए, चागेलीनि अषोड तो ॥२०॥
 नानिकेर नानारंग ए, नारंग नें नागवेल तो ॥
 कमण्य कोठां केवडा ए, केवडा यनिछि केज सो ॥२१॥
 दिशि दिस द्राक्षा मंडप ए, उपि छाया प्रचूर तो ॥
 पंथीवडा पंथ जालता ए, संताप नें करि चूर तो ॥२२॥
 नीबू जाबू जंजीरडाए, बीजोरां बहुभेद तो ॥
 गायण भादि अनेक तरु ए, देखनां जायि खेदतु ॥२३॥
 क्षेत्र दीसि ध्यान्य तरुणए, नीपनां अनेक प्रकार तो ॥
 शम्भु कुराबी कन्यकाए, गावइ सरस अपार तु ॥२४॥
 ते सुगों बनि घणी हरणलीए, बेधी नचरि लगार तु ॥
 बीजय वेध्यावली हरणानां ए, तुह जाइ वनह मझार तु ॥२५॥
 बालकाने नयनें जीकीया ए, साजीया तेणी वार तो ॥
 पंथी आ गान सुणी करी ए, सांभरी आवे नीज नार तो ॥२६॥
 वदन नीहाल लतां बापुडाए, जुड़ी नचि सकय लगार तो ॥
 एहवी गति विषई तणीए, बीसरि विवेक विचार तु ॥२७॥
 नयर पादणपुर अती भलाए, खेटक कवट नाम तु ॥
 भरयां धण कणि करी घणूं ए, कणय रण अमिराम तु ॥२८॥
 अनेक लोक तीहां बसिए, हसए ते देवनो अपार तु ॥
 रूप संपदा चतुर परिणए, महाजन विविध प्रकार तु ॥२९॥
 वन वन गिरि गिरि पुर पुरे ए, कनक तरुण अतीवतु ॥
 जिन प्रासाद सिखरबंध ए, देखी हरषें भव्य जीव तु ॥३०॥
 ठाम ठाम मुनीवर दीसिए, वेधंता उपदेश तो ॥
 नरनारी सरागार करीए, जिन पूजी सुविसेस ते ॥३१॥
 बांदि मुनीने नीरमलाए, स्वामी बद्धल करि सार तु ॥
 प्यार वरण लोक पूरयो ए, देश सुषम विस्तार तु ॥३२॥

दूहा

कटक नदी सियर तरुणो, मंग नही क्षण एक ॥
 कटक मंजित कर नर तरुण, स्त्री सिर मंग विवेक ॥१॥

नीत राखें नृप अति घरां, लोक अनीत बिकार ॥
 ए आचार्य मोटूँ प्रछे, डाहा लहि बिचार ॥२॥
 इत्यादिक सोभा सहीत, सहू सुहीतकारी देश ॥
 भवी अण जन सहू साभलो, नयरह मुगुण कहेस ॥३॥

मास भमारुलोनी

राजगृह नगर बरॉन

राजगृह नगर छि वगडूँ तो भमारुली ।

तेह देश माहि वीसालतो, पावल करतो ऊँत तो ॥भ॥

सोनातणी सोहितालतो ॥१॥

रातां रतन को सीसे जडघां तो, गगन किरण विस्तार तो ॥

मध्या नें रबी तावडतो ॥भ०॥ रातडो होयि जीहां सार तो ॥२॥

नील रतन करी वेधीडं ॥तो भ०॥ कही एक नीलो होय तो ।

रबी जाणो नील फिरि परी ॥तो भ० ॥ ऊग्यु एक अण तेंय तो ॥३॥

जलि करी पूरी खातीका ॥तो भ०॥ वीटी रहि पोर मान तो ॥

जासुं खोभलीं मापिरां ॥तु भ०॥ राखी रही एक निघ्यान तु ॥४॥

पिर पिर पेखीयि पेदणां ॥तो भ०॥ पोडी पोल पगार तु ॥

मोटी मेडी मतवारणां ॥तो भ०॥ बारणां वज्र सूं सार तु ॥५॥

हाट श्रेण सोहामणी ॥तो भ०॥ साहि मेडी श्रेण तो ॥

घवल हर ऊन न घणा ॥तो भ०॥ सात खणा सोहि तेण तो ॥६॥

नर सुंदर सुरपति समा ॥तो भ०॥ मूषण पिहिरि बडावनु ॥

लीला लिहिर बहि वारीआ ॥तो भ०॥ दान पूजा करि भावनु ॥७॥

कल्पवृक्ष जिम सोहीआ ॥तु भ०॥ भला भोग भोगवें चंग तु ॥

घरि घरि मोहुछव होय ॥तु भ०॥ होइ नित नवारंग तु ॥८॥

मोटां मेडी मालीया ॥तु भ०॥ विस्तरि अगुठ सुघूप तु ॥

चूआ चंदननि कस्तूरी ॥तु भ०॥ परिमल महे महे रूप तु ॥९॥

बरस कपूर वली एलची ॥तु भ०॥ पान बीडा अखंड तु ॥

भोगी भलां सुख भोगि ॥तु भ०॥ नही त्याहां पाप पाखंड तु ॥१०॥

मंदरि नारी पदमनी तु ॥भ०॥ रूप सोभाग सोहंत तो ॥

हाव भाव अनेक परी ॥तो भ०॥ कंतह चीत हरंत तो ॥११॥

मलपती चालि गजगामिनी ॥तो भ०॥ वीछीआ नेउर नाव तु ॥

करकंकरा चूडी रुडी ॥तो भ०॥ खलकती मांखघोयाव तु ॥१२॥

कटी मेखला चिरी घूषरी ॥तो भ०॥ घमकि अतीही अपार तो ॥
 जाणे छूटो हाथीयो ॥तो भ०॥ उरवर ललकिहार तो ॥१३॥
 कोटि चंपा टोडर तुभमारुली०॥ भूमणं भूसकि रसाख तु ॥
 नाके मोती अनोपम ॥तो भ०॥ काने भबूकि भाख तु ॥१४॥
 खरो चांदलो मोती भरघो ॥तो भ०॥ पीमल सोहिगाल तु ॥
 सेमफूल रुडी राखडी ॥तो भ०॥ आखडी छिअणी आलि तु ॥१५॥
 दान सील तप भावना ॥तो भ०॥ करय मंगल गीत मान तु ॥
 पात्र त्रिविध नें मनरंगि ॥तो भ०॥ दे विनीत दान मान तो ॥१६॥
 जिन भुवन तिहां मांमणां ॥तो भ०॥ सिखरबद्ध उत्तंग तो ॥
 भज तोरण कनक कलस ॥तो भ०॥ वाजित्र वाजि सूरंग तु ॥१७॥
 जिनवर बिन सोहामणा ॥तो भ०॥ महोच्च होभि गुणमाल तो ॥
 मनीवर तत्व पुराण सू ॥तो भ०॥ कहिघमै कथा विसाल तो ॥१८॥
 वाडी वन तीहां सोहीघां ॥तो भ०॥ फल फूल सहित अपार तु ॥
 सुडा साद सोहि घणां ॥तो भ०॥ भमरा रणभूणकार ॥१९॥
 बाड बडा सेतडी तरा ॥तो भ०॥ यंत्रे पील्या रस देअनु ॥
 भावेद्या सही उपगारि ॥तो भ०॥ कृपण तरा एह भेयतो ॥२०॥
 आवा रान रली आमणा ॥तो भ०॥ सोहि तांहा सुखकारतो ॥
 कोएल करय टहकडा ॥तो भ०॥ विरहीनि दुःख अपार तु ॥२१॥
 सरोवर सोहि जल भरया ॥तो भ०॥ कमल कुमुद सहीत तो ॥
 हंस सारस सरस बोलि ॥तो भ०॥ चकवा चकवी सुमीत तो ॥२२॥
 ते नगरीनु राजीव ॥तो भ०॥ अलीक राय सुजाण तो ॥
 रूपि मनमथ जीतीव ॥तो भ०॥ परतापिअ सुभाण तो ॥२३॥
 सयल सजन आनंद करु ॥तो भ०॥ जाणे पूरण चन्द्र तु ॥
 राज लीला लक्षण करी ॥ तो भ०॥ जासों दूजो इन्द्र तु ॥२४॥
 न्यायवन्त गुण आगलो ॥तो भ०॥ दानिज सो कल्पवृक्ष तु ॥
 समकित रयणे मंडोयो तो भ०॥ ऊपगुहन गुणि दक्षि तु ॥२५॥
 तस मन रंजन खूबडी ॥तो भ०॥ राणी चेलणा नाम तु ॥
 सीलवती गुण ऊजली ॥तो भ०॥ रूप सोभागनो ठाम तो ॥२६॥
 समकित व्रत करी मंडीत ॥तो भ०॥ बोध नु मोडयो मान तो ॥
 एक जिह्वा हूं किम कहू ॥तो भ०॥ सहू गुण तरा निधान तु ॥२७॥

जिम रुकिमणी सूं माधवो ॥तो भ०॥ रोहिण सूं जिम चंद्र तो ॥
 तिम बेलणा सूं श्रेणिक ॥तो भ०॥ राज करे सुख कन्द तो ॥२८॥
 जिम रती सूं मकरध्वज ॥तो भ०॥ इन्द्राणीसूं जिम इन्द्र तु ॥
 तिम बेलणा सूं श्रेणिक ॥तो भ०॥ राज करि सुख समुद्रतो ॥२९॥

वस्तु

श्रेणिक राजा २ करे तिहां राज, भोगवि सुख सोहामणी ॥
 धर्मवन्त बली न्याय पालय, पर उपकार करय घरों ॥
 प्रजा तणों सन्ताप दानय, जिनवर धरम करि भलो ॥
 अनेक भूप करि सेव, समकित गुणो करी मंडीयु । सेवे श्री गुरुदेव ॥१॥

भास.मालहंतडानी

एक बार राजा श्रेणिक ए महालंतडे । सभा बिनी गुणवंत ॥
 सुणो सुन्दरे । सामंत क्षत्री मंडयो ए ।मा० सहित बिद्वज्जन संत ।सु० ॥१॥
 चमर छालि बारंगनाए ।मा० जाणि गंग कल्लोल ॥
 करवली कंकण रणभूषण ए ।सु० नयण छालि अती लोल ॥२॥
 गज भवगाह गजगामिनि ए ।मा० आंदोलि वारोवार ॥
 सिर वरि छत्र सोहि भलूए ।मा० नीर्मल यस बिस्तार ॥सु० ॥३॥
 अनेक क्षत्री नृप परवर्यो ए ।मा० तल्लत्र सूं जिम चन्द्र ॥
 भालि भाव सभातराणो भलो ए ।सु० सहस्राक्ष जिम इन्द्र ॥सु० ॥४॥
 सांभलि कवीनी कवि कला ए ।मा० काव्य कतूहल चंग ॥
 क्षण एक षटदशान तराए ।मा० वादीआ वाद नारंग ॥सु० ॥५॥
 सा री ग भ प ध तीसस्त स्वर ए ।मा० तान मानादि संगीत ॥
 सुधा गंगावती नृत्यकी ए ।मा० नृत्य जोधि थीर बात ॥सु० ॥६॥
 बंदी जन धीरद बोले ए ।मा० छंद प्रबंध कवित्त ॥
 दान देवि मनवांछीत ए ।मा० धन धन ए नृप रीत ॥सु० ॥७॥

वनपाल का आगमन

तीणि अवसिरि एक आवियो ए ।मा० वनपाल राज दुप्रार ॥
 राज आदेशधी हरषीयो ए ।मा० पोहोतो सभा मझारि ॥सु० ॥८॥
 फल फूल भेट मूंकी करीए ।मा० बीनव्यु राय सीर नाय ॥
 धन धन तह्य पुण्य करीए ।मा० समोसरण अभिराम ॥सु० ॥९॥
 विपुलाचल अति रुबडो ए ।मा० महावीर जिन भवतार ॥
 आख्या अतीह सोमराए ॥सु० ॥ अवीअण तारणहार ॥१॥

वनवाडी सह गहगहीए ॥मा०॥ छ रतु तरणी बहु फूल ॥
 एक बारि प्रगट्याए ॥सु०॥ वाय सुगन्ध अनुकूल ॥१०॥
 कोयल करि टहकटाए ॥मा०॥ दूकडा भमर गुजार ॥
 भमरि किनरी अपछराए ॥सु०॥ रासडा गावि सार ॥११॥
 साढी बार कोडी बाजीत्रए ॥मा०॥ मादल ताल कंसाल ॥
 भेरी मृगल घरुं गहगहीए ॥सु०॥ सरणाई साद रसाल ॥१२॥
 भमर किनर लग फणधराए ॥मा०॥ करय ते जय जयकार ॥
 विमान बिठा विद्याधराए ॥सु०॥ भावया जात्र अपार ॥१३॥

राजा श्रेणिक की प्रसन्नता

ते वाणी सुणी नृप हरषीए ॥मा०॥ सींचीउ भमृत धार ॥
 सिधासण थकी उठीउए ॥सु०॥ चाल्यो सात क्रम सार ॥१४॥
 वीर बेसि विवेकसूँए ॥मा०॥ नमयो राय उदार ॥
 वनपालनि पसाय दीयोए ॥सु०॥ सह भूषण गलिहार ॥१५॥
 आनन्द भेरी उछलीए ॥मा०॥ बांदवा वीर जीरोंद ॥
 राजा चाल्यो कटक सूँए ॥सु०॥ अंतउरी सूँ आखंद ॥१६॥

श्रेणिक का समवसरण के लिये प्रधान

हाथी आ बहूँ सणगारीयाए ॥सु०॥ धमधमि धूधर माल ॥
 घंटा घणूँ टंकार करीए ॥मा०॥ सूँडि मोती जाल ॥१७॥
 कानें हेम चमर धर्याए ॥मा०॥ अंथाडी घजा फार ॥
 पंच वरण वरुण पहिरिआए ॥सु०॥ सुंभट हाथी हथिआर ॥१८॥
 जगमग भाला भल हलिये ॥मा०॥ बिठा अंकुश बरी हाथ ॥
 कनक लगैम मोती जडयाए ॥सु०॥ कंठ चमर सोहि साथ ॥१९॥
 सुरंग चालि चमकताए ॥मा०॥ रत्न जडीत पलाए ॥
 गजबिसी राय चालीयुए ॥सु०॥ चेलणा सहित सुजाए ॥२०॥
 नगर तरणा लोक सहए ॥मा०॥ नर नारी घरीय उछाह ॥
 शाय चाल्या जाणी करीए ॥सु०॥ उछक हवा माहो माहि ॥२१॥
 एक बारि सह संवरवाए ॥मा०॥ सेरी समद उत्तंग ॥
 हाथि संचार करंतडाए ॥सु०॥ भीडाधि अंगो अंग ॥२२॥
 द्वार तूटि वेणि छूटिए ॥सु०॥ फाटि वीरयो रंग ॥
 घाट पडि मोती ऊढेए ॥मा०॥ तोटडी थकीम सुचंग ॥२३॥

भवि भोला भला भवीआए ॥सु०॥ आवी आवाँदवा काज ॥
 वीर स्वामीनि मन रलीए ॥सु०॥ साथे सामग्री समाज ॥२४॥
 श्रेसिक राजा श्रि देषियो ए ॥सु०॥ समोसरण भवतार ॥
 गज शको हेठो उतरयोए ॥सु०॥ जाणि विनय अवतार ॥२५॥

दू३

सनि सनि राय चालीयो, आनंद अंग न माय ॥
 छत्र चमर विण गुणनिनो, सुधो मन वच काय ॥१॥

मानस्तम का शोभन

मानस्थम्भ शोभा घणी, मान निधारण दीठ ॥
 बीस सहस पग धारीयां, चढतां हरष पईठ ॥२॥
 गढ सरोवर बली खतीका, फलवाडी बहु फूल ,।
 कांचन गढ वारु बापिका, जन्तु रहित अतूल ॥३॥
 अमरी किनरी अपछरा, करय ते नाटक साल ॥
 उपवन वाडी फूलि फली, रतन वेदिका विसाल ॥४॥
 पंच वरण धज लहलहि, भसीमय गढ सहांग ॥
 कल्पवृक्ष पंकति भली, उन्नत शाखा अभंग ॥५॥
 रतनस्तूप तेज अगमनि, भगमनि धूपह कुंभ ॥
 हर्मावली हरषदीपि, बीसि नही किही दंभ ॥६॥
 नीर्मल फटक तराणे सुणो गढ उन्नत अभिराम ॥
 द्वार सभा तिहो रुचडी, भवीआं करे विश्राम ॥७॥
 प्रथम सभा मुनिवर तराणी, कल्पनारी बीजी होय ॥
 अजिका सभा बीजीसणो, चौथी योतिक स्त्री जोय ॥८॥
 पंचमी वितर कामिनी, छठी नागिनी जाण ॥
 नागतराणी सातमी सभा, आठमी व्यंतरनी बषाण ॥९॥
 नवमी योतिक सुरतराणी, दसमी सुर कल्प बास ॥
 अग्यारमी तरवर सभा, बारमी तिर्यंच निवास ॥१०॥
 बाध गाई गज सिंह सूं, सर्प नकुल सुविचार ॥
 घाम सिंह मृग हय महिष, करि हंस गार्जार ॥११॥
 वातर मोढा मोरडा, गरुड भेरंग अतीव ॥
 समली सिचाराण सेहली, नेह लाग्ता त्याहो जीव ॥१२॥
 जात बर छांडी करी, कूर जीव तहाँ शांत ॥
 भूप तरस पीडा नही, नही आणी भन आंति ॥१३॥

आँधला नयने देखिए, पांगला पावि पाय ॥
 पुधा सूधा चालिए, भूँका जिरा गुण माय ॥१४॥
 रोभीअडां निरोग पुंछ, फाँडी निर्मला ॥१५॥
 बिहिरा गुण श्रवण सुणी, समोसरण मही माय ॥१६॥
 पोल छत्रीस सोहामणी, मणी तोरण गुणमाल ॥
 ठाम ठाम मोती भूँवकां, मेढी मालीयां सुबिसाल ॥१७॥
 सूत्रधार तिहां धनपती, सुरपती भ्राजा तास ॥
 एक जिह्वा केम वर्णकूँ, समोसरण मुख वास ॥१८॥
 बार समा मध्ये सही, त्रय सिंहासन रंग ॥
 बिठा जिनवर निर्मला, चतुरांगल उत्तम ॥१९॥
 दीठा स्वामी सोहामणा, चोत्रीस मलिसमवत ॥
 प्रातिहार्यज कोठामणा, हरपु राय महंत ॥२०॥
 त्रय प्रवक्षणा वेई नम्यो, पूजेबि अष्ट प्रकार ॥
 कर जोडी जिन वीरनि, स्तवन करि विस्तार ॥२१॥

मास त्रयचतुसीसनी

महावीर स्तवन

वीर जीनिस्वर विभुवन तार । जय जय स्वामी जगदाधार ॥
 पाप संताप निवार ॥ १॥
 नाथ बंस तणो सणगार । सिंघारय राय सुत जनि सार ॥
 प्रीयकारणी मल्हार ॥ २॥
 कुंडलपुर धरयो अवतार । बरस मेघ कनक मणिघार ॥
 नवषटमास अपार ॥ ३॥
 सुरपतीइ जिन धंके धरयो । चोली काय देखि पर धरयो ॥
 सुरगिरि पिर संचरयो ॥४॥
 अनेक उछाह मंदरगिर पामी । थाथा पंडु सिला पर स्वामी ॥
 सुर सुरपति सिर नामी ॥५॥
 एक योजन मुख मणिमिजाण । आठ योजन गंभीर बखारण ॥
 सागभ कह्यो प्रमाण ॥६॥
 सहस्र अष्टोत्तर कुंभ सज करया । खीर सागर निर्मल जल भरया ॥
 इंद्री तेढलि करे भरया ॥७॥

जय जय करता जिन सिर ढाल्या । जनम जनम नो पाप पखालां ।
सहस्र नयणे नीहाल्या ॥८॥

एक सहस्र भाटे सुभ लक्षण । सणगारि इन्द्राणी विचक्षण ॥
ईक्षण सुखद सरूप ॥९॥

स्तवन गीत नर्तन सुखदात । वीर नाम त्रिभुवन विधात ॥
पूजा जिन मात तात ॥१०॥

कही वसांत आप्यो तब बाल । बाजि मादल ताल कंसाल ॥
नाटक रण्यु रसाल ॥११॥

नित नित सुरपति सेवा आवि । नय काल भूषण पहिरावि ॥
अमरी कितरी गुण गावि ॥१२॥

तनु भव भोग विरक्त जाणी । लोकांतक देखे स्तव्यु वषाणी ॥
जय जय करता बाणी ॥१३॥

सुरपति सिबकां सूं लेइ चाल्या । बलि वली सिद्ध भण्ड अकार्यो ॥
स्वामी संजम पाल्यो ॥१४॥

घात कर्म गिरि बख समान । प्रगटघो निर्मल केवलज्ञान ॥
तनु तेजि जिस्यो मानु ॥१५॥

घनदत्त रचित तहा सभा सुसोहि । त्रिभुवन जन केरा मनमोहि ॥
अगि तुह्य सम नही कोहि ॥१६॥

असोक वृक्ष सोहि सुखकार । पुष्प वृष्टि सुर करि उदार ॥
हुंहुमी नाद विस्तार ॥१७॥

बोंसठ चमर अमर तुभ ढालि । दिव्य ध्वनि भर्मेने अञ्जु आलि ॥
भामंडल सुविशाल ॥१८॥

रतन जडित सिंहासन बीस । छत्र त्रय सुर धरि जेहै सिसै ॥
दीठी सहं मन हीसि ॥१९॥

छाया रहित चतुर्मुख स्वामी । पुण्य फलि तुभ महुरति वामी ॥
रक्ष राक्ष शिवगामी ॥२०॥

मोह राक्षस मुखी मुभ राखो अनेक जीवने असय जे आखो ॥
मुक्ती मारण मुभ दाखो ॥२१॥

राग द्वेष मोटा बिसाख । इसया दीय आप संताप ॥
टासो तेह विष व्याप ॥२२॥

मन उडयो मिथ्यात महाग्रह । संसार कृपे नाखें धाग्रह ॥
 निग्रह तेहना कीजि ॥२३॥
 काम पारधी मुक्त भृग ने रंजाणि । नारी नयण शर केरे संघाणि ।
 तुम बिण कोण राखी जाणि ॥२४॥
 आसा नदी सागर संसार । लोभ मगर मुखें पड्यो गमार ॥
 राक्ष तूं जगदाधार ॥२५॥
 विषय सहन इन्द्री गज रुध । वृष्णा भगन ज्वाला प्रति कुद्ध ॥
 तिहां थी राक्ष समृध ॥२६॥
 दोष कंटक भव वन सभार । रभे पिताच भमाडि अपार ॥
 ते मुक्त फेरी निवार ॥२७॥
 डाकिनी साकिणी मूत बिताल । बाघ सिंघन नाडि बिकलाल ॥
 तुम नाम ध्याता दयाल ॥२८॥
 जगि मंगल कारी वीर जीर्णेंद्र । प्रभाचन्द्र वादीचन्द्र गणेंद्र ॥
 स्तवि विक्रम बेवेन्द्र ॥२९॥

ब्रूहा

एसी पिरि वीर जिणवर तण्, स्तवन करी सुजाण ॥
 गणेश्वर गौतम आदि करि, मुनी बांछा सुबखान ॥१॥
 मनुज सभा माहि बीसिउ, भाव सहित गुणवंत ॥
 अर्म कथा रस सांभली, दीप्य भुति जयवंत ॥२॥
 योजन मान सु विस्तरी, वाणी अमिम समान ॥
 प्रगटी वीर बदन धकी, निर्मल जिम हिम भान ॥३॥
 तत्त्व पदारथ संभली, पाय्यो परमानन्द ॥
 पुनु रुद्धाय सभा धकी, बंदीआ गोयम गणेंद्र ॥४॥
 भाव घरी मन माहि धणूं, पूछि कथा विचार ॥
 राय जसोधर तेहनी, कहो स्वामी दया मंडार ॥५॥
 श्रीमंतो जिननायकाः शुभ चतुर्विंशन् महाश्रयकाः ॥
 त्रैलोक्येश्वर पूजिता, जितमदाः सत् पंचकव्याणकाः ॥
 अर्हन् श्री परमेष्ठिनः सुखकराः सत्प्रातिहार्याष्टकाः ॥
 श्री बेवेन्द्र सुविक्रमस्तुतपदाः कुर्वन्तु वो मंगलं ॥१॥

इति श्री यशोधर-महाराज-चरित्रे रासचूडामणौ काव्य प्रतिष्ठान्ने भूदेव कवि
की विक्रमसुतदेवेन्द्रविरचिते श्रेणिक समवधारण आगमन महावीरस्तवन श्रीगौतम
प्रश्नकरणो नाम प्रथमोऽधिकार ॥१॥

द्वितीय अध्यािकार

मास हेलीनी

यशोधर राजा की कथा

गौतम स्वामी देव । मधुरीय वाणी उच्चरया हेल ॥
दंत किरणें करी हेव । जनमनना तिमिर हरया हेल ॥१॥

सुराी श्रेणिक सुविचार । राय जसोधर कथा तराी हेल ॥
एछि दया भंडार । छेदहसि मिथ्यातनी घराी हेस ॥२॥

प्रगटि दया अपार । पुण्य होय एह सांभसि हेल ॥
पाप तराी निरधार । मन तराा संसय सह टले हेल ॥

४
योध देश वर्णन

जंबूद्वीप मभार । भरत क्षेत्र भावि भराी हेल ॥
आरज खंड तेह ठाय । योध देश कोडामणौ हेल ॥४॥
कुकुंठ पाति गाम । ठाम ठाम सोहि रुखवा हेल ॥
अनेक लोक विनाम । सजन बसि बर्मी धरा हेल ॥५॥

गिरि कंदरा वनमांहि । हाथी हींङि तिहां मलयता हेल ॥
सीतल तखवर छांहि । हाथराी सूरहींङि खेलता हेल ॥६॥
कहीं एक हरीणा रान हरी नें मय नाहा ठां फरि हेल ॥
मुनीवर भरया ध्यान । तेहि तराी आश्रम अनुसरि हेल ॥७॥

वाडी बन ठाम ठाम । कपूर कदली कोमल दीसि हेल ॥
नालकेर खजूर । पूग तरां तरु भरही से हेल ॥८॥

ताल तमाल हें ताल । सरल सोहि सजन समा हेल ॥
कोमल मध्य रसाल । देवदाह आदि उत्तमा हेल ॥९॥

तज पत्रज नागबेल । एलबी सघी फलें करी हेल ॥
जायफल सवंगह मेल । मरी बेलछि भूमके भरी हेल ॥१०॥

द्राक्ष मंडप विसाल । छाया फल करी लंक हेल ॥
पंथीयडा तीणि काल । भूष तरस तहं विसर्यां हेल ॥११॥
सरोवर नीमल नीर । कवल पोयणे घणूं मंडीईयां हेह ॥
आवां बनह गंभीर । देखी माननी मान छंडीया हेल ॥१२॥

भमरा रण करणकार । होइ कोएल ना टहुकड़ा हेल ॥
 कामनी कंत सहीत । मुरातां भमूतना घूंटडा हेल ॥१३॥
 खेलि कंत सूं तेह । नेह घणोरि तेजडा हेल ॥
 रूप सोभागहू गेह । गावय सरम गीत गोरडी हेल ॥१४॥
 ता अनेक लागे देण । निपजी सरस सोहामणा हेल ॥
 गाम गाम मुविसेस । गिर सरषा ध्यान ढग घणौ हेल ॥१५॥
 जिणवर तरा प्रसाद सीख रे । धजा घणू लहलहि हेल ॥
 घंटा मसेकरी साद । गर्व म करो स्वर्ग इम कहि हेल ॥१६॥

राजपोर नगर वर्णन

तेह देश मभार । राजपोर नगर छि अति भलू हेल ॥
 अमरावती जिम सार । साही पाखल करी संकल्पो हेल ॥१७॥
 रात लखु आवास । रात एते रात हवाडी हेल ॥
 कंत सूं गोठ विलास । हाथ बालतां खलाके चूडी हेल ॥१८॥
 रतण तरा छि भीत । नीज प्रतिबिंब ने देवीयो हेल ॥
 कंत सूं मांडि खंत । अवर नारी सूं प्रेम लेखियो हेल ॥१९॥
 आगणू रतनमि मूमि । निष तारा प्रतिबिंबिया हेल ॥
 मोती ऊपनो भ्रम । हंस चरता विलखा थया हेल ॥२०॥
 दीसि पड्या मोती । तेहमें परा हंसनख्यचरि हेल ॥
 दुजुणि छे तर्यां होति । सहीते सज्जननें ते हेवो गरि हेल ॥२१॥
 आवक सुजन अपार । दान पूजा करि सरागे हेल ॥
 पात्र असीसम क्षार । पंचापर्य होइ घणो हेल ॥२२॥
 उपदनाछि उत्तंग । खडो कली निर्मल जलि भरी हेल ॥
 पीठी परिमल रंग । फूल महिमहि तिहा बहू परी हेल ॥२३॥
 जल क्रीडा करि नार । कंत सरीसी सोभागिणी हेल ॥
 ते नगरी मभारि । दीसि नही को दो भागिणी हेल ॥२४॥
 नर तिहा जाएँ इन्द्र । रूप संपदा भोगने गुणि हेल ॥
 गुण लक्षण समूद्र । बरम घणो छि तेह तरा हेल ॥२५॥
 अवर मिथ्याते लोक । बरण च्यार तीहां बसि हेल ॥
 नही कोहनि दुःख भोक । बन कण तेस तनि उल्लसि हेल ॥२६॥
 राजभुवन उत्तंग । कनक कलस घजा सोहीयो हेल ॥
 फाटिक मंडप बहु रंग । रातारतन बंभि मोहीयो हेल ॥२७॥

जाणें नृप जस एह । प्रगट प्रतापि धीर धरयो हेल ॥
लास रतन तरा तेह । तोरण सोभालंकरयो हेल ॥२८॥

मारीवस्त राजा

मारिवस्त याह्वां राय । राय अनेक बणुं सेवीयो हेल ॥
गुन्य प्रताप लुटाव । जिरि इन्ना लोक निर्गम नीलो हेल ॥२९॥
गज घोडा असंख । रय माला पार नहीं हेल ॥
बौदह बिद्या सुलख । ब्यार नीति तेहनीछि हेल ॥३०॥
सीम्बगुणि जिम चंद्र । प्रताप गुणि सूर जाणीयि हेल ॥
लीला गुणि यम इंद्र । रुपि कामवखानीह हेल ॥३१॥
मनें बणुं मिथ्या भाव । क्रूर मसीछि प्रति बणी हेल ॥
तेह तराि मारी सुभाव । रुपवंती नामि सही रुपणी हेल ॥३२॥
तेह सरीसौ राय । राजपालि वयरी विण हेल ॥
विषयासक्त सभाव । धरम न करि एक क्षण हेल ॥३३॥

बूहा

नगर में भैरवामन्द जोगी का आगमन

तेणि अवसरि नयरी मांहि, जोगी आम्बु प्रचंड ॥
भैरवामंद नाम तेह तरा, बोलि बात बीतंड ॥१॥
अनेक जोगी बीहामणा, वीसि तेहवि साथ ॥
वाक्त निगूल घादि करी, आधुष सि तेह हाथ ॥२॥
डम डम डमरु डाकलां, बजावें बीकराल ॥
सिर सींदूर लांबी जटा, कहानें ते खेकपाल ॥३॥
जोगी नागाधि केटला, राखि बरब्यां मंग ॥
हरण धमर पिहिरि केटला, बाध धर्म पिर रंग ॥४॥
कछोटी यावली केटला, बावरी भांट जटाल ॥
हाक बीह एक दूरंधरा, जीव तरा तेह काल ॥५॥

मास नारेसूझानी

जोगी का रौद्र रूप

जीव हंसक ते पापीया । नारे सूझा ॥ हीडिबन विलंत ॥
बकनाखे यणुं फेरवी ॥१॥ वनचर प्राणु हरंत ॥२॥

अर्द्ध चंद्र फरसी बडि ॥ना०॥ जाणे मम तरणी डाढ ॥
 मखपान करि घरा ॥ ए ॥ना०॥ हाक कडि अनी गाढ ॥२॥
 हाथे अगनता खापरा ॥ना०॥ लोह कडछी करि उन्ही ॥
 जीभि चारि ज्वाला पीयि ॥ना०॥ अग्नी आकाहावि खेद जान ॥३॥
 गुप्त खडम के तावहि ॥ना०॥ गरन केतला भीडमाल ॥
 सोह जुडीला कडी घरि ॥ना०॥ बली छरी विकराल ॥४॥
 कोटें शिंगी बजावता ॥ना०॥ दुर्वर शिंगडां नाद ॥
 संख बजावि ते सवि ॥ना०॥ मांहो माहि करि वाद ॥५॥
 भलि भांग घतूरडो ॥ना०॥ राता नेत्रछि तेह ॥
 तूबडी पत्र घरा धरि ॥ना०॥ भीष मांगि मेह मेह ॥६॥
 केटला कोट कांथडी ॥ना०॥ चीथरां माला हार ॥
 चीथडायु टोप शिर घरि ॥ना०॥ केटला शिर जटा भार ॥७॥
 लोही मुद्रा घरि केटला ॥ना०॥ ललन घूडा बेहू कांग ॥
 लडखडता हींडि घरा ॥ना०॥ गाचि करि गीत गान ॥८॥
 हाथें दोरघां कूचरघा ॥ना०॥ रीछडा केतलां हाथ ॥
 चीत्रा बाघ बचां घरघा ॥ना०॥ केटला मांकडा सायि ॥९॥
 किनरी जंत्र बजावता ॥ना०॥ सेतां गोरख नाम ॥
 विखय बाह्या भूला भमि ॥ना०॥ पाप मिथ्यातनो ठाम ॥१०॥
 जोगणि साधि साकोतरी ॥ना०॥ डाकिणी सांकिणी भेद ॥
 जाणे चालती व्यंतरी ॥ना०॥ नाक तरां तस छेद ॥११॥
 अस्थि तरां काने कुंडल ॥ना०॥ संखलाना गलि हार ॥
 अस्थि तरां हाथे कडा ॥ना०॥ कोट सींगी सणगार ॥१२॥
 व्यंताल काल पंचाक्षरा ॥ना०॥ चेडा चेटक अनेक ॥
 कामण मोहरण उच्चाटण ॥ना०॥ कूड कपट अविनेक ॥१३॥
 विषयी विसनी जुझारीया ॥ना०॥ जूठा बोला जपाट ॥
 आपें भूला पर भोलवि ॥ना०॥ ते किम दाखि सुवाटि ॥१४॥
 एह ता जोगी जोगिण मली ॥ना०॥ देखो भैरवानंद ॥
 लोकमानि मिथ्यातीया ॥ना०॥ विवेक नहीं मतिमंद ॥१५॥

जोगी द्वारा रावण विभीषण आदि को देखने की गर्वोक्ति

सांभू कूँछ नख मोटेरडा ॥ना०॥ मोरज पीछना छत्र ॥
 लोक पूछि बात ते कहि ॥ना०॥ फांकल बोलि बिचित्र ॥१६॥
 रावण लंका लजिहो ॥ना०॥ दीजो जमीन ॥ना०॥
 कहा ईश्वर देखीआ ॥ना०॥ जमीयो लक्ष्मी साथ ॥१७॥
 हरी सूँ मीठी करी गोठडी ॥ना०॥ कीधी बलभद्र साथि ॥
 पांचे पाँचवा मानता ॥ना०॥ मंत्रवर्द्धिमाहारी भाख ॥१८॥
 रामलक्ष्मण वषाणीयो ॥ना०॥ सोतामि पूजा कीथ ॥
 अनेक राणा राय राजीया ॥ना०॥ ते सूड वादि प्रसीध ॥
 मारीबत्ते बात सांभली ॥ना०॥ तेंडाव्युत ततकाल ॥
 ते आब्यु ऊतावलो ॥ना०॥ साथ जोगी बिकराल ॥२०॥
 रायि प्रावंतो देखीयो ॥ना०॥ साहामु चाली लागु पाय ॥
 कर जोडी राय बीनधि ॥ना०॥ आससि करो पसाय ॥२१॥
 जोगी किहि राय सांभलो ॥ना०॥ समल दीक्षामू पाश हूँ ॥
 तूसूँ तो राज देऊ ॥ना०॥ रूसूँ तो सत्रि बीणास ॥२२॥
 तंत्र मंत्र यंत्र धरणा ए ॥ना०॥ पिर पिरधाऊर्वादि ॥
 विद्या आकाश गामिनी ॥ना०॥ विद्या अडुसीकरणछि आदि ॥२३॥

राजा द्वारा आकाश गामिनी विद्या प्राप्ति की इच्छा

तब राजा आचंभीयो ॥ना०॥ बोल्यु मधुरीय बाण ॥
 आकाशगामिनी मुऊ दीयो ॥ना०॥ विद्या तम्हे सुजाण ॥२४॥

जोगी द्वारा उपाय बतलाना

जोगी किहि राजा सांभलो ॥ना०॥ विद्या सीभवा ऊपाय ॥
 चंडमारीजे देवता ॥ना०॥ तेहनी भगत जो थाय ॥२५॥
 धलचर जलचर नभचरा ॥ना०॥ जीव जुगम प्राणेवि ॥
 देवी प्राणलि हिंसता ॥ना०॥ तलक्षण सूसि देवि ॥२६॥
 दीइ विद्यानभ गामिनि ॥ना०॥ अवर धरणीरी रष्य ॥
 दुर्भक्ष रोग मरकीटलि ॥ना०॥ संकटटलि प्रसीध ॥२७॥
 रायते वचन प्रमाण भूँ ॥ना०॥ मूडपणि अपार ॥
 कुयुरि भोलव्यां जीवडा ॥ना०॥ कुण न पडि संसार ॥२८॥

ते नगरी दक्षिण दिसा ॥ना०॥ चंडमारी विस्पात ॥
 देवीकूर कुरुपिणी ॥ना०॥ बाहली तेहनि जीव घात ॥२९॥
 हिंसा विण ते पापणी ॥ना०॥ करि अनेक उत्पात ॥
 राजादिक मिथ्यातिया ॥ना०॥ समय करि जीव घात ॥३०॥

पशु पक्षियों के युगलों को लाना

देवी मठ राय आवीयो ॥ना०॥ लोक सहित भजाण ॥
 देवीने पाए पढयो ॥ना०॥ मनलाउ घणी बार ॥३१॥

अलक्षर जीव

तीन जुगम तिहां आणीयां ॥ना०॥ कूकड छाग बराह ॥
 हरण रोज ससा सांबर ॥ना०॥ महेस मतंगज घोडु ॥३३॥
 रीह नील बरु आणस ॥ना०॥ सेहेता नमुन सींचाल ॥
 साप सरड पहली घामणी ॥ना०॥ माजरि स्वान विकराल ॥३४॥
 खर करभा वृषभादीक ॥ना०॥ वनखर आण्या अनेक ॥
 समजि सींचाणा सारसा ॥ना०॥ हंस वायस बली भेक ॥३५॥

नभचर गीत

मोर चकोर लवारडां ॥ना०॥ कोयल कीर कपोत ॥
 चकवा चकडी पारेवडां ॥ना०॥ टीटिभ गूहड बोत ॥३६॥
 महुसी सोलीआ खडगीआ ॥ना०॥ कोच भेंरड गूहड ॥
 एह आदि नभचर घणा ॥ना०॥ बांधवानबास किऊड ॥३७॥

जलचर गीत

मछमगर जलमांसां ॥ना०॥ करचला काचवा भूर ॥
 जलहस्ती आदि जलचरा ॥ना०॥ बहू आण्या ते क्रूर ॥३८॥
 मठ पाषलि ते बांधीआ ॥ना०॥ बापडा करि पोकार ॥
 भूष तरण अति पीडीयां ॥ना०॥ भयकरी कांपि अपार ॥३९॥
 पुरषुंदासि खणी मही ॥ना०॥ खाड पाडघा ठाम ठाम ॥
 पापी हंस कलोकनि ॥ना०॥ नरक जावाने काम ॥४०॥

बूहा

खड्ग ऊघाड़ो भलकतो, बीज तरणो भत्कार ॥
केस कलायच्छि मोकला, जलधर सोभा धार ॥१॥

मानव युगल लाने को आज्ञा

कोटवाल राय तेडीयो, खंडकर्मा नस नास ॥
मनुष्य युगम आण्यु' नहीं, ए हवू' सू' तुभ्भकाम ॥२॥
राय नम्यो भयभीत तदा, कोटवाल तलकाल ॥
मनुष्य युगमनि कारिणि, जण मोकल्या जिम काल ॥३॥
ते चाल्या ऊतावला, दोहो दशधामि धीर ॥
तीणि अवसरि तिहां आवधा, मृनीसागर मभीर ॥४॥
भास सामेरी माहिपण कहीयि, केदारा माहिपण कहीयि

सहीने

पुनीचर्चा

एक आत्मा ध्यान मन धरे । राग द्वेष दोए परहरि अनुसरे ॥
त्रण्य रत्न अति नीरमलाए' । सहीए ॥१॥
त्रण्य गारव त्रण्य सन्य टालि । त्रण्य गुपति मुनिवर पालि ॥
अजूआलि । त्रण्य आगमि करी त्रिमुवन ए' । सहीए ॥२॥
आार कषाय विहंडणो । आार बंध कौय खंडणो ॥
मंडणो आार संघ तरणो घणू' ए ॥सहीए ॥३॥
पंच आचारिज रंजीउ । पंच आश्रव बल भंजीउ ॥
गंजयो पंचइंद्रीय दल दुरधरोए ॥सहीए॥४॥
पंच संसार दुःख बारण । पांचमी गति सुखकारण ॥
तारण पंच परम गुरुनित ध्याइए । सहीए ॥५॥
षटकाय जीवरक्षण । खटद्रव्यूनू' कहि लक्षण विचक्षण ॥
षटदर्शन जन जन प्रतिबोधवाए ॥सहीए॥६॥
षटकालनी स्थिति लहि । आधकनां षटकर्म कहि ॥
मन मोहि सात तत्व चित्तन करें ॥सहीए॥७॥

मात भय थकी वेगलो । सात गुणस्थान ऊजलो ॥
 नीरमलो सांत दांत दांत गुण जेहलोए ॥सहीए॥८॥
 आठ ध्यान कते ब्रह्मलो । आठ मुक्ति मर कर्मलो ॥
 सोहो जलो चीतवे आतमा निशि दिन ए ॥सहीए॥९॥
 आठ महा सिद्धि दायक । आठ महा रिद्धि नायक ॥
 गायक अमरी किनरी गुण जेहनाए ॥सहीए॥१०॥
 नव नयनि नीरमल जाणि । नवविध सील धरि सुख खाणि ॥
 मन आनि केवल सन्धि गुण ए ॥सहीए॥११॥

मुनि का उपदेश

दश लक्षण धर्म प्रकाशि । दस धर्म ज्ञान अभ्यासे ॥
 प्रति भासे । दश दिसि जस विस्तोरी ए ॥सहीए॥१२॥
 अग्यार प्रतिमा उपदेसि । लहि अग्यार अंग विसेसि ॥
 नीसेसैं बार अंग श्रुत पाठक ए ॥सहीए॥१३॥
 बार भेद तप आचरि । बार अनुप्रेक्षा मनधरि ॥
 विस्तारि । बार वरत आवक तराए ॥सहीए॥१४॥
 तेर प्रकार चारित्र्य धारी । चौद मल तराणे निधारी ॥
 क्षयकारी । पनर प्रमाद नो अति धरू ए ॥सहीए॥१५॥
 भावे सोले भावना । सत्तर संयम पालि पावना ॥
 सोहामणा । दस नीयम धार घूर लगि ए ॥सहीए॥१६॥
 अठार सहस्र भेद सील रालि । उगरीस जीव समास भाखे ॥
 नाजेय । दुष्ठ दोष बीहामणाए ॥सहीए॥१७॥
 बीस मार्गणा भेद कहि । एक बीस चोगुण लक्ष गुण बहि ॥
 अंगे सहि । बाबीस परीसह दुरंधराए । सहीए॥१८॥
 चौबीस जिन दिन दिन ध्याइ । पंचबीस कषायनि न बीडाय ॥
 कविगाय अनुदिन गुण एह मूनी तराए ॥सहीए॥१९॥
 वरय मूलगुण अठाबीस । पाठक गुण वरे पंचबीस ॥
 छबीस । छे आचारज गुण अलंकरधा ए ॥सहीए॥२०॥
 एह आदि गुण अति वरां । एह गुरुनैं छे सोहामणा ॥
 भामणा । गुरु गुण गावैं वेवेन्द्र कवीए ॥२१॥

ब्रूहा

पांचसौ मनियों के साथ सुदस्ताचार्य का जागमग

पांचसै मुनीवरें परवरणी, वरधो संयम श्रीचंग ॥
सुदस्ताचारज नाम तेह तणूं, तप संयमें अभंग ॥१॥
नगर समीपें आजीया, मुनिवर स्वासि मुजाया ॥
अनेक वृक्ष करी अलंकरधो, दीठो तब उद्यान ॥२॥

वन की शोभा

आंबा ऊतत प्रति वणां, भोरघा तेहां अपहर ॥
कोएल कुहू कुहुका करें, सुगतां काम बिकार ॥३॥
मालती मंदार मोगरा, फूल तणा भकरंद ॥
गूँजता भमर भमि भला, वायु वाय अति मंद ॥४॥
सेवती सोवन केतकी, पाडल परिमल पूर ॥
बेलतरणा धर पिर पिरह, करन पसारय सूर ॥५॥
भूख दुखीयां दुःख बीसरि, सुखीआ होइ सुख भूर ॥
हुइ व्यरहणी दुखि दूखणी, जेह भरतारखि दूर ॥६॥
फूल पगर पसरयां घणूं, फलवली पत्र ठाम ठाम ॥
नीरतरणा नीभर तिहां, व्यापय विषयने काम ॥७॥
ए मुनिनिजु गत्तूं नहीं, वन बहुराग सचीत्त ॥
अवर स्थानक नीहासवा, चास्या मुनी सुपवित्त ॥८॥

मास ब्रम्हगुणरावनी

मशान बर्णन

ते मुनीए । चालया जाम । ताम मसाण दीठो घणोए ॥
मडो तिहो ए बलि अपार । रौद्र दीसि बीहामणो ए ॥१॥
बीहाथकाए । ऊठ्या बहु धूम । अर्घदग्ध कलेवर पडयां ए ॥
ठाम ठाम ए पडया बहुत । गली भयू मांस एह्वां मडाए ॥२॥
विकसयाए । मुहदीसिदांत । तूंबलीए घणो घसीरड बडी ए ॥
सीआलीयांए ताणो तास । आकासे गुध लेई उडे ए ॥३॥
कूतरा एव सगि अपार । ऊठता माहोमाहि बहडहिए ॥
वायस एक रंके बडठ । कागिस घणूं कलगली रहिए ॥४॥

अबबल्यां ए काष्ट ऊंवाड । हूड पडवां अती आनीयो ॥
 देवीड ए अति घरी रौद्र । कायरनो मन कांवीयो ए ॥५॥
 तिहा बहुए धरी करी लोक । लोक बहु बापडारडे ए ॥
 वाही आए मोहना तेह । बाप बाप कही मही पडिए ॥६॥

रमशान की भय नकती

बीर बीर ए । एक कहंत । माता सुत नारी नाम लीयिए ॥
 तेडोए साथि सजन । बाहालाने इम नहीं भूकीइ ए ॥७॥
 एणी पेरें ए । ए करीअबिलाप । मोहीया रडेते बापडा ए ॥
 कगता ए अती घणूं रीव । वामये अतीही संतापडा ए ॥८॥
 निगसमे ए भूतजोटींग । क्रूर रूपि हाक जु करि ए ॥
 डम डम ए डमरु आडा हांक । डह डहि नाद कायर बरें ए ॥९॥
 बाघ सित्र ए महिस्वना रूप । बावरी ओट बीहामणा ए ॥
 भब भवे ए खडग सेह हाथ । स रमता भूत भूमि घणा ए ॥१०॥
 डाकणी ए व्यंतरी क्रूर । सीकोतरी हीडे बसमसीए ॥
 देवीअ ए कलेवर भूर । हडहडाट हेडंवाहसें ए ॥११॥
 सिरविण ए घड धाड धामंत । धरावण शिर वणू ऊछलिए ॥
 ठाम ठाम ए ऊडता जगण पूला अगनी तरां वलें ए ॥१२॥
 जोंगटा ए साथि व्यंताल । तू बलीत्रण्य टोली करी ए ॥
 राधिए अनेक नैवेद । होम करय बह्नि परी ए ॥१३॥
 एहवूं ए अति विकराल । मसारा दीडो मुनीवरि सहीए ॥
 होइए बैराग्य बुधि । अपवित्र साटि रहि नही ए ॥१४॥

रमशान में ध्यानाभंगन होना

ज्याहां थी ए पडिते दृष्टि । प्रासुंक ठाम ते जोईयो ए ॥
 सांभसीयि ए रडिते साद । साधु संघाष्टक होहीयो ए ॥१५॥
 मोटीए सिला अपार । तेह ऊपरि आश्रम करयो ए ॥
 पडिकमें ए सहू सूजाण । रीपाविहि कासग धरयो ए ॥१६॥
 पडले ही ए बेठा ठाम । आवश्यक करे आपणो ए ॥
 कोइ भरणे ए अंग ने पूर्व । आगम त्रिविध कोडामणो ए ॥१७॥
 हिजा तरणो ए जाणीय दीस । चोवीहार सबे उचरयां ए ॥
 संतोष ए धरी निसल्य । ध्यान मौनकरी अलंकरया ए ॥१८॥

अभयरुचि एवं अभयमति का गुरु के पास आना

तीरो समें ए मुनीवरे दीठ । अभयरुची अभयामसी ए ॥
 नाहां नडां ए नव दीक्षत । भूखे कोमलाणां अती ए ॥१९॥
 आणी अए करुणा भाव । वदय वचन सुदत्तगुरु ए ॥
 तेडीय ए दीयि आदेश । वछ यथा सुख तम्हे करो ए ॥२०॥
 लागीयाए तेह गुरु पाय । काय स्थीती काज चालीयां ए ॥
 जोडली ए ब्रह्मचारी नेह । ईरीयापंथ नीहालीया ए ॥२१॥
 तरां समिए सेवके तेह । ब्रह्मचारी युग देखीया ए ॥
 रूपि ए मोहि अपार । काम रती समलेखयां ए ॥२२॥

युगल को देखकर विभिन्न विचार

माहोभाहि ए । करयते वात । आत आपणा घणा अम दल्याए ॥
 जक्षणा ए रूप विक्षात घात कारण जोडता मल्या ए ॥२३॥
 पामसे ए देवी बल आज । काज राय तरां सीभसे ए ॥
 देखीयए युगम सरूप । मूय आपण प्रति रीभसे ए ॥२४॥
 सांभली ए किकर भास । भाषा कोमल अभयरुचीए ॥
 बोलीयो ए बेहेनर साथ । हाथ राखो मन करो सूची ए ॥२५॥
 सह गुरु ए कह्यो बहू पेंर । परीसह जीकवो तप फल ए ॥
 तेह भगणीए धरीअ समाध । बाब त्यजी थाउ नीश्वलए ॥२६॥

संसार स्वरूप

जीवनें ए समतां संसार । पार रहित दुःख ऊपनि ए ॥
 नरके ए शार्ते माहि । काहि सुख नहि नीपजे ए ॥२७॥
 मूख तृषा ए पाडिए रीर । नीर अन्न रती नवि मल्योए ॥
 छेदें तनू ए नारकी पाप । आपडो जीवडो टलबल्योए ॥२८॥
 बली भय्यो ए वार अनन्त तियेंच गली जीवडो ए ॥
 विहितो ए भार अपार । सार वहुणो रडवड्यो ए ॥२९॥
 मुखिए तरसें उ दुखी उदास । भास आक्रंद करि बलीए ॥
 छेदन ए भेदन आद । दुःख जासो तें केवली ए ॥३०॥

१. अन्य रचनाओं में ब्रह्मचारी के स्थान पर क्षुल्लक क्षुल्लिका पाठ मिलता है ।

मानव ए गते मकार । आरत रौद्र ध्यानें पड्यो ए ॥
 दारीद्र ए रोग वियोग । भोग भूलो कामें नड्यो ए ॥३१॥
 देवगतीए माहैं अयाण । मानसीक दुःख व्यापीयो ए ॥
 देखी सुख ए अवरहरीष । बीषीयो मन अती कांपीयो ए ॥३२॥
 एणी विरिए चोगती माहि । एह जोष भसयो दुखि भरयो ए ॥
 भोलो ऐ भोलव्यो भूर । कुगुरु कुदेवन ऊधरयो ए ॥३३॥
 पुण्यनिए योनि जाण । बाणी जिन तणी पामीयो ए ॥
 श्रीगुरु ए तयें पसाय । तेहनें सीर नामयो ए ॥३४॥
 पामयो ए धावकाचार । सार लघु दीक्षा भलीए ॥
 प्रतीमाए भेद अग्यार । धारक हवा भर्नें रलीए ॥३५॥
 भव भव ए लहीह प्राण । पण समकित अत नवि मर्नें ए ॥
 इम जाणीए तिम करो नात । आत भय जिय रल्लिए ॥३६॥
 ले से ए जीवराय दीक्ष । दीक्षा सीआ लेसे कोनहीए ॥
 ते भणीए । देहेन सुजान । आणो मन जिनपदे सहीए ॥३७॥
 तब बोलीए विहिनी बोल । ब्रह्म सुणो बाणी मुक्त तणीए ॥
 पूरव ए भवे सणो भाल । हिंसा कीधी वीहामणी ए ॥३८॥
 पीठनो ए कूकडों एक । देवी आगल हण्यो ए ॥
 तेह फल्लिए । पांसयाए दुःख अतीव । भव सातिते मुभकले ए ॥३९॥
 एक हवि ए लाधु धर्म । कल्पद्रुम चितामणी जसो ए ॥
 समीकीत ए कट सूं जतन्न । मन्न एहनो संमय किमो ए ॥४०॥
 इन चींतीए मन दृढ कीध । लीष अणसण दोए परीए ॥
 जीवूअए तो पारणू जाण । नही तो आ अणसण अनुसरीए ॥४१॥

दूहा

सिपाहियों द्वारा अपने आगे करना

हूक देई आगल करचा, तेषि सेषकें तेषी वार ।
 बेह चालतां चींतवे, अनुग्रहा भेद बार ॥१॥
 क्रूर काल नफरे घणू, वीत्वा सोहि सार ॥
 भेष पटले जिम बीटीयो, कांति सूं चन्द्र उदार ॥२॥

भास हींदोलबानी

देवी मठ की भयंकरता

दूर थो देवी मठ तदा । दीठो दुरंग बिसाल ॥
 पावल फरतो उपवन । हींदोलबारे । अनेक तरु छिरसाल ॥१॥
 केसू जासू बन सीहां । रातखा असोक अपार ॥
 जाणो भयभीत वसंतखें । ही०। भेटणू मांस विस्तार ॥२॥
 महुडां मोरचां बहु ल्हवां । फलगलि बारबार ॥
 जाणो रडि देवी भयें । ही० । वसंत मूके आंसू वार ॥३॥
 काला बांधू फल करी । काला वृक्ष तमाल ॥
 देवी भेटण आवांया । ही०। जाणो पिशाच विकसाल ॥४॥
 ताड तराण तरु उन्नत । ताड फल स्याम विशाल ॥
 देवी मलूआ बहु रूप घरी । ही०। जाणो ईस गलि रुंडमाल ॥५॥
 खजूरी नारी अली । घडीयां बांध्यां छेदेय ॥
 देवी मलवा सजणीया । ही०। मद्य धडा सिर लेय ॥६॥
 पूला दीसि 'मधू' तरां । माखी भमें अपार ॥
 जाणो देवी कारणें । ही०। सूका मांस तरां भार ॥७॥
 ठामे ठाम चणोठडी । रातडी दीसि सोय ॥
 देवी पूजवा कारणें । ही०। अभक्ष थाल भरयो जोय ॥८॥
 फूला तिहां वली चांपला । पीला पेखीया जेह ॥
 देवी कोपि कांपता । ही०। जाणो पिजर हवा तेह ॥९॥
 कोथल सूडा सारसा । बोलि भमर मूजार ॥
 जाणो बीहना भयकारी । ही०। स्तवन करिज अपार ॥१०॥
 मढ गढनिको सीमडि । मांगस माथा मांड ॥
 जाणो जाता जीवनें । ही०। खावने जूहते रांड ॥११॥
 अनेक जीव मढ पाखलि । बांध्यछि बडी वार ॥
 भूख तरस पीडया घणू । ही०। करय पोकार अपार ॥१२॥
 मद्यपान करि जोकटा । जंगोटा गलि चंग ॥
 वापि संख सींगी सींगडां । ही०। कली कली करिय उत्तंग ॥१३॥
 डम डम डमरु डाकलौं । ही०। तवली ताल कंसाल ॥
 रणभेरी रण काहल । ही०। दूर बाजि विकराल ॥१४॥

मठ का आँगन

दीठो देवी मठ आँगणो । माँस दगछि ठाम ठाम ॥
 अजीणो जाणो देवी बमो । ही०। माखी तणा विसराम ॥१५॥
 रुधीर तणा दीघा छडा । मठ फरती मछ घार ॥
 जीव मस्तके चोक पूरघा । ही० । रुधीर हाथा मठ वार ॥१६॥
 मस्तकनाँ तोरण रच्यो । जीभनी बानर बाल ॥
 पंखी पीछ पशू पूछड़ा । ही०। ठाम ठामेँ बाँध्या बिकराल ॥१७॥
 राधनि नकरें दुगम दीयो । दीठो राय बम काल ॥
 मोकले केश कोपि भरघो । ही०। भबकि हाथे करबाल ॥१८॥
 राति आक्षि जाणो राक्षस । जाणी केर यमवूत ॥
 बख बखतो जाणो व्यंतरो । ही०। जाणो भयंकर मूत ॥१९॥
 जाणो क्रोधनो पूजसो । जंसो अघरमी चित्त ॥
 जाणो पा लो पोखरी । ही०। शीडे हूँ गदभीड ॥२०॥

भैरवानंद ओगी

भैरवानंद जाणो भैरवो । वसभो वीर वंताल ॥
 खडग भाली भोटी गडो । ही०। नयण जाणो अग्नि ज्वाल ॥२१॥

देवी का रूप

देवी दीठो बीहामणी । सकत त्रिशूल छि हाथ ॥
 रुंडमाला गलि ललकती । ही०। विठी छि संघनाथ ॥२२॥
 लांबी जीभ छि रातडी । राता मोटा दाँत ॥
 डह डहती मुख पसारती । ही०। बाघेण नी होइ भ्रांत ॥२३॥
 कोडी सम मोटे रडे । फाटे डोले जोय ॥
 अनेक जीव हणावती । ही०। परतक्ष मरकी होय ॥२४॥
 हाथ काती मद्रूँ काँपती । काँपती कोपि अपार ॥
 मद्य पीइ नरनूँ बली । ही०। सीकोत्तरी भयंकार ॥२५॥

अमयरुचि अभयमति को देखकर राजा द्वारा विचार

ब्रह्मचारी राय देखीयो । लखीयो काम स्वरूप ।
 केए इंद्र स्वर्ग तणो । ही०। के मही माहि महा मूप ॥२६॥
 के पैयातनो राजीयो । के घनपत्नी के चन्द्र ॥
 के ब्रह्मा के ईश्वर । ही०। के हरी के बलभद्र ॥२७॥

के नंदी के नल कहूँ । नलहुँ रूपहु पार ॥
 सक कहूँ के सुरगुरु । ही० । सूरवीर उदार ॥२८॥
 बरलिका जाणे सरस्वती । रोहणी लक्ष्मी होय ॥
 इन्द्राणी उर्वशी कहूँ । ही० । नागकुमरी के जोय ॥२९॥
 कि सावित्री सीता कहूँ । तारा मंदोदरी एह ॥
 गौरी के अंजनी कहूँ । ही० । रूप न लक्ष्मि तेह ॥३०॥
 रूप लसण बहु गुणनिलो । कला अनेकह ठाम ॥
 मारीदत्त नृप पूछए । ही० । कहो तुह्य कवण सु नाम ॥३१॥

राजा द्वारा प्रश्न

कवण गाम थका आबीया । मात तात कुण ठाम ॥
 अकल रूप ए अमोपम । ही० । कवण मो हो साल सुधाम ॥३२॥
 दयाधर्म तुह्य जय करो । त्रिभुवन माहे जे सार ॥
 आशीर्वाद दें उच्चरें । ही० । मारिदत्त अवधार ॥३३॥
 काम तम्हाह तम्हे करो, मम पूछो अह्य बात ॥
 अह्य वृत्तांत दयामय । ही० । तह्यनें गर्में जीवघात ॥३४॥

साधु युगल द्वारा उत्तर

अंधा आगलि नाचंवु । बिहिरा आगलि गीत ॥
 पापी आगलि धर्मकथा । ही० । कटित होइ विपरीत ॥३५॥
 गिहेलां सूँ गुण गोठडी । उसर मूमें बीज रोप ॥
 गिर सिर नील पेर खेडवूँ । ही० । तिम अह्य वचन निरोप ॥३६॥

बूहा

मारिदत्तके हृदय में दयाभाव आना

दया भरी अह्य गोठडी । रुचे नहीं राय मान ॥
 पीतउवरी मन रुचि नहीं, साकरनि दूध पान ॥१॥
 इम जाणी निज हित करो, अह्य ने म पूछो आज ॥
 जेहनि जेहवी गति सही, तेहेनि तेहवी मति राज ॥२॥

खड्ग का त्याग

मारिदत्त तब उपसम्यो, खड्ग मुक्यो तेणी वार ॥
 कर युगम जोडी करी, करी कोपनी परिहार ॥३॥
 ब्रह्मचारी प्रति बोलियो, बिनय सहीत उदार ॥
 कहो कथा तह्यो रुबड़ी, स्वामी दया मंदार ॥४॥

ब्रह्मचारी तब बोलीयो, वाणी श्री समान ॥
 भो भा भूप भलो भलो, साधु साधु तह्य वाण ॥५॥
 धर्म बुद्धि सही जीवनें, पुण्य बिना नहीं होय ॥
 मुरग मुगति सुखकारणी, राय विचारी जोय ॥६॥
 फल फूलें सब खवली, नारी कहे विस्तार ॥
 तेह अहो पण अणसरी, भव साते मभार ॥७॥

भास चोपई

भरत क्षेत्र वर्णन

एहज जंबूदीपज माँहि । सुरमहीयो मंदर तूँ चाहे ॥
 पांडुमित्रा चीहो सही तनुँ जोय । जिनवर जनम कल्याणक होय ॥१॥
 चीहो वनें अंतर किनर पास । देवी देवी रसये जिहाँ रास ॥
 पदक्षणा योतकी करें सदा । सास्वतो अचल चले नहीं कदा ॥२॥
 तेह दक्षणा दिशि भरतह क्षेत्र । आरज खंड माँहि सुपवित्र ॥
 देश अर्ध तीहा मोटो घणो । नाम अवली छि तेह तरणो ॥३॥
 अनेक गिरी गहवर पर करघो । अनेक महा नदीधि अनुसरघो ॥
 मोटी अटवी वृक्ष असंख्य । आच्छेकुर जीव तिहां लक्ष ॥४॥
 चमरी गाय भछे ते घणो । पूंछि भोम्य बूहारे तेह तरणो ॥
 भर मर मेव छडो तिहां देय । देस महारायह पव लेय ॥५॥
 चमर चमरीया मृग ठालंत । पाटला तरु फूल्या जे महंत ॥
 पंच वरण जाणें छत्र धरंत । अनेक ठाम दीसे जयवंत ॥६॥
 किनर गंधर्व जाणो गीत गाय । देव अनेक सेवें जेम राय ॥
 / सूडा सारस सावजां साद । जाणें बंदियत करें स्तुतिवाद ॥१७॥
 अनेक फूल रचना तिहां होय । चोक पूरता देवता जोय ॥
 पोढा फल जाणो भेटणूँ । वन देवता मूँके नित घणूँ ॥८॥
 भोज पत्र आदि बलकल जाण । विचित्र वस्त्र सोभा बखारण ॥
 विविध वेल मंडप घर भला । भमरा भमि किकर केटला ॥९॥
 कपूर बेल के लदीयि कपूर । कस्तूरीया मृग धीर कस्तूरि ॥
 विचित्र रूप मही सोभिनार । देश राय सभ सोभे सार ॥१०॥
 बसि ठाम ठाम बहु गाम । दूकडां दूकडां अति अभिराम ॥
 गाय तरणो नवि लाभि पार । जाणें भूपह जस विस्तार ॥११॥

अवन्ती देश वर्णन

दीसि दस दिश चरती फिरे । गोवाला सादि अनुसरें ॥
 पूंछ उलालि बायि धसि । अवर कोहने न व्यथायि बसि ॥१२॥
 महिषी मोटी घणी छिबली । जल दीठि पोहोचि मन रली ॥
 भिस कुभामिनी भोला जीव । सही पाणी देखि हरषे अतीव ॥१३॥
 गोवालिमा सिर सोहि घूषडी । मयोर पीछनी मनोहर घडी ॥
 गले लिलकि गूजाने हार । सोमें लाकडी हाथ उदार ॥१४॥
 फूल मुकुट सिर रह्यो लली । मुख भधरी बायि वांसली ॥
 गीत गायि नाचि मन रली । सांभले हरण घणी हरणली ॥१५॥
 वंस नाद सुणी डोलि सांप । मुख तरसनो न लेखे व्याप ॥
 विखय बलूधो जोड गमर । न व्यलेखें सुख दुःख विचार ॥१६॥
 पाछली राति तीहा गोलणी । दीही बलोणूं घूमे घणी ॥
 कंकण खलकि ललके गोफणो । कटि चालि भटको तेह तरणो ॥१७॥
 राते रच्यो जे काम विलास । रखे बीसकूं जाणी करम अभ्यास ॥
 विलोणां गंभिर सांभली साव । जाखे मेघ तरणो ते नाद ॥१८॥
 नाच मोरछा रची कलाप । मेहो मेहो शब्दह करि व्याप ॥
 बन माहि मोरडी साथें रमे । जाणे आव्यो बरखा समे ॥१९॥
 साल क्षेत्र भरघां नमी रहि । स्थल कमल ऊग्यां तेह महि ॥
 बागु बसि हलावि सीस । परीमत जाणे बलाणि ईस ॥२०॥
 सूडा साद करें सोहामणा । बनफल त्यजी तिहाँ आवि घणां ॥
 वहू फूलत्यजी त्यहाँ भमर भमंत । रणभण करता साल सेवंत ॥२१॥
 अवर धान्य तीहा नीपजिइ घणां । परवत सम दग होयि तेह तरण ॥
 राखि कोय नही तेहनि । लेई जायि जोईयि जेहनें ॥२२॥
 घोषमे कठण कर सूरज तरणो । राजा कर न कठिण तिहाँ भणो ॥
 नारी पयोधर करें पीडाय । नही गाम राय करिसी दाय ॥२३॥
 छत्रि दंड नअसोक दंडीयि । फूलें वंश व्यलोक बंधीयि ॥
 नारी अघर कामी करें खंड ॥ जीवह खंड नही परचंड ॥२४॥
 अवन राय सरणागत तरणो । न कोई गाम बन पाखि भणो ॥
 जीहा भला भमरा दीसिजपाट । नही लोक को हीडें कुवाट ॥२५॥

लंपट भमरा कमल बंधाय । नहीं लंपट को लोक कहिवाय ॥
 नर माहि चोर नहीं कुवटी । छिनारी घणूँ मन खोरटी ॥२६॥
 द्वाख मंडप दीसि ठाम ठाम । नागबेल बाढी अभिराम ॥
 व्यरही जननि व्यापि काम । नारी सम दीसि आराम ॥२७॥
 तीलक मंडीत पत्र वल्ली साथ । पातलडी दीधि तस्करा साथ ॥
 प्रवाल सूँ उबै स्तन भूवका । विभ्रम छे अक्ष तणी अधिका ॥२८॥
 मदन मंडित भोगी सेवए । फूल रेणु ऊढणी सेवए ॥
 पंखी सादें जाणो गाबे गीत । दीसे सह नामोहि चीत ॥२९॥
 नाग केशर नारंग जंजीर । बीजोरा रायण बहु खीर ॥
 फणस खजूरी नें नारकेर । फूलफल दीसि बहु पेर ॥३०॥
 मालती भोगरो ने मचकुंद । मंदार मरुड ककुलहु बृंद ॥
 एह आदिछि तरु अर लाख । पिर पिर पंखी खोसि भाष ॥३१॥
 जाणो दीन दुखी भूखीया । तेडि तरु करवा सूखीया ॥
 घाली नदी यहि तीही पाट । अनेक श्रेष्ठ सींचेवा माट ३२॥
 सरोवर बाव कुआ गंभीर । भरीया ते बहु नीर्मल नीर ॥
 कमल नयण जाणो जूमि समृद्ध । हंसा नादें धलाए सबृद्ध ॥३३॥
 नीत राधे राध लोक अनीत । देश अभय लोक प्रमथाधीत ॥
 लोक माहि को खल न कहिवाय । तिल पीलंतां सही खलयाय ॥३४॥
 कीटकमाल तणो होयि युद्ध । कटक युध तिहीं नहीं होयि सुध ॥
 फल सम समायें तरु अरखे विरुद्ध । तिहीं नहीं लोक माहि क्रोध ॥३५॥
 जिन प्रसाद दीसि अति चंग । गिरी गिरी नगरे नगरे उत्तंग ॥
 कनक कलस सोना दंडधरि । घूघरी सहीत घजा फरहरि ॥३६॥
 अनेक लोक तीही आवि पात्र । अण्य काल नाचे तिहीं पात्र ॥
 दुमि दुमि मदन ताल कंसाल । होइ नफेरी नाद रसाल ॥३७॥
 अनेक फूल फल लेई पकवान । जिस पद पूजि सुजन सूजाण ॥
 अनेक व्रत विधान आवरि । भवसागर ते हेलांतरि ॥३८॥
 चतुर्विध दान देवा सुपात्र । पर उपकार सफल करि गात्र ॥
 धन कण रघण मागणुन देय । लोक सह स्वर्गनि निदेय ॥३९॥

अनद तिहां एक अहां अनेक । इंद्र घणां नर आहां सुविवेक ॥
चतुर घणां नर सुर गुरु समा । वणी वणी भोम तीलोत्तमा ॥४०॥

सवे नार भर्ता उर्वसी । धिर धिर नार सुकेसी असी ॥
रंभा जणी ऊर घणी माननी । रंभा बन मंडित अवनी ॥४१॥

गजानन आभरण भूषण आशि अनी । रंग कल्पवृक्ष रिद यमगाननी ॥
मंदारंभ साधमीं घणा । पारजातक तिहां जोनकी भणा ॥४२॥

विबुध विद्वंसन जाणू पार । सहू धरि सुख संतान अपार ॥
हरीचंदन चर्या बहु नोय । स्वर्गलो एक एण सहू जोय ॥४३॥

अई.रावण सम गज नही मणा । ऊचाश्रवासारखा हय घणा ॥
सर्व लोक कवि कला निवास । नित भंगल गावे सुभ भास ॥४४॥

चन्द्रमुखी मंदहमति नार । गाम नगर पुर पाट मभार ॥
आदित तेज अनेक छे सुर । सवे सुबध अती नही कूर ॥४५॥
नारी प्रति अबोडे राहु । गूदी वेण केसु बहु चाहु ॥
अनेक नखेग्रह मंडीत लोक । स्वर्ग रवर्ग करे ते फोक ॥४६॥

एक सुर गुरु एक रवि एक चंद । राहु केतु एक बुध सुकेन्द्र ॥
एक मंगल माटिए देस । ऊंचा स्वर्ग नेहसि विसेस ॥४७॥

ठाम ठाम वली सलकार । भूखा ने जमाडि अपार ॥
केटला वस्त्र भूषण देयंत । मागण नायणने गुणवंत ॥४८॥

नागबेल दल बीडी अखंड । नारद तुंबर अनेक प्रचंड ॥
नयण कटाक्ष नारी चालवि । मयण भूजंग मडस्था पालवे ॥४९॥

अधर अमृत रस देई अपार । मधुर वचन मंत्रोपघी चार ॥
अमृत भरचा स्तन कुंभ बहु सार । अमललेलि मुगता फल हार ॥५०॥

पूआ मीठा पीत गगहा कवे । अमरीनि नीज गुण हारवे ॥
सहू जन वधत सरस्वती वसे । स्वर्ग ने देस तेह कारण हसे ॥५१॥

वस्तु

देसह मोहि देश सोहि । अती बहु एह । सवे देश माहि भलो ।
मध्यम छे परा अति ही उत्तम । मध्य मेरु वम गिरिपती ॥
नारा माहि जेम चंद्रसत्तम । तिभ सहू देश माहि अर्वती चंग ।
अन वण कणय रयणि वणू । मंडित अतहि उत्तगा ॥१॥

श्रीमंतः सदनंतबोधनिचयाः सम्यक्तमुख्यैर्गुणैः ।
 युक्तायेऽष्टभिरष्ट सिद्धिकरणाः पूज्याः सुसामर्याः ॥
 श्रीसिद्धाः परमेष्ठिनो व्ययजनि धौव्यायजन्तोत्सवाः
 श्रीदेवैश्चसुविक्रमस्तुतपदाः कुर्वन्तु वो मंगलं ॥१॥
 इति श्री यशोधर महाराज चरिते रास भूडामणी काव्य प्रतिष्ठे
 भूदेव कवि श्री विक्रमसुत देवैश्च विरचिते भारिदत्तनृप
 देवीमठागम ब्रह्म श्री मदमयकवि प्रकृषिताऽर्वांती देश वर्तमानो
 नाम द्वितीयोऽधिकारः ॥२॥ ॥छ॥

तृतीय अधिकार

भास भमारुलीनी

उज्जयिनी नगर

तेह देश माहि सोहि । तो भमारुली । नामे नगरी उज्जैन तो ।
 नवतेरी नगरी भसी । तो भ०॥ अमर नगरी कीके तेरा तो ॥१॥
 उन्नत गढ सूना तराँ । भ०॥ रतन जडीत को सीस तो भ०॥
 जगा जोति करी जाणीयि । तोभ०॥ तिलक भवनी कोसीस तो ॥२॥
 पाखल फरती खातिका ॥तोभ०॥ निरमल मरपू छे नीर तो ॥
 जाणो नगरी नागर नारी ॥तोभ०॥ पेहरयो नीले नीर तो ॥३॥
 रातां नीलां कमल भलां ॥तोभ०॥ जाणो सरत मरी भात तो ॥
 उपवन उषे अनोपम ॥तोभ०॥ फूलपाछि तरु बहु जात तो ॥४॥
 फूल रेणु पगर तिहां ॥तोभ०॥ आकासे ऊडाडे वात तो ॥
 जाणो पीलो पीछोडलो । तो भ०॥ जाणो भमरा कासीभात तो ॥५॥
 जाणो नगरी नायका । तो भ०॥ ऊर्ध्व स्तन गढ भार तो ॥
 लाजी आपणू आचरे ॥तोभ०॥ करें करी दाखे राग तो ॥६॥
 पेरवीयि पोलि पोडां पेरवणां तोभ०॥ कनक सांकल लल काय तो ॥
 मोटा माता हाथीया । तोभ०॥ सांकल्या अनेक बंधाय तो ॥७॥
 तलीया तोरण भगमणि ॥तो०भ०॥ रतन तराण सुविशाल तो ॥
 मेडी मोती भूँकका ॥तो०भ०॥ मोहोल मोटे मोती जाल तो ॥८॥
 पोलि पातली पूतलो ॥तो०॥ विश्रामण छि अनेक तु ।
 चोरासी आसन भनी ॥तो० भ०॥ रूप काम शास्त्र अनेक तो ॥९॥

विकट सुभट बिठा राखि । तो० भ० ॥ आयुष अनेक प्रकार तो ॥
 कोतक करता कामीयां । तो० भ० ॥ केता कोडि जूड सार तो ॥ १० ॥
 नगर मध्य राय धवलहरा । तो० भ० ॥ एक बीस खणा उत्तम तो ॥
 कनक कलस कोडामणा । तो० भ० ॥ सोभा दीसि अती चंग तो ॥ ११ ॥
 रातां रतन रंग मंडप उपरितु । तो० भ० ॥ फटकत तणो सोहि थंम तो ॥
 पाखलि फरती पूतली । तो० भ० ॥ करय ते नाटा रंभ तो ॥ १२ ॥
 आणो प्रतापराय तणो तु । भ० ॥ यश मंडित सोहंत तु ॥
 रतन मोती भूवने करीतु । भ० ॥ सभा मंडप सोहंत तो ॥ १३ ॥
 मुहुस मोटा धाननी तणा तु । तो भ० ॥ पाखल फरती अनेक तु ॥
 रतन मेडी रलीया मणी । तो भ० ॥ रचयछि अती सुविशेक तो ॥ १४ ॥
 मुपेड राउ रडी । तो भ० ॥ कनकें धडी जड़ी रतन तो ॥
 रतन पेटी प्रति उरडि । तो भ० ॥ वस्त्र भूषण नहीं यत्नो तो ॥ १५ ॥
 अंतः पुर घर अती घणू । तो भ० ॥ भग्या सामथी अपार तु ॥
 गुरव प्रवाली जालीयां तु । तो भ० ॥ अगुरु सु धूप विस्तारतो ॥ १६ ॥
 माणिक चोक चतुर चहूटा । तो भ० ॥ चुरासी दीसि दीसि व्यार तु ॥
 हाट श्रेण सोहि सारी । तो भ० ॥ भरां क्रीयाणां अपार तु ॥ १७ ॥
 उपलवद्ध मेडी घणी । तो भ० ॥ पंचवरण मणी चंग तो ॥
 जिनामण मोती सिर । तो भ० ॥ रंगत छि बहू रंग तो ॥ १८ ॥
 नाणोद श्रेण छि नवरंगी । तो भ० ॥ नाणा अनेक प्रकार तो ॥
 जह विरीडल जालीड । तो भ० ॥ रतन तणा झलकार तो ॥ १९ ॥
 सोहू ठसामणी । तो भ० ॥ सोना धडिया घाट जगाधोत तु ॥
 जडीया उत्तंग मलि जडि । तो भ० ॥ वग्राहे दोसी अट दीसि भली ॥ २० ॥
 वस्त्र अनेक छिभीण तो । तो भ० ॥ बहू मूलक सेसां साखू ॥
 पटकोल आदि अरबीण तो ॥
 गंधी अटे बहू पामीड । तो भ० ॥ अनेक क्रीयाणां सार तो ॥
 नेसटीड नम नीध्य जाणो । तो भ० ॥ अनेक ध्यान अपार तो ॥ २१ ॥
 अनेक वस्त व्यापारीया । तो भ० ॥ ठाम ठाम छि बखारि तु ॥
 एणी फिरि मोटां चोहटी । तो भ० ॥ मूलि चतुर नर नारि तो ॥ २२ ॥
 अनेक वसि विवाहारीया । तो भ० ॥ वारया दारीद्र जेण तु ॥
 माणणिनि बांझीत दीयितु । तो भ० ॥ लीयि कीरत सु गुणें तो ॥ २३ ॥

सात खणा अवास तु । भमाउली । रातां रतन नी भात तु ॥
 हसी करी कहि कंस ने । तो०भ० । साडी पिहिरवा बयूं चीत तु ॥२४॥
 फटिक कंचोलि चंदन । तो०भ० । राते किरण वैष्णू जोयतो ॥
 कंत भ्रागलि घरधू ऊगटनि । तो०भ० । कुं कुं मणीय जिसोयतो ॥२५॥
 नील रतन मयकडी तो भ० । गोरडी सरागारिक कावतो ॥
 नील धिरणे सामली जाणी । तो० भ० । भोली बली बली पीठी लाय तो२६
 फटक तरां वर भीतरे । तो०भ० । नारी दीठी प्रतिजाय तो ॥
 गोठ करिते गोरडी । तो०भ० । सही घरभणी तेणि डाय तो ॥२७॥
 रीस करिते ऊपरि । तो०भ० । ऊतर नहीं दोयि काय तो ॥
 किरीसाणी सुभ ऊपरें । तो०भ० । के कतैनुं दूहवीमाय तो ॥२८॥
 कहीं रातां रतन तराणे । तो०भ० । उरेडि रमवा गई धाल तो ॥
 रात जाणी रंग रस भरी । तो०भ० । वाछि कंत रसाल तो ॥२९॥
 पीलां रतन नी तुरडी । तो०भ० । सामली कंत प्रति जाय तो ॥
 परनारी करी लेखवी । तो०भ० । सरा आदर तो संकायतो ॥३०॥
 चन्द्रकांत गोखर बडा । तो०भ० । चंद्र किरण मलि जाण तो ॥
 भरमर धार असून भरे । तो०भ० । सारद मेघ बलाण तो ॥३१॥
 फटिक गोखरणि जालीमि । तो०भ० । चन्द्रना किरण प्रसारतो ॥
 भोली भामनी लेवा धमि । तो०भ० । जाणी मोतीहार तो ॥३२॥
 हार बिना बलवी हवी । तो०भ० । हासू करि तब नाथ तो ॥
 हार देखी बली सांचली । तो०भ० । बावरि नहीं तहां हाथ तो ॥३३॥
 आवास ऊचा मेडी उलीयां । तो०भ० । बिडी चंद्रमुखी बाहि तो ॥
 पुण्यम दिन ग्रहण कालि । तो०भ० । बली मगनं भमें राहतो ॥३४॥
 ठाम ठाम चन्द्रदेवी तो । भ० । संसि पड्यो तेण ठाय तो ॥
 संदेह थी चन्द्र तरां तो । भ० । क्षण एक ग्रहण न जाय तो ॥३५॥
 धिर धिर गरवी गोरडी तो । भ० । नारी रमें सही घर साय तो ॥
 हास करें ताली दीयि तो । भ० । प्रेम पोडि जीडि बाय तो ॥३६॥
 हीडोलि धरां हीचकितो । भ० । कावतो गीत रसाल तो ॥
 ललिक बेणी गोफणों तु । भ० । हार लहि किगुणमाल तो ॥३७॥

नाह बेठोहि मही डोलारितो । भ० । हीचती भबला बाल तु ॥
 मगती करंती सामनी तो । भ० । मला सोग भोगवि रसाल तो ॥३८॥
 बूझा चंदन कस्तूरी तु । भ० । पीठी परीमल अंगतो ।
 रमत करि रतनी ग्रामणी तु ॥ भ० ॥ नर नारी बहु रंग तु ॥३९॥
 को गोठ करे कर लेहेकते तो । भ० । चिबूके धरंती हाथ तो ॥
 नयण कटाक्षे गोरडी तो । भ० । रिझवि तेह निज नाथ तु ॥४०॥
 बालाकंठे करें करी तु । भ० । तीवी छोबंता लाजी नारि तु ॥
 रतन दीवा नय्य जलवाय तु । भ० । करे जेहू कमल प्रहार तु ॥४१॥
 एणी पिरि भोग भोगी भला तो । भ० । भोगवता जाणे हृन्द तो ॥
 रतन सोगटे खेलतां तो । भ० । बोहोसर कला समुद्र तो ॥४२॥
 वत्तीस लक्षणेऽलंकरा तो । भ० । नगरी तरा सह लोक तो ॥
 रोग शोक दीसि नही तु । भ० । पुण्य तरा फल जोयतो ॥४३॥
 नारी दीसि पदमनी तो । भ० । बोलती मधुरी वाणि तु ॥
 मुख परिमल भमरा भमितो । भ० । नयणे सलखां जरा तु ॥४४॥
 बीछीया सोहि रतने जड्या तो । भ० । झंझरनु भमकार तु ॥
 रतन मेखला कटि खलकती तु । भ० । घुघरीनु धमकार तु ॥४५॥
 चंपकली मोतीहार तु । भ० । पतकडी जडी मत्तल तु ॥
 मुख तंबोल अवर राता तो । भ० । नासिका मोती अमूल तो ॥४६॥
 भालकाने खरी खीटली तु । भ० । फूली राखडी सिसफूल तु ॥
 बेणी गोकणो आखि अणी भाली तु । भ० । भमेरते काम असूल तु ॥४७॥
 कर कंकण चूडी रुडी तो । भ० । बिहरषा बीटी हाथ तु ॥
 घाट ऊडी चाली मलपती तो । भ० । सेरीये सही घर साथ तो ॥४८॥
 अगर ठाम ठाम घूपतो । भ० । अगुरु न दीसि सोऊ माहि तो ॥
 अवीनय नही बली को दीसि तो । भ० । अविनय अगनी तूं चाहे तो ॥४९॥
 अवीभव नहीं को बसि तीहां तो । भ० । अवीभव मेरबज होय तो ॥
 मलीनांबर कुमती नहीं तो । भ० । मलीनांबर निसि जोय तो ॥५०॥
 द्वीज वृत्ति खंडज नहीं तो । भ० । द्विज खंडनी नारी उष्ट तो ॥
 वादि बडवूं नहीं तु । भ० । वाद बीछा सही गोष्ट तो ॥५१॥
 राति चोर नागवि नहीं तो । भ० । नारीनां वस्त्र हरि नाह तु ॥
 केसी करता को जन नहीं तो । भ० । कंससूं निसो मांहिसु ॥५२॥

कठन पशु स्त्री स्तन विखेतो । भ० । नहीं ते कठिण वक्कन तो ॥
 बाँके भमरौंछ कामोनी तो । भ० । बाँकूँ नहीं तेह मन तु ॥२२॥

मंदगति छी माननी तु । भ० । मती मंद नहीं तेह तु ॥
 जठर कटी छि दूर्बली तु । भ० । नीतंब दूबले नहीं जेह तो ॥२४॥

काला केश भमर समा तु । भ० । काला गुण नव्य होइ तु ॥
 नीची नाभि छि नार नी तु । भ० । नीची रमत न व्यजोद तो ॥२५॥

बेल घालंधि बिटपी सूँ तो । भ० । नारी घोट सूँ न लग्न तो ॥
 कुमार्गि जाय पंथी पशू तो । भ० । नव्य नर नारी कुमार्ग तो ॥२६॥

अनेक लोक तीहां वसि तु । भ० । बन कण रयण मञ्जीत तो ॥
 अनेक कला कुशली कारु तो । भ० । बोलता चतुर पंडीत तो ॥२७॥

वनवाडी भूँ सरोवर तो । भ० । कमल छाया भरधा नीर तो ॥
 पालिनी हालि कतूहली तो । भ० । चतुर नारी गंभीर तु ॥२८॥

सही समाणी साहेलडी तु । भ० । गोरही करती नीर तु ॥
 सिर घट घट एक बाध सुँ तो । भ० । भावती भरवा नीर तु ॥२९॥

कनक कुंभ वायु वसि तो । भ० । भों भों भासय भासतो ॥
 सही नारी संगें रसीमा तो । भ० । कोएनो हि विकृत नीवास तु ॥३०॥

नारी ठवण गमन तणी तु । भ० । उभा जूइ हंसराज तो ॥
 मोतीयडां चरवा त्यजीय तु । भ० । जाणे गरय सोलवा काज तु ॥३१॥

पेलि पंखी शाखा बिड्ठा तु । भ० । नारी नयण बितान तो ॥
 फल खाते ते बीसरधा तु । भ० । ते सोमा लेखा धरि ध्यान तो ॥३२॥

देखी नारी मुख चांदलो तु । भ० । दिवसि कमल मेलाय तो ॥
 नारी नयण कमलें जीबया तो । भ० । साजे जाणे कोमलाय तो ॥३३॥

नारी नयण चपल परां तो । भ० । वली बली माछलां जोय तो ॥
 चंचल परां आपरां छांडीयतु । भ० । पाय लागतां जोय तो ॥३४॥

बीहीनी धोलि केटली बाला तो । भ० । ऊधसी वचन अपार तो ॥
 सास गंधें कमल त्यजी तो । भ० । भमरें बीटी तेणी नार तु ॥३५॥

भमर बारंतां कंकण खलके तो । भ० । सारस सरस सुणंत तो ॥
 कोयल नारी गवद सुणीय तु । भ० । लाजी वचन न भणंत तु ॥३६॥

भमर बारतां कंकण खलके तो । भ० । सरस सरस सुरांत तो ॥
 कोयल नारी शब्द सुराण्य तु । भ० । लाजी वचन न भरांत तु ॥६७॥
 चतुर नरनि नीहालती तु । भ० । भरतां घट न भराय तु ॥
 निज अवगुण नविलेखती तो । भ० । घट पेर रोस कराय तो ॥६८॥
 नारी भरी करी बालती तु । भ० । चालती नयण विचित्र तु ॥
 जाणो लक्ष्मी बालती तु । चालती चतुरमां चीत्त तु ॥६९॥
 हसिते उत्तर बालती तु । भ० । बालती कंभड़ जोड़ तो ।
 ताली देकरि बातड़ी तो । भ० । हींछनी बाहुड़ी रोलती तु ॥७०॥
 सोना ऊंढण फूमती आलीतु । भ० । पातली मचका मोड़ती तु ॥
 मारन लेखती सही साहामीतु । भ० । बड़ी बार बात करि कोड़तु ॥७१॥
 वीज्य घणी कमलें भरीयतु । भ० । सामला रतन ना थंभ तु ॥
 नीलरतन पगथारीया तु । भ० । भरी छि निर्मल अंभ तो ॥७२॥
 देखी नारी मुख चंद्रमां तो । भ० । रोदि चकवी अपार तु ।
 बियोग भय राति लेखती तो । भ० । श्याम किरण अंधकार तु ॥७३॥
 कूपि कूपि यंत्र नाटा नडा तु । भ० । नीर नि फेरावि नार तु ।
 करि चीतकार फेरा माटि तु । भ० । जाणो ते रौबे गमार तु ॥७४॥
 कणु कुण नर फेरव्या मही तु । भ० । नारी नयन विखपे तो ॥
 कर धरया कोण नव्य फरें तु । भ० । एछिवात संक्षेप तु ॥७५॥
 जीहां कुआ कूपण गुण तु । भ० । गले पग देई बीर तु ॥
 दोरें बांधी काढीयितो । भ० । हठि करी तेह नीर तो ॥७६॥
 लोक मांहि को तेहवा नहीं तो । भ० । कूपण घन संपि थाय तु ॥
 पीड्या स्नेह न को त्यजे तो । भ० । तिल पील्या स्नेह जाय तु ॥७७॥
 जिन चंत्यालां तिहां घणां तो । भ० । उन्नत सीखर छि तास तु ॥
 कनक कलस बज लह लहि तो । भ० । बिज छि कोट रवि भास तु ॥७८॥
 सीखर पासि सिंह देखी तु । भ० । चंद्रनो हरण डरंत तो ॥
 तेह माटि चंद्र नमी करी तु । भ० । दक्षण ऊत्तर फीरंत तो ॥७९॥
 संत सजन आवक भला तु । भ० । नित आवि जिन जात्र तु ॥
 सणमार सारी सबे नारी तु । भ० । पूजी सफल करि रात्र तु ॥८०॥
 पंचवरण ललके घणूं तो । भ० । नगरी मांहि वज्र कोड़ तु ॥
 जाणो अयोधे तेडती तो । भ० । नाखूं दारिद्र मोड़ तु ॥८१॥

दूहा

एगरी पिरि नगरी सोहामणी, उजेणी शुभ नाम ॥
 कणक रयणें मंडार भरधां, सजन तणो विश्राम ॥१॥
 पायलि फरतां पुरां घणां, साखा नगर कही त्रास ॥
 फुलें बहोदसि चहूटडां, सुजन तणो बरणे वास ॥२॥

भास रासनी

उज्जयिनी का राजा यशोध

ते नगरीनु राजीए । गाजीयो ज्यारों मुनेन्द्र तो ॥
 प्रबल प्रतापि मंडीयो ए । सेबी अनिक नरेंद्र तो ॥१॥
 ताम जसोष तेह जाणीयिए । क्षत्रीय वंश दिजात तो ॥
 हस्ती हय रथ छि घणा ए । लछि अनेक कहू भोत तो ॥२॥
 सामंत क्षत्री बीटीयोए । सुभट सेवता कोउ तु ॥
 रण भोम्य जय लक्ष्मी बरधो ए । बीरीतरा मान मोड तो ॥३॥
 सोमगुणि जाणे चन्द्रमाए । प्रताप गुणि जाणे सूर तो ॥
 बीरी मद मछर त्वजेए । सांभलतां रण सूर तो ॥४॥
 सहस्राक्ष जानि गुणि सही ए । क्रूर गुणि यम रूप तो ॥
 दान गुणि धनपती समोए । रूपगुणि रती मूप तो ॥५॥
 जाणे दश लोकपाल तरा ए । विधाता रथ्यो लेइ अंशतो ॥
 देश विदेश यश विस्तरयोए । सोहाय्यु क्षत्री वंशतु ॥६॥
 लक्ष भट कोटिभटिए । परवरधो राय सोहंस तु ॥
 ग्रह तारायि सोहीयो ए । जाणे चन्द्र महंत तो ॥७॥

रानी चन्द्रमती

तस कामिनी गजगामिनीए । भामिनी कनक सुबेह तु ॥
 चंद्रवदिनी नामि चंद्रमती ए । रूपतरि छि रेह तु ॥८॥
 गोरडी सोभाग उरडी ए । बड़ी बीधातांयि नीज हाथ तो ॥
 मेह सरीसी बीजलीए । तिम प्रीत छि राय साथ तु ॥९॥

हरीचंदन विलेपन समीए । हरती राय संताप तु ॥
 मरणी सम हृदय घरिजवए । होइ कामफणी विषय ध्याप तु ॥१०॥
 अनेक शृंगार करि घणूँ ए । देखाहि नयन धीकारतु ॥
 जाणो मोहण बेलडी ए । मोहती रायनि अपार तु ॥११॥
 जिम नि धान ना कुंभने ए । भोगी नमूँ किलमारतु ॥
 तिम राणानि राजा भोगीयोए । भूकीन सकि बडी वार तु ॥१२॥
 चन्द्रमती गुण भा हालतीए । मालती नूँ जाणो फूल तो ॥
 बहुगुण जाण राणों मणीए । मर समो अनूँकूल तो ॥१३॥
 चन्द्रमती जाणो पदमनीए । राती नृप गुण वृंद तो ॥
 कनक वरण अती कोमलोए । राय जाणो मकरंदतु ॥१४॥
 चन्द्रमती भांवा मांजरीए । मत्त कोकिल समोराय तो ॥
 रंग रभंतो रस भरधो ए । कुंजि मधुर सुठायतो ॥१५॥
 चन्द्रमती जाणो सुभ मती ए । संपदालाभ सम भूपतो ॥
 सुख संतोषि पूरीयोए । भोग्य सोभाग्यनु कूपतो ॥१६॥
 चन्द्रमती जाणों सिधि समीए । भाव समो जाणो नर नाथ तु ॥
 प्राण मोगि प्रेम अती घणोए । राज्य भोग वि राणी साथ तो ॥१७॥
 न्याय प्रजानि पालतु । सुकवि विद्वांस विश्राम तो ॥
 कामधेनु कल्पवृक्ष समीए । पूरतो वांछित काम तु ॥१८॥
 नगरस नाटक नव नवाए । नित नित जोवि रसाल तु ॥
 हस्ती भूष्काहि अति बलीए । मेष महीष विकराल तु ॥१९॥
 एणी विरि राजा सुख भोगविए । करय ते पर वषकारतु ॥
 मान भोडी बेरी तराए । धन मणी भरया भंडोरतु ॥२०॥
 धर्म करि जिएवर तराए । दोन पूजा भवतार तु ॥
 सह गुह वारणी सुणि घणीए । करि रुडो पाचार तु ॥२१॥

पुत्र जन्म

ते बेहू कृषि हूं ऊपनो ए । कुंभर सुलक्षण बखार तु ॥
 बीज चन्द्रयम सोहीयो ए । दिन दिन बाघ्यु सुजाण तु ॥२२॥
 जनम समय दांन दीयुँ ए । कनक रतन नीधान तु ॥
 पंखी पशु बहु छोडयाए । छोडया बहु बंदी वान तु ॥२३॥

बाई अजीतमति एवं उसके समकालीन कवि

यशोधर नाम रसना

नाम जसोवर तेह दीऊए । बहु विरि करी उछाह तो ॥
 रतन जडीत भूषण भलाए । पहिरावि घरी ऊमाहतो ॥२३॥
 क्षण हरहि क्षणह हसिए । मोडि क्षण क्षण घालतो ॥
 राय राखी तीज मन रलीए । खेलावि लेइ बास तु ॥२४॥
 रतन तरा, रुड़ु ग्रामणूँ ए । दूरघु मोती चोक तु ॥
 धसमसहीडूँ रीखतो ए । चोक भाँची कएँ कोरतु ॥२५॥
 बली बली रचे मोडि बलीए । मोती साधीया भरघाँ रत्न तो ॥
 अनेक सजन लीधि फरिए । करय ते प्रती घणूँ यत्न तु ॥२६॥

कुमार का बाल्य काल

कुंभर सहीत हीडूँ खेलतु ए । जाणो नागकुमार तु ॥
 भ्रमर भणो जाणो परवरधोए । इन्द्रनो जयंत उदारतो ॥२७॥
 पंच वरसनो पोढो हवो ए । कुंभर हूँ जसोधराजि तो ॥
 महोछव करी पाठक धरिए । मुँकयो भणवा काज तो ॥२८॥
 अनेक प्रकारि शास्त्र भण्याए । शस्त्र तराओ अधीकार तु ॥
 धनुष विद्या आदिक करीए । तीषवीयो अपार तु ॥२९॥

विद्याध्ययन

व्याकरण छंद असंकारए । सकं छह दर्शन सेव तु ॥
 सामुद्रिक संगीत सहीए । सालिहोत्र पत्र छेद तु ॥३०॥
 न्याय नाटक नृपनीत घरी ए । वास्तु शास्त्र सूत्रधार तो ॥
 जोतीक बंदक रुवडी ए । रत्न परीक्षा वीचार तु ॥३१॥
 काम शास्त्र कोक कतूहल ए । आसन चोरासी प्रकार तु ॥
 धनुर्विद्या शस्त्र चालवाए । धर्मशास्त्र मुखकार तु ॥३२॥
 दंडनीती त्रयी लहूए । आन्वक्षकी तनुरक्षतो ।
 वार्ता बोद्धा विवेक बहू ए । गूढ मंत्र अंगीट दक्षतो ॥३३॥
 राजनीति निपुण बयोए । अनेक कला विद्वांस तु
 कुंभर तराण गुण देखीया ए । सहू जग हवो उल्हास तु ॥३४॥
 काला खींटली आला कुंतसाए । सोहिअ तीहीं अपार तु ॥
 वदन कमल पिर भ्रमर लाए । जाणो करय प्रसाद तु ॥३५॥

अष्टमी ससी समी सोहीयोए । भालखल भलकेय तो ॥
 मल्लयुगल विधिये रच्योए । ससि दो खंड करेय तो ॥३६॥
 नयन जांणो दोय माछलां ए । लावण्य जलिकरि खेलतु ॥
 अथवा चपन गुणि करीए । भमरा तरां ए बोन तु ॥३७॥
 कर्ण दीसि कोडमरां ए । जाणो अनोपम राय तो ॥
 नयणह सीम चापी रखा ए । मोती अरयणभो ठाय तो ॥३८॥
 सुक चंचू सम नासिकाए । अथवा जाणो तील फूल तु ॥
 भमरी मयरा धनुष समीए ॥ हर हाथनू अमूल तो ॥३९॥
 कंठ बासो हरां हाथ नां ए । अंस खंडीत अम रेख तु ॥
 हृदय श्रीशाल कूअर तरां ए । लक्ष्मी वसवा बीसेष तु ॥४०॥
 अमूलक मुक्ताफल तरां ए । उर वर हार लसंत तो ॥
 राजलक्ष्मी विवाहनें ए । वरमाला सम सोहत तो ॥४१॥
 लांबा भुज भुजंग समाए । जाणो पराक्रम रूप तो ॥
 भुज अद्भुत बल पीडीआ ए । बीहीना सेवे बहू भूप तो ॥४२॥
 रतन जडीत कंकण धरां ए । कनक सांकला संजुततो ॥
 उन्नत खंध स्वभा मरां ए । भूधरा धरण अद्भुत तु ॥४३॥
 कटिलंके जीत्यो मिहलो ए । बली मृगराज अभीमान तो ॥
 महाराज राज प्रताप जाणी ए । लाजीयो गीयो तेहरात तो ॥४४॥
 जंघा कनक थंभा जसी ए । वाटली कोमली चंग तु ॥
 कमल जीत्यां चरण तलेए । लाज्या जल करं संगतो ॥४५॥
 रूप सोमगि हूं आगलोए । लावण्य जल तरां कूप तु ॥
 जसोध राजा मभ देखीयो ए । मनोहर मनोहर रूप तो ॥४६॥

दूहा

युवराज पद प्रदान करना

तब राजा मन रीझीयो, चीतवे चतुर सुजाण ।
 अनेक मोहोछवि थापीयो, युवराज पद वषाण ॥१॥
 बीवाह भीहोछवि कारणों, उद्यम करी अपार ।
 मंत्री पाठव्यो आपणों, देश वराड मभार ॥२॥
 एलापोर नगर भलुं, अमरावती यम जाण ॥
 राजा राज करि तीहाँ, सामल बाहन सुख खाण ॥३॥

बूहा

मालकी राणी तेह तरणी, रूप सोभा गनि रेह ॥
 ससी बयणी मृगलीचनी, अनेक कला गुण रेह ॥४॥
 ते बेहू कृषि ऊपनी, अभृतमती तेह नाम ।
 कुंभरी अतीही कोडामणी, रूप योवन गुणठाम ॥५॥
 ते मंत्री रायनि मल्यो, राय दीषो बहुमान ।
 कीधी बात वीवाहनी, आपी लेष नीधान ॥६॥
 लेख बांची भाव जाणीयो, आणीयो राय आनंद ॥
 चंद्रिका सम ए कुंभरी, यशोधर कुंभर ते चन्द्र ॥७॥
 इम बोली महोद्धव घणि । नीचव्य वचन ते कीध ॥
 कुंकुम केसर छांटणो, श्रीफल फोफल दीध ॥८॥
 जाने मंत्री पूजीयो, लगन लेई करी चंग ॥
 मंत्री जेणी आवीयो, रा प्रति कह्यो सहू रंग ॥९॥

मास वीवाहलानी

सूबरज का विवाह

रंगधरी वीवाह अनो । अत घणो माडघो उछाह ॥
 धवल मंगल घणूं गावता । मूर्त्त लीधा घरी उमाह ॥१॥
 मंडप धंभ रतना तरा । अती घणा बीसि महंत ॥
 फटकतरा बली शोभता । पाट बीचीत्र दीसंत ॥२॥
 पंच वरण रतना तरा । खण विस्तीर्ण बीशाल ॥
 परवाली तरां नालीया । मालीयां मोती माल ॥३॥
 तोरण नील रतन तरां । भगमणि अतीही भपार ॥
 चमर ठाम ठाम बांधीया । सोहि ताहो फूलहार ॥४॥
 चोक रतन तरा भलकि । ललकि मोतीनी दाम ॥
 कनक कलस बहू ललकि । बहूकि अगर ठाम ठाम ॥५॥
 नील उत्पल रश्मि घणि । मोतीना साथीया सार ॥
 पहकोलि घणूं छाह्यो । सोहीउ पंचवरण सुवीचार ॥६॥
 ठाम ठाम कंकोत्री लखी । अनेक तेडावपा राय ।
 पकवान पिर पोथी दीसि । कंदोई घणारनी पाय ॥७॥

अनेम प्रकार जमण तणी । सामग्री भरघा मंडार ॥
 कामनी मंगल गावती । कुंअर तणा गुण विस्तार ॥५॥
 सजन सगा आवि वणा । रायाराण नही पार ॥
 साहां मां मानदेई करी । आणे ए नगर मभार ॥६॥
 वाजिअ वाजि बहू परी । ताल कंसाल रसाल ।
 मादल दुमी दुमी जाजिए । दम दमि डोल वीसाल ॥१०॥
 सरसाई साद सोहामणा । भामीणी बंश वाजंत ।
 भीभी भीमी झल्लरी भुंगल । नफेरी गगन गाजंत ॥११॥
 भरा भरा करि वेणा वणूं । तणा तणा रत्नाव समाज ।
 तत आनंद सूरिवर घन । बाद्य चतुर्विध वाज ॥१२॥
 संगीत शास्त्र प्रमाण ए । गायण गायसी छाजि ।
 तान मानदीक सुं मूर्च्छता । नटवा नर्त सुं गाजि ॥१३॥
 जाणे रंभा तीलोत्तमा । उत्तम अपधरा निहरावि ॥
 पात्र नाना विध नाचे ए । हस्त कमल फाणादि ॥१४॥
 ताता थेई थेई बोलती । ठविण ठवि पद छंद ॥
 नाटक राला नाचंतां । तिहां उछे प्रति छंद ॥१५॥
 भमरी देयंता मेखला । घूघरी नूं घमकार ॥
 नयन कटाक्ष नीहावती । चालती कुंडल झलकार ॥१६॥
 फुले कांहीयि पोढी परे । घरे घरे मंगल सार ॥
 राज मारगि घेरी चौहटां । सोहतां श्रीरामरा उद्वार ॥१७॥
 धिर धिर गुडी ऊछल । पंच वरण धज सोहि ।
 पवनें पताका लहिकती । पुरी जाणे नाचीती मोहि ॥१८॥
 तलीया तीरण भगमणे । सोहिए रंभा सुखंम ॥
 ठामे ठामे तान गान सूं । नाचि नाना विध रंभा ॥१९॥
 रतन जडीत मलि हांसलो । होसलुताजी अभूल ॥
 मोती ताणि मरवीआरणि । पाखर अतीही अतूल ॥२०॥
 कनक घडां रतने जडां चोकही उंछिलगाम ॥
 हेम पत्ताणछि खडू । खडू सोभा सुठाम ॥२१॥
 मोतीय भवका भूंबता । फूमतां हीरनां दीसि ॥
 पगे नेउर भमकार । हिसारतो हय घणूं दीसि ॥२२॥

राय राणा महाजन बहू । सहू तेडी दीधा मान ॥
 श्रीफल फोफल पूर । कपूर देवाय सूँ सूँपान ॥२२॥
 केसर कपूर छोटणा । अति धणां चूआ चांदेल ॥
 तिनक करी मोती चोटियां । अबीर नाथि करे खेल ॥२३॥
 डोल नीसाण धूसू किए । मूँकिए रीपू सुणी भान ॥
 सरागार सूँ गजगामिनी । कामिनी करि गीत गान ॥२४॥
 मोती अडे बधावी करी । करि उठरयो तेणी वार ।
 सजनिहूँ घोडि चडावयो । भारोदत्तव अवधार ॥२५॥
 कुंकुमे पूजी बधाबीघो । हूय गलि टोडर ललकि ॥
 धूधर माल कनक तणी । चालंतडां धरूँ बलकि ॥२६॥
 तबहूँ बहू सरागारयो । भारयो सरागार भार ॥
 रतन मुगट अति झलकि । ललकि कुंडल सार ॥२७॥
 नल बट दीउ पिरवरूँ । सिरि असावि जगाजोत ॥
 आंजी आंखडी पदम पांखडी । पद कडी कीरणे उद्योत ॥२८॥

विभिन्न उरसय

आमला म न भूक्ताफल । ललकिउरवर हार ॥
 रतन जडित वाजू बिहिरवा । करें बीटी वेतु अपार ॥२९॥
 कटि खल के कटि मेखला । रतन पाउडी सोहि पाय ॥
 सह्यी धारा असवार । पालतु पार नही पाय ३० ॥३०॥
 गज भवगाह चमर हलै । रमणीआ सिर बहू छत्र ॥
 पंच वरण धज फर हरि, पटकुल तणी अ दिक्षि ॥३१॥
 बाजीय नाद संभल करी, धिर धिर नारी उछाह ॥
 बरजो वारणि कारणी । साद करि माहोमाह ॥३२॥
 एक प्रोती मोतीहारडो । दोरडो बीटीने पाय ॥
 चालंतां पांथो खडो । लू बिजे मोती चंपाय ॥३३॥
 एक आभूषण करी तीय । अतीय ऊतावली थाय ॥
 कानें कंकण करें कुंडल । पिहिरती अतीय संकाय ॥३४॥
 एक बालका सलाकाकरी । आंजीऊं नयनछि एक ॥
 जोवा आवते ऊतावली । बिकल निनोहि बीवेक ॥३५॥
 एक धारतूँ मूकी बालक । बालका जोबानि जाय ॥
 पांहानि यानें सीचे सेरडी । गोरड और भील भीजाय ॥३६॥

एक यमती साधि छोकरां । कृत्यरधू वलगूजई भाणि ॥
 विहिलांजमो जोईवि भू'भू । भू' भू' भालती बोलि वारा ॥३७॥
 एक मेलंती बाछरू' । कूतरू' बोधीऊं ठाम ॥
 दोहीसू' पछि कही बालती । बाछरू नू' सरधू' तव काम ॥३८॥
 एक राधंती राधणू' । लूण घणू' घाली भान मांहि ॥
 दाल बवारी अलूणी । सलूणी बेगि कर चाहि ॥३९॥
 एक प्रीसती भरतारने । वारनि भिखारिनि घावि ॥
 भारी नाखी बर जोवती । सही भरनि मने भावि ॥४०॥
 मेहो जोवि सवे पदमती । घसमसी सास भरंत ॥
 ममर भमि मुख परीमलि । कमलती शोभा धरंत ॥४१॥
 मचकुंद भोगरो मालती । माहालती लाजा बधावि ॥
 जय जय वाणी उच्चरें । जिही बर मारनि घावि ॥४२॥
 एणी पिर फूलि काहोयि । जूयिकोखि देवी देवी ।
 जसोधर राजा भुत परणीइ । वरणना कोणि कहेवी ॥४४॥

बूहा

इत्यादिक उछव घणा, नित नित जमणवार ॥
 मालाण जननें देवतां, बांछीत वान उदार ॥१॥
 जान सजाई होइ धणू', हय गय रय सुविसाल ॥
 पाला पार न पामीइ, पालखी बहू गुणमाल ॥२॥

मास धूलमी

हाथी बट्ट सणगारधां । कनक सांकलि घणु भारधां ॥
 घंटा तणी टणकार । धूघर मालाना घमकार ॥१॥
 अंबाडी कडी वीसि । रतन कंवल सोहि जीसि ॥
 सींदरें रंग्या सीसैं । मोती जाली मनहीसि ॥२॥
 अंबाडी घज लहिके करी । कान बढ बिहिके करि ॥
 तिहां भमरा भणकार । अंकुस सहीलकुंतार ॥३॥
 अनेक कुंअर तीहां बिठठा । रुपें रमणी मन पिठठा ॥
 चमर सोहे गज काने । दंतूसल सीत वाने ॥४॥

अंजन गिरि जाणें चालता । भारि धरणी हालंतों ॥
 मलपता महीमल भाहोलि । ऊंची सूढ हलालि ॥५॥
 प्राजापत्य घोडा जाति । बबर हबसीय भात ।
 वानायुज छिविनीत । वायुवेगी छिवीचीत ॥६॥
 घोडा मणि छि कांजोज । पार्ष्णीपंथा छि पीरोज ॥
 पंचकल्याण पारसीक । बाहलीक बलीया कछीक ॥७॥
 मंगा जल गुण जाणूं । हासला बोर बल्लाणूं ॥
 एह भादि श्राव्या घणा घोडा । सणगारघा नहीं घोडा ॥८॥
 रतन जडघा हेम पलारा । पाधिलि पाषर बधाण ॥
 हरीना घणां फूमतडा । मोती प्रवाला ना भडकडा ॥९॥
 मखी आरणि मोती ललकि । लगाम चोकडे मणीभलके ॥
 क्षुरि खेणी क्षोणी भाग । रजि रुंध्यो रजि भाग ॥१०॥
 रथ रुडा वस्ति भरया । घोरीयडा धोरि जोतरया ॥
 केटला राजा बैठा रथ । जूता घोडा समरथ ॥११॥
 अनेक राजा तीहा विडटा । सुरवीर सुभट गरीठा ॥
 अतीय तिहां हथी आर । छत्र चमर के नहीं पार ॥१२॥
 पंचवरण लिहिकि धज्ज । चिन्ह छि जलखवाने कज ॥
 पाला धसि वड मज्ज । अरी अण भय करी भज्ज ॥१३॥
 पंचवरण पिहिरया वस्त्र । घरपां बहुवीथ शग्ग ॥
 एणी पिर चतुर्वीथ सैग्य । राय जसोघ सुघन्य ॥१४॥
 हस्ती उपरि । बिडठुहू सार संधि सहू परिवार ॥
 एणी पिरि चालिए जान । मधकीयूं संगल दीघान ॥१५॥
 हस्ती उपरि बिडठुहू जाण । मारीदत्त सुणो बाण ॥
 छत्र चमर घणी सोभ । अगसि नाचिए रंभ ॥१६॥
 डम डम डोल धूसूकि वेंरी मानसहू सूकि ॥
 भों भों मंगल नाद । सरणाइ सुभ साद ॥१७॥
 बालणी कनकमि सोहि । घणीय सोभा मन मोहि ॥
 कटक भसमसी चाल्यो । मही कंपी सेव हाल्यो ॥१८॥

गिरीवर घणा द्रमद्रमया । ग्रह तारा भ्रमे भ्रमया ॥
नदीय सागर उलटया । बाघ सैध दूरव टया ॥१२॥

तव पाम्यो बराड देश । अनेक सोभानु नीवेस ॥
आवयो जाणी नरेस । अधिस्त पूजा करि बीसेस ॥२०॥

ऊतत तरु घाये हासि । आंतनि जाणी वाय घासि ॥
तरु वेल थी फलफूल । जाणे वधावि अतूल ॥२१॥

रतन सिला छि ठाम ठाम । जाणे आसनदि अभिराम ॥
सरोवर नीर नीकरण । अभोक्षणा दीयि घूयि चरण ॥२२॥

पिर पिर तरु अर फलया । जाणे भेटणा आगल घरया ॥
ब्राह्मा मंडप ठाम ठाम । जाननि दीयि जाणे विश्राम ॥२३॥

श्रीफल सोन्या उर्वण । बहूर एतणी दिव जंन ।
चंदन तिलक ससु दावि । इक्षु बंड रस राखि ॥२४॥

तरुणां अक्षु रस पीवाय । भूक्षा अनेक फल खाय ॥
सेलडी पशूनि नीराये । दूध दही पार न थाये ॥२५॥

दूकडां दूकडां गाम । लोक सजन ना विश्राम ॥
नगर पाटण पुर भाभा । धनयणि घणू प्राजा ॥२७॥

मंजलि मंजल चालंतां । चौविध सैन्य महंत ॥
एसा नगरीयि आख्या । सहू सजन तणि मन भाव्या ॥२८॥

जान वधामणी यानि प्रसीध । पंचपसाय रायि दीध ॥
वन उद्योतें ऊतरया । सूत्र धारि घर करया ॥२९॥

मंडप मोटा बिसाल । पटछुल तरुण गुण माल ॥
जान सासैं यानि कानि । बाजिब्र बहूपरि बाजि ॥३०॥

हथ गथ रथ सू असंख्य । पाला वपल छिलक्ष ॥
सजयें संच्रम साथ । साहामो आदि नरनाथ ॥३१॥

जत नि दीधलां मान । श्रीफल फोफल पाम ॥
छांटणां तिलक अबांर । कोधु विनय गंभीर ॥३२॥

नगर प्रवेश इस होवि । नर नारी बरनि जोवि ॥
कहिए आशंभ रूप । जाणी किए नल भूप ॥३३॥

अंद्र नरेंद्र नागेंद्र । सूर गुरु सूरके चन्द्र ॥
 के अवतरयो ए काम । गुण लक्षणा केरो ठाम ॥३४॥
 जाणो ध्यायनो समोह । दीठि ऊपरि मोह ॥
 जाणो प्रगटथू क्षत्री धर्म । एणी विरि करि घणो भर्म ॥३५॥
 नगरी पौलि प्रकार । सात खणां घर अपार ॥
 चहूटां चोकिहू आठ्यु । नारी फूल बधाव्यु ॥३६॥
 मेढी गुलसू वीचार । जोवि बहुवीष नार ॥
 नगरी सोभा महंत । बज तोरण भलकंत ॥३७॥
 चंदन हाथा चीनाम । जाणो नगरी हसि सकाम ॥
 गूढी लहिकि सहूराचि । जाणो नगरी हरवि नाचि ॥३८॥
 रतन तणी जगा जोत । निसी पणि घणो उद्योत ॥
 राय धलहरछि रुडो । जाणो नगरी नारी नो चूडो ॥३९॥
 कारंजे नीर भरए । जाणो अमोषण धरए ॥
 पांजरि पोपट पडिए । जाणो बिनय मुक्त दूडए ॥४०॥
 नगरी मांहि सुभ ठाम । जान उदयारा विश्राम ॥
 बबल हरे सहू उत्तरयो । मानवी मंगल करयो ॥४१॥

बूहा

स्नान विलेपन मुक्त हवां । हवी बहुरीता चार ॥
 लगन दिन वाने घरी । नमणि न बाडि नार ॥४॥१॥
 रतन जडीत आसन धरयुं । माणक मोली चोक ॥
 कनक कलस घणां जलि भरया । पल्लव आवां असोक ॥२॥
 नारी नवरंग चीर सूं । बाघरी आलोघार ॥
 सवे सोही सणमार सूं । आवि बधावा माट ॥३॥

भास फागुनी

रागदेशाख

नारी नामें नारंगदे । आवि नव नेह ।
 गुरादे गुण गोरडी । जीवादे जेह ॥१॥
 हीरा देहे जिहसि । हरखि हरषादे ॥
 सणमार सूं सींगार दे । मर्चाक मरधादे ॥२॥

गोमादे गोरी गुण । गंगादे गरवीसरी ।
 घादेसही सोभती । सीखें नही वर बी ॥३॥
 भावल दे भावे भली । भीमादे भीली ।
 चतुर चालि चंगा दे । चंग पंचरंग चीर चोली ॥४॥
 मोहरणवे माणिक मोहती । मल्लारणवे मोटी ।
 लक्षमादे लक्ष्मी समी । लक्षणि नही छोटी ॥५॥
 कमलादे कोमल बदी, कोडादे नही कूरी ।
 रतनादे रलिआ मणी । अछवा देजि छि छोटी ॥६॥
 आजादे आभि अलज्जड । रस भरी रगाई ॥
 बहलादे बिहि वारणी । बाहानी कथवजादे ॥७॥
 रुपादे रुपि रस भरी । रमादे रुडी ।
 रंभादे रंभा समी । करि सोभती चूडी ॥८॥
 रंगादे रंग रावती । राजलदे राणी ॥
 अमरादे अमरी जसी । धनादेभि यषाणी ॥९॥
 वनादे वन देवता । बीरादे वारु ।
 अघादे अघंकारी । रघादे रती सारु ॥१०॥
 हांसलदे हंस गामिनी । हंसा दे हंसी ।
 सोमाग दे सोमागणी । प्रेमादे प्रसंसी ॥११॥
 तेजलदे तेजि तपि । जसमादे जाणि ।
 एणी विरिनारी बहू मली । रुपगुण तणी खणी ॥१२॥
 तिलककारी एक कामिनी । एक मोती चुट्टि जिएक ॥
 सीख दती सोहामणी । मोठू बोलती मोडि ॥१३॥
 एक मोतीडे वधावती । एक नयन सुअंजि ॥
 एक आभरण पिहिरावती । एक हंसती रंजि ॥१४॥
 एक ऊंडी पीडी करि । एक दीवा उतारि ॥
 एकज जूण उतारती । एक मंगल उचारि ॥१५॥
 एम मली सोभागिणी । मंगल गाए वा ।
 सहूरीत होयि राय सुणो । चालु परणिवा ॥१६॥
 वाजिअ वाजिबे हू परी । घणी नाचि पात्र ।
 भश्व बिडोहूंअपती । ठली चामर छत्र ।

अनेक क्षत्री करी परवरयो । भाव्यु तोरण बार ।
 सालो सन्मुख रही भणि । भला श्लोक विस्तार ॥ १८ ॥
 प्रत्य उत्तर श्लोका घणा । मण्यार्थि उत्तंग ।
 सुणावि नगर नर नारीनि । बाध्यु बहुरंग ॥ १९ ॥

वस्तु

जस घस्तरयो मम तणु । सार हार तुषार ॥
 नगर मझार जस विस्तरयो उज्जसु
 बंदी बीरद कोलि घणा । गायण भावि गीत मंगल ॥
 दान देइ तव मन रली । राय जसोध अपार ॥
 तोरण रीतह विकहू । मारीदत्त अविधार ॥ १३ ॥

भास साहेलिनी

सालो मांडप थी छाटनोए । सहेलिरे प्रीछव्यो देइ दान ॥
 मान तोरण आगलि कनकनुए । साहेलीरे सिंघासन मुंनिधान ॥ १ ॥
 लीसा भू भालवली लटकनुए । सा० । ऊभो रह्यो तेलीवार ।
 पुंहुकवातली सजाई लेइए । सा० । आवी पदमनी नार ॥ २ ॥
 अक्षाणू बधावतीए । सा० । पुंहुकती अदुर सुजाण ।
 दूसर मूसल भादि करीए । सा० । सरीउत्राक वषाण ॥ ३ ॥
 गेवा सूत्र सांपड उत्तारतीए । सा० । लहिका मूं लोबि हाथ ॥
 घाट घाली नाकताणतीए । सा० । हसयो तव सह साध ॥ ४ ॥
 माहिकं हडा रतन तणूँए । सा० । सिंघासन पर लीथ ।
 हूं बेसारघो भामणिए । सा० । आहु अंतर पट कोथ ॥ ५ ॥
 कन्या आणी कोवामणीए । सा० । साहासी बिसारी रसाल ॥
 मोती रतन फूल तणीए । सा० । कंठि घाली वरमाल ॥ ६ ॥
 पंडित मंगलाष्टक भणिए । सा० । जोसी करि सावधान ॥
 पल अक्षर वासा दाखविए । सा० । जाणिए दिन निसीमान ॥ ७ ॥
 सुभ महरत लभे सहीए । सा० । बेगि वजावी घाल ।
 जय जयकार तव हवोए । सा० । पढीअ पदुसडे गोंठ ॥ ८ ॥
 कन्यावर हथेवास डोए । तव मलयो सुसराल ।
 अत्रपट दूरि क्रियाए । सा० । तवहयो तंबोल छांट ॥ ९ ॥

बेहूजण नयण मेलावडोए । सा० । हूबो तव अती सुविधान ॥
 माहो साहो बेहू जण हरषीयाँए । सा० । निधान पाम्यो एम जाणि ॥१०॥
 ढोल नीसाण घसूकीयाए । सा० । नफेरी भूंगल जोड ॥
 भाट भटाई भलुं भणिए । सा० । गावय गायण कोड ॥११॥
 कामिनी गीत गावि घणूँए । सा० । बहुगुण यश विस्तार ॥
 नयण विकार विस्तारतीए । सा० । हरषती अतिहि अपार ॥१२॥
 कुंअर हन्र समो जाणिए । सा० । कुंअरी इन्द्राणी वखाण ॥
 अमृता जसोधर जोडलीए । सा० । भलि घडी बीता सुआण ॥१३॥
 कुंअर जाणो चंद्रसमोए । सा० । कुंअरी ते रोहणि जोष ।
 अमृता जसोधर जोडलीए । सा० । रखेरे वखोहि कोय ॥१४॥
 कुंअर जाणो सूरज समोए । सा० । कुंअरी प्रभावली सार ॥
 अमृता जसोधर जोडलीए । सा० । धन धन ए अवतार ॥१५॥
 कुंअर जाणो काम समोए । सा० । रतीदेवी कुंअरी विख्यात ॥
 अमृता जसोधर जोडलीए । सा० । भली रची एस निधान ॥१६॥
 कुंअर जाणो ईश्वर समोए । सा० । कुंअरी गौरी समान ॥
 अमृता जसोधर जोडलीए । सा० । अनोपम अवनो निधान ॥१७॥
 कुंअर जाणो नरहरि समोए । सा० । कुंअरी लक्ष्मीदान ॥
 अमृता जसोधरा जोडलीए । सा० । धन धन ए अभिधान ॥१८॥
 कुंअर जाणो बलभद्र समोए । सा० । कुंअरी रेवती एह ॥
 अमृता जसोधर जोडलीए । सा० । रूप सोभागिनी रेह ॥१९॥
 कुंअर जाणो नल समोए । सा० । कुंअरी वसंती रूप ॥
 अमृता जसोधरा जोडलीए । सा० । रूप सोभागनो कूप ॥२०॥
 माणिक उषि अष्टी घणूँए । सा० । हेम मूंदीपिरहोय ॥
 अमृता जसोधरा जोडलीए । सा० । सँयोग सोभति जोय ॥२१॥
 यम मोती घमूलकए । सा० । गुणकरी अतिही सोहंत ॥
 अमृता जसोधर जोडलीए । सा० । संजोग मन मोहंत ॥२२॥
 यम राजा बल रूपसूँए । सा० । राजनीति हुषिधात ॥
 अमृता जसोधर जोडलीए । सा० । तिम संजोगि विश्वात ॥२३॥
 कंकणबिरी जीत्या तह करिए । सा० । कठण लक्षण सुविचार ॥
 कुंअरी कर कोमल घणोए । सा० । बेरे भोक्ता अपार ॥२४॥

आई अजीतमति एवं उसके समकालीन कवि

तहो कल्पतरु दुढ़ धणोए । सा० । कुंअरी खेल अविधार ॥
तरु बैलना गुण मन धरिए । सा० । समकर पीडो सगार ॥२५॥

अमृता के साथ विवाह

एणी गिर मंगल गावताए । सा० । चोरी रतनमि थंभ ॥
नीला वंश हीर दोरडीए । सा० । रचित कनकमि कुंभ ॥२६॥

चोरी सारि ब्राह्मण भलाए । सा० । अग्न थापी छूत होम ॥
मंगल काज ऊभां सोहिए । सा० । बहू अर रोहिए सोम ॥२७॥

साखु सूप साही रह्यो ए । सा० । लाजा मूँकि मूठधार ॥
अंजु कर संगुठ करिए । सा० । होमे अग्नि मजार ॥२८॥

पहिलूं मांगल वरतीइए । सा० । कन्यादान देवाय ॥
मलपना माता हाथी धर्यो ए । सा० । दीइसा मलवाहन राय ॥२९॥

बीजूं मांगल वरतीइए । सा० । कन्या दान देवाय ॥
हींसता हय बर हांसला ए । सा० । दीइ सामन वाहन राय ॥३०॥

बीजूं मांगल वरतीइए । सा० । कन्या दान देवाय ॥
रख समरथ अरथि भरघाए । सा० । दीइ सामन वाहन राय ॥३१॥

चूथू मांगल वरतीइए । सा० । कन्यादान देवाय ॥
गाम पोर पाटण बसाए । सा० । दीइ सामन वाहन राय ॥३२॥

मांगल फरता बहू सोहिए । सा० । कुंअरी छि दक्षण हाथ ॥
मेरु प्रदक्षण देख तोए । सा० । जाणे सूरज प्रभा साथ ॥३३॥

सालो अंगुठ चांपतुए । सा० । सोहि अती अपार ॥
जाणे मङ्ग रूपे जी कियोए । सा० । काम पाय लागि विचार ॥३४॥

सप्तपदी साते गिर करयो ए । सा० । कुंअर अंगुठा तारण ॥
गुन आगिर उलंघयाए । सा० । ससीकर कुमुदनी जाण ॥३५॥

कन्यादान होय धर्यो ए । सा० । सजन सहू परीवार ॥
गोधन महिखी पार नहीं ए । सेज भाजन अपार ॥३६॥

साखु प्रीसी सोहामणी ए । सा० । सोना थाल कंसार ॥
कुंअरीय माइती मजनि ए । सा० । को लीया मोटेरा बार ब्यार ॥३७॥

सहीसमां एीयि प्रेरी धर्यो ए । सा० । हाथ पांकी साहि कान ॥
हाथ साही जोरियमता ए । सा० । हसया सबे सुजाण ॥३८॥

चन्द्रसाथि धम खोहणीए । सा०॥ मूर प्रगाराजित साथ ॥
 भमृतमती सुं तेम जमो ए । सा०॥ तह्ये जसोधर नरनाथ ॥३२॥
 बिसल्या साथि यम्या लक्ष्मण ए । सा०॥ राम जिम सीता साथ ॥
 भमृतमती सुं तम यमो ए । सा०॥ तम्हे जसोधर नर नाथ ॥४०॥
 सुलोचना सुं जयकुमार ए । सा०॥ भरत स्त्री रत्न जु हाथ ॥
 भमृतमती सुं तम यमो ए । सा०॥ तम्हे जसोधर नर नाथ ॥४१॥
 भंजनी सुं पवनजयो ए । सा०॥ सुग्रीव तारा साथ ॥
 भमृतमती सुं तम ययो ए । सा०॥ तम्हे जसोधर नर नाथ ॥४२॥
 सावित्री सुं ब्रह्मा यमा ए । सा०॥ श्री हरी लक्ष्मीय साथ ॥
 भमृतमती सुं तम जमोए । सा०॥ तह्ये जसोधर नरनाथ ॥४३॥
 एह आदि मंगल मननीए । सा०॥ गावती गीत रसाल ॥
 मिजमाडी कुंअरी ए । सा०॥ बार च्यार गुणमाल ॥४४॥
 च्यार सोहासणी बधावयोए । सा०॥ मोती माणिक तेणीवार ॥
 गौरी सावित्रींअ अहिवा तनए । सा०॥ कहि बली जय जयकार ॥४५॥

बेहा

एणी पिरि बेहेवा महोद्यव हावाए । हवु हरष बहुरंग ॥
 रायकरि डलट भरी । पियहिरामणी उत्तम अंम ॥१॥
 सोना पाट मोहामणो, मोती चुक पुराय ॥
 अनेक सगा सज्जन बहु, विनय सहित ते डीय ॥२॥

भास रागदेशास

राजा रक्ष बेठडा मेडीयिए । तिहा लगन लेवानी जोसीं तेडीयिए ॥

भास महाभवलनी

पाट पाथरया पटोलडेए । तिहां राय बोलि बोल भीठडे ए ॥
 आरौ करणय कभाय घणीए । पीछोडी पागडी कमक तणीए ॥१॥
 सेला सालू भूना भीणलाए । बहू मरव परकाला भलाए ॥२॥
 पीला पीताम्बर ऊपताए । रूप तारा कणा ससी जीपताए ॥
 देवांग वस्त्र भीणां बणाए । फलवंश गोपी नख सुण्या ए ॥३॥

पंचवरण मसर बहूए । कसखी मंग तिहां पिरि पिरि लहू ए ॥
 मसजुरा मुकंबल सूफ सकलालए । एह आदि देबहू देसखी जात ए ॥४॥
 नवरंग खीर पटोलडां ए । सांडी साउलाट घट चोलडां ए ॥
 भूना भीणा छाएस भलांए । कमला आदि सावटूं सोहो जलांए ॥५॥
 कडक कुंडल भसा बिहिरवाए । हार गौडीया रतन माणक सरवाए ॥
 एह आदि पिरभूषण बहूए । पिहिरामणी पिर बिसारधा सहूए ॥६॥

बरात की पहचान

रायराणा मंत्रि घणाए । बर तात काका मामा भण्या ए ॥
 भाई भतीजा पोत्राइए या ए । मोहोसाल मासा मसी भाई आए ॥७॥
 बर माय मोसी काकी भलीए । बर बिहिन भाभी भावे भलीए ॥
 एह आदि कुटुंब मिल्यो बहूए । पिहिरामणी काज बिइठा सहूए ॥८॥
 राय दूधे पाय पखालतु ए । राणी सावि वीनय जाणें चालतु ए ॥
 कुंकुम तिलक काढी करीए । बली पाय धीलिते बहू परीए ॥९॥
 एम सहू सजन पिहिरावया ए । बरवहूनि आभूषण दीयां ए ॥
 बहू रीति मांडव वधावयो ए । बरू पाव लागी नि मनाक्यो ए ॥१०॥
 कुंघरी कुंकुंडीलां काडीयाए । मि माणक मोती चोडीयां ए ॥
 बाजिध बाजि तब घणां ए । हुइ मंगल गान माननी तीणां ए ॥११॥
 जान चाली ऊतावली ए । राय आव्यु बलावा मन रली ए ॥
 दासी दास सावि दीयां घणाए । सा विनय कीषा कहू तेह तणा ए ॥१२॥
 मागण सहू संतोखया ए । परि परि पाय शुभ पोखीयां ए ॥
 भजल भजल जान चलती ए । बली डोल नीसांण बजावती ए ॥१३॥
 सगा दान मांनि संतोषा सबे ए । राय जसोध जैन सुत परणीइए ॥
 समकित द्रुह देवेन्द्र विनय कीड ए । गुहवांडु प्रभांचंदमन रलीए ॥१४॥
 आछेंण पाणी छांटतां ए । घरमाहि आव्या देह संवटता ए ॥
 योव जनें पाये पड्यां ए । माय बापनि नम्या मोह जड्यां ए ॥१५॥
 जिनवर मुबनें अधामणां ए । कीषा पूजा अभिषेक घणा घणा ए ॥
 संघ पूज संघ बाछल करयो ए । तिहां राय जसोध जस विस्तरयो ॥१६॥
 सजनें सहू बधावो कीयो ए । राइ दान मान तेहनें दीयो ए ॥
 विनय करी संतोषीया ए । राय राणा मोहणा निज धिर गया ए ॥१७॥

गुरवीहु प्रभाचंद मनि रली ए । वादी चंदनें सेवि जयदेव बली ए ॥
 राय बसोधर कोडामणो ए । राजभार बरघो सोहामणो ए ॥
 सामंत क्षत्रीये परवरयो ए । सपतांग राज अलंकरणो ए ॥१८॥
 काल घणो राज भोगविए । रणि वैरीयनां दल जोगवि ए ॥
 प्रगट प्रतापि पुरयो ए । बहुदाने देखीयां दुःख चूरयो ए ॥१९॥

राज्याभिषेक करना

एक दीवसिहूं देखीयो ए । रायप्रबल प्रतापि लेखीयो ए ।
 राज्य देवा उद्यम करिए । नह जोसी तेडी मुहूर्तं घरिए ॥२०॥
 राय राणा तेडा बयाए । बहु भेट लेइ ते प्रावयाए ॥
 जलदेवता पूजी करीए । घणा कनक कलस आण्या जल भरीए ॥२१॥
 कनक सिंघासन आपीए । घणि उद्यवि हूं तिहारो पीयोए ॥
 मोतीय चोक पुरावयोए । नारी तिलक करी बघावीयो ए ॥२२॥
 वाजिज वाजतां बहु पिरिए । राय कलस हाथि लेइ करीए ॥
 सुभ लगनि सीर ढालीया ए । तब जय जय कार सहूये कीया ए ॥२३॥
 पट्टबन्ध सीर बांधीयो ए । तब राय राखें आराधीयो ए ॥
 मुगट माथि काने कुंडल ए । तेजि जीत्या रवी शसी मंडल ए ॥२४॥
 कनकमाला मोती सोहिए । आमलां प्रभाणि मन मोहिए ॥
 हाथ सांकला राज मुद्रका ए । सोहासणि कीधी आरासिका ए ॥२५॥
 राय जसोध उभो रह्यो ए । मुक्त आगलि कनक दंड ग्रह्यो ए ॥
 राय राणा आचंभीयाए । तब ऊभा रह्या जाणे थंभीया ए ॥२६॥
 विनय करीय सोर्य वदिए । ताज्या हूं पीता देखी नीचे पदिए ॥
 राय मुक्त वचन श्रीकारीयिए । राय राणा जूहार अबधारीयिए ॥२७॥

राज्याभिषेक में विभिन्न देशों के राजाओं का आगमन

अंग नमी मूके भेटणूं ए । अंगरायनि मान दीयो घणूं ए ॥
 राय कुंतल केरल तराए । एह नि दृष्टि प्रसाद कीजि घणाए ॥२८॥
 कोसल मगध देस राय नमें ए । एहनि प्रति नमीजि जो मन रमे ए ॥
 नर्मि कनड प्रवड घणी ए । एहनें वचन कृपा कीजे धरणी ए ॥२९॥
 कलिगराय निमें चीत दीजीयिए । नीलधरायनु जूहार ते लीजीयए ।
 नमन नयन वचन रसिए । केता हस्ति मूमंगि थोडि हसिए ॥३०॥

मानीया राय घण पूजीयाए । राय राणी निज स्थानकि गया ए ।
एणी विरि राज हूँ पामीयोए । राजा जसोध तणो भार बामीयोए ॥३१॥

बूहा

राज जसोध ते नीमलो, राज पालि गुणमाल ॥
सत्य रहीत ते जिन तणो, धर्म करे सुबीसाल ॥१॥
षट् कर्मह आवकतणां, पालिते मन शुद्ध ।
समकित पालि निरमलु, भव्य तणी ए बुध्य ॥२॥
जसोध राय एके सभि, बिठो सभा रसाल ।
अरी सिमुख जोयंता, दीठो पत्थो मोझाल ॥३॥
राय नाना मन चीननि, तटुवट जोह निरक्त ॥
काल तणी स्थिति छि असी, करय विचार सुजुत ॥४॥

नमः

आचार्याः परमेष्ठिनः सुतपसो निर्यादृतावश्यकाः ।
पञ्चाचारविचारचारुचतुराः सङ्गुक्तसौरव्यप्रदाः ॥
सद्धर्माभृतवर्षहर्षकरणा बान्कायश्चितावृताः
श्रीदेवेन्द्रसुविक्रमस्तुतपदाः कर्वंतु को मंगलः ॥१॥
इतिश्रीयशोधर महाराजचरिते रासचूडामणी काव्यप्रतिच्छदेः ॥
भूदेवकवि विक्रम सुत देवेन्द्र विरचिते । यशोधराज वर्णन
यशोधर विवाह पूर्वक राज्याभिषेक वर्णनो नाम तृतीयोधिकारः ॥३॥

चतुर्थ अधिकार

ठाल मद्रबाहुनी

वृद्धावस्था का प्रभाव

राय भणिए पली छिकूडी ।
जाणो यम तराए दूडी ।
दोडी आवीए तेडवाए ॥१॥

अथवा यौवन वन घणूं रहयो,
काल महानल बेगि दहयो।
रह्यो असमनो दग जसो ए ॥२॥

जाणो अथवा जरा ए राक्षसी,
तनु समसान मांहां आकी वसी,
हसीत शंत समी लेखीयए ॥३॥

देह तलावरोमावली भाड,
काल पीसाचि जाणो नाखुदाड,
वाडव कामने धारवाए ॥४॥

सरीर दीसि जाणो मोटी वडए,
अनेक रोग पंक्षी आछिजड ।
वडवाई समा दीसोधि ए ॥५॥

सरीर जाणो सायर सरीखो,
रोग मगर दुःख लेहेरी परीखो ।
संख सीपोनी पीण भलू ए ॥६॥

जाणो देह ए मोटी वाडी,
पली हाड तीहां मूकू ऊभाडी ।
वीहाडया भोग सीआलने ए ॥७॥

जाणो जरा अथवा ए वेल,
सरीर वृक्ष पामी करे मेल ।
कील तंतु सम एह भणो ए ॥८॥

रूप लावण्य ए धान्य प्रसीधो,
दिखय इंद्रि जाणो लूहसी लीतो ।
कीधो ढगए परालनो ए ॥९॥

अथवा जरा रुपिणी ए नारी,
परस्थी रत पर कोपी भारी ।
केमघरी दांत पाडती ए ॥१०॥

काला केसते अंधार चोर,
कुबटि पाडि बीखया चोर ।
मूर जरा उद्योत भला ए ॥११॥

जुहू गरदु धणू होय रसाल,
वांझतु दीसि बिखराल,
चांडाल तलाव परिसत्री त्यजिए ॥१२॥

नवधौवन सेखि दूध साकर करी,
वृधनि त्वजि गुगल क्वाथह परी ।
परी कामनी एहवी कही ए ॥१३॥

वृधनी नारनै दीवी सरखी,
स्नेह सीचे करि जाले हरखी ।
पण पर पुरुषनि ऊपरिए ॥१४॥

धोलानी माला केसराली कृद्ध,
जनवनि भमि केसरी समी वृद्ध,
किम धीरे नारी हरणलीए ॥१५॥

अथवा अवननी गगनि ए वृद्ध
भमि कूष जाणिए वृद्ध ।
धरवा धीहि नारी हंसलीए ॥१६॥

अवननी नदी वृध मगरनी वास,
वांकी डाढ़ सीर ऊज्जवल भास ।
पासि न आवि नारी माछली ए ॥१७॥

हार्थे लाकडी बसयो वृध वांको,
नीची नजर भमलो धणू थाको ।
यौवन रतन नीहालतो ए ॥१८॥

वृध हाथ धरा जे लाठी,
अचेतन थी परणहीडि ना हाठी ।
पाठिन स्त्री केम चेतन ए ॥१९॥

वृध देह कर बली बली रह्यो,
लावण्य रस परनालि बह्यो ।
अहयो जाणो जरा साकिनी ए ॥२०॥

नयन भरि मुख लाला गलए,
लोभ बिखय वाद्यो बल बल ए ।
करय वृधणा कल भाहि खयो ए ॥२१॥

वृध हाथ बली सीस धूणावि,
जाणि जम तेडि पणनावि ।
हविसरा एकरहो इम कहिए ॥२२॥

राजा यशोधर द्वारा चिन्तन

मिचली घणो रणयो आरंभ,
विचारी बूढ़ होयि आचंभ ।
कुंभ भरघु पायि घापणो ए ॥२३॥

कुटंभ काजि राज बिस्तार कीध,
तनु गोलें दीटी मंकोडा दीध ।
लीध कुगत दुःख में घणो ए ॥२४॥

मेघ पटल सम ए परिवार,
विघंटता नवि लागे वार ।
गवार फोकि जीव मोहू करिए ॥२५॥

भव दनि कालि सैहू वीकराल,
मुख पडया जारों जीव मूग बाल,
सबल सरण ते कुरा राखेए ॥२६॥

समुद्र मध्ये बांहांणयी ऊढघो सूडो,
सरणि तेहनि जिम को नहीँ रुडो ।
जीवडो कष्ट पडघो घर्म राखिए ॥२७॥

द्रव्य क्षेत्र भव्य भावनि काल,
पंचप्रकार संसार विशाल ।
काल अनंतो जीव दुःख सहिए ॥२८॥

ओहुंगत मांहि जीव एकलु भमिए,
सुख दुःख काल एकलोनी गमिए ।
समय एक साथे को नहीँ ॥२९॥

करम कलंक काया यको भिन्न,
ज्ञान स्वरूपी आत्मा छि अंन ।
अनोपम तेजनो पूंजलोए ॥३०॥

असुची रुषीर मांस में देह,
हाड मरयूँ कर्म बांढाल गेह ।
नेह तेह सूँ न्यानी किम करिए ॥३१॥

दुज्जरा देह बेहू सभ जारो,
नह वाइयो जमाइयो मंडाडयो ।
वखाण्यु आपणों पण ए किम नोहिए ॥३२॥

लोभणी कुडी छितारी गोखी,
मलमूत्रादिक असूचीनी गुरडी ।
पडीयो पासि कुण्ण भवतरिए ॥३३॥

पंच प्रकार आश्रव सत्ताविन,
मलि पावन नें करि अपावन ।
धन्य ते जे एथी वेगुल ए ॥३४॥

आश्रवरोधन करय महंत,
गुणति वीषय जय व्रति गुणवंत ।
संतते संवर आदरिए ॥३५॥

तप करी कर्म करें जे जर्जर,
उभय प्रकारि करय जे नीर्जर ।
निर्जर यह मोक्ष ते लहिए ॥३६॥

घन रज्जू वण्यसि त्रिताल,
पुष्पाकारि लोक विमाल ।
धनादि अनंत द्रव्यि भरधु ए ॥३७॥

आर्ज खंड मनुज उत्तम कुल,
दुर्लभ समकित जिन धर्म नीर्मल ।
निश्चल पालि ते धन धन एह ॥३८॥

त्रिकरण सूध करि दस धर्म,
सात तत्त्वनु जाणि मर्म ।
कर्महुणी सिव ते लहिए ॥३९॥

एणी पिरि चितवता अनुप्रेक्षा,
जसोधराय सभ देवि सीक्षा ।
दीक्षा लेवा उद्यम करिए ॥४०॥

राय सहू सूक्ष्मतम कीध,
साधि एक सत नृप छि प्रसीध ।
सीध दीक्षा दान पूजं करीए ॥४१॥

यशोधर राजा एवं अमृता का जीवन

प्रजालोक हृषित सह, करिते मुक्त गुणगान ॥
 मारीदत्त अवीधारीयि, जाणै पाम्यो नीवान ॥२॥
 सांसंत क्षत्री राय वरणा, मंत्री आदि परीवार ॥
 मक्त तणी आमन्या सिर वहि, प्रबल प्रताप विस्तार ॥३॥
 अनेक रायभि वक्ष करघा, रण अंगण करी भूक्त ॥
 उपचीता रीपू बीटीआ, कोन लहि मुक्त मुक्त ॥४॥
 सुष्ट ते आण मनावया, दुष्ट ते कीधु नाणि ॥
 मुक्त नीसाण सुणंतडो, रिपु जननि पडि वास ॥५॥
 अनेक राजा तणी कुंअरी, परशु हूं उत्तंग ॥
 रूप सोभाणि आगलो, तेहु सूरभूं मनरंग ॥६॥
 अमृतमती सूं अतिघणु, निसदिन रास विलास ॥
 सुख भोगवूं हूं मनरमी, करतां फुत्तुहल हास ॥७॥
 अमृतमती कुंखे हवो, कुंअर जसोमती नाम ॥
 दिन दिन ते मोटो हवो, रूप विलास गुण ठाम ॥८॥
 इस करतां दीन बहु गया, आबु मास वसंत ॥
 अष्टाह्निका अत आंचरि, भवि अण लोक महंत ॥९॥

मास वसंततो फागुणती, राग अंदोला गुडी

लोक सवे उलसंत, वसंत सू आबु मास ॥
 घिर घिर नारी कौज मणी, भामिनी नावि रास ॥१॥
 मंत्रीयि मक्त मन जाणीऊं, आणीयो मन विवेक ॥
 वसंत श्रीजानि काज, सावि कटक अनेक ॥२॥
 हाथीयि वाली अबाडी, देवाडीय मंगल तूर ॥
 निसाण नादे ऊमटयो, ऊलटयो सागर पूर ॥३॥
 अनेक सुजात बलाणी, पलाणीया अपल तोरंग ॥
 कीध घजा घणूं संतरा, संवरथा रथ उत्तंग ॥४॥
 पालाघो सट वसमसि, वममसि करि न लगार ॥
 पालखी अनेक सुखासन, रासनि काज अपार ॥५॥

बूहा

अंतःपुर सज थावेण, पावेण मन आनंद ॥
 बिसी मुखासन पालखी, सखीनां साथि बृंद ॥६॥
 कंचूबीया अनुगामी, आगि कनक दंड धार ॥
 बाडी भवनहर माहि ऊमाहि रमिसुविचार ॥७॥
 राय चाल्यो तब खेलवा । खेलवार छि साथ ॥
 हाथो घंटा चालि मलपती । जलमती हय नर नाथ ॥८॥
 अनेक राय घणू मंडीयो । खंडीयु रीपु दलमान ॥
 उडी रज सण्या मही । रहोयो ऊपाई भान ॥९॥

सन्तोत्सव मनाने राजा का बाहर जाना

राय चाल्यो तब जाणियो । आणियो लोकि आण्यो ॥
 क्रीडा कर वा उद्यक हवा । कि हिवा लाग नारी वृंद ॥१०॥
 सह्यो आबु अक्ष सांथि । ए नाथि दीधी सीख ॥
 आगि नारी बली प्रेरीय । पिहरीय चीर सरीय ॥११॥
 विहिरा गोती भरी कांचली । चंचली आंखें अंजेष ॥
 बंटी करवा आभूषण । भूषणडा बहु लेय ॥१२॥
 बीछीया पागडां घूधरा । नेउरनू भमकार ॥
 हंस गामिनी जाणें मंगल मेखला नु भमकार ॥१३॥
 मोतीपुनु हार ललकि । डलकि टोडर कंठे चंग ॥
 एक दाणीउ बली पद कडी । जडीय छि रतने सुरंग ॥१४॥
 आहोडीयि सोहि बिहिरयो । सिहिरयो चंपाकली हार ॥
 करवली कंकण चूडीय । रुडीय मूद्रडी सार ॥१५॥
 नाके अमूलक मोती । पनोती कानें सोही भाल ॥
 नलवट टीलू जडाव । सोहावि ए पीअलदो गालि ॥१६॥
 सिथो फूली सेस फूल । अमूलक राषडी वेण ॥
 गोकण फुलसकावि । लोडावि बाहुडी तेण ॥१७॥

खेलवा चाल्या कमसि । घसमसि सहू नर नारि ॥
 हार भस्मिन् तूटि । हूटे भावुनरा भार ॥१८॥
 वगधीय सगर वगरी ठीय । हेठी धै नव्य लेय ॥
 कही भमरी कहीं सांकला । मेखलां छूटी पडिय ॥१९॥
 बहूटा सेरी मूषणि भरी । पहिरी जाणो भूम नारि ॥
 नीज स्वामी नै नरखेए । हरखी करि सणुगार ॥२०॥
 राए ऊद्यान जब दीठो । मीठु होइ पंखी नाथ ॥
 जाणी राय देखी भावतो । भावसु वन करि साव ॥२१॥
 केसूअडा फूल्या रातडा । रातडा अशोक अपार ॥
 आंवां भांजरे मोरीया । मोरीया कुंद मंदार ॥२२॥
 पीला फूलया रुडा चंपक । तीप कदंब अतूल ॥
 पाडल परीमल अवसर । पसरि पगार अमूल ॥२३॥

वसन्त बहार

परीमल वैध्यो जायने । जाइ नही अलीधूर ॥
 रातडी पण रासु बने । सूबनी पिरित्यजय भूर ॥२४॥
 जूखडी जूइ वखाणए । जाणिए केतकी चंग ॥
 मयण गज वंतूसल । उज्जल केवहु रंग ॥२५॥
 मधूक फूल्या फूली माधवी । बांधवी अली रह्यो अण ॥
 रूपि रुडी रूप मंजरी । मंजरी छि बहूतेण ॥२६॥
 पारजातक रुडी रेवती । सेवती सोहि गुलाल ॥
 कमल भलांवली कंदक । रक्करि ममर रसाल ॥२७॥
 बकुल छि परीमल गठउ । मरुउ भोगरु वंच ॥
 टगर अवंती सींदुरीयो । छे बपोीयो बहूरंग ॥२८॥
 बलसरी बालो वसंत । दीसंत मनोहर रूप ॥
 भमर भमि जाणे किकर । तब अर सेवि मूप ॥२९॥
 आंवां वन बहु मंजरी । पिजरी दीसि चंग ॥
 कोयल करि टहूंकडा । दुकडी कूजि सुचंग ॥३०॥
 तब अर ताल तमाल रस । लिही ताल अपार ॥
 रायण रातडां दवडां । सूअडा सेवि बिभार ॥३१॥

ऊड़ती सूडा तणी श्रेणी । सुजेगि बोलंत रसाल ॥
 पर वाली वचि नीलमणि । बसंत तणी कंठमाल ॥३२॥
 अखोड बदाम बीजोरडी । जंबीरडी जंबू नाम ॥
 नाग केसर नारंग । लबंग एलची तणी ठाम ॥३३॥
 नालीकेरी करणा एम । दाडम रही छिन मेव ॥
 तुंडी किरति करमदी । भरम हरम तणी देव ॥३४॥
 मंडप तीहा द्राक्षा तणी । अतीघणा छि गम्भीर ॥
 नागबेल नवरंग । सोरंग सोपारी थीर ॥३५॥
 फण सफल्या भस्ला तकी । जातकी चारु चारोली ॥
 खेलिय राय सू रंग भरी । अलेडरी करि रोल ॥३६॥
 प्रचुरकी केसर रसभरी । भरी घरी आदि अपार ॥
 मूठडी भरीय गुलालनी । लालना मुख परि सार ॥३७॥
 अबीरी नाखती नयन पुरी । रस भरी हसती नरसाल ॥
 बलती कमल करीहू हणू । स्तन ऊपरि गुणमाल ॥३८॥
 फूलभीडू हणि कलधरी । ललीकरी पांडि मूमे चंग ॥
 बलि ऊठी अंगि आलंगि । रंगि रमि उत्तंग ॥३९॥
 दोए कर भरी दोए ऊखनी । हंसली समी सोहंत ॥
 तूडी सू जाणे वेणा बल्लकी । बल्लभ मन मोहंत ॥४०॥
 एक करें पीडी भोयि पडी । पातलडी भीडी बाथ ॥
 चंपाली अचेतन रही । मुखे कहिमो मो नाथ ॥४१॥
 एक अघरि घणू खंडीयि । मंडी रही क्रूर वृष्टि ॥
 एक पयोधरि पीडीय । छेडी नाथि करि रुष्ट ॥४२॥
 वेणी घरी एक रीसि कहि । रहि रहि मरा तणा चोर ।
 अहो अबला तनु कोमल । कमल समीनू निठोर ॥४३॥
 वनकीडा काज भमती । रमती जाणे वनदेव ॥
 बेल बेलहिंडी झूबती, झूबका घूटीय लेव ॥४४॥

लहू डालि एक बलमती । हीचती वारीवार ॥
 चगी तीहां बांधी हींदोलडा । जोड लहीवि अगार ॥४५॥
 तब कटी मेशला खलकती । धरती जाणे श्रुती सार ॥
 गायती गीत रसाल । विनाल ए रति अकतार ॥४६॥
 डालें बलमी करें खांचती । सठे विसे बहू बार ॥
 मुरत बीसरथो संभारती । करती नयन विकार ॥४७॥
 फणाभिर रही डाल खाचवा । सांचवा कुसुम अतुल ॥
 कतें रसोली हसीवली । डाल ऊछली पदयां फूल ॥४८॥
 जाणेह रावू देखी लाजीरा । फूलिऊं पाव्युं आज ॥
 डाल तालखतां एक चीर खस्यो । हस्यो तब सही सहू राज ॥४९॥
 फूल मुकुट फूल टोडर । फूल पछोडियि राय ॥
 फूल धरणा फूल वाटडी । गोरजी फूल लंडाज ॥५०॥
 जाणे प्रतक्ष ए बसंत । खेलंतो वनदेवी साथ ॥
 वन कीडा करी नारसू । मारिदत्त सुण नरनाथ ॥५१॥
 सहू नर नारी बहू बोलि । खेलें ए वने बसंत ॥
 चंदेन केशर छांटणां । कुंकुम तिलक महंत ॥५२॥
 फूल टोडर बहू परीमल । पसरें दस दिस सार ॥
 परीमल लोभीया भमरां । रणभरण करी अपार ॥५३॥
 जल सूखडो कली दीडीअ । पीडीअ फूल पगार ॥
 वन कीडा अम फेडीय । तेडीय राणी सराय ॥५४॥
 खल करी मुखपरी छांटतां । खूंटता कमल सुवास ॥
 माहोमाहि घणू भूवतां । करतां हास विलास ॥५५॥
 जल खेलें दस नीसरचा । पहिरचा वस्त्र विवेक ।
 पहिरचा अनेक आभूषण । दूषण नहीं अंगि एक ॥५६॥
 नगर जावा सवे सज थया । वाजियां विविध वाजिअ ॥
 संभ्रम सहीत पुरी आवीयां । सोभा दीसि विचित्र ॥५७॥

वस्तु

नगर मझमी । नगर मझमी । हूँ सुविचार ।
वन क्रीडां करी आवीयो । अंतेउर सूँ सार मनोहर ॥
स्नान पूज जिन भोजन सजन सरसुं कीष सुखाकर ।
नोक आशु मिल वन तहू करि अन्नंद अणार ॥
एसी पिर हूँ राज भोगवूँ । मारीदत अवधार ॥१॥

बूहा

अमृतमती रानी का कुबड़े के गान पर आसक्त होना

एक समय अमृतमती, बबल गृह मझार ॥
सही अर सूँ करि गोठडी, मीठडी चतुर अपार ॥१॥
तेणि सनि सेवक अधम, कुबड़ो प्रति हि बिसाल ॥
मालव पंचम आलवे, मुद्रांगि सुरमाख ॥२॥
तब ते गान अवण पडयो, पडिहरणबी जिस पास ॥
दूती चतुर भली सदा, पठाबी ते पास ॥३॥
कुरूप देखी पाछी बली, चीतवि चित्त अपार ॥
काम चरित्र अचित्त छि, दुस्सह काम विकार ॥४॥
हेतु जाणो अपछरा, होय विस्मय देखी रूप ॥
ते देवी कुबड़ु एहनि मन बरि, दुर्जय काम ए भूप ॥५॥
दूतीइ देवी बीनबी, तेछि कुरूप अपार ॥
नीचनिकष्ट निटोर तनु, तेह सूँ मोह निवार ॥६॥
तब अमृताधि एम बोलीयूँ, सांभिल सुषी मन सध्य ॥
बृकुल कुरूप कुतनु कह्यो, जे कहि तेह कुबुध्य ॥७॥
ये हनि इयम प्रसन्न धयो, त्रिभुवन बिजई हेव ॥
तेह नर निवूँ जगणवे, कामिनीनि कामदेव ॥८॥
रूप बीवन फल तेह कह्यूँ, पामीयि स्त्री मन रत्न ॥
ते सो मन एणि बह्यूँ, रूप नू कसूँ यत्न ॥९॥
ते करवूँ एहधूँ जई, जेणी पिरिए बस याव ॥
एह दिगु मृक्त तन मन तपे, क्षण एक रही न सकाव ॥१०॥

तब तेणवि तेसूँ बाळवूँ, अवसर जोई रमेय ॥
 भारीदस्त अवधारतूँ, हूँ नवि लड्डुए भेय ॥११॥

भास रासनी

राजा यशोधर का राज दरबार

दिन दिन प्रति राजपाल तो ए । करतां पर उपकार तो ॥
 प्रजालोक नें सुखी करूँ ए । होइ मुक्त यश विस्तार तो ॥१॥
 एक समि सभा मंडपि ए । मध्य उन्नत भद्रपीठ तो ॥
 उज्ज्वल रतन नो शोभतु ए । जागो निज यश दीठ तो ॥२॥
 परवालीना धंभ भला ए । मंडप अती विसाल तु ॥
 करती विचित्र धरां घूतलीए । रुडी नाटक भालि तु ॥३॥
 तेह परि कनक सिंहासन ए । पंचवरण भरी बद्ध तो ॥
 अमूलक मूडा गादो भलो ए । रचना अतिहि प्रसिद्ध तु ॥४॥
 तेण अवसरिहूँ आवीयो ए । सभा मंडप मभार तु ॥
 सार्वत मंत्री उठी नम्या ए । विनय सू करय जुहार तु ॥५॥
 सिंहासन बिठो सोहीयो ए । यम उदयाचल मूर तु ॥
 रतन कुण्डल तेजि करीए । कीधु तिमर अती दूर तु ॥६॥
 उलबद्ध धरा राजीया ए । उभा रह्य तेणी वार तु ॥
 यथायोग्यमि संभालीया ए । ते जिगो कीर्षा जुहार तु ॥७॥
 जेहनि बिसवा आग्राहती ए । ते बिठा सुविचार तु ॥
 अनेक राणा उभा रह्या ए । कर जोड़ी तजी हथिभर तु ॥८॥
 नयरा चलावि को नहीं ए । को नहीं चालि हाथ तु ॥
 को नहूँ आंगली चालवि ए । बात न करि कोय साथ तु ॥९॥
 को माहोमाहि नव्य हसिए । नव्य करि कोय संकेत तु ॥
 चररा चलावि को नहीं ए । को नहीं अठींगरा देय तु ॥१०॥
 सीस हलावि कु नहीं ए । को नहीं सीस खण्य तु ॥
 कर कंपावय को नहीं ए । आंगली कोय न गण्य तु ॥११॥
 को कटका मोड़ि नहीं ए । को जंभाई न दैय तु ॥
 को खांसि खंखारें नहीं ए । को नहीं दे को नहीं लेय तु ॥१२॥

छीकि कोई तिहां नही ए । कोय न रांस भराय तु ॥
 को किहिनि रुसि नही ए । कोय न सीख देवाय तु ॥१२॥
 को कामि मोकलाय नही ए । कोय तीहां न तेदायतु ॥
 कोई स्तुति गावि नही ए । को काई नम्य खाय तु ॥१३॥
 अण बोलाव्यु बोलि नही ए । नबि कोडाहुन थायतु ॥
 बोलाव्यु बोलि थीर खई ए । जाणैह बुसु पसाय तु ॥१४॥
 को भूछि हाथ घालि नहीं ए । नव्य भमरी व जलाम तु ॥
 अनामस बालिका नहीं ए । परताथि कप्या रांय तु ॥१५॥
 भीत्रामण पिर सबे रखा ए । लक्ष भट कोटीभट वीर तु ॥
 जाणै सभा सायर समी ए । वायु बीना थाइ थीर तु ॥१६॥
 छत्र उज्जल थीर सोभतु ए । कनक कलस उत्तंग तु ॥
 गज अकगाह चमर भलो ए । नीरमल गंग तरंग तु ॥१७॥
 वारंगना डालि धणी ए । हुइ कंकण भनकार तु ॥
 रुपि अपछरा जीपती ए । ऊपि अतीही अपार तु ॥१८॥
 अनेक राणाना भेटणा ए । आब्या लेख सहीत तु ॥
 विनय सहीत मंत्री बांदए । राय सुणु थीर चीत तो ॥१९॥
 लेख सुली प्रति उत्तर ए । देयूं हूं थीर बुध्य तु ॥
 मंत्र बटि गुप्ती करूं ए । बाधि यमराज रीत्य तु ॥२०॥
 क्षण एक कवित्त अलंकरण ए । सुकवित्त तणां सणु चंग तु ॥
 क्षण एक वाद बीठांसनाए । सांभलू मति तणिए रंगतु ॥२१॥
 क्षण एक नव रस नाटक ए । जोऊ भेद संगीत तु ॥
 सारीगमपधनी सप्त स्वर ए । अनेक ताल भली रीत तो ॥२२॥
 भूर्छना भेद भला लहू ए । नटूआ नचावि पात्र तु ॥
 ताता थैई थैई ऊषरे ए । नाचती मोडे गात्र तु ॥२३॥
 क्षण एक भाट भणीत भलाए । कवित्त रुडां सुरसाव तु ॥
 थीर रस विविध परि ए । निज पराक्रम गुणमाख तु ॥२४॥
 इन्द्रजाल वीर साधक ए । अंग साधक कला कोड तु ॥
 अस्त्र साधक अमकुंजोड ए । लहूगुण अवगुण मोड तु ॥२५॥

मल्लयुद्ध करण एक जोड़ ए । मत मतंग जूझ तु ॥
मीढा महीष भूकता जीऊए । ते बढि छि अती कुष तु ॥२७॥
इम करत कतुहल ए । गुण मंडीत सभा माहि तु ॥
कलपतरु चितामणी ए । कामधेनु मऊ चाहि तु ॥२८॥
दान देखी सहू लाजीए । अदृशहवां इम जाण तु ॥
सारद चन्द्र कुमुद समु ए । यश विस्तरयो वषाण तु ॥२९॥

ब्रह्मा

विरह बरान

तेण अवसिरि मुक्त मीभरी, अमृतमती सुवीचार ॥
रूपयीवन गुण देह तरां, चीसु हृदय मभार ॥१॥
वीरह व्याप्यो भूक्त अती घणो । करण एक रहण न जाय ॥
अमृतमती गुण अमृत सू, रह्यो हुं चित्त लगाय ॥२॥
विरह संतापि व्यापवुं, मक्त कोमल अतीकाय ॥
अमृतमती गुणचन्द्रका ए । रह्यो हृदय लगाय ॥३॥
विरहतरणी घणो वेदना, तब उपनी मुक्त देह ॥
अमृतमती गुण हवड़ा, रसांग रस पिर रख्यो सनेह ॥४॥
विरह तरा अति दुःसह, हृदय पिडठ साल ॥
अमृतमती गुण शस्त्रधर, बैद्यनि घांठ विसाल ॥५॥
वीरह दादातल तनुबले, लागो अति विकराज ॥
अमृतमती मेव पयोधर तदा, व्यांऊ अती ही रसाल ॥६॥
विरह तृषाणि व्यापीयु, हुं बापीहु अपार ॥
अमृतमती गुण चीतवुं, जागें जनधर धार ॥७॥
विरह मातो मतंग जो, तनु पाटण गंजिय ॥
अमृतमती गुण अकुसि, चितधरवी गंजिय ॥८॥
विरह मुजंगम मुक्त नढ्यो, वेयण वीखहवू व्याप ॥
अमृतमती नू मनकरू, नाम मंत्र तणु जाप्य ॥९॥
वीरही वीछी बिखं व्यापयो, मक्त शरीर मभार ॥
अमृतमती गुण ऊष धी, धरी करू सीतकार ॥१०॥

विरह अंधारि दुःखीयो । हूं चक्रवाक सपूर ॥
अमृतमती नाम मन रली, चीतबू हूं गुण गूर ॥११॥

भास महालंतडानी

अमृतमतीना गुणवरुणः । अहालंतडे ।
चीतबू अतीही वरवारण । सुण सुन्दरे ॥
विरहवेयण अण उपसमिए । मा० ।
हृदय वसीयिम जाण । सु० ॥१॥
चरणें कमलधणूं जी कीयाए । मा० ।
लाजी पाकी उजलि वास ॥ सु० ॥
गजवली गमनें जीकीयो ए । मा० ।
तेहू वनें रह्यो उदास ॥ सु० ॥२॥
घूटण विरह हणवे भलाए । मा० ।
अंधा कनकमय थंभ ॥ सु० ॥
अधन जाणो करी कर सोभा ए ॥ मा० ॥
जीके रंभा अदंभ ॥ सु० ॥२॥

अमृतमती सौन्दर्य वर्णन

कटालके जीत्यो सिहू लोए । मा० । लाज्यो गयो वन ठाय ॥ सु० ॥
पोढा परभव पामीयाए । मा० । दूर देसांतर जाय ॥ सु० ॥४॥
अथवाली उदरि सोहिए । मा० । रोमावली वन जाण ॥ सु० ॥
मयर मातंग जम जुवाए । मा० । नाभी ए एह कलाण ॥ सु० ॥५॥
कनक कलस जाणो ऊपताए । मा० । अमृत भरचा इम जोय ॥ सु० ॥
पीन स्तन मुखे मेव कस । मा० । जाणो मुद्रा दीधी होय ॥ सु० ॥६॥
अथवा पयोधर घणूं सोहिए । मा० । रवे लागि एह निदृष्ट ॥ सु० ॥
इम जाणी करघो मिस लांछन ए । मा० । चतुर विधाता घृष्ट ॥ सु० ॥७॥
अथवा कनक कलस परि ए । मा० । नील उत्पल सोहंत ॥ सु० ॥
कमल डोडा अथ स्तन भणूं ए । मा० । उपरि भमर सोहंत ॥ सु० ॥८॥
चकवा चकवी जोडलूं ए । मा० । एहना स्तन रसाल ॥ सु० ॥
मुख चंद्र देखी भय तजीए । मा० । जाणो रोमावली सेवाल ॥ सु० ॥९॥
अथवा हृदय सिव शंकर ए । मा० । चंदन अचित जाण ॥ सु० ॥
स्तन उपरि जे स्यामीकाण । मा० । सुउपरि कल्हार बखारण ॥ सु० ॥१०॥

पातली नारए जाडए ।मा०। कीमल स्त्रीए कठीण ।सु०।
 स्त्री सुमुखी स्तन कालमुखाए ।मा०। बाहेर कावधा गाढि तेण ॥११॥
 कठिण कालमुखा धरूं होइए ।मा०। पण अघि त्मजि न लगार ।सु०।
 कठिण थंड नही छूटीयिए ।मा०। कूपणए जाणो बिचार ।सु०।१२।
 जाणो कनकनी बिध घडीए ।मा०। पातलडी भली बेल ।सु०।
 गिरिपर होइ परा कोतक ।मा०। देता परे गिरि बेल ।सु०।१३।
 लावण्य सांख्यो कनक तरणो ए ।मा०। अमृताए दमण छोड़ ।सु०।
 बेल बीलां लागीं लहुंए ।सु०। ए मऊ कोतक कोड ।सु०।१४।
 केटली स्तन सोभा कहूं ए ।मा०। जाणो ए मोटा राय ।सु०।
 आसमुद्र हूं कर ग्रहूं ए ।मा०। तेहनिमि कर देवाय ।सु०।१५।
 कनक बंड समा सुज कहूं ए ।मा०। कल्पवल्लीनूं वितान ।सु०।
 लांकी आंगली बली कोमल ए ।मा०। कर पालव समान ।सु०।१६।
 कंठ सोभात्री रेखमूं ए ।मा०। देखीय वरूं सुवरूं ॥
 संख डकधो जलि जै पड्यो ए ।मा०। लाज्यु हृदय विशीरूं ॥१७॥
 हडबटी छुदणूं छि प्रसूं ए ।मा०। चंद्रमाहि जसुं नक्षत्र ॥
 दांत दाडिम कुली कहूं ए ।मा०। रतन के मोती पवित्र ॥सु०।१८।
 नासिका मसिए सुक लहू ए ।मा०। बेठो मोती धरेय ॥सु०।
 कान पासि ए भमिर धनुं ए ।सु०। ग्रहूं सुक कोंडघो परा नडरेया ॥१९॥
 अधर पाकांटी दूरडां ए ।मा०। दांत दाडिम कली जाण ॥सु०।
 ए माहि पहिलूं कहनैं ग्रहूं ए ।मा०। थरधई चीले बखार ॥सु०।२०।
 आखडी कमलह पाखडी ए ।मा०। आजी छि अणी आल ॥सु०।
 अथवा राता कमल भणूं ए ।मा०। काला अमर छिवीसाल ॥सु०।२१।
 अथवा मछ युगम समीए ।मा०। रहीआ लावण्य सर माहि ।सु०।
 घोवर देखी पीडा धरे ए ।मा०। ए बहू अश्वर्य ठाह ।सु०।२२।
 नयण शोभायए गंजीयाए ।मा०। खंजन बली चकोर ।सु०।
 बलि भमंता हींढता ए ।मा०। नागते जेम चोर ॥सु०।२३।
 अर्ध चंद्र समो सही ए ।सु०। तेह भालस्थल होय ।सु०।
 नयण बाण भमरी धनु ए ।मा०। सांघी कंपावय लोय ॥सु०।२४।
 कान ए काम हींदोलडा ए ।मा०। अथवा नयन मृग पास ॥
 केस भारे जीकधा मोरडा ए ।मा०। तेणि परा धरधूं बनवास ॥सु०।२५।

जाने कनक तखी पृतली ए ।मा०। पातली मोहण बैल ॥सु०॥
 मसार सुख मांहि भूलूँ ए ।मा०। जेएहूँ सूँ कहँ बैल ॥सु०॥२६॥
 गमनागमन बेगि करिए ।मा०। अस्थए अमृता कटाक्ष ।सु०।
 क्षणविनय घोडा थीर होइए ।मा०। अमृता केरा अभिलाख ॥सु०॥२७॥
 बाटला कोमल पीरोजडा ए ।मा०। घोडा अमृता थण साध ॥सु०।
 रतन मोती परवालडाए ।मा०। अमृता बीना ए काच ॥सु०॥२८॥
 माता मँगल मोटका ए ।मा०। ए मरु मन न सोहाय ।सु०।
 अमृता बीना एम लेखवूँ ए ।मा०। दम दासा मीरी ठाय ।सु०॥२९॥
 रथ जाणै एधी हिंदीया ए ।मा०। रारकरि अती क्रूर ॥सु०॥
 रथ रीध मरु मन भम्पू ए ।मा०। अमृता मती रिहि रुंध ॥सु०॥३०॥
 अनेक राणा राय देशसूँ ए ।मा०। भंडार सहीत ए राज ।सु०।
 अमृतमती नारी विणए ।मा०। एणि मरुसूँ सरि काज ॥सु०॥३१॥

बूहा

भेणी पिरि चींता आकुन्यो, सांकलयो जिम नाग ।
 अंतर मदै नयन तरें, पण उठवा नहीं लाग ॥१॥
 तेणि अवसिरि दिनकर सही, लोक बांधव हम जाण ॥
 अस्ताचल सन्मुख ययो, जाणै मुंभ करुणा आण ॥२॥

भास भूवास रागनी

सूर्य अस्त होने का वर्णन

दिनकर रे आथमसु हवो रातडी ॥
 निशि नारी नु रे, जाणै कि कुंकुम चोलडो ॥१॥
 जिम आथमती रे, तिम ते धरूँ रागे चढयो ॥
 सही महाजन रे, रंगनमूँ कि कण्ट पडयो ॥२॥
 थम ऊगतो रे, तिम आथमसु रंग भरचू ॥
 सहि सज्जन रे, मन सुख दुःखे सममुख करयो ॥३॥
 अस्ताचलें रे, सूर आवंतो जाणीयो ।
 निज सिर परि रे, मुकुट समो वधायो ॥४॥
 पश्चिम दिसि रे, रवी आवि हवी रातडी ।
 पंखी तणा रे, बोल मसि करे जानडी ॥५॥

दिन अंतरे रे, रवि घणूं मान पामयूं ।
 उत्तम नैरे, कोणि एक सीस न नामयूं ॥६॥
 व्यभचारिणी रे, मन रोषे रीसि चली ।
 रवी उपरे रे, देषाडि आंलि रातडी ॥७॥
 जाणो तेहस्यापेरे, सूरज अस्तागत गयो ।
 मनला तणि रे, स्वार्पे कोहोने नही क्षय थयो ॥८॥
 जेह उदय थोरे, धर्म कर्म चालें धरौ ।
 तेह आथमें रे, जाणो बोधा काल तरौ ॥९॥
 रवि आथमेरे, कोमलाणी धरौ पदमनी ।
 देषी नव्यसकिरे, आंख मीची रही धरौ ॥१०॥
 निज मीजनो रे, दुःख देखी अती दुषंरो ।
 दुखीयो धाम रे, कोण नही ते उचरो ॥११॥
 रवि आथमें रे, कमल माहि भमरो रमि ।
 सही कामनी रे, निचसूं संग करिसिमि ॥१२॥
 कमल तरौ रे, सोभा तव क्षय पामीई ।
 जिम अयसनी रे, विद्या सरीखी वामई ॥१३॥
 ममे भमरा रे, दीन थया विलखे धरूं ।
 जिम विद्वांस रे, कुजन माहि पामे दीन धरूं ॥१४॥
 अंधकार ए रे, लोकनि पीडि पापीयो ।
 जिम कुस्थिती रे, भूप धरूं लोभि आपीयो ॥१५॥
 सह लोकनारे, नयन तदा नीकसा होवां ॥
 जिम कृपणनाए, जनम बली धन सांचवा ॥१६॥
 तव दीबी रे, ठाम ठाम धरूं प्रगट ई ॥
 अंधकारनी रे, व्याप्त ते वारें विघटई ॥१७॥
 जिम जिनवाणी रे, ज्ञान कीरणि करी व्यापती ॥
 धरूं करी रे, मिथ्या तीमरनि का पती ॥१८॥

चन्द्रोदय वरणेन

तीणि अवसरि रे, ऊयो पूनम चांदलो ॥
 पूरव दिसा रे, नारी सिर जाणो चांदलो ॥१९॥

जागो उज्ज्वल रे, पूंज दीसि कपूर नो ॥
 छे समरथ रे, ताप निवारवा सूर नो ॥२०॥
 पूरव दिसे रे, ए नारी मुक्त अक्षायं करे ॥
 समी श्रीफलरे, नक्षत्र तारा तंदुल घरे ॥२१॥
 पूरव दसि रे, गुफा यको ए नीसरी ॥
 गगन बनें रे, संचरयो गशी केसरी ॥२२॥
 किरण नखे रे, अंधकार गज विदारयो ॥
 जागो तारा रे, मुक्ताफल विस्तारयो ॥२३॥
 उन्मु चांदसु रे, अवनीयि जागो गरुडी ॥
 काम सापनें रे, जगावि कीरणे लाकडी ॥२४॥
 अथवा ससि रे, जागो नीसाणा नोखंडो ॥
 बांग छूटडारे, बसिए काम पुलंदडो ॥२५॥
 गशी सीतल रे, भमृत मय कहिवाडतो ॥
 लांछन मसिरे, हर दह्यो काम जी मलतो ॥२६॥
 देखी वयरहणी रे, संताप पामी अतघणी ॥
 चन्द्रप्रति रे, कहिवा लागी सेह भरी ॥२७॥
 गशी सीतल रे, बाह सकल ए किहो हती ॥
 केहर गले रे, विस्ततणी हृषि संगती ॥२८॥
 सायर माहि रे, बडबानल धी सीखीयो ॥
 तूं कलंकीय रे, दोखाकर जड लेखीयो ॥२९॥
 तूं कूमुदनी रे, साथि खेलि मन रली ॥
 गोख जालीयि रे, परस्त्रीनि छवे वली ॥३०॥
 मयासडे रे, भमृत पीतां पतिविब नु ॥
 तूं नालज रे, परनारी मुख, चंबनु ॥३१॥
 सायर मधीरे, फोकें देवि ऊपाइयो ॥
 छई खांषण रे, सायर कुल तिलजावीयो ॥३२॥
 मंघर तलि रे, सिहिजिसि नहीं चंपाइयो ॥
 अगस्त तणी रे, अंजलीसि न पीवाईयो ॥३३॥

एणि परें रे, व्यरहणी ससी सूं खीजती ।
संजोगणी रे, किरण लागि घणूं रीभली ॥३४॥

बूहा

तव मे सभा सज्जन सहू, आवेस्या नीज ठाम ।
हूं उठयो ऊताबलो, मनिम्हा अमृता नाम ॥१॥
रसनदंज बरतीणि समि, कंचूकी आव्यो जेम ॥
अमृता अवासि पधारीयि, हरष उपनो मुक्त तेम ॥२॥
भूख्यो दिन बिष्मार नु, पंचामृत लहि जेम ॥
तरसो सीतोदकि लहि, हरष उपनु मुक्त तेम ॥३॥
तावडि घणूं संतापनो, फलो तह लहि जेम ।
बिनयबली दान गुण लहि, हरष ऊपनो मुक्त तेम ॥४॥
रूपवंत निवली भण्यो, भण्यो दिनग दुख जेम ॥
बिनय बली दान गुण लहि, हरष ऊपनो मुक्त तेम ॥५॥
दूध बली साकर भली, मूदो मली मरि जेम ॥
घन अथि निधि पामयो, हरष ऊपनु मुक्त तेम ॥६॥
श्रीमंतः परमेष्ठिनो मृशमुपाध्यायाः कृताध्यापकाः ॥
शिष्याणां प्रतिशिष्यकादिभुनिनामेकादशांगानि च ॥
पूर्वाण्येक चतुर्दशादृतदुगाचाराः पठंतः सदा ॥
श्रीदेवेन्द्रसविक्रमस्तुतपदाः कुर्वन्तु वो मंगलं ॥१॥
इति यशोधरमहाराजचरिते रासबुद्धामणी काव्यप्रतिष्ठदे
बुदेवकवि श्रीविक्रमसुप्त देवेन्द्रविरचिते
वसंतक्रीडाराजसभास्थिति प्रगटित विरहपट्टराजीवर्णन
सूर्यास्तचन्द्रोदयवर्णनो नाम चतुर्थोऽधिकारः ॥४॥

पंचम अधिकार

भास आणंदाजी

क्रीडा वर्णन

तबहुं जाल्यो रंग भरी । आणंदारे । मध्यधवल वरजाहि तो ।
अंगरक्ष साथि सही । आः पोत उलंघी चाहितो ॥१॥

हूं चढयो देखी पोलि ।आ०१ बालया दृष्ट धनेक तो ।
 जोसी बँद विदुष जन ।आ०१ विनय सहीत सुवीनेक तो ॥२॥
 बीजी भोम्ब सोहामणी ।आ०१ नील रत्न तणी सार तो ॥
 संगीत जाण बीलावीया ।आ०१ गायकी भाव्य उदार तो ॥३॥
 बीजी भोम्ब तेज धरूं ।आ०१ पीला रत्न में जोयतो ॥
 जंजधारणी जंज बाय ।आ०१ सुणतां हरष वह होव तो ॥४॥
 चुधी भोम्ब उहुसाससूं ।आ०१ स्याम रत्न मय जाणतु ॥
 रतनदीप भदकें धरा ।आ०१ चढयो सुणतां बंस बाण तो ॥५॥
 राता रत्न तणी पांचमी ।आ०१ चढयो हूं सुरसालतो ॥
 ज्याहां मोली ना भूकका ।आ०१ राता जाण परवालतो ॥६॥
 फटिकतरणी छठी मही ।आ०१ दीठी निज प्रतिधायतो ॥
 जाणो हृदयनि मणी वली ।आ०१ कटी तणी घंग न माय तो ॥७॥
 सातमी मही सोहो जली ।आ०१ पंचरत्न मय जंग तो ॥
 पंचवरण स्वस्तिक मला ।आ०१ अनेक चित्रामण रंग तो ॥८॥
 तीहां चढयो हूं रंग भरयो ।आ०१ धरयो दूवारकी हाथ तु ॥
 सही सहूए जय जय कीयो ।आ०१ तिहाथी चाल्यो सहू साथ तो ॥९॥
 आठमी भोम अनोपम ।आ०१ उपरि अनेक चित्रामतो ।
 राता रत्न भीत मली ।आ०१ अमूल रत्न मया ठाम तु ॥१०॥
 तिहां चढयो हूं घसममी ।आ०१ हसीत वदन हबो जाण तु ।
 जाणो नीधान में पामीयूं ।आ०१ अथवा अमृत वरवाण तो ॥११॥
 अमृतमतीइ जाणो यूं ।आ०१ मंदिरे पञ्चारा राय तु ॥
 बंटा धणी बज्जकावती ।आ०१ आवनी साहामी ऊहाय तो ॥१२॥
 बीछीयडा भूमकावती ।आ०१ नेसर तो धमकार तु ॥
 हंस गमणी जाणो हंसली ।आ०१ हूं हंसप्रति आवे सार तो ॥१३॥
 कटी मेखला खलकावती ।आ०१ पातलडी तिहलंकतो ॥
 यजपामिनी जाणो हस्तीनी ।आ०१ हूं हस्ती प्रांत अवलहेकतो ॥१४॥
 स्तन भारी धरूं नमी रही ।आ०१ नीतंज भारें धरूं लीनतो ॥
 धसी आवती रखे नूटती ।आ०१ कटी भणी मांढि बीहूं मग्नतो ॥१५॥
 उदवर हार लिहिकावती ।आ०१ खलकावती चुडी हाथ तो ॥
 हसती हे जिहें या तणि ।आ०१ बेगलिदे वामू सुजापतो ॥१६॥

नयन बाण धरूं नाराती ।आ०। नयन क्षोभावती मूर तु ॥
 बदन शशी एह देखता ।आ०। विरह संताप गुणु दूरतु ॥१७॥
 काने कुंडल झलकावती ।आ०। सेमफूल फूली उद्योत तो ॥
 वेणी गोफणो लहिकावती ।आ०। राखडी रतनुहु जोततो ॥१८॥
 बदन मुभ गुणगावती ।आ०। भावती जय जय वार तु ।
 आवती हूं आलंघीये ।आ०। लेई वाली करसाण तु ॥१९॥
 रतनपलंग छत्री घालो ।आ०। हंसतूलका पडि रंग तो ॥
 कर धरी शेजि हे जिसूं ।आ०। विनय भूं उनी उत्तंग तो ॥२०॥
 ।आ०। लीधी तब तेणी वार तु ॥ आशुंदारे
 चीर छोडता लाजंती ।आ०। रतन दीके फूतकार तु ॥२१॥
 विफलधया कमलें हृष्या ।आ०। तेहूं नदीवानर्य देवाय तो ॥
 मान मोडाइ माननी ।आ०। रही मुक्त सूं तनु लायतो ॥२२॥
 भेद चुरासीं आसन ।आ०। कीधो तब संभोग तो ॥
 नख दीक्षा जे स्तन परी ।आ०। काम प्रसस्ति जाणो जोग तो ॥२३॥
 अघर खंडते ऊपतु ।आ०। कोमध्वजाए लंछन तु ॥
 हृदय हृदय मुख परीमुख ।आ०। तनु करी भीडधो तन्र तो ॥२४॥
 गारु आलंघन देयतां ।आ०। मनपरि तनु महां पेठतो ॥
 विपरीत मुरत खेलतां ।आ०। बीजपेर चपल ते दीठतो ॥२५॥
 अमृता मालती महालली ।आ०। हूं भभरो इम जोयतो ॥
 अमृता जाणो कमलणी ।आ०। हूं मकरंद सम होयतो ॥२६॥
 अमृता चंदन छोडूड ॥आ०। हूं भोगी इम जाण तु ॥
 अमृता सरस तलावडी ।आ०। हूं मेगल बलाण तु ॥२७॥
 अमृता जाणो वीजली ।आ०। हूं वली मेघ समान तो ॥
 अमृता जाणो मीठी भाखडी ।आ०। हूं जाणो मंडपवान तु ॥२८॥
 अमृता ए कल्प खेलडी ।आ०। हूं कल्पवृक्ष विचार तु ॥
 अमृता रती रमती रुडी ।आ०। हूं कामह अवतार तु ॥२९॥
 इम मुरत सुख भोगयतां ।आ०। परसेनश्रम लीनतो ॥
 हूं सुतो तब रंगभरी ।आ०। अमृता कंठे कर दीन तो ॥३०॥
 तेण गुण क्षण क्षण पीतबूं ।आ०। मुरतकला प्रेम भाग तो ॥
 अजर नार उपर नीडडी ।आ०। भाव वान लहे लागतो ॥३१॥

बाई अजीतमती एवं उसके समकालीन कवि

प्रभात समय हूँ कुँआर ने । आ०। आपी संसयज राज भार तु ।
 अमृता घिरहूँ खिर रहूँ । आ०। भोग भोगवूँ सुविचार तो ॥३२॥
 राम ए नीद्रावश थयो भयो । आ०। जाखी नीसरी समे तेरा तु ॥
 मुजपंजर थी चंचली । आ०। काजलीथी यम न गए तु ॥३३॥

वूहा

अमृतमती का कुबड़े के पास जाना

तब हू मने आचंभीयो, ऐसी वेला किहां जाय ।
 अघलाए चली एकली, कुण कारण कुण ठाय ॥१॥
 तब सेज्याधु उठयो, घाल्यो हूँ तेह साथि ।
 उठे ग्रंथार । छेउ थो । खलन चलयूँ निज दाथ ॥२॥
 सनें समे ते नीसरी, कमाळ युगम उघाड ।
 मारीदस अवधारिये, रही कुबडो उठाड ॥३॥

मास जीवडानी

रामदेसाख, नगर घुलारा हो लोक नी कालि ।

कुबड़े के शरीर का वर्णन

कालो कोडी कसमलो हो । बठिला काजले वान ॥
 लूयो कांयस समान । काम केगी चांच मुखो हो ।
 नारी अनरथ कूरडी । हो । नारी नाखे संसार हो जीवडा ॥१॥
 हो जीवडा जूड जूड नारी वीचार ॥
 पग आंगली ठाम नही हो । घुटी घूटण मान ।
 घूहडनी पिरि बर बरि हो । चासतु रीख समान । हो जीवडा ॥२॥
 उभे घूटण जब बेसें हो । तबछ माथां देखाय ॥
 कोट केधी दीसि नही हो । दोय माथा छि सहाय ॥ हो जी० ॥३॥
 रोम जसा कांटा समा हो । जांघ ए बाउल खांभ ॥
 पेठ मोटूँ रु डोल समो हो । पिर पिर पाषाल डांभ हो जी० ॥४॥
 बटीरांफडा मुख समी हो । हैया मुखे खयो षाड ॥
 हाथ सूका मोटी नसा हो । तुनु दव बलयु भाड । हो जी० ॥५॥
 थोह कल्या काठ खंड खभा हो । वांसो ऊटनी समान ॥
 कडि भांगिद गले बल्यो । जाणे हुं डक संस्थान ॥ हो जी० ॥६॥
 कान कोह्यां जाणे सुपडां हो । नाक बाकिणी नू टोच ।
 धडे खाडो जीयर मोटां हो । आगलि दीसि जब हो । जी० ॥७॥

आंख ऊड़ी कुंड़ी पड़ी हो । भमरी भेदन जगाय ।
 पांमणि पण पापी त्यजो हो । ए पांमणी नेह लाय । हो जी ॥८॥
 आँ बरस हाँस लभा हो । कोई बाँह काँही माहि ॥
 मुख दुरगंध रहिवाय नहीं हो । होठ तणो नहीं माहि ॥ हो जी० ॥९॥
 कपाल ऊड़ूं सीप समू हो । नहीं बली सीसमू आल ॥
 माथूं जाणे कागि टूँफू । कोखा करद सुगल ॥ हो जी० ॥१०॥
 हाथीनि भूति हाथ बत्या हो । आँगली गली गई जाण ॥
 जाणे बल्यु ए थाँभ हो । भारिदल सुणो वार हो जी० ॥११॥
 कह्यु कूतरो निकाने कीडा । सुँडो नि भूपाल ॥
 अधमाने अध्याँ बोलु हो । तेहनूँ मोदूँ बाल ॥ हो जी ॥१२॥
 पगफाटा जिम भाँवडा हो । हलना पड्या बाहाल ॥
 पायतलाँ सी जागव्यु हो । तेऊ थो जिमकाल ॥ हो जी० ॥१३॥

रानी का कुबड़े से निवेदन करना

राणी परती बोलियो हो । कटण वचन बीकराल ।
 काँ असुरी भावई हो । मोटें भाली ततकाज । हो जी० ॥१४॥
 श्रीमे धपोई हीकें करी हो । पगधरी तारणी चाहि ॥
 कुं अली पातली लह्नी जिम हो । चंद्रकला नितराहें । हो० । जू ॥१५॥
 बली बोल्यो ते कुबड़ो हो । कायन बोलि नार ।
 शिरनामी पायें घरुं हो । तुम मन माँहि बिचार ॥ हो जी० ॥१६॥
 हास सहित बोल साँभली हो । ते बली बोली वार ॥
 राय ते मूरु घेरह आवयो हो । तेणि दार लागी जाण । हो जी० ॥१७॥
 राजा जो पहरो मरि हो । तो न जीतहूँ नार ।
 स्वामीनी तो भगत करुं हो । मझयो कोप निवार । हो जी० ॥१८॥
 हूँ तुम पगनी धारो ईही । तुं मुझ हे या हार ।
 हूँ तुमनी दासी समी हो । तूँ मुझ काम अवतार ॥ हो जी० ॥१९॥
 हूँ तुम ऊजीठा समी ए । तुं मुझ मुख तंबोल ॥
 हूँ छूँ पतंग तूँ मझ मन हो । वस्त्ररंगे वा चोल ॥ हो जी० ॥२०॥
 तूँ मुझ मनैं करकंकर हो । हूँ मुझ चरण हरेण ॥
 तूँ मुझ कोटि काटनो हो । को पत कबण गणैण ॥ हो जी० ॥२१॥

तूँ मुझ सिरें सेसफूल समो हो । तूँ मुझ गोफणो बेरा ॥
 हूँ तुझ किकर किकरी हो । कोपते कठरा गुणोण ॥हो जी०॥२३॥
 तूँ मुझ कंठ टोडर समो हो । मुझ गुण सुख छे जेरा ॥
 गुणसागर तूँ नाही लाहो । कोपते कवरा गुणोण ॥हो जी०॥२४॥
 तूँ मुझ जीवतो जीवन हो, तूँ मुझ योवन जेरा ॥
 तूँ मुझ तनु सणगार सही हो, कोपते कवरा गुणोण ॥होजी०॥२५॥
 तब ते झुवडी हरषीयो हो, जाणी नारी अंतरंग ॥
 ते नारी तेणि आदरीं हो, भोग भोगवि मनरंग ॥होजी०॥२६॥
 तब हूँ मन मांदि चीतबूँ हो, विग भिग नारी एह ॥
 हूँसरीखो राय परहरी हो, नीच सून मांडयो नेह ॥होजी०॥२७॥

नारी चरित्र

नारी चरित्र सायर समु हो, कोथ न जाणि पार ॥
 हाथ धरें पण थीर नही हो, पारा रस सम नार ॥हो जी०॥२८॥
 नारी नदी बेहू समी हो, सहजे नीचा संग ।
 गोत्र उपनी सायर करी हो, मल भरयो तुहल सूरंग ॥हो जी०॥२९॥
 जनें दावानल दीपयो हो, सूकूँ नीलूँ नव्य जोय ॥
 तीम कामनी कामे बली हो, ऊच नीच नव्य अवलोय ॥होजी०॥३०॥
 नारी निवली बेलडी हो, ए बेहु एक सभाय ॥
 भोटा तरुनि अवगणी हो, बाड भांखरां पिरभाव ॥होजी०॥३१॥
 नदी घणी सायर ते मलि हो, तो हू ते ठालो अपार ॥
 नारी नर बहूगूँ रमि हो, तुह नुहि वृषत लगार ॥होजी०॥३२॥
 जिम जम जग जननें ग्रसतो हो, तोह न हो संतोष ॥
 तम नारी बहू नर साथि हो, रमतां अधिक होइ सोख ॥होजी०॥३३॥
 न्याये नारी ए कूवि पडि हो, न्याय घालि गलि पास ॥
 साहासि सूरि सिद्धिजि हो, माया तणो निवास ॥होजी०॥३४॥
 कूड कपट जूठा तणी हो, नारी ए मोटी खार ॥
 बापड़ा नर नै भोलवती हो, धूति सीठी वार ॥होजी०॥३५॥
 नारी दीखनी बेलडी हो, नारी अनरथ ठाम ॥
 नारी नरकनी बाटडी हो, नारी बीवन आराम ॥होजी०॥३६॥

नारी बाधण बध बधती हो, नारी अशुची नीधान ॥
 नारी प्रत्यक्ष राक्षसी हो, प्रसती मन तनु बात ॥होजी०॥३७॥
 नारी पापनु पोढी हो, नारी लोभनु पुंज ॥
 नारी नामि व्यंतरी हो, खाती नरनि सुंज ॥होजी०॥३८॥

बूझा

नारी अन्धा देखी करी, कोप उपनु अपार ॥
 ए बेहूनि हविहूँ हरां, हेयि एहवूँ विचार ॥१॥

राजा द्वारा तलवार निकालना और पुनः शान्त होना

खड्ग काढयो पडी आरयो, बली बीचार मन लीन ॥
 आ अबला अवध कहीं, ए कुबड़ो भृत दीन ॥२॥
 एह हथ्यो मझ ऊपज सहसि, काई न सीम सि काज ॥
 खड्ग साहसूँ बली जोड़ुँ, मारिदत्त सणो राज ॥३॥

मास नरसुआनी

खड्ग के गुण

तब खड्गह गुण चीतवूँ ए । नारे सूधा रण आंगण बीकराल ॥
 अरी दल मलि अती घरां ए । जाणीइ कोप्यो काल ॥१॥
 रणभेरी रणकाहल ए । ना० वाजि जय रण तूर ॥
 तब मझ हाथि उलसतो ए । ना० जाणो रोमांच्यो सूर ॥२॥
 अपल तोरंगम काय बेगी । ना० अपल साधकहूँ अपार ॥
 सनाहि हूँ जाणो मेघलो ए । ना० खड्ग बीज भनकार ॥३॥
 खड्ग ए जाणो तीरथ ए । ना० घारा बहु नीर ठाहि ॥
 द्विजनि देता धन तनु कापी । ना० अरि हरि हरि करी नाहि ॥४॥
 खड्ग जाणो राहु समुए । ना० कालो तेह बीकराल ॥
 मूख्यो अक्षि बेरी तरां ए । ना० राजमंडल ततकाल ॥५॥
 खड्ग जाणो सही मेघलो ए । ना० घारानल वरसाय ॥
 भीना बीना बली नाहा सता ए । ना० राजहंस कोतरे जाय ॥६॥
 खड्ग जाणो जम जीभडी ए । ना० लल लल लांबी होय ॥
 मोटा कुटा लोटो बेरीडाए । ना० सुभटां चाटती जोय ॥७॥
 प्रताप बैश्वानरि वगवर्णिए । ना० खड्गए मोटी पास ॥
 हूँ सूरसही अरी दम कही ए । ना० धीज काजि चाटि ऊदास ॥८॥

खडग करि धरयो बूजिइ ए ।ना०। राणि अरी अण सवाद ॥
 वरी रुधीर पीप्रंतडाए ।ना०। सीस धूणी वषाणि संवाद ॥१८॥
 खडग ए तेजनो पूजलोए ।ना०। भवकि भवकि ए भूर ॥
 तेज सही नहीं सकिए ।ना०। गगनि पीरि नील भूर ॥१९॥
 खडग ए मोटो दीवडो ए ।ना०। अरीअण सोखि अंग ॥
 तेज तेहनूँ सहि नही ए ।ना०। पडि बेरी पतंग ॥११॥
 खडग दीवा काजल रेखाए ।ना०। काली रणाणि जोय ॥
 तेह देखि अछिइए सुख ए ।ना०। बाली गुनगुनी होय ॥१२॥
 रुधीर भरयो हय गय तरीए ॥ना०। रण सागर परचंड ॥
 तीहा विरोदल बूझाए ।ना०। खडग एम करंड ॥१३॥
 खडग भडके भुंयि द्रम द्रमइ ए ॥ना०॥ कम कमि कायर कोड ॥
 पडघायि गीरीवर असिए ।ना०। मझधर वानूँ धायि कोड ॥१४॥
 खडग सहलि संजोगथी ए ।ना०। ऊडि अग्नी फूलींग ॥
 संग्राम खेच रुधीरि सींचू ए ॥ना०। प्रताप बीज बाबू चंग ॥१५॥
 खडगमाहि प्रतिबिंबऊ ए ।ना०। हूँ सोहूँ रण भोमि ॥
 जय लक्ष्मीवर बाजणेण ।ना०। नील वस्त्र बीटयो जिम ॥१६॥
 विरी करी कुंभस्यल ए ।ना०। भेंदया खडगि जाणि ॥
 मंगलकाजि ए खडगनि ए ।ना०। मोती भडें हबूँ स्नान ॥१७॥
 हूँ ए हबो प्रतापियो ए ।ना०। खडगए हबो विसाल ॥
 किम हणूँ एणि करी ए ।ना०। कूबडो ए अबला बाल ॥१८॥

राजा का चिन्तन

कोप्यो जुह बहु सिंहलो ए ।ना०। पण नव्य हरि सीअल ॥
 तिम हूँ कोप्यो किम हणूँ ए ।ना०। कूबडोए अबला बाल ॥१९॥
 कोप्यो सूर संग्राम माहिए ।ना०। न होए ना हाठानो काल ॥
 तिम हूँ कोप्यो किम हणूँ ए ।ना०। कूबडो ए अबला बाल ॥२०॥
 प्रचंड वायु तृण नव्य ऊखेडे ।ना०। जेसर पाडिऊ माल ॥
 तिमहूँ कोप्यो किम हणूँ ए ।ना०। कूबडो ए अबला बाल ॥२१॥
 ससलासूँ हाथी धामिनहीए ।ना०। जे पाडि गिरीवर माल ॥
 तिम हूँ कोप्यो किम हणूँ ए ।ना०। कूबडो ए अबला बाल ॥२२॥
 वाघवकारयो बीर सुंवाडिए ।ना०। स्वान सूँ नव्य द्वीपि माल ॥
 तीमहूँ कोप्यो किम हणूँ ए ।ना०। कूबडो ए अबला बाल ॥२३॥

फूफूतो फणपती जेम ए ।ना०। वलमें नही जल ब्याल ॥
 तिम हूँ कोप्यो किम हणूँ ए ।ना०। कूबडो ए अबला बाल ॥२४॥
 बिद्या विनोदी बादोयाए ।ना०। जडसू न जापि विशाल ॥
 तिम हूँ कोप्यो किम हणूँ ए ।ना०। कूबडो ए अबला बाल ॥२५॥
 अग्नी आऊ पेर नभ्य कोपे ए ।ना०। बंद तेज छे रसाल ॥
 तिमहूँ कोप्यो किम हणूँ ए ।ना०। कूबडो ए अबला बाल ॥२६॥
 अ'द्वयज्ज गीरीवर मोडे ए ।ना०। नभ्य ऊकरडा पराल ॥
 तिमहूँ कोप्यो किम हणूँ ए ।ना०। कूबडो ए अबला बाल ॥२७॥
 एम बीचारी चीत सून ए ।ना०। खडग कीधुं पडी आर ॥
 पैली चरित्र पाछु बल्यो ए ।ना०। आध्यो उपरडे तेणीवार ॥२८॥
 मोहि आवास लेख्यो प्रतिभौमि ए ।ना०। स्वर्गतणु आकार ॥
 हबें साते नरक सम लेखीए ।ना०। तूँ मारिदत्त अवधार ॥२९॥
 सेज्याँ सूनतो चीतनू ए ।ना०। नारी चरित्र अनेक ॥
 रक्ताराणीयि जे रच्यो ए ।ना०। सुणो श्रेणिक सुविदेक ॥३०॥

रक्ता राणी का कथामक

कोत्मल बेस छे रुबडो ए ।ना०। साकेता पोरी जाण ॥
 देवरति राजा तिहां रुबडो ए ।ना०। तस रक्ता राणी बखान ॥३१॥
 रंजे रमन्त रस भरी ए ।ना०। रूपयोवन फल सेय ॥
 राणी रुपि राय मोहीयो ए ।ना०। अवर न जाणि लेय ॥३२॥
 अनेक राजा उलमें आवि ए ।ना०। क्षत्रीय केरी कोड ॥
 राय रुडो पण मोहोल नही ए ।ना०। ए तेह मोटी खोड ॥३३॥
 सामंत मंत्री अती भलाए ।ना०। सभा आव्यो कर जोड ॥
 राय रुडो पण मोहोल नही ए ।ना०। ए तेह मोटी खोड ॥
 महेता मोटा महतरा ए ।ना०। बेसे दफ्तर छोड ॥
 राय रुडो पण मोहोल नही ए ।ना०। ए तेह मोटी खोड ॥३५॥
 हाथी घोडा रथ घणा ए ।ना०। पाला बहू करे दोड ॥
 रारा रुडो पण मोहोल नही ए ।ना०। ए तेह मोटी खोड ॥३६॥
 ठाम ठाम ना लेख घणा ए ।ना०। भेटणाँ आवि कोड ॥
 राय रुडो पण मोहोल नही ए ।ना०। ए तेह मोटी खोड ॥३७॥
 सीमाडी वेरी राजीवा ए ।ना०। जाय नयर पुर मोड ॥
 राय रुडो पण मोहोल नही ए ।ना०। ए तेह मोटी खोड ॥३८॥

परचारि परधान पाठव्यो ए । ना० । पोहोतु ते आकास ॥
 दूर थको राय बीनव्यो ए । ना० । मधुरीय सु लज्जित भास ॥३६॥
 राय वचन अवधारीइ ए । ना० । बीनवे तह्यनि परीवार ॥
 मोहोल देई संभालीयि ए । ना० । देश प्रजा सुविचार ॥४०॥
 सूर ऊम्या बेण जेम व्यापे ए । ना० । चोरटा वणू अंधकार ॥
 तिम स्वामी मोहोल बीना ए । ना० । लोक पीडयि अपार ॥४१॥
 मंदिर मोटां माली आए । दीप बिना दुःखकार ॥
 तिम स्वामी मोहोल बीना ए । ना० । लोक पीडयि अपार ॥४२॥
 मंदिर नवनीधी भरवू ए । पुत्र बिना दुःख भार ॥
 तिम स्वामी मोहोल बिना ए । ना० । लोक पीडयि अपार ॥४३॥
 पुत्र पीशादि कुटुंब वणू ए । ना० । धन बिण दुःख विचार ॥
 तिम स्वामी मोहोल बिना ए । ना० । लोक पीडयि अपार ॥४४॥
 बहू सणगारी गोरडीए । ना० । विण नयणांजन सार ॥
 तिम स्वामी मोहोल बिना ए । ना० । लोक पीडय अपार ॥४५॥
 देस सीमाडा राजीया ए । ना० । भाजि पाटण पुर रांभ ॥
 प्रजा उपरी दया करिण । ना० । मोहोल दीयो अभिराम ॥४६॥
 तब राणीसूं विचारीयूं ए । ना० । राणी किहि सुणो राय ॥
 तह्य दीठा विण क्षण एक ए । ना० । नव्य रहिवाय जीवाय ॥४७॥
 तब राय प्रधान प्रति किहिए । ना० । संभालो तह्यो राज ॥
 लोकनी रक्षा तह्यो करो ए । ना० । अहारि नहीं राज काज ॥४८॥
 मंत्री किहि राज दूध घट ए । ना० । वनयोगी सबे मांजार ॥
 किम तेहनि दूध मालवो ए । ना० । राजन हृदय विचार ॥४९॥
 राय किहि राजषय नहीं ए । ना० । नारी सूं छि भूक्त काज ॥
 किहि मंत्री तुह्य एम ममिए । ना० । तो राज मूको राज ॥५०॥
 तब नारी मोह्यो राजीयो ए । ना० । राज तजी साधि नारि ॥
 रतन मोती साधि लीयाए । ना० । चात्यो अटवी मकार ॥५१॥
 रक्तासू रंगि रमें ए । ना० । भमि अनेरे देश ।
 यमुना नदी कांठि ऊपवन ए । ना० । तिहां ऊतरयो नरेस ॥५२॥
 सीलांतह भर छोहोडी ए । ना० । रक्ता घोल सीरमेहेल ॥
 भांत राजा तिहां बीसभ्यो ए । ना० । निद्रा प्रावीते बेल ॥५३॥

बाजीयेरैहेटज हाकतो ए । ना० । दंगु अपंग अपार ॥
 तेहनुं गांन सांभली घणूं ए । ना० । रक्ता बेषी गमार ॥५४॥
 तीहां जै पांगलो जोईयो ए । ना० । बोली नीलजते वार ॥
 तूं भुभु खु अंगीकरिए । ना० । तो हूं होऊ तुभु नार ॥५५॥
 तब द्रढो आबी राय कह्ले ए । ना० । दात करि बरी खेद ॥
 राज विना किम कीजीयिए । ना० । बरस गांठना भेद ॥५६॥
 राम कहि ते बिघ कहोए । ना० । कीजि जमरावार ॥
 महोछवि तहानि बधावीइ ए । ना० । कोटि मालीयि फूल हार ॥५७॥
 तब नगर लोकनो हो तरुणुए । ना० । लोक जमें अपार ॥
 रक्ताधिहार रच्यो बलीए । ना० । पास सरखी विचार ॥५८॥
 बलीं एकव्रत मांनियू ए । ना० । तंदू व्रत एम जाण ॥
 तांत घांणी तह्य बांध सूं ए । ना० । नदी कंठे बीऊ पग हांण ॥५९॥
 राय रीझयो सामग्री मेनीए । ना० । अंगूठां कंठसूं तदी कंठ ॥
 हसतीयि रायदुड बांधीयो ए । ना० । पायहण्यो तेणें उलंठ ॥६०॥
 पोतें तीलक करी बधावीयो ए । ना० । कंठे घाल्यु पास हार ॥
 कंठे घाली ते ताणीयो ए । ना० । पास गति बिडो ते बार ॥६१॥
 तब राय नदी माहि नाखायो ए । ना० । गई रक्ता पांगला पाज ॥
 चालि बीहिलो ह्वि जाईयिए । ना० । मम चूकसनीज भास ॥६२॥
 तब ते सीयि आण्यो टोपलो ए । ना० । पांगलो शीर पेर लेय ॥
 गाम गाम भमती करि ए । ना० । सती सती एह कहिए ॥६३॥
 लोक मानि अग्न्यानीया ए । ना० । पग पीलें शीर कुंकुलाय ॥
 भली भली भोली भरिए । ना० । केता कहि माय भाय ॥६४॥
 मायाबिणी मुख भोगविए । ना० । पांगला सू दीन राति ॥
 लोकय माडि वस्त्र दीयिए । ना० । ए रही अहीयि वात ॥६५॥
 तांत जोडी तेह माछले ए । ना० । राय तरी पाम्यो पार ॥
 मंगलपुर राज पामीयो ए । ना० । राजपालि बीण नार ॥६६॥
 रक्ताआबी तेणु पोरें ए । ना० । लोक पाम्यो आशंस ॥
 राजभुवनें तेडी बलीए । ना० । बोली ते धरी दंभ ॥६७॥
 राय बोलि ते उलखीयिए । ना० । सही अ सती यिम जाण ॥
 भेद बही शीरक्त हबो ए । ना० । संसार दुख मन आण ॥६८॥

धरीत्र चीतवूँ बीरवती तरणूँ ए । ना० । राजग्रहे धनमित्र साह ॥
धारिणी तस सुत दस नाम ए । ना० । बली भूमि छहपुरी माहि ॥६६॥

बीरवती कथानक

आनंद साह तिहो बसिए । ना० । बीरवती तस नामि ॥
तस पुत्री सुवेवाहयोए । ना० । दसनामा कुमार ॥७०॥
बीरवती नाम तेह तरणूँ ए । ना० । सुखि रहि परीवार ॥
एक समि साहा मरि गयो ए । ना० । धन पण गयो अपार ॥७१॥
दत्तकुमार दुःखी हवो ए । ना० । पीहरि भूँकी नार ॥
धन काजें ते चालयो ए । ना० । रतनद्वीप सेणी वार ॥७२॥
बीरवती ग्रन्था करे ए । ना० । पाप जोडे बिकराल ॥
भंगारक सूनू सुख भोगबि ए । ना० । ए मती बमि घरणे काल ॥७३॥
व्यसनी चोरी करंतरणो ए । ना० । धरयो ते कोटवाल ॥
भूली दीधु ते पापीयो ए । ना० । पाप कल्यो तस काल ॥७४॥
बीरवती नो जार सही ए । ना० । बीरवती मोहि जाण ॥
तेह मल्हाविण तेहनो ए । ना० । जीवन जाय वरवाण ॥७५॥
सेणि काहाव्युँ बीरवती प्रति ए । ना० । तुभ विण प्राप्त न जाय ॥
बीरवती भलधा तरणो ए । ना० । चीतवें तब ऊपाय ॥७६॥
सब उदम करो भावीयो ए । ना० । बीरवती भरतार ॥
सजन सह आनंदीयूँ ए । ना० । हज ओ प्रोहोणा चार ॥७७॥
निशि बेहू सूनूँ सेजडीए । ना० । सुतो नाह लहेय ॥
बीरवती चाली जार भणीए । ना० । हाथें खडग घरेख ॥७८॥
सहस्रभट जोर कीतकी ए । ना० । एणी बेला ए नार ॥
कवण ठाम जामिते जोऊँ ए । ना० । भूठि चालयो सेणी वार ॥७९॥
बडमान चापेंसंच लखो ए । ना० । खाँचे यो फेरघु खडग ॥
घणिक आंगली बढाईपडीए । ना० । बडबाईमि पण लग ॥८०॥
बेनें मसाण माहि येईए । ना० । जारनें नव्य पोहोचाय ॥
उपेर उपेर मडां बरीए । ना० । नार आलंची काय ॥८१॥
आर कहि सुबन करोए । ना० । तेह मुखें अधर देखंत ॥
जीव गयो तेह जोर नु ए । ना० । भीडायो दूढ तेह बंत ॥८२॥

पनधी मडोव सीपड्या ए । ना० । पडी भोमे ते नार ॥
 होठ चोरनें मुखें रह्यो ए । ना० । नारी भावी घर बार ॥८३॥
 नाह कहने सूती क्षणी ए । ना० । करी उठी पोकार ॥
 ईसो होठ मझ खंड कीयो ए । ना० । हवो कोलाहल अपार ॥८४॥
 परभातेँ राय जाणीयूँ ए । ना० । बीरवती भरतार ॥
 बीरवई कही काठधो मारवाए । ना० । नख्य जीधो न्याय विचार ॥८५॥
 तब चोरें राय वीनव्यो ए । ना० । देखाइयो अंगली छेद ॥
 नारी चरित्र को नख्य लहिए । ना० । कह्यो हवो जे भेद ॥८६॥
 तब राखें सेवक भोकल्या ए । ना० । चोर तरां मुख जोय ॥
 उष्ट काढी राघनें देख्यो ए । ना० । आखम धम्यत सहू कोय ॥८७॥
 नारीनें दंड कीधो वणो ए । ना० । साहनें दीधूँ मान ॥
 गोपवती चरित्र चीतवूँ ए । ना० । मारीदत सुणो सुजास ॥८८॥

गोपवती कथानक

वर ध्यान देश छि हवडो ए । ना० । पलाशग्राम पुर नाम ॥
 सिंह बल अवीति वसे ए । ना० । तस नारी अमीराम ॥८९॥
 गोपवती नाम तेह तरां ए । ना० । रूपसोभाग अपार ॥
 सिंहबल क्षत्री तिहां गयो ए । ना० । सेवा काजि विचार ॥९०॥
 पद्मपुर त्याहा श्री केगल्युँ ए । ना० । भूसिंह सेन तिहां राय ॥
 बलभा राणी तेह तरां ए । ना० । पुत्री तेहनें गुण ठाय ॥९१॥
 सुभद्रा छिनाम तेह तरां ए । ना० । सोहि अती ही अपार ॥
 सिंह सेवानि आवीयो ए । ना० । सहस्र भट्ट भूभार ॥९२॥
 भूसिंह सेननें भेटीयो ए । ना० । रायदीधूँ बहू मान ॥
 नाम ठाम दीधा भला ए । ना० । कुँअरी दीवी निधान ॥९३॥
 ते सार्धे मुख भोगवि ए । ना० । बीसरवो ते नीज नार ॥
 दीवस घरों नेणी जाणीयूँ ए । ना० । नाह तसो विचार ॥९४॥
 तब ते कोप चडी घणूँ ए । ना० । आवो तीहां ते जोय ॥
 भेद भाल्या सहू नाहना ए । ना० । गोपवती छांती होय ॥९५॥
 घर उपरि चडी करीए । ना० । ऊतरी करडी मांहि ॥
 सोय कसीर छेदी लेईए । ना० । तिम आवी निज ठाह ॥९६॥

सिंहबल तब जामीयोए । ना० । नारी नूं सीर मध्य दीठ ॥
 कमाइ दीधां देखी करीए । ना० । मनि आर्कभ परीठ ॥६७॥
 आलसूऊपेर आकसि ए । ना० । इम जाणी माहाठो ताम ॥
 अकित थयो मनि चीतवे ए । ना० । घाव्यो ते निज गाम ॥६८॥
 नारी कपटि वीनय करे ए । ना० । स्नान भोजन प्रकाश ॥
 जमता कोल करे चरीए । ना० । रात्र आशंभ बिचार ॥६९॥
 तब ते गोपवती बदिए । ना० । अन्न न आवि माय ॥
 इम कही सिरभाणि ठबीए । ना० । हवें जमो मायनि साथ ॥७०॥
 पोकर करतो तब ना सनु ए । ना० । हणयो काढी तरवार ॥
 सोर करंती रोवती ए । ना० । कोणि हणयो भरतार ॥७१॥
 नारी नूं मांघूं लावयो हतो ए । ना० । ते माटि मारधो जाणु ॥
 इम कही हर हर कही ए । ना० । बीहा माहि बली दुःख खणा ॥७२॥

वस्तु

एम चीतत एम चीतत । गई बहू रात ।
 नारी रमी आबी अघमसूं । सूती भुज पंजर पड्ठीअ ।
 मन कारण सुख दुःख तरां । पढम एह भावंत मीठीय ।
 पछे सीमल तरु समी । हखूं बेतनूं सूं अपार ।
 इम रजनी अणी नागमी । मारिदत्त अवधार ॥१॥

भास-सोल सपन नागी सनी

प्रभात वर्णन

मधुप चुंबित कुमुदनी सूरतो । चावलो जाणे नीचे पथें जातो ॥
 रजनी नारी अति चतुर सुजाणी । चंद्रमूंचीजाग्रि कलंकी जाणी ॥१॥
 चंद्र भांखो नमतो हवो पाए । अंबर अति बलगो न मनाए ॥
 जाती नारी कोहो कोणिर खाय । चंद्र रह्यो इम लही नीज ठाय ॥२॥
 जाणी राति रोती पकवई खीणी । कुमुदनी कमलणी घणी प्रसीनी ॥
 पारके दुःखे सजन दुःख पावि । दुष्टनें खड खड हासूं अ भावे ॥३॥
 वायू बाजि सुगंधी भीणो । कमल परागनें भारें खीणो ॥
 नारी घणी घेर घूमैव जोणां । पेर पेर पंखी साद सलूणां ॥४॥

पूरव दिस काई काई होई पीली । रवि आदि माट पीठी करें भोली ॥
 तारा बीण बणू थया जारो । उद्यम हीन राय पेर बखारो ॥५॥
 चिर चिर दीवा काई नव्य सोहि । नीरव गुण जिम जन नव्य मोहि ॥
 चिर चिर काम कतूहल जोता । ऊं जागरणा दीवा सीस डोलता ॥६॥
 मूर आयमे तहो खल बणू सोम्या । रवि न फरे पवनें बणू ओम्या ॥
 बाजे विविध बाजिन रसाल । तेरिण जाग्यो बली परभात कान ॥७॥
 प्रबल बीरुद मुंभ भालि बंदीयण । गीत गंभीर गुण गावये गायण ॥
 बार बोध्यां माता हार्थिया डोलि । मद लोभी भमरा भला बोलि ॥८॥
 पायमे गिरपिर हय रह्या हींसि । क्षार सकल आगल पडया दीसे ॥
 मूर ऊग्यो जारो कुंकुम रोल । पूरव दिसि घाटडीरंग चोल ॥९॥
 अथवा उदयगिरी रातू छत्र । पाकू दाडिम फल जारो विचित्र ॥
 गिरिवरें वानरा सेवा धाय । अरुण हाकंतो दुःखीयो धाय ॥१०॥
 देवांगना पीत्यो पूज्यो गिरिठो । उदयगिरि रवि राय बईठो ॥
 रातां किरण करी सिरसू प्रचार । सींदूर सेखता छेत राया पों तार ॥११॥
 रांडी सिरसिया सम लेखें । लोक फोकि कुंकु करयो देखि ॥
 रांडा एम मंडन ए करती । कुहुन कुहु किम नही व्यभिचरती ॥१२॥
 मूर ऊगि पणि दुर्जन भंभा । पण अवगुण बोल वातणा वंधा ॥
 दान पूजा धर्म सुजनें कराय । इम ऊग्यो रवी जाणीयो राय ॥१३॥

प्रातःकालीन क्रियायें

उठीअ जिन गुण चित्तन कीधू । नीयो भीयि दंतधावन कर दीधू ॥
 मंगल स्नान आदि आचार । मुकुट आदि कीधो सरणार ॥१४॥
 सके सणगार सूं भावीय नरि । अमृता देखी कमल मूचघोय बारी ॥
 कमलघाय भोधि पडी विचित्र । जूझजूतु असंभम नारी चरित्र ॥१५॥
 मने बोलखो पण भेद न दाखू । दीक्षा तरां मन केहेन न भाखू ॥
 मंगल तिलक मानयि बधाव्यो । राज मंडीत सभा माहिहूं आव्यो ॥१६॥

यशोधर का राजसभा में बैठना

रयण संघासणो बैठो तेणी बार । राय राणा मंत्री कीध जूहार ॥
 जैन ऊपाध्यायनि दीधू मान । बेसी आसने तब कीधू आख्यान ॥१७॥

तत्त्व पदार्थ श्री जिनवाणी । सांभली भाव सहीत सुखखाणी ॥
दीक्षा लेवानों चीतू उपाय । कुंभरनि बेसाडी तिब ठाय ॥१८॥

चन्द्रमती का आगमन

तीरिण अक्सरें चन्द्रमती माय । आबती देखी हूं लागी पाय ॥
दक्षिण भांगि सिंघासणि बैठी । आसीस दीयि मुझ देखी संतुठी ॥१९॥
जीवतुं नंदन मुझ खीर काल । मंगल नित नित होउ बिसाल ॥
जयो जयो मुज पराक्रमें पुरो । तूम रक्षा करो जगतो सुरो ॥२०॥
चन्द्र सम सोम्य तुझ जय करो चंद । मंगल नित नित करो आनंद ॥
बुध विबुधपती करो तह्य रक्षा । सुरगुरुशुक दीयो शुभ सिक्षा ॥२१॥
राहु शनैश्चर पीडा निवारो । केतु कल्मष सदा विस्तारो ॥
हरीहर ब्रह्मादीक सहू देव । दीयो आयुष्य धरणां तुह्य देव ॥२२॥
खडग ताहारो अरी अण मदहारी । जयो जयो राज प्रजा सुसकारी ॥
राज ताहारुं जयो सिधु मर्याद । तूं चिरजीवो मुझ आसीवदि ॥२३॥

दोहा

दीक्षा लेवा उपायने, वितथ वचन विस्तार ॥
माय आगल में बोलयूं । माय वचन अयधार ॥१॥

यशोधर द्वारा शत्रु स्वप्न का वर्णन

तह्ये जे आयु धरूं कह्ये, किहां धी आयु बिसाल ॥
रातें सपन में देखयूं, राक्षस एक बिकराल ॥२॥
हाथ त्रिशूल बीहामणों, बोल्यो करकस बारण ॥
कुटंब सहीत तुझ क्षय करूं, वचन कह्युं दुख खारण ॥३॥
दीक्षा लीयिजो जीन तरणी, तुमकूं जा जीवंत ॥
तेह भरी दीक्षा लेयसूं, किम मुझ आयु मर्हंत ॥४॥

चन्द्रमती द्वारा देवी पूजन

चंद्रमती सब बोलयूं, देवी कोपी पुत्र ॥
विधन उच्चटे ए घटता, सपन देखाडि विधिव ॥५॥
चंडी चामुंडा कही, मुंड मथनी बली जोय ॥
काली कात्यायनी सही, कुल देवी तह्य सोय ॥६॥

तहूँ तो तेह मानो नहीं, समकीत भरयूं आज ॥
 करो जिन धर्म दया करो, केम चालि राज काज ॥७॥
 देवी पूजा कीजिये, होइ विघन विनाश ॥
 भाई अंबा ए कही, लूठी पूरि आस ॥८॥
 छाग महीस आदि जीवडा, बल दीजि सही राय ॥
 आयु बाधि २५२ निरस्तये, विजय तेजि गठी जय ॥९॥
 साधुश्रीपरमेष्ठिनः सकलणा षड्जीवरसाकरा ।
 आत्मीयद् व्रतगुप्तिसत्समितिका बद्धेन्द्रियाः साह्विकाः ॥
 लोचास्नानविचेलको स्थितिमुनो पूजद्विर्जकाशना ।
 श्रीदेवेन्द्रसुविकेकसुतपदः कुर्वंतु वो मंगलं ॥१॥
 इति श्री यशोधर महाराज चरिते रासचूडामणौ नाम
 काव्यप्रतिच्छंदो भूदेव कवि श्री विक्रमसुत देवेन्द्रविरचिते
 कामकेलिस्त्रीदुष्टचरिता दर्शन शौर्यान्वित
 खड्गर्णनप्रभातवर्णनो नाम पंचमोऽधिकारः ॥५॥

षष्ठ अधिकार

भास हींदोलहामी

यशोधर द्वारा देवी के सामने बली का विरोध करना

बचन सुनी हू कोलीयो; भात सुणो मुझ बात ।
 उत्तम कुलना ऊपना हींदोलहारे । केम करीयि जीव बात ॥१॥
 उत्तम मव्यम कुलें कह्या, जीव हिंसा ना भेद ।
 उत्तम जोई हिंसा करे ।ही०। उत्तम गुण होए खेव ॥२॥
 जीव हिंसा विघन टालि । ए मुझ वज्र समान
 पर ना प्राण विघन करे ।ही०। विघन विशेष होंयें मान ॥३॥
 दीन दुखी जे बापडा । धन वस्त्रादिक रहित ॥
 परभव जीव बध्या तरां ।ही०। फल जाण्यो हठ चीत ॥४॥
 आंधलां बिहिरां पांगलां । मूगा महिला जेह ।
 जिनवाणी मगहिं इस कह्या ।ही०। जीव हिंसा फल एह ॥५॥
 कोडी करपा रोगीआ । इष्ट वियोगीया जेह ।
 जिनवाणी मगहिं इस कह्या ।ही०। जीव हिंसा फल एह ॥६॥

अमिध्य खाधि रोग केम टलि । अथवा कदाच रोग जाय ।
 डाहा उत्तम जाणता ।ही०। अमेध्य कहो किम खाय ॥७॥
 विघन जावाने कारणें । न करूं हीसा धर्म ।
 बचन सुणी माय बोली हूं ।ही०। पुत्र मोहो जिनधर्म ॥८॥
 निः कर्म मार्ग बल गयो । न लहि वेदना भेद ।
 कामें कनें जीव हिंसातां ।ही०। नही होये धर्म नू छेह ॥९॥
 जीव हिंसा धर्मह होय । इम कहि छोटा लोक ॥
 दान पूजा तप बत क्रीया ।ही०। जीव दया विणु फोक ॥१०॥
 मुझ सूं आग्रह घणो करयो । एक जीव हणया जाण ।
 खडग काढयो सब भाषणो ।ही०। देवामें आपणा प्राण ॥११॥
 राय मोटे मुझ कर घकी । लीधो सब ते कपाण ।
 बिलखी थई माय एम बदे ।ही०। सांभलि पुत्र सुजाण ॥१२॥

चन्द्रमाली द्वारा घाटे के कुकड़ों का बध करने का प्रस्ताव

मात पिता बचनहतणो । भंगकीधि हुई पाप ।
 पीठ नु दीजि कुकड़ो ।ही०। जिम टालि लोक संताप ॥१३॥
 लाजि हूं मुनि रह्यो । सांभली दीन बचन ॥
 जीतय करी मन गहू बरभो ।ही०। तीगम्यु धर्म रतछ ॥१४॥
 पीठनु कुकड़ो करावयो । चीत्र बीचीत्र अपार ॥
 देवीमठ हूं बालीयो ।ही०। माय सहीत तेणी वार ॥१५॥
 डम डम डमरु डाकला । खडग सराग भबकार ॥
 रण काहलवली बाजतां ।ही०। पोहोतां देवी मठ वार ॥१६॥
 अश्वन मास अजु आलडो । अष्टमी मंगलवार ॥
 देवी नमी हूं बोलीयो ।ही०। बली लेई करो जमकार ॥१७॥
 खडग काळी कुकड़ो हण्यो । सबद हवो असार ॥
 जाणे मुझ नि तेडती ।ही०। वेगलें दुर्गत्य तार ॥१८॥
 माय कहें ए आशका । लीधे होय कल्याण ॥
 जे जे मायें मिथ्या कह्यो ।ही०। तिमि करयो मि अजाण ॥१९॥
 जेहेवीं होय भवितव्यता । बुध्य सेहेवी होय ॥
 कर्म अधीन सही जीवडो ।ही०। पापकरंतो न जोय ॥२०॥
 कुंघर ते राज बिसाडयो । सोप्पु अर्थ मंडार ॥

रानी द्वारा यशोधर से प्रार्थना

तप लेवा जब चालीयो ।ही०। तब आधी ते नार ॥२१॥
 तेहो तप लेवा चालया । मुझ नें सूँकी आज ॥
 एकलखी नोरघार नें ।ही०। भक्त धरि रहें कुण काज ॥२२॥
 एकलखा केम जाये सो । मुझनि नाखी संसार ॥
 हूँ तह्य सरसी तप करूँ ।ही०। सफल करूँ अवतार ॥२३॥
 भक्त ऊपरि तह्य दया घणी । वचन न लोपु एक ॥
 मऊ मंदिर भोजन करो ।ही०। पछि तब लेसूँ बीबेक ॥२४॥
 कुंअर तणुं राज जोईनि । क्षमा तम कीजे राय ॥
 पछि बेहू जण तप लेसूँ सही । इम कही लागी पाय ॥२५॥
 पतिव्रता जे कामिनी । अंत सुं तप लीयि सार ॥
 तप करी फल हूँ मागसूँ ।ही०। भव भव तुम्ह भरधार ॥२६॥
 आज तह्ये स्वामीनहो तसी । छे देखूँ यमण रणो राय ॥
 माय सहीत जमो मन रली ।ही०। प्रभाति आसूँ बनठाय ॥२७॥
 भोजन आन्या दीजियि । कीर्जियि करुणा एह ॥
 माया वचने हूँ मोहियो ।ही०। मान्युं वचन बलीतेह ॥२८॥
 स्वपन न दीठूँ इम लेखवुं । नीसी दीठूँ जे अन्याय ॥
 नारी माया कन माहि ।ही०। पठ्या करण न भूलाय ॥२९॥
 राय सहीत हूँ चालीयो । भोजन काजे जंग ॥
 जाणो जमेंहूँ तेदीयो ।ही०। नारी मंदिर गयो रंग ॥३०॥

रानी द्वारा विविध पकवान बनाना

हरखीत हवी मायावनी । स्नान मिलेपन दीध ॥
 कनक थाल हेम बेसरणूँ ।ही०। प्रीसरणूँ हरष सूँ कीष ॥३१॥
 खाजां सेव सूँहालडा । फेणी सेंजोरी सार ॥
 धेवर साकर फेणीका ।ही०। हेसमी लापसी अपार ॥३२॥
 पूडा बर्छा भाडा वेदसी । घृत बली साक अनेक ॥
 माय सही जमतु डकं ।ही०। पण देखूँ बीबष बीबेक ॥३३॥
 आगमुं पाछसूँ भाग करो । जाणो करयो मुझ छेद ॥
 बंधुकी बुध्य करी रही ।ही०। बेहू मारवा बिल भेद ॥३४॥

बिनय सहित मुर्झति कहि । छानी नाहानी बात ॥

बिबमुक्त नाटक खिलाना

साङ्ग रुडो बाजणो । ही०। मोकलयो मुक्त नात ॥३५॥

नाह वंचीजे वाचरे । ते सही नारि कुनार ॥

पीहर केरी सुखडी । ही०। श्री राजनि अवीधार ॥३६॥

प्रीसूँ जो अगन्या होय । हसी करी प्रीसो तेह ॥

धाई जी तह्ये आरोग सो । ही०। थोडो एकलीयो एह ॥३७॥

एम कही मायने मूँकयो । बेहू जमयी मने रंग ॥

समय समय बिख व्यापयूँ । ही०। दीसतूँ भमि मुक्त अंग ॥३८॥

राजा का सिंहासन पर आकर बैस २ चिस्त्ताना

चलू करी हूँ जडीयो । बेडो सिंहासन जाय ॥

बैद बैद करी भोयि पडयो । ही०। तब नारी आवी धाई ॥३९॥

राजा की मृत्यु होना

वस्तु

धाई आवी धाई आवी । तबहते नार । रे रे कंत कसूँ हवूँ ।

इम कही चंपे खन परी परी । केश कलाप विस्तारयो ।

असमसीती पडी मुक्त ऊपरि । जाणूँ बैद वीखबाल शि ॥

दंति कठ पीडेय । जीव गयी तेहि क्षण । भारीदत्त सुणी भेष ॥४०॥

भास वणजारानी

रानी द्वारा बिलाप करना

वणजारे तब ते नारी जाण । पापणी मिथ्या तणीं । बि०।

लेई जसोधर नाम । रोवि ते मायावली । बि०। ॥४१॥

जसोधर रे हवि ए बाल । जसोधर रे । सूर सनो तूँ राय ॥

ऊयो निबली आयम्मी । जसोधर रे । राज ए कमलणी जाण ॥

कुमलाणी ए मूँ तुम गम्यो । जसोधर रे ॥४२॥

व्याप्पो हवि अंधकार । हूँ एकली किम रहूँ । ज०।

वापड़ी अबला बाल । बिरहनी वेयणा केम सहूँ । ज०। ॥४३॥

तरु अर जमि विण बेल । द्राघ मंडप विण किम रिहि ॥ ज०।

तिम सही अबला अनाथ । स्वामी बिना कहो किम सोहि ॥४४॥

विनय विना यम शीघ्र । विवेक विना जम वातडी ॥ज०॥
 कंत विना तिम नार । किम हूं सोभु बापडी ॥ज०॥५॥
 तारा विण जिम चन्द्र । चंद्र विना जिम रातडी ॥ज०॥
 कंत विना तिम नार । केमहूं हूं वातडी ॥ज०॥६॥
 आंखडी विना यामि मुख । अंजन विण जिम आंखडी ॥ज०॥
 कंत विना तिम नार । केमहूं सोहूं बापडी ॥ज०॥७॥
 दया विना जिम धर्म । श्रावक विण जिम आंखडी ॥ज०॥
 कंत विना तिम नार । केमहूं जीवूं बापडी ॥ज०॥८॥
 सरोवर कमल बिहीन । कमल विण जेम पांखडी ॥ज०॥
 कंत विना तिम नार । केमहूं जीवूं बापडी ॥ज०॥९॥
 मुकुट विना जेम भूप । मणी विण बीटी कनक छडी ॥ज०॥
 कंत विना तिम नार । केमहूं जीवूं बापडी ॥ज०॥१०॥
 मोहुत विना जीम प्रेम । प्रेम विना जिम भेटडी ॥ज०॥
 कंत विना तिम नार । केमहूं जीवूं बापडी ॥११॥
 दान विना जिम कीर्ति । कीर्ति विना नर गोरडी ॥ज०॥
 कंत विना तिम नार । किमहूं जीवूं बापडी ॥ज०॥१२॥
 परिमल विण जिम फूल । फूल फल विण बन जिसो ॥ज०॥
 गुण विण हार विचार । नारी भव कंत विण तसो ॥ज०॥१३॥
 पुत्र विना जिम वंश । हंस बीना देह जसो ॥ज०॥
 मद विण हाथी जेम । नारी भव कंत विण तसो ॥ज०॥१४॥
 बेग विना जिम ग्रन्थ । भन विन नवयौवनअसु ॥ज०॥
 व्याघ्र विना जिम राय । नारी भव कंत विण तसो ॥ज०॥१५॥
 रामा विण जेम गेह । गेह सुपात्र विना जसो ॥ज०॥
 विद्वांस विण सभा जेम । नारी भव कंत विण तसो ॥ज०॥१६॥
 कंठ विना जेम गान । ध्यान अमा विण मुनी जिसो ॥ज०॥
 समकित विण आचार । नारी भव कंत विण तसो ॥ज०॥१७॥
 देवल विण जेम गाम । देव बीना देवल जसो ॥ज०॥
 वाद कला विण शास्त्र । नारी भव कंत विण तसो ॥ज०॥१८॥
 नवगु विना जिम पाक । वृत्त विना भोजन जिसो ॥ज०॥
 भाव विना शुभ काम । नारी भव कंत विण तसो ॥ज०॥१९॥

सील बिना नर नार । भक्ति बिना तीरथ जसो ॥ज०॥
 गुण बिण उत्तम वंश । नारी भव कंत बिण तसो ॥ज०॥२०॥
 एकलडो नर धार । सबलानि नव्य नारखीइ ॥ज०॥
 नीला मूझाल नरेन्द्र । बोल हबो एक भारधीयि ॥ज०॥२१॥
 नाहानडो जसोमती राय । सीख सीखामण दीजियि ॥ज०॥
 धम तब करी सहू साथ । चालो दीक्षा सीजीयि ॥ज०॥२२॥
 इन्द्र सभा तुम्ह काम । सही त्याहिं तुं बोलावीयो ॥ज०॥
 स्वर्ग नहीए ह्यो राय । तेह भणी तूं भावीयो ॥ज०॥२३॥
 हबो तम्हें स्वर्गवास । दीक्षा भाव तुम्हनि घणो ॥ज०॥
 किम लेता तप भार । कमल कोमल तनु तह्य तणो ॥ज०॥२४॥
 सूं थयूं तुम्हनि नाह । रोग अचीतो आवीयो ॥ज०॥
 पेट माहि हबूं दुःख । प्रीस्यूं अन्न न भावियो ॥२५॥
 मरु सरज्यो नहीं लाभ । तूं साधमी जम्यो नहीं ॥ज०॥
 सामी अने बली स्वामी । एहे वो जोग मलि कही ॥ज०॥२६॥
 भगतन जम्पि बेंद्री नाथ । ए मोटो रह्यो लांछुठ ॥ज०॥
 वरत करी कहूं नाह । भव भव तूं बर बाँछुड ॥ज०॥२७॥
 सभक्ति धारी तूं देव । देवी पूजा कम गमि ॥ज०॥
 कहणावंत महंत । जिनवर धर्म सुं मनरमि ॥ज०॥२८॥
 कपट करघूं देवी साथ । दोघो पीठनो कूकडो ॥ज०॥
 कोल देवी कोपी ते माट । विघन देखाडघो कूकडो ॥ज०॥२९॥
 विणजारा । रे पापणी दुष्ट ते नार । रही पोति कंतह तणी ॥
 लोक आगलि किहि इम । मायावणी मिथ्यातणी ॥वि०॥३०॥
 सासू अंगुठो देय । मारी नें कहि तह्यो सूं थयूं ॥वि०॥
 रोग बिना कोहो माय । जीव तह्यारो कम गयो ॥वि०॥३१॥
 गरुडपरणा माटि जाण । कोलीयो कंठें केमे रह्यो ॥वि०॥
 धीक धीक अह्य अवतार । जीव तह्यारो जमे ग्रह्यो ॥वि०॥३२॥
 कबण देसि हवि सीख । देखीयो राज नहीं पुत्र नो ॥वि०॥
 बृधि बिना किम होय । स्वस्ति पणूं घर सूत्र नो ॥वि०॥३३॥
 तब हबो हाहाकार । मरण जसोघर पामयो ॥वि०॥

राजकुमार यशोमती द्वारा बिलाप

साथि मोटा राणा राय । कुँवर जसोमति धामयो ॥वि०॥३४॥

हा हा तात तू भाण । बिरी तिमिर क्षय कारणो ॥वि०॥

हा हा तात तू चन्द्र । प्रजा संताप निवारणो ॥वि०॥३५॥

हा हा तात तू द्रुत । लीला लक्षण मंडीयो ॥वि०॥

हा हा तात नागेंद्र । भोग भरघो भलो पंडीयो ॥वि०॥३६॥

हा हा तात सुधीर । रण अंगणें रीपू दंडयो ॥वि०॥

हा हा तात दुर्गति । नाशु तणो ना संतीतो ॥वि०॥३७॥

हा हा तात कल्पवृक्ष । कामधेन बिलामणी समो ॥वि०॥

हा हा तात तुम दान । बिलखो धनद दिन भीमयो ॥वि०॥३८॥

हा हा तात प्रचंड । प्रताप पुंज तुं उत्तमो ॥वि०॥

हा हा पराक्रम पूर । सूर सुखि नगनें भूम्यो ॥वि०॥३९॥

छत्र मंग हवो आज । राजभार कोण पेर धरघो ॥वि०॥४०॥

माधाता नले राय । नघोष सगर आदि गया ॥वि० वि०॥

हरीहर बल चक्रवर्ति । काल आगल कोन व्यह्या ॥वि०॥४१॥

खल भलयो तवलोका । हा हा कार नयरे पडघो ॥वि०॥

आचंभ्या सह कोथ । अर्धीतो रायनें जम नडघो ॥वि०॥४२॥

प्रबल बाधु जम जाण । दुर्घर सागर खल भलयो ॥वि०॥

तेम बाजारी लोक । लोटो तव घणोळ मलयो ॥वि०॥४३॥

नयरी लूटीय अपार । लोक बूधा रव बहू करि ॥वि०॥

फाटि हाटनी धेण । बहूटो लूटाइ बहू पिरि ॥वि०॥४४॥

यशोमतीनी फरी आण । नरय लूटासूं बार यूं ॥वि०॥

माधवा मोटा राणा राय । राज मरण अवधार यूं ॥वि०॥४५॥

रोद्र बाजि बाजिअ । रण काहल बीहामणो ॥वि०॥

बूधा रव हाहाकार । रीर पोकार करि घणो ॥वि०॥४६॥

संस्कार काजि राय । काढीयो तव मोटी परें ॥वि०॥

अन्तःपुर में बिलाप

अंत उर ते वार । हा हा कार घणो विस्तरघो ॥वि०॥४७॥

एक रडि कहीं नाह । एक मूर्खी घरी भोयि पडि ॥वि० वि०॥
 एके ते हैयुं हण्येय । एक भोयि सूं सीर आछटि ॥वि०॥४८॥
 एक ते फाडि सीर । नयण नीरें तनु भोयवि ॥वि० वि०॥
 ब्यरहु दाधानल व्याप । तनु बनते जाणो बूझवि ॥वि०॥४९॥
 एक ओडि मोती हार । एक से कंकण भोडती ॥वि० वि०॥
 एक भोयि कूटती हाथ । एक ते आपव भोडती ॥वि०॥५०॥
 एक ते चोली चूथेय । एक ते वेणी छोडती ॥वि० वि०॥
 एक सती थाया काज । हरी हरी कही हाथ जोडती ॥वि०॥५१॥
 एक ते घसती जाय । ऊची पई तनु नाखती ॥वि० वि०॥
 एक बलबलती बाल । दैव दैव इम भाखती ॥वि०॥५२॥
 विष खाती बली एक । एक कटारी चांपती ॥वि० वि०॥
 पास घालती गलि एक । एक खडगि सीस कापती ॥वि०॥५३॥
 केटली चाली समसान । चीहा माहि भंपलावती ॥वि० वि०॥
 जैन राजा तणीं बेय । केटली बैराग्य भावती ॥वि०॥५४॥
 केटलीक दीक्षा लेय । प्रतिमा अग्यार केटली धरे ॥वि० वि०॥
 पांचसि राणी जाण । एणी पिरि घणी दुःख करि ॥वि० वि०॥५५॥
 जेहनि वाज्या राय । मित्रवली सेवक घणां ॥वि० वि०॥
 सांभली मरणमी बात । प्राण गया केता तणा ॥वि० ५६॥
 केता कटारी करंत । केता मरंत विषग्रही ॥वि० वि०॥
 केता पड्यां चीहा माहि । भाला साहामा चाल्या सही ॥वि०॥५७॥
 केता खडगें सीस छेद । कमल पूजां केता करै ॥वि० वि०॥
 केता साधनीं राय । बैराग्य लेह दीक्षा घरि ॥वि०॥५८॥
 यसोधर हवो संस्कार । स्नानादिक सहूँए करु ॥वि० वि०॥
 मोहो काणि मोटा राय । तीणि असोमती आसनें घरथो ॥वि०॥५९॥
 ब्राह्मणे दीधो आसीबदि । राय क्रीया हवि करो ॥वि० वि०॥
 ब्राह्मणनि दीयो दान हवें । असोधरनि उद्धरो ॥वि०॥६०॥
 तब असोमती दीयि दान । क्रीया कीची तब मुक्तखणी ॥वि० वि०॥
 मि काई नम्य लख । दूर गति लही बेयणा घणी ॥वि० ६३॥

यशोमति द्वारा दान देना

ब्रूहा

ठाम ठाम थी ब्राह्मण भल्या, बहु पेर दान देवाय ॥
 धन कांचन करण छत घणा, मणि वस्त्रादि अपाय ॥१॥
 गज अश्व रथ गो महीषी, आदि बहु दीयां दान ॥
 वस्त्र दाछरडी देवाहेयां, ब्रह्म भोजन विधान ॥२॥
 भूम्य सेव्या ग्रामज दीयां, पाप चटादि विक्षात ॥
 ब्राह्मण बहु परणाश्या, लहे नो जसोधर तात ॥३॥
 तुला दान पिर पिर तरां, काल पुष्य यम भात ॥
 कृष्णा जिन दासी दीयि, लहि जो जसोधर तात ॥४॥
 तिल गुड हेम रूपा तराी, गाय दीषी बहू जात ॥
 वृषभ महीष बहु लोह दान दीयूँ, लिहिजो जसोधर तात ॥५॥

खासडां घोसीया करवतां । जल कुंभहसी वात ॥
 नित्य अन्न बहू गृह दीयां । लह जो जसोधर मात ॥६॥
 कुंभ कनक केरा करधा । भरधा सामग्री अपार ॥
 राय जसोधर स्वर्ग थी । पामजो ए सुविचार ॥७॥

परामें कांइ न पामयूँ । सारीदत्त सुण राय ॥
 दुरगती दुःखज पामयूँ । अचेतनि हिंसा पसाय ॥८॥
 इम जाणी सुजनं सवे । रयजों हिंसा संकल्प ॥
 फल उत्तारण फल हनन । फूलों तेह विकल्प ॥९॥
 जीव बध्यः ना पाप तरां । कोहो कोण दाखि पार ॥
 हणयो अचेतन कूकडो । तेणि वाघ्यु संसार ॥१०॥

इम जाणी नीरव्यु करी । पाल्यो श्रीजिनधर्म ॥
 हिंसा पातक पर हरो । जिम पामो सीय धर्म ॥११॥

सील समूँ मूषण नहीं । समकित सम नहीं रत्न ॥
 बंधु नहीं को धर्म समो । करो दयानूँ यत्न ॥१२॥

मिथ्यात सम को रीपू नहीं । विष न मिथ्यात समान ॥
 ते भणी मिथ्यात दूरि त्यजो । पालो दया निधान ॥१३॥

भास गुणराजनी

हेमवंत पर्वत एवं वन का वर्णन

हेमवंत ए दक्षरा भाग । नगरी पासि द्वि गिरिवर ए ॥
 गुका माहि ए सिंह रीसाल । बाढतां बाठां वनचर ए ॥१॥
 गजवराण ए । गी गी कडि लगा । दंतु मलेगीरी मोडता ए ॥
 गजतराण कुं भविदार । महीसूं मुक्ताफल जोडता ए ॥२॥
 फसावर ए करय कृतकार । बाघ घरां वखवखी राहा ए ॥
 शूकर ए चूर्चूर साद । डाढ बांकी जम सम कहा ए ॥३॥
 हरिण ए ताहाठडां जाय । धाय कूर वरु अती घराण ए ॥
 वानरा ए फाल पसंत । दूतकार करय बीहामणा ए ॥४॥
 गूंजा ए पडी ठोम ठोम । दव जागी हरीणां त्यजे ए ॥
 सीघ्रात्नीयां ए फालू पोकार । मांस जागी क्षण ते भजिए ॥५॥
 भीलडीए गूंजा हार । फूल फल काजि बनि भमें ए ॥
 भीलडांए कामठां हाथ । भमतां जीवनें घरां दमें ए ॥६॥
 टाढडीए बीडया जाण । बानरा चीस पाडि घरां ए ॥
 खणो ठीय ए दग्न करिय । सेवि जाणे ए तापरां ए ॥७॥
 घूघूमिए वूहडजाण । समली सींचाणा छुवू भमें ए ॥
 माहोमाहि ए वंस घसाय । दवलाणि एह संगमें ए ॥८॥
 दवें बत्या ए फूटि बांस । तरु खले वन घरां व्यापीयो ए ॥
 तेह वनें ए मोरडी गर्भ । अवनरयो पापें संतापयो ए ॥९॥

राजा का मोर के रूप में जन्म

जठरनीए आगिहूं दूध । नारकी भगवनि कुंछे जस्यो ए ॥
 मलमूत्र ए खरखधो अपार । भूष तरसें घरां कस्यो ए ॥१०॥
 मोरडी ए जनम्यो जाण । ताम पंखमाहि राखीयो ए ॥
 हूं फोएहवो पुष्ट यंड । इडूं फूटि तव तनू पायियो ए ॥११॥
 जीवडे ए पोसतो तन । तव भमतो आब्यो पारधी ए ॥
 धनुख तव बाण माय माहारी तेणि बधीए ॥१२॥

मोरडीए नाबी खांष । हूं लीधो फांठि ग्रहीए ॥
 वाटिए घावसां मोरी । कोटवालें लीधो सहीए ॥१३॥
 पारधीनें दीधी गाल । ठासु ते चिर आबीयो ऐ ॥
 नारीब ऐ देवे गाल । गलुते नख्य आबीयो ऐ ॥१४॥
 खासे ऐ मोटा पाहाण । हाणवासीर सीद गयो ऐ ॥
 चालीयो ऐ चहुटा मांहि ॥ कोटवाल नेहूं बेबीयोऐ ॥१५॥
 थोडीए मूलज माटा । हूं राय चहुटे बेबाईयोऐ ॥
 संसार ऐ मंडर्पे एम । करम नटावे नचाबीयो ऐ ॥१६॥
 कोटवालें ऐ जसोमती राय । भेट काजे घरे सेई गयो ऐ ॥
 जतमनें ऐ काजे तेरा, पांजरा मांहि हूं ठग्यो ऐ ॥१७॥
 कण घणा ऐ । चलीपीयू नीर । सनें सनें योवन हवों ऐ ॥
 सोभतो ऐ मझ कलाव । पंचवरण तब अभीनवो ऐ ॥१८॥
 एक बार ऐ जसोमती राय । आगलहूं भेट घरयो ऐ ॥
 देखीयो ऐ मझ स्वप्न । मोह राय मनें वोस्तरयो ऐ ॥१९॥
 भांगणें ऐ हीडूं खेलंत । मोती चोकनि मंजतु ऐ ॥
 बोलतु ह मधुरी भास । रास तणूं मन रंजतो ऐ ॥२०॥
 नारीनें ऐ नेउरि नाद । पाय पाय हीडूं नाचतु ऐ ॥
 ऊडीय ऐ बेसूं अदस्त । मेघ देखी घसूं राखतु ऐ ॥२१॥

स्थान का जन्म लेना

चन्द्रमतीय ऐ जे मझ मात । मरी करी स्थान हवों ऐ ॥
 अंचल ऐ कूर अपार । अवतरयो जाणे जम जुवों ऐ ॥२२॥
 यसोमती ऐ आवयो भेट । राबनें तब मोह उपनो ऐ ॥
 बामती ह बाघनी फाल । बारध सारथी नीपतो ऐ ॥२३॥
 सो वन ऐ सांकल कोड । पंचवरण भूल सोहयो ऐ ॥
 दीसे ऐ अति किकराल । नयन बोहामसो जेपको ऐ ॥२४॥

मोर का कुबडे पर आक्रमण

एक समि ऐ मोर हूं जाल । अमृतमती अदासि चढयो ऐ ॥
 कुबडो ऐ रासी संघात । खेलतो दृष्टे पडयो ऐ ॥२५॥

तालयूं ए बैर अपार । झडफ देई कुबडो हण्यो ए ॥
 चौचनाए कीधा प्रहार । नारीसूं बीह्वल कीयो धर्यो ए ॥२६॥
 कटी तसी ए मेखला छोड । नारीयि मांखी मझ भरी ए ॥
 मोडीयो ए पय तेरी वार । खोजतो नाहाडो मय धर्यो ए ॥२७॥
 कोसीए के ए हण्यो चमरनें दंड । कोणे कपूरनि दाबडे ॥
 कोसीए के ए वीणा दंड । मारयो कोणि हेमदंड बडि ए ॥२८॥
 यशोमती ए लावयो स्वान । सांकल घोडी ते बावीयो ए ॥
 हाहा ए करतो तेम । कंठे धरी दूढ बावीयो ए ॥२९॥
 जीवडो ए गयो तेरी वार । मोर सुझो राव जाणीयो ए ॥
 कर धरीए चौकीयो उत्तंग । राम वसी स्वान हणीयो ए ॥३०॥
 यशोमती ए करि बहू सोक । हा हा मोर तूं रुडो भावतु ए ॥
 हीडतो ए आंगणे खेलंत । तुम कलाप देखामतो ए ॥३१॥
 मोतीय ए रतनना खोक । फूल साथीयारी हों अमथकाए ॥
 नाचतो ए तूं अपार । नेवर नाद सोहें साथका ए ॥३२॥
 चढी करी ए ऊंचो अवास । मेहो मेहो कुरा बोलशि ए ॥
 जाणे ए जसोधर राव । आज भूवो एम वन वसे ए ॥३३॥
 है है ए स्वान बलिष्ठ । ईष्ट एक फोर्कोमि मारयो ए ॥
 भावतो ए बाघनी फाल । वन माहिं वकारयो ए ॥३४॥
 हरीणाए भूजि रहो रांन । तुम बेस ह्ये कुरा मारसंए ॥
 ससलाए सू उजाल माहि । तुम वीण कोण विदारशि ए ॥३५॥
 तैडीयए परोहीत तास । संस्कार क्रीया करी ए ॥
 ब्राह्मणनिए दीधलां वन । उभवायां बेहू बहू पिरिए ॥३६॥

दूहा

अहमे काई न पामयूं । पामयूं केवल दुःख ॥
 खरचोयि ते पूरव जलहि । जे कहि ते सही भूख ॥१॥
 सुबेल नाम नदी तटि । भीम नाम वनमज्ज ॥
 सेहेली गरमें दुःसहो । अबतारहुड मझ ॥२॥

मोर का सेहेलो के गर्भ में उत्पन्न होता

जरायो मूखें पीडयो । सूख तणी तेन होय ॥
 मोरनि मवे जे दूःख सहाय । तेथी अधीक ज्योय ॥३॥
 भूँडो तनु कांठि भरघृ । जीव तणो वली आहार ॥
 पापें पाप ज वाधयो । मारीदत्त अवधार ॥४॥

स्वान का सर्प होना

स्वान मरी सापज हवो । तेह धनि अती बिकराल ॥
 बख बखतो मूखो भवे । अनेक जीवनी काल ॥५॥
 तब ते मरु नजरें पडयो । ग्रहयो नें में पूछ ॥
 खावा मोडयो अती बनो । हऊँ तेह बल तुछ ॥६॥
 ओडे थोडे खायत । तडफड करि ते साप ॥
 करि कृतकार बालि नही । नडयो मिथ्यात पाप ॥७॥
 तरबिरु जीव एक आवयो, तैणि हरायो हूं जाण ॥
 पाप फलें बनी अति घणूं । पाप्यो हूं दुःख खाण ॥८॥
 बैर ते दुखनीउ रखी । बैर बघारि संसार ॥
 बैर ते धर्म बिनासणो । बैर दुर्मती दातार ॥९॥
 गुरा तरु बैर कोठारखी । बैर सुमति बन अम्मी ॥
 दयाबल्ली बैर हिम समो । तेह भणी बैरम लग्गी ॥१०॥
 यम जाणी निश्चो करी । बैर मधरसो कोय ।
 क्षमा रमा सू रंगे रसो । यम भव भमरा न होय ॥११॥
 भास अप्य खोबोसीनी

उज्जयिनी की सिंधु नदी का वर्णन

उज्जणी नयरी नें पासे ।
 नदी ऊँडी नीर्मल जलें भासे ।
 सिंधु नाम छे तासे ॥१॥

बेहु तटिम पंच वररा पारवाण ।
 ऊपिर फोमल मोहि कठण तूं जाण ।
 दुज्जण सम घरवास ॥२॥

सूर्य कांति सूरज नैं तछिकि ।
दीसि कही एक अरनी भइवके ।
मृग आवंतां सके ॥३॥

चन्द्रकांति निसि चंद्रने तेजि ।
जल पर बाह भरण होइ सिहिजि ।
नदी बाधि ससी हेजि ॥४॥

कही एक रातां किरण विस्तरए ।
जारी सीमाल हधीर गही भरए ।
क्षण जाटता फीरए ॥५॥

कहीं एक पीला किरण विस्तार ।
हरणी दब भय न करे संचार ।
भूली तापें गमार ॥६॥

नीलकिरण विस्तरए दीहि ।
चक्रवाक बियोग भुंयनिहि ।
निसि समय लेखिसीहि ॥७॥

भीलसे चंदुक सीलाधि अपार ।
घसतां बाण खलगे ते वार ।
देवी कही मागि गंमार ॥८॥

तरु फूल रेणु पवन धणूं उडए ।
नदीय नीर माहि ते पडए ।
कनकह उपमा घडए ॥९॥

वनबाडी तेह कांठे सोहि ।
अनेक वृक्ष लख मन मोहि ।
कोए तरु निःफल मोहि ॥१०॥

नदी कांठि तरु फल्या अपार ।
जलिपिसि प्रतिबिम्ब विचार ।
कर वा प्रति उपकार ॥११॥

द्रह माहि चपल खेलंता मछ ।
मोती सीपउ डाढे पुंछि ।
पछि तब मोती अनुछ ॥१२॥

मछ पुंछ कहीयि जल ऊछालि ।
मकर कपाट मूं जल अफाले ।
बीहीना बांनर दीयि फाले ॥१३॥

तीही थकी मरी सेहेलतो जीव ।
रोहीत मछी गरम अतीव ।
दुःखे पाइूं रीव ॥१४॥

रोहीत मछ महा तनुं मोटो ।
बहुं परी मछ गलंतो खोटो ॥
अपल पसि धणूं छोटो ॥१५॥

जाइूं गलू मुख छि विकराल ।
अनेक मछ तणो ते काल ।
तेलूं जलि विसाल ॥१६॥

अन्धमती जीय हूतो जे साप ।
मरणो दुःख तणो हवो व्याप ।
नेह द्रष्टिः हवो ते पाप ॥१७॥

मछली मरकर संसुमार होना

संसुमार मछी ने नेटि ।
गरभ वेयणि दुःखीयो हवो नेटि ।
नही क्षण एक सुख भेटि ॥१८॥

संसुमार ते वेसीयि जणयो ।
बाधंतां निज कुल सह हणयो ।
कुपुत्र ते कुल क्षय भणयो ॥१९॥

मोटूं सरीर वदन अति गाढ ।
कूर दुष्ट बांकी तस डाढ ।
उदर जाणो गिरि छाड ॥२०॥

जल माहि हूं दांठ पीरंतो ।
संसुमार मुन धरयो तरंतु ।
डाढ वचे चूरंत ॥२१॥

राय तणी नूतकी तिहां आवी ।
रमभम करती सखी मन भावी ।
अनेक भूषणि सोहावी ॥२२॥

कुबड़ी कहीमि कोमल अंगी ।
पिहिरी चीर बोली नवरंगी ।
संगीत नाच असंगी ॥२३॥

आसंती मेखला खलकावि ।
चूड़ी सहीत बांहोड़ी लहकावि ।
लहकि मधुर गावि ॥२४॥

नदीय देखानें घरां संतुठी ।
अरणा सूं जलि बेगि पेठी ।
सीसुमारि ते दीठी ॥२५॥

वदन पसारी अहीते बाल ।
हूं रोहीत ना हाठो ततकाल ।
मूक्यो जाणे काल ॥२६॥

राय आगत तब कीधी राय ।
सेवक सर्व जणाव्यो भाव ।
वेगें धीवर तेडाव ॥२७॥

जाल सहीत माछी बहू मलयो ।
जाल नास्ति जलचर खलबलयो ।
तवहं कपाटि भलयो ॥२८॥

सीसुमार मुख थी हूं बांच्यु ।
नदी कपाड लही तव राच्यो ।
चपल पगूं घरां खांच्यो ॥२९॥

सिसुमार को पकडना

जाल माहि पड्यो संसुमार ।
खांची नाठें नाक्षू ते बार ।
टलवल करय अपार ॥३०॥

लाकडि दगडे मूसलि भारयो ।
काप्यो लोहि घरां विदारयो ।
मरण पाम्यो दुःख भारयो ॥३१॥

नगरी समीप छाली उपनी ।
भद्र आड घेर दुधी संपत्ती ।
मोटी तव नीपत्ती ॥३२॥

मर कर बकरो होना

मिहूँ असेपर गलाही राणी ।
किहो ए खाली दुःखनी खानी ।
पाप तरां फल जाणी ॥३३॥

पीठ कूकडा हृष्यानां फल भासि ।
मारीवत बहू जीव तू बिण्णासि ।
न सहं जे तुझ सूयासि ॥३४॥

दिवस केता हूं रह्यो द्रह माहि ।
जलचरने बहूं ग्रसंतो ताहि ।
तब नीपनूं ते चाहि ॥३५॥

अनेक माछी जाल लेई भाव्या ।
द्रह देखी नें मनें सोहाव्या ।
जाल नाखी बरणूं फाव्या ॥३६॥

लेह जाल माहि हूं पडयो ।
पीठ कूकडा नो पाप ज नडयो ।
तडेनाक्षु आछडयो ॥३७॥

मारवा भाछी भाव्या अनेक ।
तब कुष बली भाव्यु एक ।
म मारो बोह्यो विवेक ॥३८॥

मि जाण्यूं मुझनें सूकेसि ।
गरडोएं को दयालूं बीसि ।
पण राक्षस इम भासि ॥३९॥

रोहीत मछ तर्ह ए जाणो ।
पितर सरादनें जोग्य बसाणो ।
एणि भेटसूं हविराणो ॥४०॥

रोहित मच्छ का पकडा जाना

तब सहूए मली ऊचली लीधो ।
माछी बाधा माहि नाखी बीधो ।
मछ हावें तनूं बीध्यो ॥४१॥

ढग दीसि लघु मछड़ केरा ।
माछलां पांख ठामे ठाम वेरया ।
हाड तरा ऊकेरा ॥४२॥

मोटा मछ बांसानां मोभ ।
मछ पांसलीनां दीधां थोभ ।
सीनीच घेरि कहूं सोभ ॥४३॥

जाल तरां त्रिहां मांडव देखूं ।
करंठ मोटा मछ भरया लेखूं ।
नरक पटल धीवीसेखूं ॥४४॥

हाड पाथरि वली भोभ्य कठीण ।
थलेना छोहवो घणूं लीण ।
करमें कीजु घीण ॥४५॥

भमर पलंक हंसतू ले सूती ।
फूलडीच परण तनु नवि सूती ।
करमे हूं एम वगूतो ॥४६॥

भूडडां मोहि करे मुक्त वात ।
स्वान गान वायस वदि वात ।
इम जाणूं मे परभात ॥४७॥

पदमनी नार तलां सती पाम ।
वाजिज वाइनै गायण गाय ।
इम जागती हूं राय ॥४८॥

हुवडां प्रभात एसी पिरि जाण्यो ।
पाप तरा परभाव प्रमाणो ।
मारीवत्त मन आणो ॥४९॥

बूहा

माछी सहू मली भुक्तै, राज मुकन लेई जाय ॥
रस्य आगलहूं मेहेलीयो । राय दीधी पसाय ॥१६॥

चेद परठक स्मृत जाणीनि । वालयो लेणी बार ॥
आस्त्र जाणि ते बोसया । राजातू तूं भवभार ॥२१॥

रोहित मछए जाणीयि । उज्जल छि शीर मध्य ॥

हव्य कव्य काजें कह्यो । उत्तम मछह मध्य ॥३॥

पंचवरण तनु दीसियि । प्रगट चपल भूभुंग ॥

साहामी आरिए चढि । एह पवित्र छि अंग ॥४॥

एहवि रूपि भरहुरी । बाल्या वेद चार ॥

अंग सहीत इम जाण्यो । शाहास्त्र माहिछि वीचार ॥५॥

श्राद्ध कीजि जो पीतरन । कीजि ब्राह्मण भोज्य ॥

अखय तृप्ती पीतरनि सही । स्वर्गे जसोधर राज्य ॥६॥

तबहुं रोहित पाठ्यो । अमृतानि धिर जाण ॥

माय प्रति जसोमती कहि । रोहित मभ बखारण ॥७॥

पितर काज ए कल्पीयि । सराध कीजिए ने आज ॥

चन्द्रमती साथि तृपती होय । जेम जसोधर राज ॥८॥

रोहित मछ को तल तल कर मारना

तब तेणीयि पापणी । पूछ छेयू ततकाल ॥

हींग म्यरी मीठू मली । मूल भरियू बीकराल ॥९॥

ताता तेल माहि तल्यो । पेर पेर पांडू रीव ॥

नारकी फिर दुःख देखीयां । कष्टि गयो मुभ जीव ॥१०॥

कुंअरे ते मभ कल्पीयो । खाघो लेइ मुभ नाम ॥

पिड पाडी किहि चन्द्रमती । जसोधर स्वर्गे ठाम ॥११॥

माहारी तृप्तानि कारणि । हूं खंड खंड कीयो जाण ॥

बापनि बापज कलषयो । जो जो लोक अथास ॥१२॥

अहो तो कोई न पायू । मारीदस सुरा बाल ॥

फल पाम्या पपज तरां । कीधु ते जीव घात ॥१३॥

इमजाणी म कलषसो । मूंआ ने सहू कोय ॥

यती अंतर जीवनि सही । संबल सुकृत ज होय ॥१४॥

वास हेलती

हूं रोहीत इम जाण । विविध वेदना पामी मूंवो ।हेल

चन्द्रमती नुं जीव । संसुमार मरीजे छाली हूवो ।हेल ॥१५॥

संसार का बकरी होना

तेहनि कूलि हूं चंग । गरभ उपयो दुःखि भरघो ।हेल।
 गरभ तरा सखा दुःख । जनम्यो मल मूत्रि भरघु ।हेल।२।
 वृधि पाम्यु हूं चंग । अनुक्रम भोजन पामयो ।हेल।
 मद करी तनु दुर्मन्ध । बूतकार करता दिन वामयो ।हेल।३।
 मायनो जीव बली माय । छाली सूं संगम कियो ।हेल।
 दीठु बडेरे छाग । संगि करी पेट वीधीयो ।हेल।४।

बकरी मर कर फिर बकरी होना

मरी करी तेराी वार । तेह ज छाली गर्भि उपनो ।हेल।
 खापो पाणि पीर । ते मारि खाणि संनु ।हेल।५।
 जूड जूड कर्म बीचार । पोति पीता पुत्र सिव हूंवो ।हेल।
 धिक धिक गति तीर्यच । मायप्रति भाव कीऊ जूवो ।हेल।६।
 बीखया वाहीयो जीव । सुभ असुभ जाणी नहीं ।हेल।
 हृदय सण खलां गेह । काम अगन लागि सही ।हेल।७।
 चतुरन जाणि बीचार । तु पशुनि वीवेक ह्वि किम ।हेल।
 पशु पामी मिथ्याती । एतहणो भव नीस्फल गम ।हेल।८।
 देवी काजि दीध अचेतन । तेह पापि बांधीयो ।हेल।
 पामी पशु अवतार । ते पाप बीज यिम बांधीयूं ।हेल।९।
 विस्मय जलि सींचाय । आतमा मंडप बीस्तरि ।हेल।
 पाप बेल यिम जाण । दुःख फल देई नीस्तरें ।हेल।१०।
 गरभ मोटु हवो जाम । ताम राजा पारध चढथो ।हेल।
 जीवह हणवा काज । पणजीव तेह हाथि नव्व चढथो ।हेल।११।
 भमतो भमतो जाण । नगरी समीपि आब्यु फरी करी ।हेल।
 राय तणीं तेराी वार । दृष्ट पडी छाली खरी ।हेल।१२।
 तेह उपरी मूक्यूं बाण । जीव गयो तेहनो सही ।हेल।
 गर्म थु पाम्यो दुःख । संसारिको कहि नु नही ।हेल।१३।
 राय छाली दीठ । गरभणी मोई भोइ पडी ।हेल।
 ते देखी तेराी वार । रायनि मन दया चढी ।हेल।१४।

पेट चीरी करी जाण । हूं काढ़ी पाल बादीयो । हेला ।
 अयोनी संभव माट । मऊ अतन बीसेल कीयो । हेला । १५ ।
 ध्याव्यो अनेरी छालि । दिन दिन हूं मोटो यपो हेला ।
 ललकि मोटा कान । लांबू मुख मद पामयो । हेला । १६ ।
 भोबि बोल नु धाण । बेला चरतु बन माहिं फर । हेला ।
 हवि जाणूं छूं भेद । तेरि भवि साजू न उन्वह । हेला । १७ ।
 बेछे जीवनि साथ । पुण्य पाप सही जाणयो । हेला ।
 अवर कुटंबनि साथ । डाहा मोह म आणयो । हेला । १८ ।
 जसोधर सरखो राय । बोकडो बई बन माहि भय्यो । हेला ।
 बीचो मिथ्यात पाप । तेरो भव माहि सही एम दय्यो । हेला । १९ ।
 एक बार जसोमती राज । राज काज बिता बामीयो । हेला ।
 देवी काजि जाण । महीष तयो बल मानीयो । हेला । २० ।
 सहजें सीक्यो काज । सूकपणो नीशो धरी । हेला ।
 महील आण्वा अपार । देवी आगलें हीसा करी । हेला । २१ ।
 मूढ़ मिथ्याती अंध । एत्रहणो जाणो सरखां सही । हेला ।
 हीडि आप मुराद । धमैनु मर्म न भुनही । हेला । २२ ।
 ज्ञान नयन बिहीण । डगि डगि संकष्ट माहि पडि । हेला ।
 भव माहि भमें अपार । सुषो मारब नही संपडे । हेला । २३ ।
 हराबा महील ते लेख । राज भुवन माहि आण्वा । हेला ।
 सुपकारें तेणी बार । देखीअ ते न बलाणया । हेला । २४ ।
 कूतरा काग अपार । ए पाडा बिटालीया । हेला ।
 केम पबवां अधिकार । ए ऊचीष्ट न सोझालीया । हेला । २५ ।
 ब्राह्मण तेडघा तेणी बार । वेद स्मृती जाण आवीया । हेला ।
 वृद्धयो महीष विचार । बोलता राम भन मावीया । हेला । २६ ।
 अजोनी संभव जे छाग । ते सूंछे जो एहने सही । हेला ।
 तो ए आदि ओग्य । आड नें एम स्मृती कही । हेला । २७ ।
 राम बोल्यो तेणी बार । अजोनी संभव छालो कही । हेला ।
 बेमें आणो तेह । तेरो ए सुभवो हम सही । हेला । २८ ।

अजीतमति एवं उसके समकालीन कवि

वेगि मभ आरोग्य । सूँघाड्या महीख सवे हेल ।
 मूवया महीख विचार । मारिदत्त कर्म एम परभव । हेल ॥ २६ ॥
 ते महीख पचाय । खागि तेह सह मती हेल ।
 राज भुवन मभार । हूँ लेवे जई बांधो बली हेल ॥ २७ ॥
 जीतवूँ मन मभार । के मोई सही पापणी हेल ।
 गंध उठी छि अपार । दामी किहिय पाडा तरणी हेल ॥ २८ ॥
 बीजी कहि तेणी बार । माछां खाती राणी लोभणी हेल ।
 कपनो तेहणी कोड । ते गंधाय सणी सही हेल ॥ २९ ॥
 श्रीजी कहि सणी बेहेन । तहो न भेद जाणी नहीं हेल ।
 राय जगोधर मारी । कूबडा साथि संगम करणी हेल ॥ ३० ॥

शील महात्म्य

साह हृष्यो बिल देय । प्रेम पापि पिडसो हेल ।
 तीणि पापे हवो कोड । सरीर सबे गली गयूँ हेल ॥ ३४ ॥
 शील न पाव्यो जाण । तेह पाप कलें रोग भयो हेल ।
 सही सुख कारण शील । शील संसार नूँ ताण हेल ॥ ३५ ॥
 सह गुण सागर सील । सील सील सयल दुखवारण हेल ।
 सरीरह मंडण सील । सील ते दुरगति खंडण हेल ॥ ३६ ॥
 निर्मल जम होय सील । सील संसार बिहंडण हेल ।
 सील जीलोकें पूज्य । विकट संकट सील थी टले हेल ॥ ३७ ॥
 सीलें देव करि साह्य । मारि पुत्र धन रीध मलि हेल ।
 हम बाणी नर नार । सील पालो प्रती ऊजलो हेल ॥ ३८ ॥
 जिम लहो संसार पार । सीध सुख पाव्यो नीरमलो हेल ।
 सील न पालि जेह । नरनारी ते मूरख भण्यो हेल ॥ ३९ ॥
 अपकीरत पढो तेण । लोक माहि बतावीयो गणो हेल ।
 उत्तम गुण जेवन । तीणि दावानल सूकीयो हेल ॥ ४० ॥
 अनेक आपदा कष्ट । जाणो तेडवा संकेत कीयो हेल ।
 सरण मूगती दूसार । बार भोग लता लोभी जीयो हेल ॥ ४१ ॥
 श्रिमुक्कन चूडा रत्न । सील आपणो जीणि लोपीयो हेल ।
 धीम धीम तेह अवतार । जिणि रुडो सील न पालीयो हेल ॥ ४२ ॥

मीफल हवो तस जन्म । मनुख भव वली रालीयो ।हेल।
पाम्मो चीतामणी रत्न । तेह सही आलि गम्यो ।हेल॥४३॥

पामी मनुख्य जन्म । बिणो खडो सील न आगम्यो ।हेल।
दम जाणी नरनार । सील तणो सोप न करो ।हेल।
जिम पाम्यु बहु सुख । संसार सागर हेलांतरो ।हेल॥४४॥

बूहा

कील मष्ट होमे से अमृतमती की बहा

तब तेमि सह सांभल्यु' । कोढणी तेण विचार ।
जो अंता द्रष्टि पडी, मारीदस्त अवधार ॥१॥

अलतो भरी पणि चालती । रातां पगलां पडंत ।
हवि पगलां पद भरयां । कूबडा चित नडंत ॥२॥

बीछीयडा भमकावती । जाती कूबडा सूं जेण ।
ते आंगली मली गली पडी । पग्य थकी पावेण ॥३॥

धूंटी पानी राती हती । मांस गली गदो जाण ।
हाड उषाडा बीसीयि । कोकसा चरण न ठाण ॥४॥

पग पींडी सही पडी । नलीयि कीडा कोड ।
कूबडो घरसु जे हनि । सभास ऊपर करी कोड ॥५॥

जांघ अरी सासमी हती । धूंटण हुतो सुसोभ ।
हाड ऊषाडां दीसियि । टाली तणो टल्यो शोभ ॥६॥

नीतंब रयो परीबेसतो । कूबडो खेडती जव ।
मांस मोटिम मली गई । हाडलाडरह्यो तव ॥७॥

उदरें नाभी द्रह हनु । ते पसयि भराय ।
स्तन कूबडो कर अलसु । ते तो गली गली बाय ॥८॥

कंठ संख समो हुतो । हवि खातो अघ न खाम ।
अघर कूबडो जे चूंबतो । गली गया नहीं ठाय ॥९॥

नाक तेहनो गली गयो । रह्यो डंडी बहु खय ।
आंघ ते कुडां समी हती । कूबडा जोली अमदष्ट ॥१०॥

कूबडा पग केणी लोहती । ते सीरनू' बबवर्य ।
कुंडल जिहां लिहिकावती । गली गया तेह कर्य ॥११॥

करें कूबडो घासंघती । ते कर रहां हाड ।
 दांत उघाड़ा सदा रिहि । डाकण खाणो रौंड ॥१२॥
 रूप एहू बो हलो किहो गयो । कोहोयो सरीर सपार ।
 ठाम ठाम कीडा कधवचि । पासि कूबडो गमार ॥१३॥
 तेहू पण खीठुते हवु । हूं हरको मन मांहि ।
 हचि ए जोड़ूं सरधूं धयूं । देवतणी गत्य चाहि ॥१४॥
 सहिष मांस में रुचि नहीं । अम बोली ते दुष्ट ।
 कुंअर असोमती मन रली । वलतु बोल्यो द्रष्ट ॥१५॥
 अयोनी संभव ए बोकडो । पितरानि कह्यो योग्य ।
 जसोधर नि अन्धमती । एहि स्वर्गि पाभि भोग ॥१६॥
 तब तेहि जांच छेवावई । मभ तरणी अतीव ।
 भूष तरस दुःखि पीडियो । पिर पिर पांडू रीव ॥१७॥
 ते सेकी सराव करधु । सुभ निकलपु चंग ।
 खाधु मातु सुते मली । लेई मुक्त नाम उत्तंग ॥१८॥
 मितु कांई लहूं नही । सहयूं तीर्यच गति दुःख ।
 मिथ्यातहि साफल सही । सहूं दृषा बहू भूष ॥१९॥

भास भद्रबाहुनी

अन्धमती नु जीव स्वाममें सांप ।
 मरी हवोसिसो मार जे पाष ।
 मरीनि छाली जे हवीसरणो ए ॥१॥

जसोमती कुंअर हणी जे जाण ।
 कलिंग देश हवो महील वखाणो ।
 नरदत्त साहा घेर भारवहिए ॥२॥

नरदत्त ध्यापारी का महिष

तीणों सींग नघण छि रातो ।
 मोटी मघोडी दीसि मध मातो ।
 जातो हाथी सम मलजतोए ॥३॥

सलू मोटुं मुख मोटुं विसाल ।
 महिल सूं बढतो जाणो काल ।
 घालवी नाथ ते अस करधो ए ॥४॥

भार भरी वरदत्त एक बार ।

महिष लाव्यो उजेखी मभार ।

जमरा काजे नवी कंठ रह्यो ए ॥५॥

तेह सहीख तीहां जल भीलि ।

सीस उछानि जल घरां लीलि ।

बली कराड खसि बल करीए ॥६॥

तीणि अवसर राय तरा घोडा ।

आव्या तिहां चपल नहीं थोडा ।

रोडा देता बली नदी सटिए ॥७॥

घोडे एवं महिष की लडाई

बडो बोडे तीणि महीष दीठु ।

पूरव जनमनो बैर पईठो ।

जैठो जात बैर बराणोए ॥८॥

तेह साहामो महीख बसी चाल्यो ।

जठर मध्य तस सींगज घाल्यो ।

माहाल्यो जम बैर वे गले ए ॥९॥

ततअण रायनि हवू जाण ।

सूपकार बोल्याव्या वारण ।

आण बरां महीख घर्यो ए ॥१०॥

महिष आप्यो ते राज दुआर ।

लोह तरा आप्या खीलाची आर ।

पगे दृढ़ करी बांधीयो ए ॥११॥

दोर घाल्यो ते नाक मभार ।

उचूं मुख बांध्यु करय पोकार ।

मारदत्त पाप केम छूटसो ए ॥१२॥

हेठल पोडी अगत प्रजाली ।

तीणि अवसरि एक बोल्यो हाली ।

घोली लूंण हीण अगडू आणो ए ॥१३॥

हिष को भून कर खाना

खारें जस मरी मेहेली कढाय ।

हेठल अगनी घणी बलाय ।

बलि महीख घणूरी बकरिए ॥१४॥

तरसे ते बली रीर नाव करंतो ।

अधीक अधी तेरिण सोक धरंतो ।

नरक वेदना जिम दुःख सहिए ॥१५॥

ऊरेर पापी शस्त्रि कापि ।

खारि जल छांटी दुःख व्यापि ।

पापे फल एह्वा दाखव्याए ॥१६॥

पीठनु कुकट्टु हणयो जोय ।

देवी पूज्यानां फलए होय ।

कोयम करणु मिथ्यात असोए ॥१७॥

अण्य पगें रहयो हूं जोय ।

देखी परवार रघ्य घणूं रोय ॥१८॥

कोय न सार माहारी करिए ॥१९॥

चारन नीरे नीर न पाय ।

अमृतणो सराध करी सहू खाय ।

घणा राणा रायनो होतरथा ए ॥२०॥

ब्राह्मण घणा मली सराध सरावे ।

राय कह्लि अंजली भरावि ।

न खावि नाम माहारी लेईए ॥२०॥

वांकि अंगूठें पीछ पडावि ।

पिडि पिडि गायि देवायि ।

मिहिखी अश्वदिक धन घणूं ए ॥२१॥

वाससूं काजी कहि एम कहो ।

राय रायनी माय सरगथी लहो ।

द्विज करहि तिम कूझर करिए ॥२२॥

सूनानीज नोई मुद्रिका दीयि ।
 आमाज संकल्प करी विज लीयि ॥
 जसोकर पामो भिम किहे ए ॥२३॥

मि जोम्बू माहारा तनू साहामू ।
 परा आभरण एक नही पाम्बू ॥
 वाम्बु दीडु गलि दोरडू ए ॥२४॥

मांस तरा तेरो पिङ पडाव्याए ।
 सज्ज खाई मांस खवराव्या ॥
 बली बाढवनि ते बीयू ए ॥२५॥

छेदवी छेदवी दीघ लुलाय ।
 एणी पिर मीन पलादिक लाय ।
 नाम अह्मा खेई करीए ॥२६॥

अन्ध लायि अन्ध जो नन्ध पामे ।
 बाढवेलोक चाल्या एम भामे ।
 कामे चाह्या ते आपणिए ॥२७॥

पुत्र जमे माता रही भूषि ।
 मात जमे पुत्र थाय दुःखी ।
 मूत्रा एकां कोहो किम लहे ए ॥२८॥

पूरव भव आपणा संतान ।
 आढ करी देता हसि दान ।
 दिराजिमें आपणा भूषा सहीए ॥२९॥

एणि दृष्टांति पूरव जे मरया ।
 पाप पुण्य लेई अवतरया ।
 निज करणी सहू भोगवि ए ॥३०॥

मारीदत्त अह्मे काई अनलख ।
 मिथ्यास पापि पिर पिर लख ।
 दध खुदा भगनें बखू ए ॥३१॥

कूमर तरा हूं दुष्टि पडयो ।
 जाणो यम भक्त कालज नडयो ।
 कहयो वचन सूपकारति ए ॥३२॥

महिख बलि तीहा सेकीआणो ।

पेगलेंद छः रात्रे जगणो ।

बाणी सूणी मभनि सेई गयो ए ॥३३॥

अगन माहि तेणि पिर पिर बाल्यो ।

अचेतन कूकडें जाणो वीर बाल्यो ।

कारणो महिख सूं जम घरिए ॥३४॥

नगरी बाहिर फलीहां चांडाल ।

घर घणं दीसि तेह भूगाल ।

बाम चरम अस्ती भरघां ए ॥३५॥

अस्ति तणां छि डांडा लाख ।

मोटा अस्ती तणी बार साख ।

पाखल उपरि चरम बीटी ए ॥३६॥

बांघ्या ते तणां पसुघा नेस ।

हबीर मांस करि रक्षा बस बस ।

कसमसे मन दीठे घणूं ए ॥३७॥

पशूआं करंक दीसि ठाय ठाय ।

आव्यानि ते बेसणा देवाय ।

गाय मधोडीना पाटलाए ॥३८॥

पूँछ बाहारडी चमर पचराय ।

मांस तणा ठग छि बहू ठाय ।

खाब कूतरा करं पूपडीए ॥३९॥

गृध्र काम समली घणूं फरण ।

मांसनें खाई तें कस कल करण ।

तीणि करी अति बीहामणूं ए ॥४०॥

छाग महीख बेहू साथें सुआ ।

तीहां कूकडी पेदिइं जाहो भा ।

उधर अगन दावा घणूं ए ॥४१॥

कूकडी तब हबी भारखंडी ।

मोजारे तब लावा मंडी ।

ईहां तब नीसरी पडघां ए ॥४२॥

चांडालणी कचरे धपायो ।
सकमूद्ध हूं फेंहें फामां ।
काया लह्यां केटले दीनें ए ॥४३॥

माय पांख बहूणां नीपेना ।
ओडीं फूटां पाखें संपन्ना ।
हलू हलू तिहां धां बाधयां ए ॥४४॥

माय बहूणां अहो उखरयां ।
करमें अपारज दुःखी करयां ।
सूख तरस पीडयां सही ए ॥४५॥

चांडालणी ऊपरें कचरघु नाख्युं ।
तव वेदुए कांई कांई बोल भांशु ।
पगें कचरो तेणी खोलयो ए ॥४६॥

ग्रहो बेहू कूकडां तेणीयि देखां ।
हडां गरज सारांटा लेखां ।
कर घरी घिर लेई गई ए ॥४७॥

कण खबरावी तेसीयि पाल्यां ।
छोरनी पेरे संसाल्या ।
हींडीयि कुमीनें खायता ए ॥४८॥

जेहू एवढो जसोधर राणो ।
चांडालणीयि पगें हण्यो जाणो ।
आणो मारीदत्त मानें पाप फल ए ॥४९॥

सिर पेरे छत्र चमर बीजंतो ।
ते कचरि चरणें खजंतो ।
जंतुनि एम पाप पीडंतु ए ॥५०॥

राय सामंतहूं हाथ भालंतु ।
रतन पावडीयि भही माहालंतो ।
चांडालनीयि ते पगि हण्यो ए ॥५१॥

रतनमूय्य बलहरं पिर रमतो ।
लोला करतो दिन नीगमतो ।
भमतो हींढूं हूं वेढ अंगणे ए ॥५२॥

सरस श्रृंग पंचामृत जमती ।
भरत पलंग ऊपरवी ममती ।
खमनो कंडाल धिर वेदना ए ॥५३॥

फूल मुकुट गलि फूल हार ।
सुगंध वस्त्र तनु लातो अपार ।
ऊकरडेंते हूं पड़ी रहूँ ॥५४॥

अमूलक भीरां वस्त्र पहिरंतो ।
अनेक मूषण हूं देह धरंतो ।
ते हूं मीतादिक दुःख सहूँ ॥५५॥

मिथ्यात जीव हिंसा परमादें ।
जीवडा कोरा कुण दुःख न पावे ।
आवे न कुण कोरा वेदना ए ॥५६॥

इम जाली मिथ्यामत टाली ।
जीव दया मन वच क्रम पाली ।
जिम दुःख जाल पडो नही ए ॥५७॥

वस्तु

वेहू कूकंट वेहू कूकंट बाध्या तिहां जाण ।
गानी मीखा सिर सोभती । पीछ पुंछ पांख पोदी होइअ ॥
पाछली राति तह चढीय । कूकू कूहू बोलंत सोहीम ॥
कमी कीटक घणू आर्यतां । बाध्यां तीहां विचार ।
पाये पापज बाधयो मारिदत्त अवधार ॥१॥

श्री तीर्थकरसम्मुखानुजसवाश्वेताब्मवावामिनी ॥
या माता शिखिदाहनी सुवरदा वेशाक्षमालाधरा ॥

पुस्तकामूषित हस्तकाचिनयना हारांबरा भूषिता ।
श्रीदेवेन्द्रमुविश्रमसुतपदा कुर्यात् सतां मंगलं ॥

इति श्री यशोधर महाराज चरिते । रासचूडामणो काव्य प्रतिच्छेदे ।
मूदेक कवि श्री विक्रमसुन देवेन्द्र विरचिते यशोधर चन्द्रमती ।
रमित कृत्रिम कुवकुट टनोद्भूतपाप प्राप्ति दुष्ट खंड भव भ्रमण ।
वर्णनोनाम पण्टोऽधिकारः ॥

सप्तम अधिकार

भास पटुलखडीनी - राम रामगिरी

कोटवाल का राजा के पास आना

तिथि अवसरि तिहो आवयो । पटुलखडीए ।
 रायतणो कोटवाल । सलूखडीए ।
 अहो दीठो तीहां तिथि रुवडा । पट० ।
 हाथे लीधां ततकाल । सलूखडीए ॥१॥
 लेई करी ते बालयो । पट० । रायनि भेटनि काज ।स०।
 राजा आगल आहे बरयां ।प०। हरयो जसोमती राज ।स०॥२॥
 अहो दीठी मोह उपनो ।प०। बली बली जूई राय ।स०।
 करें करी अहो पंगू आलयां ।प०। पुरव स्नेह पसाय ।स०॥३॥
 ये अहो पाली पोढो करयो ।प०। ते अहो करे संभाल ।स०।
 अवलीगत जूउ करम तरणी ।प०। ते करि अहो प्रतिपाल ।स०॥४॥
 राय रली आयन बोलीयो ।प०। भलो कूकडा सूध ।स०।
 राखो राय कही अती सडी परे ।प०। भलां करमेतो युध ।स०॥५॥
 कोटवाल नें अहो सोपयां ।प०। पोढां करे वा काज ।स०।
 कोटवाल बिर सेइ गयो ।प०। राख्यां पाजरा ठाम ।स०॥६॥
 कण चणूं अहो भति चणूं ।प०। पीयू रुडू नीर ।ह०।
 दिन दिन डीले बाधयो ।प०। यौवन याम्यां धीर ।स०॥७॥
 टूंकडी कोटवालूं सो भनूं ।प०। चरण कठण कंटाल ।स०।
 माहोमाहि बढंतडं ।प०। रीस भरयो जेम काल ।स०॥८॥
 मधुरि स्वरे बली दासतां ।प०। राती सीखा ललकंत ।स०।
 कोटवाल बिरे सह जणां ।प०। चणूं अहो जतन करंत ।स०॥९॥

यशोमती का बनझीडा के लिये प्रस्थान

एकवार जसोमती ।प०। वासु बन संभार ।स०।
 भंतेउर सूं मनरली ।प०। झीडा करवा उदार ।स०॥१०॥
 पढो वजाव्यो ते बेलां ।प०। ऊमहो नाव नीसाण ।स०।
 भागो अरी हृदय घट ।प०। ढलया बेरी प्राण ।स०॥११॥

अरी नारी नयन गल्यो ।प०। ए भोटू आचंभ ।स०।
 अवर हूया अवर भागा ।प०। अवरथी गल्यो अंभ ।स०।।१२॥
 हय गय पार न पामीयि ।प०। रथ धजा लेहे कंत ।स०।
 पाला बहु तंव घसमसें ।प०। चतुर्विध सैन्य महंत ।स०।।१३॥
 असंत क्रीडा रमबा चर्यो ।प०। जसोमती कुमार ।स०।
 अंतः पुर आवर घणो ।।प०। साधें कुसुमावली नार ।स०।।१४॥
 राय बालनो जाणीयो ।प०। बनि चाल्यो कोटवाल ।स०।
 ग्रह्ये बेह छू तो पांजरे ।प०। ते लीबूं सु विसाल ।स०।।१५॥
 वनमाहि छि रायतरा ।प०। सात घणो आवास ।स०।
 डेरो आगलि विस्तरघो ।प०। तिहां अछ्ये पांजर निवास ।स०।।१६॥

धन के फल फूल

कोटवाल तव जोअंतो ।प०। अनेक तर छि रसाल ।स०।
 आवा रायणा आबली ।प०। राय आमली विसाल ।स०।।१७॥
 कोठ करणीके कदमदी ।प०। लीबूं साफिर लीबू ।स०।
 लीब बकायन बीजोरी ।प०। फणस फोफल नें जंबु ।स०।।१८॥
 गति फलें फलवा बड ।प०। गंभीर छाव अपार ।स०।
 पीतल पीपर चारोली ।प०। मालामी बडीसार ।स०।।१९॥
 तालकेर खजूरडी ।प०। ताल तमालहें ताल ।स०।
 अखोड बदाम नागकेसरा ।प०। सूकिड तर गुणमाल ।स०।।२०॥
 मोगरो मालती मंदार ।प०। मरुआ मोठा मचकुंद ।स०।
 पीला फलें फूल्का चापला ।प०। पाडल बलसरी कृंद ।स०।।२१॥
 जाई जूई जोई जूझडी ।प०। रूपमंजरी गुणमाल ।स०।
 केसू जामू अणपणी ।प०। केसर टगर मुलाल ।स०।।२२॥
 बकुल केवडो केतकी ।प०। स्थल कमल असोक ।स०।
 पंथीयडा पंथ देखता ।प०। व्यापे व्यरह करि सोक ।स०।।२३॥
 ठाम ठाम घर बैलमा ।प०। मंहुप फूल बडील ।स०।।
 बेधे व्यरहणी हरणली ।प०। रह्यो अंधारि काम भील ।स०।।२४॥

अंबंती रेवती सही ।प०। सेकत्री संदुवार ॥स०॥
 बंधूकराता फूलीया ।प०। करी भमरा रण भरणकार ॥२५॥
 केलधणी कोडाभणी ।प०। द्राख मंडप विसाल ॥स०॥
 एलचि फूल लची रही ।प०। मरी भूबका गुणमाल ॥स०॥२६॥
 नागबेलना मंडप ।प०। छाया सीतल होय ॥स०॥
 ईशु बंध बाडी धणी ।प०। अरहं बहू पेर जोय ॥स०॥२७॥
 रायतणी अंतेडरी ।प०। आधी कचुकी साथ ॥स०॥
 दातणी मोती भूबका ।प०। सदन सीद्या बहू भात ॥स०॥२८॥
 राय आव्यो वन खेलवा ।प०। खलवारु संजुत ॥स०॥
 हाथीपडा बहू आगल ।प०। रथचालिहा संजुत ॥स०॥२९॥
 सणगारया घणा जलमती ।प०। गज अवगाह छि कोटि ॥स०॥
 सामंत छत्री परवरयो ।प०। आगल पाला कोड ॥स०॥३०॥
 हय बेसी राम चालीयो ।प०। उजल छत्र सोहता ॥स०॥
 गज अवगाह चमर डालि ।प०। जागे इंद्र मोहंत ॥स०॥३१॥

राजा की सुन्दरता

के रूपि काम कहूँ ।प०। के नल कहूँ कुवेर ॥स०॥
 नाग कूँअर कै चांदलु ।प०। धीर गुणि कहूँ मेर ॥स०॥३२॥
 सायर समए भंभीर ।प०। यिम चीति नरनार ॥स०॥
 ठाम ठाम नृप जोअंती ।प०। करे ए जय जय कार ॥स०॥३३॥

राजा की सेवा

एक मोती छे बधावती ।प०। एक ते भासणां लेय ॥स०॥
 एक ते फूल पूजती ।प०। एक ते आसीस देय ॥३४॥
 एक ते लाजा बीखरती ।प०। लेती नृप गुण एक ॥स०॥
 जीवनंद एक खोलती ।प०। एक ते विनय विवेक ॥स०॥३५॥
 नगरी पोलथो लीकल्यो ।प०। दीठु तब उद्यान ॥स०॥
 पंखी साद सोहामणी ।प०। वन जागे दीधि मान ॥स०॥३६॥
 भीखोवाम तरुवर लहिकि ।प०। फूलह रज ऊडाय ॥स०॥
 अमलीन जाणी राम ने ।प०। ए बीजणे चालि बाय ॥स०॥३७॥
 फूल पडि तिहां परी परी ।प०। उद्यान जागे बधावनी ॥स०॥
 धलहर कलस सोना तणे ।प०। सिखर अजा लिहिकावि ॥स०॥३८॥

अजीतमती एवं उसके समकालीन कवि

बूधरी घणूं घणो ब्रमघमे । प०। जागो राज गुण गावि ॥स०॥
 मेडी मोटी मतवारणां । प०। राय देखी सुख पावि ॥स०॥३६॥
 अथ थकी राय उतरधूं । प०। लील अवाभि आधि ॥स०॥
 सर्वे सैन बिदा हवी । प०। कुसुमावली भने भावि ॥स०॥४०॥
 राणी सूरंगे रमि । प०। टुलडीए दाहि आसन भेद ॥स०॥
 सुरन रमतां श्रम हवां । प०। पवनें नीममयो खेद० ॥स०॥४१॥

बूहा

कोतवाल द्वारा मुनि दर्शन

कोटवालि उद्यम करी । जोयू सह आराम ॥
 असोक वृक्ष हेठल रखो । मुनीवर दीठु ताम ॥१॥
 नासा अग्ने धागयूं । अर्द्धोन्मीलीत नेत्र ॥
 शुद्ध चीद्रूप ने व्याधतो । अभ्यंगर पवित्र ॥२॥
 अंतरदृष्टे नीहालतो । अनोपम आत्म स्वरूप ॥
 शत्रु मित्र समलेखतो । समता रसनु कूप ॥३॥
 बाधीस परीसह जोकतो । मूकतो चोवीस संग ॥
 रत्नत्रय करी मंडीयो । मुगती रमा सुरंग ॥४॥
 दश दिशि अंबर पेहेरयो । मलमलीन तेह गात्र ॥
 ध्यान करी लंकरची । जागो दया नो पात्र ॥५॥

कोतवाल की शिस्ता

कोटवाल आबंभीयो । चिता मने बहू धाय ॥
 मभ ऊपेर घणूं खीजसे । जो देखसे एह राय ॥६॥
 ए नागो अमंगलो । असुची दीसे एह देह ॥
 किहां थी ए अही आबयो । ताज तणो एह गेह ॥७॥
 वेव धरम थकी वेगलो । क्षण क्षण नंदे वेद ॥
 ए खमणी जाय अही थकु । तो जाये मुभ खेद ॥८॥
 एहनि नीकलया तणो । मांडूं कोई उपाय ॥
 काज सरे जेम मभ तणूं । ए अहीथां जाय ॥९॥

कोतवाल की बगुला भक्ति

अम चींती मुनि आगले । बेडो कपट सभाग ॥
 जिम बक बिसि नदी तटि । मनि बीजु अनुराग ॥१०॥

प्रणाम करघो बिनय करी । भव्य जाणी मुनिराय ॥
धर्मबुधि तेहनि कही । कपट रहीत गुण ठाय ॥११॥

भास जोपईनी

कोटवाल मुनि का उत्तर प्रत्युत्तर

चंडकरमा बोल्यो कोटवाल । धर्म बुधि तह्ये कही बिसाल ॥
ते अह्यने छि सदा मुनी जाण । भेद कहूं तेहनो बख्ताण ॥१॥
धर्म धनुष परण चगुण होय होय । बाणह मोक्ष छे नित नित जोय ॥
तेह मणी अह्यो धर्म हम लहूं । कबरा विशेष वचन तह्ये कह्युं ॥२॥
मुनिवर बोल्यो मधुरीय बाण । नामि अरथ न होये जाण ॥
हेम धतूरो कनक कहेवाय । परण गुण जाणी बीसेख जणाय ॥३॥
मुनी कहि धर्म भेद छि भला । धीरयै सांभलो कह्युं केटला ॥
संसार माहे पडतां जेह । वारे धरम कहीजे तेह ॥४॥
बली तह्ये सरीरें दीसो कांक्षीण । वस्त्र रहीत को दीसो दीण ॥
मल मलिनकोतनु तह्ये तणो । चालो वस्त्र भूखण दीधू घणो ॥५॥
भूम्य समने खेदामि देह । सीत उषण लागि बली एह ॥
स्नान वीलेपन घर आदरो । फोकि कपट तह्ये काय करो ॥६॥

मुनि का उपदेश

मुनीवर बोला मधुरीय बाण । सांभलो कोटवाल सुजाण ॥
वस्त्रामूषण घर भवे भवे लह्यो । परण रत्नत्रय कहीअन ग्रहो ॥७॥
सूं ध्याउ जे कह्युं वचन । ते भेद कहूं सुणो सज्जन ॥
जीव कर्म मस्या अनादि काल । पाखण हेम संजोग गुणमाल ॥८॥
पाखाण बकी कनकउ घरे । तेहनो काज घणो जेम सरे ॥
तिम आत्मा कर्म एकठा महर्या । ध्याने करी करसूं वेगलो ॥९॥
तेह भणी आत्म ज्ञान स्वरूप । अछेद अमेद अनंत अरूप ॥
चेतन तेज तणो पूतलो । जनम भरण भयधी वेगलो ॥१०॥
एह्यो आत्मा ध्याऊं जाण । बांधूं लहवा सास्वत ठाण ॥
अजरामर पद लहवा सांर । असह दुःख छे ए संसार ॥११॥
अनादिकाल जीव भसनो जोय । पुतण नारी नपुंसक होय ॥
चंद्र सौम्य हवो जय समनूर । के वारे राहु मम के वारें सूर ॥१२॥

कैं बार राय प्रतापहू ठाय । कैं बार पाली आगल पलाय ॥
 कैं बार काम रूप एम जोय । रूप बिहीण कैं बारें होय ॥१३॥
 कैं बारें उत्तम कुल हूबो । कैं बारे नीच गोत्र यिम जूबो ॥
 कैं बारें हूबो जीव जीव बलीण । कैं बारि रांकहू वो दीण ॥१४॥
 आर्यखंड म्लेच्छ खंड मभार । नरभव पांम्यो जीव कैं बार ॥
 बनहीन हूबो बली धनवंत । हूबो ओधी चंडाल दुरंत ॥१५॥
 भवगति दुकहू जाणो कीटवाल । सोक बिमोय संताप बिकराल ॥
 तिर्यच गति बाध सिंव ज हूबो । तृण चर रंजाणी जीव मूबो ॥१६॥

नरकों के दुःख

रत्नप्रभा आदि नरक उपन । छेदन भेदन घणूं संपन ॥
 नारकी माहोमाहि छेदे तन । मूख घणी मले नही सीध ग्रन ॥१७॥
 तरसैं जाणो सायर सोखवो । पण पावयें नहीं जल बिदूबो ॥
 गीरी समो लोह गोलो गली जाय । एहेकू उबण ने सीत सहिवाय ॥१८॥
 सह्य बीछी बलगाथी घणो । दुख ऊपजे मृतीका स्वसं तणो ॥
 सूला कंदक मंडित मणो । दम भावक्यो जीवें पाव पाव तहो ॥१९॥
 मृतिका गंध सही मव्य जाय । मूखें बल यो तेहू ज लाय ॥
 बेतरणी रुधीर भय नीर । पीतो बल तो पाइय रीर ॥२०॥
 करवतें नारकी छेदे काय । ए कतरवूं ऊहू करी पाप ॥
 एक भगन धंभ सूं करें भेट । साते व्यसन सणूं फल नेट ॥२१॥
 बलयो असीपत्र बन तलि जाय । पत्र पडतां छेदें काय ॥
 गिरि प्रत्येगयें गिरि छूटी पडे । जीव नें नरकें कर्म एम नहि ॥२२॥

तिर्यञ्च गति के दुःख

बली तिर्यच माहिं भमतो जोय । जलचर थलचर बली बली होय ॥
 नभचर गरुड भेरंड आदि भम्यो । मूख तरस छेद भेदें दम्यो ॥२३॥

वेच गति के दुःख

सुरगति पांम्यो मानसीक दुःख । इम भमतो किही नही लखो सुख ॥
 इम जाणि ओहो गती संसार । मंडणें कर्म नदयावो अपार ॥२४॥
 बहू परी बेख लेवाडे जाण । जीव मृत्युकीनि नाचावे बलाण ॥
 इम जीवि जीव यिम बली मरे । यावर जंगम माहि एम फरे ॥२५॥

संसार जीव

विष संसारयी बीहू धरूं । विषय सौख्य नेहू अवगणूं ॥
 बारभेद बली तप आचरूं । पर धर पासुक भीक्षा करूं ॥२६॥
 बनें नीरंजन ठामे बसूं । प्रागम तत्त्व धरूं अभ्यसूं ॥
 धर्म कहूं बली मौनि रहूं । निद्रा जीतू मोह निग्रहूं ॥२७॥
 क्रोध मान माया लोभ त्यजूं । कपट हास्य रति अरति न भजूं ॥
 चिता सोक उद्वेग न धरूं । मद तरणों मद हूं दूरि करूं ॥२८॥
 शंख हूं नारी नीहालवा । हृदय सून्य भवगुण जाणवा ॥
 राग गीत सूं बहेरो जाण । पर अपवाद भूंगो बखान ॥२९॥
 कुतूहल जावा ने पंगली । कामकेलि विषय वृंदलो ॥
 आश्रय्यो अचेतन चेतन तनु होय । चेतने वहीधि सकट इम जोय ॥३०॥
 वृषभ बिना सकट नहि चली । तिम तनु चेतन सरिसोमलि ॥
 जीव अन्य कलेवर अन्य । इम लहि दिगंबर हबो धन्य ॥३१॥
 परने न नींद मोक्ष ईच्छत । व्यानामृत रस पीयूं नचीत ॥
 आस रीद्र दाए मुकुं दूर । भीलूं धर्म बुक्ल ध्यान पूर ॥३२॥
 केवली कहयो लीयूं आहार । एषूं हूं पापाथव द्वार ॥
 इम यंदी बल ने जीतऊं । कर्म कलंक नहीं छीपऊं ॥३३॥

कोतखान का पुन प्रश्न

कोटवाल इम जपे चंग । गोस्तन मूंकी दूहि कुल शृंग ॥
 ठेलीं कनकधाल सिष्टास । कवण करि बीजा पिर मस ॥३४॥
 प्रत्यक्ष संसार सूखनि त्यजि । मूरख जे मोक्षकारण भजि ॥
 विण छत्रि छाया नहि होइ । विण जीवें मोक्ष पावे कोय ॥३५॥
 फोकि देह संतापु आज । मुक्त कहूं कर तु सीकि काज ॥
 देह जीव ए मित्र न होय । जिम तर कुसुम परीमल जोय ॥३६॥
 फूल बिनासे गंध बिनाश । तिम तनु तासे जीव निरास ॥
 भूत चीहो बंधायो देह । पवन योगि यंत्र पिर करे एह ॥३७॥
 गुड महु छाल उदक आवडी । मलि उन्माद सक्ति तिन घडी ॥
 तिम ए जीव वेहें बार कहिवाय । किहां थी न आयी किहां थी न जाय

दीप सिखा पवनें लोप । कहो ने कबण दिसे ते जाइ ॥
 हर लोपायें लीपायि छाय । तिम तनू जातां जीव न ठाय ॥३६॥
 पवन ते पवन सरीसो मति । मानो सत्य जेम ए दुःख टलि ॥
 जीवन बंधायन बसू काय । फोकि गृहबी भ्रांतज थाय ॥३७॥
 मुक नलीका पर बैठो जेल । विरा बंधि बंध लेखे एम ॥

मुनि का उत्तर

मुनीवर बोल्या बोल बीचार । कह्यं ए जीव मत्स्यो मूल च्यार ॥४१॥
 माटी पात्र जलिवली भरघू । पवन जलीत आग ऊपरे धरघो ॥
 ज्वार मलि जु उपजि जीव । माटी पात्र तो होय अतीव ॥४२॥
 जे गुड आदि कण, दृष्टांत । ते मुक्ति छे मोटी आंत ॥
 जीव चेतन म्याननु पूतलो । अचेत नए दृष्टांत न भलो ॥४३॥
 बली मद शक्ति चेतन ने जोय । काठ पूतला नें मद नव्य होय ॥
 गूल गंध दृष्टांत जे दीध । धबला वाल गोपाल प्रसीद ॥४४॥
 फूल त्यजी संघ तेल सु रमि । धवर देह लेइ तिम जीव भवे ॥
 जो पूर्व भव जीवनें न होइ । सीसु बाछरु नु बावे न कोय ॥४५॥
 जण्युं बाछरु जाणि स्तन ठाय । घरा मोखव्युं बलगिते थाय ॥
 जारो काल अनाद जीव भमें । करमें सीखवयो काल मीगमि ॥४६॥
 जीव तनु प्रति जूजूवा जाणवा । साधु असाधु भेद आणवा ॥
 एक राय एक किकर जाण । वाहन एक अहीया बखार ॥४७॥
 धनवंत एक एक धन हीन । एक मुन्नी एक दीसि दीन ॥

कोतवाल को पुन शंका

कहि कोटवाल मुनी अवधार । चोर एक घरघु पेइ मझार ॥४८॥
 लाख विद्यो न राख्यो ठाम । त्याही चको चोर मरी गयो ताम ॥
 स्त्रीदन पडघो एकज रती । जंतु गयो कुण मारणि अती ॥४९॥
 एक चोर तोली मारघो । बली तोल्यो ते तु भारयो ॥
 हलघो न भारे हबो लगार । तो किम जीव छि तनु मझार ॥५०॥
 एक चोर करयो खंड खंड । जोयो दृष्ट लगाडी प्रचंड ॥
 जीवन जानो दीठो तेह तरों । एह उत्तर बहर्ष्ये मुक्त भणो ॥५१॥

मुनि का उतार

मुनी बोलि एक आग्री मजूस । संख सहित नर रह्यो पेश ॥
 लाक्षा बीड़ी तीरों संख बाजयो । लोक कानें सबद धाजयो ॥५२॥
 श्रीद्रन पड्यो तीरि लगार । स्थूल शब्द बली छे अपार ॥
 ताल ने भडके गीरीवर असि । आप अमूरत केम दृष्टी असि ॥५३॥
 चर्म मसक ठाली तो लेय । बायू भरी पुनरपि तो लेय ॥
 भार समान जो पवन प्रचड । तरु जेऊ मेले करे खंडो खंड ॥५४॥
 रूपी वायु जे नव्य देखाय । आत्मा केम दृग गोचर थाय ॥
 समझी काष्ठ खंडो खंड करयो । जोयो अगनी पण नहीं नीसरयो ॥५५॥
 जे वन तरुवर नगर दह्ये । एहे वा अगन ने नयण नग्रह्ये ॥
 मूर्ति पदार्थ ने दृष्टी ज ग्रहे । अयोपसम योग्यता ए लहि ॥५६॥
 खडग भार तीखी नभ न छेदाय । चपल बालके नीज खंष न चढाय ॥
 तीम नीर्मल ए दृष्टि छि असी । आप रूप न देखि आपसी ॥५७॥
 नव्य देखीयि ते नथी जे कहि । सहू सुखं माहिब उपण लहि ॥
 मात तात सधू पण थी मूर्ता । विण दीठि तिरौ केम मानवा ॥५८॥
 मूत प्रेत व्यंतर राक्षसो । विण दीठि छि केम भाक्तसो ॥
 दूर आवतो सबद न देखाय । पण कान सूं मलयो थी जराय ॥५९॥
 इद्रि निज निज बिखय सह्येवाय । अमूरत आनीनिबी जय थाय ॥
 ना केसू कुणि रूप देखाय । कानें सूं भोजन स्वाद जराय ॥६०॥
 जीरणिमि निज निज सही जोग्यता । रूपीयि रूपनी योग्यता ॥
 सूक्ष्म आप स्थूले न जराय । हाथी सूंढे राई न लेवाय ॥६१॥
 तिल माहि तेल मली जेम रह्यो । दूध माहि यम घृतित कछ्यो ॥
 काष्ठ माहि यम अग्नी समाय । तिम तनु माहि जीव जगाय ॥६२॥
 सूरज कांति माहि जिम अग्नी । चंद्रकांति जल रह्यो विलग्नि ॥
 पाखाण माहि जिम छि घात । तिम तनु माहि जीव बिख्यात ॥६३॥
 सुखदुखादि दृष्टांत अनेक । चेतना लक्षण जाण विवेक ॥
 बुद्धि व्यापार जू जू आजोय । आतमा उपजो गमम होय ॥६४॥
 केम जीव देहांतर धरि । किम संसार माहि ए करि ॥
 मुनीवर कहि सांभलो थीर चित्त । जिम होइ तह्य जीवह हित ॥६५॥
 आठ करम अठतरल सुप्रकृत । अनादि मृत्यो पण एहंछि विकृत ॥
 ज्ञानदर्शनावरण ए वेहो । वेदनी मोहनी आयुछि मेह ॥६६॥

नाम गोत्र कहीयि अतराय । आठ करम आगमे कहिवाय ॥
 भेद कहू एहना बेगला । संखेपि जाणि ओ भला ॥६७॥
 ज्ञान आचरें ते ज्ञानावरण । पंच प्रकारि तेह बिस्तरण ॥
 मिद्ध इष्टपद नव्य देखीयि । देवमुख परी वस्त्र लेखीयि ॥६८॥
 दर्शनावरण देखावान देय । दरसन आचरे छे नवभेय ॥
 इष्ट वस्तु तेशी नव्य पामीयि । राज पोलीयानी पिरवामीयि ॥६९॥
 मुख दुःखनि जग्यावि जेह । बे प्रकार वेदनी कही तेह ॥
 खड्गधार मधुलीप्त छि जेम । सुख दुःख जीवि लहीयि तेम ॥७०॥
 आत्मनि मोहि जे धरु । मोहनी नाम कहीयि तेह तरु ॥
 भेद अठावीस तेहना ते सही । मविरा माण्या कोइ विपरित कही ॥७१॥
 अयुकरमि भव माहि राखीयि । चार प्रकार केवली भाखीयि ॥
 बृह आल्या नरनी पिर जोय । भवधी नीकलवा नही दीयि सोय ॥७२॥
 नाना रूप कारण ए लह्यो । ताणुं भेद नाम करम कह्यो ॥
 चीत्रक पिर परिलखे चीत्राम । नाम करम एहवा परीणाम ॥७३॥
 गीत्र कर्मना छे वे भेद । ऊंच नीच जाणो त्यजी सेद ॥
 कुंभकार भाजन परी जेय । जीव ऊंच नीच कुल जहे तेम ॥७४॥
 इष्ट वस्तु पामंता जोय । अंतरकरि अंतराय कर्म होय ॥
 पंच प्रकार आगम माहें कह्यो । मंडारी पिर गुणें ते लह्यो ॥७५॥
 ए आठ करमि करी ए जीव । अनाद कालनो दीखो अतीव ॥
 मिथ्यात अचिरत प्रसाद कषाय । बंध होत कहा मन वच काय ॥७६॥
 एकांते प्रथम मिथ्यात विचार । अणु आतमा ते मानि गमार ॥
 केम खटमास अवधि कहिवात । पुण्य पाप कुण लहि मात तात ॥७७॥
 विपरित से जे दयामुखे कहि । विधि वीसेखि हींसा नें अहि ॥
 सात व्यसन शास्त्र माहि आदर्श । ते केम परतारि आप तरै ॥७८॥
 खर कूतर गो महीखह तरणो । तरवर पथर गीरीनो भरणो ॥
 बिनय करि गुणविरा देव कही । बिनय भीध्यात कह्यो ते सही ॥७९॥
 नर निमुगति स्त्रीनि सिं नही । एह आदि संसय रहि अही ॥
 धर्म माहिं करि संदेह । संसय मिथ्यात कहीपि तेह ॥८०॥
 अज्ञान मिथ्यात पंचेंद्री हग्यो । एकेंद्री मोडतो कण कणि ॥
 देव धर्म प्रतिमा उखेद । पंच पापना कह्या भेद ॥८१॥

क्रोध मान माया ने लोभ । सोल प्रकार दीधि भव थोभ ॥
 कूड कपट बली काम विचार । पंचेंद्री बली विषय विकार ॥८२॥
 कृष्ण नील कापोत जे नाम । जीव ने कूट करे एनिगम ॥
 आतेंरोद्र ए बहू दुष्यान । जीवनि भमाडिअ भवरान ॥८३॥
 प्रकृति स्थिति अनूभाग प्रवेश । बंध तयो भेद कहा विशेष ॥
 ईशे बंधायो जीव धरानू भमें । चारों गति माहि काल निगमें ॥८४॥
 नाम करम नाना रूप करि । आनुपूर्वी गत्यंतर धरे ॥
 जीवनो ऊर्ध्व गति छे सभाय । कर्म बलि विचीन गत्य जाय ॥८५॥
 ऊर्ध्वगमन जेम अगनीही जाल । अह्नी पही बाय बंधोलि विसाल ॥
 अथवा संकड संकलि भरघो । जिम केरवीयि तिम जीव फरघो ॥८६॥
 संहार विस्तार कर्म प्रमाण । कूंधू आसमो बली हाथी समान ॥
 जिम लघु घट माहि दीपज धरघो । घटनाहि धरघे घट उद्योत करघो ॥८७॥
 ते बडो देहते बडो व्याप । कह्यो केवलीयि निःपाय ॥
 घाति करम क्षय होय ए आप्त । दोष रहीत गुण त्रिभुवनि व्याप्त ॥८८॥
 जीवनमुक्त अर्हंत भगवंत । सर्वज्ञ ते कहीयिए संत ॥
 तणि आगलि कह्यो जेह । जीव स्वरूप कहो तमाहां एह ॥८९॥
 द्रव्य नये छे आत्मा एक । पर्याय भावे कहीयि अनेक ॥
 कर्म कलंक रहीत जब थाय । अछेद अभेद अनंत कहिवाय ॥९०॥
 नित्य कहियि द्रव्यिं सही । पर्यायि अनित्यज कही ॥
 नित्य कहितां नश्य मरय न होय । अनित्य कहितां गगन सम जोय ॥९१॥
 जिनवर कहि जीव नाना भेद । छ काय एह भवि भवि सखेद ॥
 एक रीसाल कहिमें एक साथ । एक मरोग अने एक न व्याध ॥९२॥
 एक छे गुरु अनेक छे सीष्य । एक मूर्ख अनेक छि दक्ष ॥
 एक छे राय अनेक छे भृत्य । एक करि पुण्य अनेक अकृत्य ॥९३॥
 रागद्वेष विखई कहि जेह । वचन प्रमाण न कहीयि रोह ॥
 जे पितृवने नाचंतो भमि । निज महीला सूं रंगे रमि ॥९४॥
 जेह करे गदा सकति त्रिसूल । क्रोध कपट के राजे मूल ॥
 रोह वचन प्रमाण केम होय । स्वयं सीध आगम एम जोय ॥९५॥
 लोक ए स्थिरकेम कहिवाय । न करे कार्य तो नास न थाय ॥
 बंधायो ते कहीयि नमू काय । गुर सीक्षादी भेद न जणाय ॥९६॥

ईसि सृष्टि कारज जो करयो । ईस सरीर कोणो पड़ी घरयो ॥
 विण तनू ईस जो कारज करे । विण तनू वेद बाणी उच्चरि ॥६७॥
 गगन फूले कंठ हार भू होय । व्यंघ्या सुत जातो ए जोय ॥
 सस सृ गह धनुष कर धरी । मृगतृष्णा जल नाही करी ॥६८॥
 कहरा ईस जगनी पाय । एक सुखी एक दुःखी कां पाय ॥
 मात तात सीसु नख्य मारेय । तो किम कहियि संहार करेय ॥६९॥
 एक ब्रह्म सहू व्यापी रह्यो । सवे घट चंद्र बिंब पेर कायो ॥
 ब्रह्म ने वेद कहि नीकलंक । जग ए जीव मलिन सकलंक ॥१००॥
 एक कहि जो मन बंधाय । जीव कमल परे रह्यो जल ठाय ॥
 सुक नलीका पेर उपजि भ्रांत । कोकिं देखाडो ए दृष्टांत ॥१०१॥
 मन बंधन कारण सही होय । सुक परिजीव बंधातो जोय ॥
 कोलीयो बंधाय जिम नीज लाल । तिम जीव बंधातु स्वयं भाल ॥१०२॥
 जो ए जीव बंधाय नहीं । तो दीन दुखी को दीसिं नहीं ॥
 जाणो जीव करमि बांधयो । विषय बलूघो दुखि बांधयो ॥१०३॥

इन्द्रियों के कारण बन्धन

स्पर्शन विषय बांध्यो हाथीयो । खाड पड्यो घंकुश बस शीयो ॥
 बहू पेर भार लेईजे भम्यो । विषय तृष्णायि ए घरां दम्यो ॥१०४॥
 रसना विषय बाहीयो होय । माछलो बुख सहंतो जोय ॥
 रसना विषय जीस्या विण जीव । माछला पिर दुःख पावे भतीव ॥१०५॥
 नासिका गंध तरणो लोभीयो । भमरो कमल माहि थोभीयो ॥
 वांस कोरि एहो कठण सभाउ । तिही मूठ क्षियया अनुराज ॥१०६॥
 नयण विषय छे तरासु पतंग । दीबा माहि नाखे निज भंग ॥
 काई पण काज सरंतम गणो । कोकिं खोहि जीव प्रापणो ॥१०७॥
 पारधी घोट नाद बन सुराणी । बेधाया हरणां हरणी ॥
 श्रवण विषय भोगव्यानें पसाय । अर्थ न साध्यो प्राणे जाय ॥१०८॥
 दम जाणी विषया मन त्यजो । सुष नीरंजन प्रापें भजो ॥
 जिम पामो सुख केवल नाण । प्रवीचल पद पामो निर्वाण ॥१०९॥

व्यसनों के कारण दुखी हुये मनुष्य

दूत बसन जुघिष्टर राव । राज रुध्र हारि कहिवाय ॥
 पाम्यां बन माहि पिर पिर दुःख । दूत क्रीडाइ गयो सहू सुख ॥११०॥

मांस तरा लोभी बक हूयो । भीससेन हाथि ते मुयो ॥
 मुनिव्य खातो काहाव्यो राक्षसु । नरकगति ते कर्मइ कस्यो ॥१११॥
 मद्य नियोगि यदु राजीया । माहो माहि बढो क्षम गया ॥
 मद्य निगोद पातक नो ठाम । जीवनि नरकि आपि विश्राम ॥११२॥
 धवटि मूषू जेहेवू उतारणू । वेण्यानि ते सरखी भणू ॥
 कूँतरा एक आवि ॥ ११३ ॥ बावदस पैर दुख बाहुव्य ॥ ११४ ॥
 पारध बसनें ब्रह्मदल भणो । हिंसा दोखिं नरक भयो गणो ॥
 नापडा तृण चर किहिनू न खाय । दुर्जन प्राण लेवा पूठि धाय ॥११५॥
 परबारा व्यसनि जाणजो । राक्षस क्षय भयो मन आणजो ॥
 अवर पुरुष कहू केही मात्र । व्यसन व्यलूषो नरकह पत्र ॥११६॥
 चोरी व्यसन ते मूकयो दूर । तीणि पाप लागि अति भूर ॥
 मरी नरकि सिवभूती गयो । परधन हरतां दुखीयो थयो ॥११७॥
 सात व्यसन ए मुकि जाण । प्राणी पामि सुखनी लाण ॥
 एह लोक परलोक जय होय । अनुक्रमि शिवपद पामि जोय ॥११८॥

बया धर्म का प्रभाव

समता रस सहसूँ आदरो । क्रूर बिस कोई पर मत करो ॥
 क्षमा धरता जीवनें जोय । पदे पदे धरम अनोपम होय ॥११९॥
 कोमल मन आपणू कीजिइ । जीव जयसा करी धर्म लीजिइ ॥
 मार्दव विकरस शुधि धरो । भवसागर धम हेलों तरों ॥१२०॥
 आजंस कहौइ कपट रहीत । जीव दया उपरि धरजें बिस ॥
 कलुष भाव टालीजें जोय । नञ्चेतो अविचल पद होय ॥१२१॥
 सत्य वचन बोली जें सही । एदला ऊकळ पुष्पज नहीं ॥
 पर अपवाद विकथा नें त्यजो । मुगती नारी सुं वेगि भजो ॥१२२॥
 लोभ रहीत कीजि अंतरंग । परमात्म सुं लीजि रंग ॥
 बाह्य अभ्यंतर औं धराय । मुगति नारी लीला बस धाय ॥१२३॥
 कीजे संयम करत विधान । इन्द्रिय रोधी धर्म निदान ॥
 काम महागज बल आणीइ । संयमि मुगति टूंकडी जाणोयि ॥१२४॥
 बार भेद ये तप आचरि । कीर्वीर भेद उदरि ॥
 कर्म महावन अग्नी समान । पामइ नीर्मल केवल ज्ञान ॥१२५॥

सर्वे परीग्रह कीवि स्थाज्य । अथवा त्रिविध पात्र दान भाग ॥
 आकांक्षा रहित जे करि । ते संसार माहि नव्य करि ॥१२५॥
 परीग्रह सह दूर भूकए । अथवा मनसंवर ठूकए ॥
 तृष्णा नदी जलधि जेह । मुगती मारग सही जागो तेह ॥१२६॥
 त्रिकरण सूध धरि ब्रह्मचर्य । व्रत आचार माहिये वर्य ॥
 तेहि आचारपो सही सह धर्म । करितु मुगति माननी सुख सर्म ॥१२७॥

दूहा

दस प्रकारि धर्म कष्ट, मुनीवरनि उत्कृष्ट ।
 अस परिण जो पालए, आवकनि परा मुष्ट ॥१॥

लेख्या वर्णन

गीत पद्य शुक्ल कही, नण्या लेख्या जे अन्य ॥
 सुगति जावः कारण सही, जे जाणि ते धन्य ॥२॥
 धर्म शुक्ल जे ध्यान ते, आपि अविचल नास ॥
 मन पवन बंधा करि, कष्ट नहे अन्धकार ॥३॥
 अनुभववा सिद्ध सौख्य न, स्वार्थान नीत्य छे जेह ॥
 इन्द्रिय रहीत जे अनुपम, सास्वत कहीयि तेह ॥४॥
 कोटवाल तब बोलियो, जाणूं हूं सिद्ध भेद ॥
 मुटिका सिद्ध भजन सिद्ध, महस दीसि नही खेद ॥५॥

सिद्ध स्वरूप

मुनि कही ते कपटी सही, व्यसनी लोटा अपार ॥
 सीध नीरंजन नीरूपमो, जान तणो आघार ॥६॥
 असंभम तेजस रूपए, कोणि ते तेज न हणाय ॥
 ते सेव कुहो नैन दूखब, रह्य चराचर समाय ॥७॥
 जात तेज मोटिम परिण, रह्यो सह मध्य राख ॥
 किहिन नही आगाडि, जस कमलह पेर भाख ॥८॥
 केवलीनि गोचर होय, जीव मुक्त विशेष ॥
 तेह बिना गोचर नही, जोह जाणि छि अशेष ॥९॥
 मूको ते साकर खामता, करसीर धूणी देखाय ॥
 स्वाद जाणि हरलीत होय, जिम जीभ न कबिवाय ॥१०॥

ब्रह्म सिद्ध स्वरूप छि, व्यापक अकल अनंत ॥
 जामी वचनि आराधयो, अजर अमर छि महंत ॥११॥
 विष्णु संसु संकर कह्यो । ब्रह्म सुबुध बली होय ॥
 सलख निरंजन अकलए । नाम अनंतां जोय ॥१२॥
 भोला विष्णु व्यापक कहि । जल थल गिहि मुं अपार ॥
 माया मोहयी बेगलो । बली कहि धरि अवतार ॥१३॥
 भगवत उद्धरवा कारणि । निरंजन काम धरि रूप ॥
 करम काया श्री बेगलो । ब्रह्म जो सहज स्वरूप ॥१४॥
 भक्त जाणी मन दूढ कह । ब्रह्म न धरि अवतार ॥
 ब्रह्म हृण्यो ब्रह्म जलिहि । ए छि वचन व्यापार ॥१५॥
 ध्यान बलि कर्म जीकीयि । होय ब्रह्म ज्ञान अम्यास ॥
 तेज सु तेज जई मले । काल अनंत किलास ॥१६॥
 पुत्र कलत्र मित्र नहीं । नहीं नगर पुर हाट ॥
 वरण तखो मेवज नहीं । नहीं चीता उबाट ॥१७॥
 भोजन भाजन सजन नहीं । नहीं प्रभू सेवक भेद ॥
 पगततां सबा सूखूं नहीं । नहीं सुख नो बली छेद ॥
 इत्यादिक गुण सिद्धता । गुण गातां होय पुण्य ॥
 बिक्रम देखेन्हे स्तम्भो । तेह कई होई धन धन्य ॥१८॥

भास भग्मावलीनी

कोटवास की स्तुति

तब कोटवास मने हरखयो तो । भग्मावली । धनधन मुनीवर भासतो ॥
 खेद मद धीकी बेगलो तो । भ० । अमातरणो आवस तो ॥१॥
 जीव द्रव्य एणि उलस तो । भ० । ब्रह्म स स्वरूप लख्यो जोय तो ॥
 गाल फूलावे बीजा सही तो । भ० । तत्व जानी एह सही होय तो ॥२॥
 मेखीजवयो बहु परी तो । भ० । वांकां वचन बोलय तो ॥
 जीवक थाप्यो बहु परी तो । भ० । आरवाक मत सेय तो ॥३॥
 बलीए तिखो में धरू तो । भ० । नामो असूची अजाणतो ॥
 पण ए हरी सचडी नहीं तो । भ० । ए सही अतीही सुजाण तो ॥४॥
 सधु मित्र एह मने समा तो । भ० । लोष्ट कनक सम भावतो ॥
 बिकार धंग एहने नहीं तो । भ० । ए भवसागर नाव तो ॥५॥

कामरूप एह जाणीयि तो । भ० । कामतणो क्षयकार तो ॥
 काम करें ए आपणूं तो । भ० । कामतणो दातार तो ॥६॥
 हम कही दोए कर जोडीया तो । भ० । सीस नमावी लागी पायतो ॥
 मभ जन्म सफल हवो तो । भ० । तुं दीठु मुनीराय तो ॥७॥
 हूं ब्यूंकर सही तह्य सणो तो । भ० । मभ सरखूं दीयो काजतो ॥
 जिम मुभ देह सफल होय तो । भ० । तूं सही मुनीवर राज तो ॥८॥

धर्म की महिमा

मुनीवर स्वामी बोलीयो तो । भ० । मधुरीय भुललीत बाण तो ॥
 काम कहूं एक ठवडूं तो । भ० । कोटवाल सुंणो सुजाण तु ॥९॥
 धरम करो तह्यो नीरमजो तो । भ० । त्रिभुवन तारण हार तो ॥
 जिणि फल धणूं पामीइ तो । भ० । जीव दया भंडार तु ॥१०॥
 धर्मि नवनीधि संपजितो । भ० । हरीबल पद धर्म होइ तु ॥
 चक्रवांस पद धर्मधी तु । भ० । धर्म समो नहीं कोय तो ॥११॥
 लाख चोरासी हाथीया तु । भ० । रथ तेता तूं जोय तो ॥
 कोड अठार तुरंगम तो । भ० । धरम फलें सणो लोय तो ॥१२॥
 कोड चोरासी पाला भला तो । भ० । चउद रतन धर मांहि तु ॥
 छनऊ सहस्र अतेडगी तो । भ० । धरम तणा फल चाह तु ॥१३॥
 बत्तीस सहस्र मुकुट बंध तो । भ० । राय करे नित सेव तो ॥
 सोल सहस्र गणबध देवता तो । भ० । अंगरक्षक सेवें देव तो ॥१४॥
 छलंड तणो से राजीयो तो । भ० । ग्राम छे छनऊ कोड तो ॥
 भागध वर्तन छे आदि तो । भ० । जांवया देव सेवि कर जोड तो ॥१५॥
 एणि मानें श्वर रीध तो । भ० । आस्थ कह्यो बहू भेद तो ॥
 धरम फलि एहवां मुख लहो तो । भ० । नहीं सोक संताप देख तो ॥१६॥
 धर्मि तीर्थकर पद वली तो । भ० । लहीयि पंच कल्याण तो ॥
 मेरु सीखर पूजा लहि तो । भ० । धरम तणि परमाण तु ॥१७॥
 बत्तीस लाख विमान धर्या तो । भ० । इंद्र सेवि नीत नीत तो ॥
 जाणें फिकर धर तणो तो । भ० । भगत भाव धरी चीत्ततो ॥१८॥
 जान धरम परकासने तो । भ० । बरीजे मुगती नार तो ॥
 त्रिभुवन जस विस्तारयो तो । भ० । धरम तणि विस्तार तो ॥१९॥
 द्वाद नागेंद्र उपेंद्रनो तो । भ० । पद पामीयि धर्मि जाणतो ॥
 देवांगना सूं श्रीडा करता तो । भ० । अनेक देव माने आण तु ॥२०॥

विद्याधर विद्या भली तु । भ० । धर्मिचंद्र सूर्य पाय तो ॥
 देवांगना नाटक रचि तु । भ० । नारद किन्नर गुण गायतो ॥२१॥
 कामदेव सरलू रूप तो । भ० । नारी मन मोहंत तो ॥
 रूप देखी देवी भूलि तु । भ० । धरमि होइ मूप महंत तो ॥२२॥
 सीर वर छत्र उजलो तो । भ० । वमर ते गज अबगाह तु ॥
 गज तोरंगम रथ चला तु । भ० । पराक्रम जय तणो ठाह तो ॥२३॥
 धरमि सात खणों घर तु । भ० । रतन तणीं सोंहि भीत तु ॥
 सन करण कयण रयणें भरघा तो । भ० । पट कोल बस्त्र बीचीव तो ॥२४॥
 धरमि नार सोहामणी तो । भ० । रूपें रती अवतार तो ॥
 मुनीवर नो मन मोहती तो । भ० । मोहंती सील भंडार तो ॥२५॥
 नमती साक्षु नखंद ने तो । भ० । गमती नाहनैं मने तो ॥
 रीस न भरती रतीं भरी तो । भ० । हुरव वदन धिा दिन तो ॥२६॥
 हंसगामिनी मृगलोचनी तो । भ० । धरमि बहु गुणवंती तो ॥
 जीव तणूं जतन करती तो । भ० । कोमल वचन महंत तो ॥२७॥
 निज कुलनि प्रज्जु पालती तो । भ० । चालती लक्ष्मीय होय तो ॥
 वरत विधाननि पालती तु । भ० । धरम करंती जोय तो ॥२८॥
 दान देती सुपात्रनि तु । भ० । मानती सगा सजन तो ॥
 जिनपूजा करती रंजे तो । भ० । निरमल धरती मन तो ॥२९॥
 प्रोहोणा सगानि संतोषती तु । भ० । चतुर पणानु ठाम तो ॥
 भाग्यवंती विनयवंती तो । भ० । कंतना पूरती काम तु ॥३०॥
 धर्मि पुत्र भला होय तो । भ० । मातपीतानि मानंत तो ॥
 धरमवंत मुनि आगला तो । भ० । नयनैं आराध देय तो ॥३१॥
 धर्म पुत्री पामीयितो । भ० । रूप सोभागनी रेहतो ।
 सीलवंती गुणि आगली तु । भ० । विनय विवेकनो गैह तो ॥३२॥
 धर्म मित्र भला सहितु । भ० । पाप थी वारय जेह तो ॥
 हीत मारगनैं ऊदेसि तो । भ० । अगर अंबर आवि भोग तो ॥३३॥
 धरम तणे फल पामीमि तो । भ० । अनेक ईदनो संयोग तो ॥
 मणि माणिक मुगता फल तो । भ० । मोती नक्सर हार तो ॥३४॥
 पालखी रथ सुखासन तो । भ० । धरम तणो विस्तार तो ॥
 कनक सोकल हींदोलार भला तो । भ० । हींदोलि हींदोलि दास तो ॥३५॥

मानसीसूँ मननी रली तो । भ०। धरमि लीला बिलास तो ॥
 पकवान बहुजात तु । भ०। सडा अन्न अनेक प्रकार तु ॥३६॥
 भोजन सजाई भोजन सक्ति तो । भ०। दधि दूध घृत सुबिचार तु ॥
 बल्लो रास कपूर नाग बेल दल तो । भ०। फोफस एलबी लवंग तो ॥३७॥
 ए आदि भोग उपभोग तो । भ०। धरम फलि उत्संग । भ०॥३८॥

वस्तु छन्द

धरम ना फल धरमना फल । तरणी विस्तार ।
 भव भव जीव सुख सहि । दुःख लेस एक क्षण न पावि ॥
 दूर देसांतर पावतो । धरम एक सखाय आवि ।
 जल गिरि रण बन माहि पडयो । जीवनें राखि धर्म ॥
 डम जाणी धर्म साचरो । दूर मुको पाप कर्म ॥१॥

मांस जीवडानी—राग देशाक्ष

पाप के कारण विभिन्न गतियों में अमरण

पापतरणि फल भव बने हो । जीव भमें अपार ।
 दुःख सहि चीहो गती माहि हो । सुख न पावि लगार हो ॥
 पापें दुःख दालीद सहि हो । भव माहि भमतो जोय हो० ॥१॥ जीवडा
 नीत्य निगोद सात लाख कही हो । इत्यर निगोव तेनी हीय ।
 नील फूल कंद मूल माहि हो । जीव भमतो जोय हो० ॥
 पाप तरणा फल होय । पापें दुःख दालीद सहि होय । हो०॥
 भवमाहि भमती जोय हो० ॥२॥ जीवडा॥
 भव मांस सरिरि माहि हो । कंद मूल माहि जेह ।
 फूल फल छाल पल्लव हो । नीगोदे भम्यो जीव एह हो ॥३॥
 यात लाख पृथ्वी काय हो । मृदु खर पृथ्वी भेद ।
 गेरु गीरी मांटी सीला हो । जीव उपनो लह्यो खेद । हो जी० ॥४॥
 सात लाख अपकाय माहि होय हो० । जीव अनंती बार ।
 नद्ये सायर सरोवर कूआ हो । उपनो एह सकार । हो जी०॥५॥
 तेजकायक सात लाख कहा हो । अगनी काय उपन ।
 काल अनंती जीव भमतो हो । कहीं नहीं सुख संपन । हो जी०॥६॥

बायकायक लाख सात हो । तनु धन घनोदधी नाम ।
 चर वायु माहि बली हवो हो । जीव भयो ठाम ठाम । हो जी० ॥ ७ ॥
 अनेक वेत्त तव तृण आदि हो । बनसपती दस लाख ।
 जीव अनंतीवार अवतरणो हो । केवली मोलि माख ॥
 पाप तरा फल होय । पापि दुःख दालीद्र सहि हो । हो जी० ॥ ८ ॥
 बिलाख बिहारी माहि हो० । अलसीयां शंख सीपोणि ॥
 श्रीडा लालीयां मेहर आदि हो । जीव भयो बहु जोरा । हो जी० ॥ ९ ॥
 त्रेण्डी बेसाख लेखा हो । बीछी कीडी मंकोड ॥
 जीव एह भमनो बापडो हो । कर्मि लाई मोटी खोड । हो जी० ॥ १० ॥
 वे लाख चोरेन्डी कपु हो । हवो जीव अनंतीवार ।
 माखि गोमाखि डंस मसाहो । भमरा आदि मभार । हो जी० ॥ ११ ॥
 च्यार लाख नारकी जोनें हो । धतूरा फूल आकार ।
 हंडकू संस्थान हवो हो । सहयो दुःख अपार । हो जी० ॥ १२ ॥
 तीर्यच च्यार लाख माहि हो । वन नम जलचर जात ॥
 वार अनंती अवतरणो हो । वेसलेई बहु भात । हो जी० ॥ १३ ॥
 चार लाख देवगती माहि हो । भावन व्यंतर जाण ॥
 जोतपी कल्पवासी हवो हो । मानसीक दुःख बखार । हो जी० ॥ १४ ॥
 चौद लाख मनुष गती हो । आर्य म्लेच्छ नू जोय ॥
 भोगभूमीया बिजावर हो । भमतो जीव अवलोय । हो जी० ॥ १५ ॥
 लाख चोरासी योनि भयो हो । आवर जंगम हो एह ॥
 सूक्ष्म बाहर रूप घरया हो । दुःख तरा नहीं जेह । हो जी० ॥ १६ ॥
 पंच परावर्त्त पूरया हो । भमतो बार अनंत ॥
 संसार बनी भीतरि हो । कर्मनि फलि महंत । हो जी० ॥ १७ ॥
 खोंडा पांगला आंधला हो । मूगा गहिला जेह ।
 पूरव भव पाप करयो अति हो । उदय आभ्यो सही एह । हो जी० ॥ १८ ॥

पाप का फल

कोडी द्राव चांदां बणा हो । वीवची पामा थाय ॥
 गज चर्म वात रक्त आदि हो । पाप तरि पसाय । हो जी० ॥ १९ ॥
 कंठमाला गडगूबडा हो । पाठां हरस आदि व्याधि ॥
 अक्ष कक्ष रोग पीडयां हो । क्यूहीं न पामि समाधि । हो जी० ॥ २० ॥

मूखें घणूं घणूं पीडयो हो । मोडयो बरीझि गेह ।
 भीख मागतां बर घरें हो । पाप तणा फल एह । हो जी०॥२१॥
 तणखलें छाहूं भूंपडूं हो । बरसाखि मलंत ॥
 भोयें पडिया सांतपि हो । बूटो खाट ढलंत । हो जी०॥२२॥
 कोझी सल्यी छोला सायें हो । नीरस जमें भन्न ।
 परदेसी सेवाघरही हो । पायें नीगमें दन्न । हो जी०॥२३॥
 पाप तणा फल होय । पापि दुःख सरीर सहि ही ।
 भवें भव भमनो जोय ॥
 फाटां बूटां लूगडा हो० । जूइं भरया असेख ॥
 चांचड मांकरा मसान डि । दैय ए दिन मम लेख । हो जी०॥२४॥
 नारी घिर कलपिणि हो । सापिणि पिरि खावा घाय ॥
 मोर पगी रीछ गती हो । पाप तणे पसाय । हो जी०॥२५॥
 नख कूपा आंगसी बरली हो । घूटी मोटी जाण ॥
 जांघ ऊर रोम घर्णा हो । दोभारि तणी खाण । हो जी०॥२६॥
 मादल डोल सम पेट हो । महिबी जेटलूं खाय ॥
 सांझि व्याहाणि सुती दीसि हो । सील हीणी पाप पसाय । हो जी०॥२७॥
 उत्तर दक्षिण स्तन न्यम्या हो । कोटिते मल तणे ठाय ॥
 गालेतु खाडा पड्या हो । स्त्री लहीइं पाप पसाय । हो जी०॥२८॥
 होठ कासा ठांकीणी समा हो । नाक ते चीबूं जेण ॥
 कान बूटा साकिनी समी हो । पीली टूंकडी सीर बेण । हो जी०॥२९॥
 सिहिधि भमरा कातरी हो । ऊबूं पोहो लू कपाल ॥
 सरीर कठण अंगे सूकी हो । खरसा दे विकराल । हो जी०॥३०॥
 लोभिण नें चंचल घणी हो । पहरोणा आवि गेह ॥
 बढवाड बीशेये करें हो । नाहसूं न राखि नेह । हो जी०॥३१॥
 होठ पीसंती दीसीमि हो । कुलनी खपण कार ॥
 साहस करि मायावणी हो । देह दुर्गव अपार । हो जी०॥३२॥
 प्रलय काल लीला जाणो हो । कपट तणो एह गेह ॥
 मूखें अशूची नीच मती हो । पाप तणा फल एह । हो जी०॥३३॥
 वीनय रहीत बीभचारणी हो । पापिणी पाप करंत ॥
 मुख मीठी अंते खोटी हो । परधर घिर फरंत । हो जी०॥३४॥

बान पूजा नव्य गमि हो । धरम कथा न सुहाय ॥
 विकथा कूटि कपटणी हो । जीव जतन न कराय । हो जी०॥३५॥
 पुत्र पुत्री होइ नहीं हो । होइ तु मरीनि जाय ॥
 धर्म कहीं करें नहीं हो । व्यसनि भूँडा सहाय । हो जी०॥३६॥
 मित्र तेहि तारा मलि हो । साथि पापहु बाट ॥
 हृष्टतण्ड वियोग होइ हो । परि परि पापि उचाट । हो जी०॥३७॥
 नीच कुलि बली अवतरि हो । करता नीच जे काम ॥
 पोखि पिड पापि आपणो हो । न आनि धर्म न नाम । हो जी०॥३८॥
 लांछ लेइ चाडी करि हो । धूतारी भरे पेट ॥
 पर अपवाद जूँठा दीयि हो । पापनूँ कारण नेट । हो जी०॥३९॥
 पाप आरंभ पोढ़ा करि हो । करि पाप व्यापार ॥
 पापी मूँ संगत करि हो । पाप कारण ए बीचार । हो जी०॥४०॥
 साधु साधमीनी नीदि हो । धर्मनी बाटि न जाय ॥
 दान पूजाये कलेश करि हो । तीणि किम सुखलहाय । हो जी०॥४१॥

बुहा

कोटवाल द्वारा धर्म के स्वरूप को कहने के लिये प्रार्थना

कोटवाल कहि धर्म नो । कोहो स्वामी स्वरूप ॥
 जिस भेद आण धरणी । धरम लेऊ सुख रूप ॥१॥
 मुनिवर स्वामी बोलीया । दया धरम करु सार ॥
 सुरग मुगती फल पामीयि । जिस तरीयि संसार ॥२॥

कोटवाल का पुनः प्रश्न

कोटवाल तन बोलीयो । ब्राह्मण कहिते कयम् ॥
 दान दीजि विप्र सेवयी । भूद्र नहि धर्म एस ॥३॥
 धनीनि हीसा कही । पारधे आधिक कर्म ॥
 मांस लायते दोष ज नहीं । न्याय पालि होय धर्म ॥४॥
 मद्य मांस दूषण नहीं । बेस्या सग प्रहसि ॥
 ए जीव सहिज छि अती भलू । नो करे एह थी नीकृत ॥५॥
 ब्रह्माई पशु सरजयां । समृति कहि यज्ञ काज ॥
 वेद कहि पशु यज्ञ थी । लहि ते स्वर्गहु राज ॥६॥

भास साहेलखीनो

मुनि का उत्तर

बलता मुनीवरउ । उत्तर बोलि सुणो तहाँ कोटवाल ॥
 क्षत्रीकुल उत्तम सहू मध्ये । क्यंम हिंसा करि विकराल ॥
 जूतू धरम विचार । जीवदया मंडित सही जाणो ।
 सुरग मुगति सुखकार ॥१॥
 क्षत्री धरम रणंगणो आख्यो । जीसबो साहामोपचारी ॥
 नाहा सता पडता दाति तृण धरता । तेहने क्षत्री नव्य मारी । साहे० ॥२॥
 बापडा हरण दाति तृण धरता । नाहासता पडता अपार ॥
 क्षत्री पारध किम एहने मारि । चतुर करो विचार । साहे० ॥३॥
 तीर्थकर हरी हलधर उपजि । क्षत्री वंश पवीत्र ॥
 भास भक्षण जीव हिंसा । किम बोली । जूउ बीचारी मीत्र । साहे० ॥४॥
 जीव हणत धर्म जो होय । तो माछी पूजिजि ॥
 भास आदि जो धर्म कहिइ । तु अपाए गुरु लीजि । साहे० ॥५॥
 ध्यान मीन जीव हिंसा करता । पापि जु उत्तम ठाम ॥
 तु नदी कांठि मीन ध्यानी । ककनि दीजि मुनी नाम । साहे० ॥६॥
 जीव बवंता धर्म जो कहिइ । अधम कहोनि कहिवाय ॥
 केवल स्नानि जो धर्म होय । माछलां तो सीव जाय । साहे० ॥७॥
 ब्रह्मापि पक्ष यज्ञ निसरज्या । जे तह्यो बोलो वचन ॥
 बाघ सिंह सरभ पक्षुजि कह्या । ते हसवात करि मंत । साहे० ॥८॥
 से क्रूर जीव बलतीं सीख देवे । धज बापडा बल हीण ॥
 तेह घणू धाननि आवरबा । देवे दम्बाये दीन सा० ॥९॥
 जीव अहिंसा परम धरम कहियो । वेद स्मृती मभार ॥
 जीह्वा लंपट जे बिहइ । ब्यसनी अपरीत पापि विचार ॥
 जूउ धरम बीचारी । जीव दया मंडित सही । सा० ॥१०॥
 जीवत दान एक जीवने दीष । भूम दीयि एक असेख ।
 एक नेह सम कनक देवता । जीवत दान विसेख । सा० ॥११॥
 एम जाणी निज दृढ़ मन आणी । छांडो मिथ्या भ्रांत ॥
 केवली भाषीत धर्म बली आणी । त्रिगुवन भाहि विरुपात । सा० ॥१२॥

घण्ट मूल गुण

मद्य मांस मद्युवर जीयि । बली पंचूँकर परीत्याग ॥
घाठ मूल गुण एहने कह्योमि । भावकनु ए मार्ग । सा० ॥ १३ ॥

बारह व्रत

अहिंसा व्रत पहिलूँ कह्योमि । बीजूं सत्य वरतइ अम जाणरे ॥
अचोरीज व्रत पडघूँ मूक्यूँ न चोरीजि । स्वदारा संतोष बखारो । सा० ॥ १४ ॥
परिग्रह परीमाण बली बीजे । रात्रि भोजन टालीजि ॥
जीवदया आदि तह्यो जाणो । अणुव्रत एह पालीजि । सा० ॥ १५ ॥
दीगवरती देसवीरती अनरथ । दंडव्रती ए देवो ॥
गुणव्रत नृहि गुणो व्रथ पामे । संसार तारण लेखो । सा० ॥ १६ ॥
सामायक पदवें उपवास । भोग उपभोग संख्या ॥
प्रतीपविभाग ए क्यार प्रकार । सीक्षाव्रत मुभ सीक्षा । सा० ॥ १७ ॥
समकित सहीत बारि व्रत कह्यो । संलेखना तनु त्याग ॥
दूढ मन करी लह्यो ए पालो । सरग मुगती नु मार्ग । सा० ॥ १८ ॥
चंडकरमा बलंतूँ इम बीमवि । ए सहू पालूँ सुजाण ॥
जीव दया पण नवि पलयेमे । होयि कुल धर्म हाण । सा० ॥ १९ ॥
बिकट लोटा चुरटा जे मोटा । निग्रह कर तेह करे ॥
भली परीहूँ नगरी ने राखूँ । कूर कर्म छि महारो । सा० ॥ २० ॥
मुनी बोलिहजी तह्य मन केरो । आंत ते काय न जाय ॥
कुलि पांगलो कोढो को व्यसनी । तिम आपणी सु' यबाय । सा० ॥ २१ ॥
बली राजानो भय तह्य होसि । कुटंभ भरण तरा सहू ।
लावा काजि कुटंभ सहू मलयू । दुःख सहिसि जीव बहू । सा० ॥ २२ ॥
परतक्ष तह्य निदृष्टा तज दाखू । सांभलो मन धिर राखी ॥
जसोधर चन्द्रमती भव भमयां । ए कूकडा बेहू साखी । सा० ॥ २३ ॥
पीठ कूकडो हरायो देवी आगलि । ते पाप बहू लागो ॥
अमृतायि जसोधर चन्द्रमती मारघा । मोर कत्यरा भव भय भागो । सा० ॥ २४ ॥

यशोधर एवं चन्द्रमती के जन्म

तीहां थी मरी सिहिलो साप हवां बनी रोहीत संसूमार ॥
चन्द्रमती धात्री दवी । नेत्र गंधि राघ छाग हवो बे वार । सा० ॥ २५ ॥

चन्द्रमती भहिष योनि पाम्प्यो । तिहुं थी कूकड़ा हवां बेह ॥
कृत्रिम जीव हिंसा फल पाम्प्यो ! भवि भसतां नहीं छेह । सा० ॥ २६ ॥

कोटवाल का संसार से भय

तब कोटवाल आचंभ मनि पाम्प्यो । काँप्यो थर थर देह ॥
राक्ष राक्ष करुणा करी मुनीवर । किम होसि पाप छेह । सा० ॥ २७ ॥

कोटवाल मुनी पायं सीर नामी । वरत मागि मनि सूद्ध ॥
समकित सहित आवक वत रुड़ा । मुनी करुणा करी दीध । सा० ॥ २८ ॥

तब अह्ने बेहू कूकड़े सह सुणयूँ । घर मनि भवांतर सार ॥
जाती समर ऊपनूँ सही । अह्ने पण लीधा वरत भवतार । सा० ॥ २९ ॥

जाती समर बली वरतज पाम्प्यो । हृष ऊपनो अपार ॥
कूकू कूकू इम मधुरज वास्यां । सारीदत्त सुणो बीचार । सा० ॥ ३० ॥

कुसुमावली सूरंगि रमतां । काने पड्यो अह्ना साद ॥
जूज जूज सबद बेधी बाण मूकनूँ । बाण लीधू करी वाद । सा० ॥ ३१ ॥

बाण बेगि राजाहू मूकयूँ । मूकयो अह्ने तब प्राण ॥
कुसुमावली गरभे ऊपनो । जोडुं दृढ वत प्रमाण । सा० ॥ ३२ ॥

कोटवाल मुनीवर पद बाँदी । स्तवन करघु मन रंग ॥
धन्य धन्य मुनीवर तह्य तरंगी बाणी । नीरमल गंग तरंग । सा० ॥ ३३ ॥

पापकलंक महारा पखनाया । तुझ बाणी जल पूर ॥
सम मन पाप कादव सह सूको । मुनिवर दीठु सूर । सा० ॥ ३४ ॥

संसार सागरि बूडंतां । मुझ तह्ये दीधु हाथ ॥
हं पाप लहिरी भंपायु घणीयिरे । मोहि आवत्तयो अनाथ । सा० ॥ ३५ ॥

आज चित्तमणि रत्न मैं पाम्प्युँ । पाम्प्यो धर्म कल्पवृक्ष ॥
जिनवाणी जिनवत जितशासन । जिणि जाण्यो ते दक्ष । सा० ॥ ३६ ॥

ब्रह्म नीच कुल अवतरघु । तु मुझ भाग्य त्रिसाल ॥
समकित रक्षण धरम मिल हयो । जीव दया गुणमाल । सा० ॥ ३७ ॥

कोटवाल मुनी नमी निज स्थान के । पोहोतो मुनी गुण गातो ॥
मुनीवर मोटो गरुड महंत । रहयो चीद्रूप घ्यातो । सा० ॥ ३८ ॥

वस्तु

बेहू कूकड़ बेहू कूकड़ मरीते जाण ।
 कुसुमावली गरभिहवां । सने सने ते गरम बाघ्यो ।
 गरम वेदना व्याकल हवां । तवमासे अवतार लीधु ॥
 अभयदानजो होलो हवो । अभय अभयमती नाम ।
 पुत्रनें पेटेज पुत्रज हवु । भव एहवु दुःख ठाम ॥१॥
 श्रीमंतो वृषभादमो जिनधरा वीरावसानाः सदा ।
 संसारार्णवनीसमाः समदमध्यानातृसद्वोधकाः ।
 सद्बुध्यप्रतिबोधकाबुधनुताः षड्वेदशुभदगुणाः ।
 श्रीदेवेन्द्र सुविक्रमस्तुततपदाः कुर्वतु नो मंगलं ॥७॥
 इतिश्री जसोधरमहाराज चरिते । रास झूठामणो काव्यप्रतिछदे ।
 भूदेवकवि श्रीविक्रमसुत देवेन्द्र विरचिते । यसोमती कुमार ।
 वसंतश्रीठावनागमन कोट्टपालपुनीविबाब ककुट लब्ध ।
 सद्धर्मप्राप्ताभयहृद्यभयमत्यवतार दर्शनोनाम सप्तमोधिकारः ॥७॥

अष्टम अधिकार

मास रासनी

अभयमति एवं अभयदत्त का शिशुकाल

सने सने मोटां हवाए । अहो बेहू सुंदर बालतु ॥
 बत्तीस लक्षणि संकरपां । चन्द्रकला गुणमालतो । घरमाहें हीडीयो ॥१॥
 रीखतां मोतीचोक चूरततो । रतनसाथीया वेरंतडां ॥
 बली बली तेह पूरततो ॥१॥ घरमाहें हीडीयो ॥२॥
 रतन आगिणि खेलंतडां । दीसि अहो प्रतिछांहीय तु ॥
 नागकुमर नागकुमरीए । जाणे अहोसूं खेलायतो ॥३॥
 क्षण क्षीजतां क्षण हसतडां । सण क्षण घरणी पडंततो ॥
 रतन खेलणी आगल घरिए । तेहूं पण आछे चडंततो ॥४॥
 अनुक्रमि अहो मोटां हवां । सुललीत तनु मुकुमाल तो ॥
 विविध वस्त्रे भूषणो भरीए । कंठि मुक्ताफल मालतो ॥५॥
 मांटा उछव संभ्रम करीए । सूंभया भणवानी सालतु ॥
 अक्षर अंक राजनीत भण्पां । लेपलक्षण विसालतु ॥६॥

सातवरसना ग्रहो हवाए । मऊ लघु परिण बहु लाजतो ॥
 यसांमती राय देखी चींतवेए । प्रोहोणाचारनि काजतो ॥७॥
 पारध तूर वाजीवडां ए । वाज्यां अनेक प्रकार तो ॥
 पारधी सहूए सज थया ए । हाथ अनेक हथियार तो ॥८॥
 पाश केटलां हाथ धरीए । केटलां मूसल प्रचंड तो ॥
 राजडां हाथें धरि केटलाए । केटलां लोडां दंडतो ॥९॥
 गर्ज लोह लाकडा धरीए । हाथ धरणां कलीहार तो ॥
 पानवाटी ओडण धरणाए । सीचाणा बेहेरी प्रकार तो ॥१०॥
 गृध्र मनि सकरा धरी ए । चीन्नी रथ पिर बिठतो ॥
 लंक सांकल कूर पंचवणी ए । दीठें मन भय पेठतो ॥११॥
 पांचसि स्वान बीहामणा ए । बख बखता जाणो काल तो ॥
 लांबी राती जीभ ललकि ए । नयण पीलां विकराल तो ॥१२॥
 लांसा कांन धरां दीसिए । बेहू पेर टूका कांन तो ॥
 केता घोला केता रातडा ए । केता दीसि पंचवन्न तो ॥१३॥
 बकारघा बाघ सांशि वडिए । बांकडे पूंछ रीसाल तो ॥
 दांत ते जम डाढ़ समा ए । मुख मोटूं विकराल तो ॥१४॥
 कनक सांकल धरां सांकल्यां ए । रतनपाटी गलि सोहि तो ॥
 भल भलकि पंचवणांनी ए । राजानूं मन मोहितो ॥१५॥
 राय चाह्यो तव बेगलि ए । आव्यो वन समीप तो ॥
 कूर बाजिन सुएंतडा ए । तीरीयंघ पंखी कंवडो ॥१६॥

मुनि सुदत्ताचार्य पर पांच सौ शिकारी कुत्तों को छाडना

सुदत्ताचारज मुनीवरए तीणि अवसरें भूप दीठतो ए ॥
 अपसुहोण पारधनें हवा ए । राय मन कोप पईठ तो ॥१७॥
 पांचसि स्वान मूकावयाए । मुनी ऊपर तेणी वार तो ॥
 मुनीवर पत्येते घामयाए । जाणो जम आकार तो ॥१८॥
 मुनीवर तेणो बीटीयो ए । सोहिते गुणमाल तो ॥
 सिंह पराक्रम पुंजलो ए । जिस बीघो सीआल तो ॥१९॥
 मुनीवर तेणी तप बलिए । स्वान नम्या थया सांत तो ॥
 जिन्नलस्या सम देवी करीए । राय मने हवो आंत तो ॥२०॥

मझ पारध बिधन करघू ए । स्वान खील्या एणि जाण तो ॥
 ए कपटी को दीसीयिए । एहनें करूँह विहाण तो ॥२२॥
 तब खडग करें धरीए । धसमस चारुयो भूप तो ॥

कल्याण मित्र की मुनि वन्दना

राज मदैं जीव आधलोए । न लहि न्याय सरूप तो ॥२३॥
 तीरिण अवसरें सुनी वंदनाए । कल्याणमित्र बन मांहि तो ॥
 आरुयो भावसहीत भलो ए । राय दीठो तरिण त्याहि तो ॥२४॥
 अपूरव भेट लेई मल्यो ए । राय दोषो बहूमान तो ॥
 चालों नरेंद्र सुनी वंदीयिए । कीजि धर्म नीधानतो ॥२५॥

राजा के बिचार

तब राजा कहि मित्र सुणो ए । अह्म कीषो अपसोमा तो ॥
 पारध फावेका सणो ए । एह बाँदि गुण कोण तो ॥२६॥
 बली एणि स्वान खीलीया ए । मझ तरा अति क्रूर तो ॥
 बली नाथो अमंगलो ए । कुल एहनूँ जणायतु ॥२७॥
 हूँ कुलवंत राजा सहीए । किम एहने नमायतो ॥२८॥

कल्याण मित्र का उत्तर

तब कल्याण मित्र बोलीयो ए । राज सणो मझ वात तो ॥
 पारध अपसुण तह्ये कह्यो ए । ते बोल सत्य बीख्यात तो ॥२९॥
 पाप कारज एयी नव्य होय ए । होय पुण्यनो एयी काम तो ॥
 स्वान खील्या ते फोक कह्योए । कपटनो न लहि नाम तो ॥३०॥
 तप परभाव एह मन गल्यो ए । सात हवा ए अपार तो ॥
 नाथो कह्यो ते ऊतर कहूँ ए । सहज न सहिजि विचार तो ॥३१॥
 लोक नागो जण्ये नागो भरिए । नागो साधि सीव मोक्ष तु ॥
 जीव स्वभाव नागो होय ए । पहिरयो ए विकृत लेख तो ॥३२॥
 बली ईश्वर नागु कह्यो । नागो सही श्रेष्ठपाल तु ॥
 सुरविद्याधर एहनि नमैं ए । नगन काजि गुणमाल तो ॥३३॥
 वेद धर्मयो वेगलो कह्यो ए । वेद कहीयि एह ज्ञान तो ॥
 ब्रह्म विद्या उपनिषद ए । ब्रह्म लहि जेम भान तो ॥३४॥

मलमलीन सरीर सही ए । घणू घणू घोबय जोय तो ॥
 सात घात मल मूर्खें भरयो ए । पवित्र सुगंध नहीं तोयें तो ॥३५॥
 सील संयम तप पालतां ए । एह होये पवित्र तो ॥
 मसूची कहो ए किम हवो ए । ज्ञान नदी भीले नीत्यतो ॥३६॥
 सील प्रवाह तट सत्य तो । दया कलोल गीताएं कहु ए ॥
 आत्मा नदी संयम जल ए । पांडव ताहुं नीत्यतो ॥३७॥
 कुल एहनु कहूं सांभलो । कलिंग देशनु रायतु ॥
 सुदत्ताराय नाम बखडूं ए । क्षत्रीय कुल गुण ठाय तो ॥३८॥
 सपताग राजे मंडीयो ए । राजपाल तो एक वारतु ॥
 कोटवालि चोर घरी आणयो ए । रायप्रति कहि वीचार तो ॥३९॥
 एहि चोरि गृहपती मारयो ए । वित्त चोरधूं उत्तंग तो ॥
 बंड देवा ब्राह्मण पूछीया ए । ते बोल्या सुचंग तो ॥४०॥
 ताक हस्त पग खंड करो ए । राय कहि कोह्लि पाप तो ॥
 ब्राह्मण कहें पाप रायनें ए । भूक्यां करि पाप व्यापतो ॥४१॥
 ते पाप पण रायने सही ए । तब राय लह्यो बैराग्य तो ॥
 राजभार सुतनें दीडए । संजम लीधो मोक्ष मार्ग तो ॥४२॥
 ऋषि फरि नहीं लह्य तणो ए । घाय फूल हार तो ॥
 सुर नर फण बिद्यावर ए । पूजि चरण सुखकार तु ॥४३॥

राजा द्वारा बन्धना करना

तब राजा बोल मानीयो ए । मुनीवर आगल जाय सो ॥
 नमोस्तु करधू बेहू जाणिए । जोग पारयो मुनीराज तो ॥४४॥
 प्रासुक ठामें बेसीयाए । धर्म धृद्धि बेहूने दीषतो ॥
 राय घणू आचंभीयोए । मनसूं वीचार तब कीषतु ॥४५॥

बूढ़ा

मुनीवरनि राजा कहि, कवण देउ उपमान ॥
 रामद्वेष दीसि नहीं । क्षमा तणो नीधान ॥१॥
 ब्रह्मा कहूं तो उर्वसो चल्यो । हरी तो गोपी लुब्ध ॥
 सीव कहूं तो पीतृ वनें फरि । रवि कहूं तो ताप कीष ॥२॥

चंद्र कहूं तो कलंकी सई । गुन पतनी दोष इह ॥
 सगर हूं तो खारो खरे । मेव तो जइ लोभ मंद्र ॥३॥
 नारद कहूं तो कलह करे । दुर्वासा तो बहु रोष ॥
 विश्वामित्र वसिष्ठ कहूं । मातंगी उर्वसी सुत दोष ॥४॥
 कपिल सगर सुत बालया । जमदग्नी रीसह ठाय ॥
 व्यास कहूं तो नुको अपधरा । घीवरी सुत कहिवाय ॥५॥
 सुक तु अपसरा सूडीयि जण्यो । हरणीयि जण्यो एक मृग ॥
 इम जोतां कुल सील थी । अनोपम मुनी उत्तम ॥६॥
 बली एहनि स्वान मूकया । कोपि चढभा बिसेस ॥
 हूं परा खडग काटी मरतो । रीस न जही लवलेह ॥७॥
 साधु तणी निंदा करी । किम छूटसूं ए पाप ॥
 सिर छेदी मुनी पादें धरूं । तो टलिए संताप ॥८॥
 इम चिंतें राम कोटि भट । खडगिं घालि जय हाथ ॥

मुनि द्वारा सम्बोधन

राय प्रति बली बोलियो । दयावंत मुनीनाथ ॥९॥
 भाभो भूप भलूं नहीं । सिरछेखानूं काम ॥
 आप हत्या ए मानीयि । दुरगति केरो ठाम ॥१०॥
 तपि करी पाप पखालियि । तप करि छूटि पाप बंध ॥
 तप करी सरम मुगतो सुख । अवर जाणो सहं धंध ॥११॥
 राय मनें आश्चर्य हवो । कल्याणमित्र सूं कही बात ॥
 मुझ मन भाव किम जाणयो ए तहूं कही मझ भात ॥१२॥

भास अंधिकानी

कल्याण मित्र द्वारा राजा को समझाना

कल्याण मित्र बोल्यो तेणी बार । राय सुणो बाणी मुझ तणी ए ॥
 ए कारण तो थोडु विचार । ए मुनीवर ज्ञानी घणी ए ॥१॥
 तप करंतडा अती स्मृधो । रोष ऊपनी छि अती घणीए ॥
 रिधि सकति जे मुनी कन्हें होय । विस्तारी कहूं कोडामणी ए ॥२॥
 जो जिन नाम रुधी स्मरण करंत । त्रिसुचिकायादि रोग टलेए ॥
 अवधी जिनमुनी स्मरण थी नाण । सर्वज्जर रोष गले ए ॥३॥

परमावधि मुनी स्मरण विशेष । रोग मस्तकनी आय गली ए ॥

सर्वावधि मुनीनें जन्ममूर्त्त । जाणें पशु ०० हणिए ॥५॥

अनंत अवधि जाणें जग स्वरूप । शब्द ग्रह रोग हरिए ॥

कोष्ठ बुधी रुधी परभाव । शूल गुल्मोदर नाश करेय ॥५॥

सर्वशास्त्रनू बीज अखर लही जाणिए सर्वशास्त्र ॥

बीजबुधी स्वास सही हरोए । श्रुत लही माहोमाहि बैर लहत ॥

बैर तजि पदानुसारी गुणिए ॥६॥

समीन ओत्र मुनी रीध्य ध्यायंत । स्वास खास क्षय रोग हरे ए ॥

सयं बुधी रुधी मुनी तरां ध्यान । कवित कला फल जनि ओविए ॥७॥

वाद विद्या होय जेहनि ध्यान । प्रत्येक बुधि मुनी कहाए ॥

बोश्रीत बुधि बुधी गंभिर । तत्त्व पदारथ जाणी रह्या ए ॥८॥

सरसपरों मन चीत्पो पदारथ । जाणें रुजू मनी रुधी घसीए ॥

विपुलमती कहि कुटिल विचार । मन अर्थ चिंता बरीए ॥९॥

जेहनी भक्त नर सहं जाणिए भग । दशपूर्व रुधी गुण जाणीयिए ॥

स्वसमय पर समय लहि भेद । चौदस पूर्व बखाणीविए ॥१०॥

अनेक प्रकार जाणें निमित्त । अष्टांग निमित्त कुशल मुनीए ॥

अह्नियों का वर्णन

अणीमा महिमा आदि रीधी दातार । विकुर्वण रुधि छि पावनी ए ॥११॥

लघु अणु सम मोटूं मेरु समान । सरीर करि रिधी बलें ए ॥

आकाशगामिनी ध्याता दीधि । सीधी विद्याधर रिधी फलिए ॥१२॥

हृदयचींता मुष्टीगत वस्तु । आरण रुधी जाणिए सहीए ॥

भ्रम साधि जाणिए श्रुत मुनीन्द्र । परा समराण रुधी कही ए ॥१३॥

मेरु सीखर जई स्पर्श करंत । आकाशगामि रुध तरों फलिए ॥

आसी वीखि रीसि दांत पीसंत । चक्रवर्त्ति सैन्य क्षण बलिए ॥१४॥

जो करवति तनु करे बेखंड । कोप न करें सही क्षमा बलिए ॥

दृष्टि बिख जो क्रूर करि दृष्टि । चक्रवर्त्ति सैन्य नो ठाम टले ए ॥१५॥

वन धन मुनीए बडी छती सक्त । पण को प्रति कोप न करिए ॥

तेह रुधी मुनी ध्याता सुणो राय । अनेक प्रकारें बिख हरिए ॥१६॥

धीर पण तप थी न चलंत । उग्र तपि रुधी फल लहो ए ॥

सरीर कांति जाए अंधकार । जिनदाखी जिके मिथ्यात कहो ए ॥१७॥

मन तणो पाप संसय सह जाय । दिस तप रिद्धे घरण ए ॥
 एहनि घषाने करतां फल होय । स्तंभन पोढी सेन्या तणूं ए ॥१८॥
 ताता लोढा पिर पडयो जल जेम । तम अन्न पान बिघटीं जाय ए ॥
 तप्त रुषी प्रभा बिध्याता जाणो । बिघ्न तणूं स्तंभन थाय ॥१९॥
 छत्र अट्टम पक्ष मासोपवास । मन्न बीकृती पामि नहीं ए ॥
 महातप रीधी तणें परीणाम । जलस्थंभन घ्याता सही ए ॥२०॥
 तिहु ग्यास कूर आचमनाय । जल तणही मुनीं बीकृती रती न भजेए ॥
 घोर तपि घोर गुणिवनी रुधि । परीसह कीचि नव्य बूजिए ॥२१॥
 घोर गुण पराक्रम जोय । कर्म बिरी साधि बढिए ॥
 घोर गुण ब्रह्मचारी गुणय । नारी परीसहि नबि पडे ए ॥२२॥
 ग्रामोसहीए पत्त परभाव । ग्रामय पिर पिर ना टलिए ॥
 खीलो सही रुधि भूंकने स्पर्श । रोग सहू दूरें पलिए ॥२३॥
 सर्वांग मेलथी साय बिख रोग । बीस आंती फीफरु जाय ए ॥
 जल्सोसही पति मरकी दिनांस । रोग जाय रुषी ध्यायतां ए ॥२४॥
 सर्वोषधीय पत्त गुण जोय । सर्वांग लषध जाण्यो ध्यायतांए ॥२५॥
 अंतरभूति द्वादश अंग । अस्वन मरकी हरिण तेरि बलीए ॥२६॥
 कायबली जु ऊंचलि बीलोक । सक्ते अन्य स्थानकि धरिए ॥
 हस्त पाम्युं ते दूष सही होय । खीरस बीण रुषी करिए ॥२७॥
 हस्ति बीषादी तें छुत सही थाय । सण्डीसबीण रुषी पीर कहीए ॥
 हस्ति अन्न अमृत गुण होय । अमी अ सबीण गुण सहीए ॥२८॥
 अक्षीण महानसीरुध्य मुनींद्र । जेह घेर आहार लेई जायए ॥
 च्यार हाथ चक्री सैन्य समाय । अन्नदान अक्षय थाय ए ॥२९॥
 बद्धमान रुधि गुणि धन धान्य । विद्या तणी रुषी मोहें ए ॥
 सब्वसिद्धायद एाण प्रमाण । सर्वोसधी माहा पुण्य सोहिण ॥३०॥
 बद्धमान बूधी रुषी नाम । सर्वार्थ सीधी मोक्षादी देइए ॥
 एह रुषी मुनीं कहि छिसार । दिनय करी गुण बीजीयिए ॥३१॥
 सुर असुर नर जोडि हाथ । ए मुनीं मोटो राजीउ ए ॥
 अनेक सास्थ छि अरथ मंडार । नव नय घणूं ए गाजीउ ए ॥३२॥

सुकल ध्यान करि लखन धरेय । भौह बिरीनि ए नइथा ए ॥
 काम मान मद नहिाठडा जाय । पाप पाटण त्रास पइयो ए ॥३३॥
 करम बेरी रणो रोलया जेण । रत्नदय निधान लीयूँ ए ॥
 त्रिभुवन मांहि एकल मल्ल कीर । सहू जोकि जय जय कीउ ए ॥३४॥
 क्षमाराणी सूँ रंग रमंत । ध्यान निद्राए निसि सुबेए ॥
 नित्य नव पदारथ जाण । आतम तत्त्वनिंसही जूविए ॥३५॥
 अठार सहस्र सोल ररभ राखि । चौरासी लाख उत्तम गुण ए ॥
 सुभट सबे पंचाचार प्रधान । एह समु पुरि कृणए ॥३६॥
 उपसम राज चढी करे काम । ठाम बिखय बेरी नो टालिए ॥
 पोढी प्रजा चतुविध संघ । बचन धनि धणं पालिए ॥३७॥
 पुण्य पाटण राजधीनि जाण । सरभ घघल गृह सोभतां ए ॥
 व्यंतर ज्योतिक विविध विमान । परजामंडीत पुर सोभतां ए ॥३८॥
 एणी पिर राज करे मुनीराज । आतमा चिंतन राजबट भलीए ॥
 पापी अभय ने मोहोल न होय । न्याय मारये बालि बलीए ॥३९॥

बूहा

भवांतर पूछूँ कबडा, मात पिता तणा आज ॥
 ए मुनीवर न्याने आगलो । सुणो जसोमती राज ॥१॥
 तब जसोमती कर जोडीनि । मूनीनिं लागो पाय ॥
 मिश्रजारा अविनय करघु । तम्हे खमजो मुनीराय ॥२॥
 मुनीवर कहि राजा सुणो । लाख चौरासी जीव ॥
 ते उपरि क्षमता सदा । समता धरूँ असीव ॥३॥
 भवांतर मऊ भात तातना । कहो तमे ज्ञान भंडार ॥
 मुनीवर कहिते जू जूझा । सुणो जसोमती कुमार ॥४॥

मास नेम मनावोजी । गौतनी ॥

जसोमती राजा के भवान्तर

राय जसोधर तह्य पिताजी । अमृतमती तम मात के ॥राय अत्रधारीजी
 संसारना सुखभीगवतां जी । तह्ये हवा पुण्य पसाय के ॥राय॥
 सांभलतां सही जाणीविजी । पुण्यनिं पाप बिचार के ॥
 जसोधर तम्हारो पीतामह जी । देखी पलीतमो पालके ॥
 बेराभ्य धरी तप आचरी जी । सुरग पाप्मो गुणमान के ॥१॥ राय

पूरव करम पसाय धी जी । राणी कुवडा स लब्ध ॥
 जसोधर मन तेह सूं सहीं जी । बहू परमोहिं बद्ध के ॥२॥ राय०
 राणी अज्ञानी सी जाणीयो जी । राय हवीं मन संग के ॥
 रति बैराग्य भावती गई जी । प्रभात हवूं उत्संग के ॥३॥ राय०
 सामंत क्षत्री मंडीयो जी । राय सभा बईठ ॥
 चन्द्रमती तिहां आवई जी । सुत दीठे हरख पईठ ॥४॥ राय०
 जसोधर दीक्षा लेवा सही जी । कहिं क्रूर सपन उपाय ॥
 चन्द्रमती बलती बदे जी । देखी कोपी राय ॥५॥ राय०
 देवी मकु जीव धर दीनिये जी । मित्र होय मित्र न मित्रात ॥
 उत्तर प्रति उत्तर कहिवा समी जी । जसोधर दवा निवास ॥६॥ राय०
 मायि प्रेरणो लाजिं पड्यों जी । पीठ कुकडी करेया ॥
 भाव करणो हंसा तण्यो जी । देवी नैं बलि देय ॥७॥ राय०
 देवी नूं स्तवन करयूं जी । मभ विघन करो दूर ॥
 तूं चण्डी कास्यायनी जी । सीह बाहनी तू क्रूर ॥८॥ राय०
 ते समरथ केम राखवा जी । जो आव्वु मृत पास ॥
 भोला फोकि मिथ्यात करी जी । पड़ित पापनैं पास ॥९॥ राय०
 देव स्वरूप जाणि नही जी । सुख वांछि संमारि ॥
 जे पर जीवना प्राण हरि जी । ते किम तारि संसार ॥१०॥ राय०
 धिर आवी तुम्ह राज दीयूं जी । संजम लेवा सज्जार्थें ॥
 तब अमृतायि चीतिवूं जी । जाण्यो मुभ अन्धाय ॥११॥ राय०
 ते आवी दिनय कर जोडी जी । दीक्षा लेसूं तुम्ह साथ ॥
 माय साथि मुभ मंदिर की । आज जमो मुभ नाथ के ॥१२॥ राय०
 रायें बीसवास तेन करवुजी । जेसूं पडी चीत खाड ॥
 बली बसेखिनदी नखी जी । नारी मातु साठ के ॥१३॥ राय०
 विश्वास करवो नहीं जी । राय ते घणो सूजाण के ॥
 पण तेह धिर जमका गयो जी । कर्म तणो परमाण के ॥१४॥ राय०
 विश्व देई तीणि बेहूं जणां हण्यो जी । अचेतन कूकडा ने पाप के ॥
 राय मोर मांय स्वान होई जी । पापें पाप्यो संताप के ॥१५॥ राय०
 मोर मरी सेहेलो बयो जी । स्वान थयो ते साथ ॥
 सेहेलो मरी रोहीत हवो जी । सापते समुमार पाप ॥१६॥ राय०

पापि पापजि बाधयो जी । सुणो जसोमती मूष के ॥
 माय बेटा बिर बिस्तरधू जी । संसार दुःखनो कूप ॥१७॥ राय०
 माछायि तह्य ने भेट घरयो जी । जे-रोहीत विख्यात ॥
 अमृता ए जे तेल माहि तल्यो जी । ते सही जाण्यो तह्य तात ॥१८॥
 राय०

सीसु मार जेणी कुबडी हणी जी । नृत्यकी नाचती सार के ॥
 माछी तेडी तेंमारधू जी । तासी बेलू समार के ॥१९॥ राय०
 पोता बीरज पोति ताहां हवो जी । संसार ए हवो विचीत्र के ॥
 तह्ये छाहीं हणी तिहां । तह्य पिता जी । पोति पीता पोति पुत्र के ॥
 २०॥ राय०

छाजी मरी महिष हवो जी । तह्य अश्व हणो जेण के ॥
 अजोनी संभव छाग तह्य पिताजी । दुःखी हवो जाग हणोण के ॥२१॥
 राय०

महिष मारघो वाल्यो चन्द्रमती जीवजी । छाग बाल्यो पिर तण के ॥
 छाग महिष साधि मूग्रा जी । कूकडां हवां पापेण ॥२२॥ राय०
 बन कीडा तह्ये आधया जी । बन सोधी कोट चाल के ॥
 भक्तसूं बाद करंतडां जी । प्रतिबोधायो बिसाल के ॥२३॥
 कूकडे तब भव सांभल्या जी । मुक्त वचन बी सार के ॥
 कोटवालें साथे दूत सीयां जी । हरखें बासां ते वार के ॥२४॥
 कुमुमावली सूं खोलंतडां जी । मुक्यूं शब्द बेंध बांण के ॥
 कुमुमावली गर्भे जोडि अवतरयां जी । कूकडें मुक्ति प्राण के ॥२५॥ राय०
 अभयमती अभयरुची जी । रूप सोभाग अपार के ॥
 मिथ्या पाप तणि फलि जी । इम बांध्यो संसार के ॥२६॥ राय०
 अमृतायि पाप करघो घणूं जी । नाह मारघो देई बिल के ॥
 सीख न पाल्यो मिथ्या करो जी । पांचमे नरकें पापी सीख के ॥२७॥
 राय०

राजा की बशा

राय मनैं तब गहि वरघो जी । नयणो आंसू घायके ॥
 भूरी भूरी आपने नंद तो जीके । रा०। धरधर कांपि काय के ॥२८॥
 महारां मात पिता तणो जी । महारि हाथि व्यध कीच के ॥
 जीखि हूं पाल्यो पोछो करघो जी । तेहनें में दुःख बीच के ॥२९॥ राय०

कल्याणमित्र प्रति बोल तो जी । मि कीधां बहू पाप के ॥
 जलचर नभचर बलचर जी । हलया कीध संताप के ॥३०॥ राय०
 ते पातिक हवि छेद सूं जी । लेसू संजम घोर के ॥
 तनु भव भोग विरक्त हवो जी । दुधर तप करी घोर के ॥३१॥ राय०
 दुःकर्म विरीजी पसूं जी । जीकूँ इन्द्रिय घोर के ॥
 तनु भव भोग विरक्त हवो जी । दुधर तप करी घोर के ॥३२॥ राय०
 मयण मान मर्दन करुं जी । रुंधूँ मन ए पिर के ॥
 कल्याणमित्रनि बली कहूँ जी । कूँअर नें देखो राज के ॥३३॥ राय०
 अहीछत्र राय कूँअर सूँ कूँअरी नी । करजो बेहेवांनू काज के ॥
 बलसु कल्याण मित्र बदि जी । नीज हाथि बेयो राज के ॥३४॥ राय०
 यम कूँअरने राज भोगपडिजी । परजानां सरि काज के ॥
 राजामि राज स्वस्त होइ जी । स्वस्ति मुनी तया योग के ॥३५॥ राय०
 स्वस्ति सहू शास्त्र सांभलि जी । सांभलि यम सयोग के ॥
 राए तेह बोल मानीयो जी । तब जाणूँ नगरी मभार के ॥३६॥ राय०

जसोमती के बैराग्य नाम से चारों ओर चिन्ता

जसोमती राय बैराग्य हवो जी । तब हवु हाहाकार के ॥
 तय अतेजर खल भल्युं जी । एक ऊताबली जाय के ॥३७॥ राय०
 मोती प्रोती तिम रह्यो जी । ते पण वन मांहि घाय के ॥
 एक अरीसे मुख जोती जी । एक सणगारती काय के ॥३८॥ राय०
 एकनै अंजन करि धरयो जी । बेगुलि वन महाँ घाय के ॥
 एकते बेणी गूँअरी जी । एक ते पीठी लायके ॥३९॥ राय०
 एक हार पिहिरवा करि धरयो जी । बेगुलिवन मांहि घायके ॥
 एक सिंहिणी सीरें रोपती जी । एक करि तिलक अराय के ॥४०॥ राय०
 एक फूली करि अही जी । बेगुलि वन मांहि घाय के ॥
 एक चंदन तनु लायती जी । कंचोली हाथि सेवार्य के ॥४१॥ राय०
 एकें भोजन थाल त्यजी जी । बेगुलि वन मांहि घायके
 एक अघुरे पान बीडी धरी जी । अघुरी छि मुख ठायके ॥४२॥ राय०
 घोर पिहिरी बोली बीसरी जी । बेगुलि वन मांहि घाय के ॥
 एक अवलिं घोर पिहिरती जी । एक घाटडी बीसराय के ॥४३॥ राय०

भंवोझो छूटि बेणी ललि जी । बेगुलि वन मांहि धाय के ॥
 एक ते घसमसी चालतीं जी । पड़ती ठाय ठाय के ॥४४॥ राय०
 एक केडेंथी मेलला पडि जी । बेगुलि वन मांहि धाय के ॥
 एक बीछीया नीसरी पडि जी । एक धूधरा छुटी जाय के ॥४५॥ राय०
 एक मूँदडी करि थी पडि जी । बेगुलि वन मांहि धाय के ॥
 एक मोती हार ओड़तो जी । एक कांकरा सोझये के ॥४६॥
 एक बेणी आछाडती जी । बेगुलि वन मांहि धाय के ॥
 एक मही पंगि खूचती जी । एकते सास भराय के ॥४७॥ राय
 एक विलाप करतडी जी । बेगुलि वन मांहि धाय के ॥
 नयन काजल जलि बोली तणा जी । मोती हंस काला धाय के ॥४८॥
 एक नाहना गुण बोलती जी । बेगुलि वन मांहि धायके ॥
 एक झंझूथि बोली भीजती जी । तेऊ कांभली जणाय के ॥४९॥
 नयण नीर करी नाहती जी । बेगुलि वन मांहि धायके ॥
 कुसुमावली राणी बीनवती जी । सुणो जसोमती राय के ॥५०॥
 तप फलि स्वर्ग पामीइ जी । तेणि तह्य कंसू काज के ॥
 नयरी भमरावती समी जी । तूं तो परस्पस इंद्र के ॥५१॥ राय०
 हूं इंद्राणी अपछरा जी । राणी केरो दूँद के ॥
 बली योवन रस लीजियिजी । राज भोगो मन रंग के ॥५२॥ राय०
 थोथु भावम तप करूं जी । दीक्षा लीउ उत्तंग के ॥
 चूझा चंदम नव्य गमि जी । मन भमि भइ तुह्य पास के ॥५३॥ राय०
 भइने एकला नव्य मूँकीयि जी । कीजीयि लील वीलास के ॥
 फूलहार भंगार समा जी । भूषण तह्य विण भार के ॥५४॥ राय०
 मयण दावानल तनु दहि जी । वहीवली चंद्र अपार ॥
 तह्य विण सूनी सेजडी जी । गोठडी कोणसूँ धाय के ॥५५॥ राय०
 किम छांडो एह्नी प्रीतडी जी । अह्य तह्य विण नर वाय के ॥
 पांचेन्द्री पखडु होथि राणी । तिहा जलगण रुडू जांणीइ जी ॥५६॥ राय०
 जब जरा दूरें जँथ के । राय कहि र.णी सुणो जी ॥
 ज्मांही तनु रोग न संभवि जी । ज्मांही नव्य छूटि धाय के ॥५७॥ राय०
 आत्महित ते टालि करो जी । पाछि काइय न धाय के ॥
 घर जबलागू बार पकी दी । मांझो जसववा उपाय के ॥५८॥ राय०

कृप लखवा तब मांडयो जी । किम तेणी अगनी उहलाय के ॥
 मारदित्त अवधारीयि जी । अहो जाण्यो रास दिचार के ॥५६॥
 पालसी बेसी बेहू जणां जी । घाव्या बनह मभार के ॥
 मुनीवरनि पाये पड्यां जी । वीनव्यो जमीमती भूप ॥६०॥ राय०
 तह्य विण परवार सोहि नही जी । तारा विण ससी रूप ॥
 पंजीवरी आहु वीवरी जी । एह एहु नहरे सतगुरु के ॥६१॥
 मदन बाबानल बली रह्यो जी । मुं उपरि नांखो अंगार ॥
 तुम नयनं ममीं भरें जी । तुसही मेधभवतार ॥६२॥ राय०
 प्रेम जल बरसी करी जी । एह संताप निवार के ॥
 मह्यनं लघु पणि किम तजो जी । केम सरि प्रजा नो काज ॥
 निमित्त हबूं ते बल कह्यो जी । वीक्षा जेदा आज ॥६३॥ राय०

बूहा

राजा का निश्चय

राय कहि कूंअर सुणो, सुण्यो असोघर भव जाण ॥
 मोर आदि तह्य लागि सही । पाप पुण्य भेद आण ॥१॥
 भव सुखतां अह्य बेहूनि । हवो जाती स्मरण सार ॥
 सात भव दुःख सांभलयां । मूर्छा आवी तेणी बार ॥२॥
 सीतल बायु चंदनं करी । अह्यो कीधो सावधान ॥
 सुछा कारण अह्यो कह्यो । तीणि दूढ धर्म विधान ॥३॥
 राय कहि तह्ये राजि लीउ । पालो प्रजा परिवार ॥
 क्षम तम सह्ये साथि करी । अह्यो लीउ संजम भार ॥४॥
 दीधो राजमि तह्यने । बलतां केम लीउ आज ॥
 राजनीति इम रहित नही । आवि अती बहू लाज ॥५॥
 अथवा तह्यो तात मुक्त तया । बांछीउं जोइयि हीत ॥
 मोह काद बिनासी तह्यो । ए दीसी वीपरीत ॥६॥
 बाप छोदनि सुख करि । गुरु कह्योयि ते माट ॥
 ते राज रान मांहि भोलवि । बलि नांछिऊ वाट ॥७॥
 जु बाप तह्यो हीत करघु । तो देवाडो दीक्षा सार ॥
 काज सीभि यम आपणां । दुस्तर तरीयि संसार ॥८॥

राज रुद्धं जो तह्य भने । तो ए छोडो कांय ॥
 गोर्लि बालक छे तारीयि । चतुरछे तारयो न जाय ॥६॥
 कल्याणमित्र ग्रहानि कछू । राज लीयो तह्ये आज ॥
 जिय नीसत्य राय तप लीयि । पछि कीजो आतम काज ॥१०॥
 तव में तेह बोल मानीयो । रायें नीज पद दीष ॥
 दान पूजा क्षम तप करी । सत्य रहीत मन कीष ॥११॥
 इति श्रीमद्गान्धर्वध्या निगदितं ज्ञानं सदष्टांगकं ॥
 वृत्तं तत्त्रिदशाक्षितं त्रिदशसङ्ख्येवंभवोद्भेदक ॥
 सदृगबोधमुत्तकानिगदिता न्ययैः सुरत्नानि वै ॥
 देवेन्द्रसुविक्रममुत्तपदं कुर्वतु वो मंगलं ॥८॥
 इति श्री यशोधरमहाराजचरिते रासचूडामणी काव्यप्रतिच्छेदे ।
 भूदेव कवि श्रीविक्रमसुत देवेन्द्रविरचिते । यशोमती राज—
 पाथार्द्धिनीगंसनमुनिदर्शन प्राप्तकोष कल्याणमित्रयोग ।
 नृपलब्ध प्रतिबोधयसोमती वैराग्य लब्धभयरुचि ।
 राज्यांगीकारचरणनोनाम अष्टमोऽधिकारः ॥८॥

नवम अधिकार

× × × × ×
 भास गीता छंदनी—गोर गोरे तह्य वीनबूए ॥
 मुनीवर स्वामी बोलीया ए । मधुरीय सुललीत वाण ॥
 यसोष यसोधर जसोमती ए । तह्य आयि मवांतर खाण ॥१॥

पुर्व कथा

पुण्य पाप फल जूजूछा ए । भवतणु विस्तार ॥
 गंधर्वपुर छि सोहामणी ए । गंधर्व राजा उदार ॥२॥
 ध्यंजली राणी छि तससणी ए । रूप सोभागनी खारण ॥
 ते बेहू कूक्षि उपनोए । गंधर्वसेन कूंअर बखारण ॥३॥
 बली तेह पुत्री हवी कहोए । गंधर्वसेना नाम ॥
 रूपसोभाग सोहामणीए । सयल कलागुण ठाम ॥४॥
 तेह राजानो मंत्री सणोए । राम नाम विख्यात ॥
 तस नारी अग्ररेखा सहीए । रूप लक्षण सुजात ॥५॥

तस बेहू कूखि अवतरघां । सुंदर बेटा बेध ॥
 जीतसत्रु पहिलो कह्यो ए । भीम नाम दूजा होय ॥६॥
 बेटी रायनी जेह कह्यो ए । गंधव सेना सार ॥
 जीतसत्रु कूअरि स्वयंवर वरीए । प्रीत ऊपनी ते बार ॥७॥
 राममंथी सुत सुख भोगवे ए । राजकूमरी सुमाहुंत ॥
 गंधवराय एक बार गयो ए । पारध काज कृताव ॥८॥
 वन माहि मृग देखीयो ए । बाघ साधतु देख ॥
 हरणी बेगें आळी रही ए । हरण मरंतो लेख ॥९॥
 बाण तेणि ओरि मूंकयूए । बेधी हरणी अपार ॥
 बाण नै घाइ मोइ पडी ए । प्राण गया तेणी बार ॥१०॥
 जो जो प्रीत हरणी तरणी ए । नाह आळि धरचु देह ॥
 प्रीत राखी प्राणनी गम्या ए । एहवो कहीइ सनेह ॥११॥
 सरसो आवी जाणो प्रीतहीए । हरणीनें देह मेह ॥
 प्रीत राखी प्राण नीगम्या ए । एहवो कहीयि सनेह ॥१२॥
 प्रीतही जाणो धन समीए । मन पेई माहि धरी एह ॥
 प्रीत राखी प्राण नीगम्या ए । एहवो कहीयि सनेह ॥१३॥
 प्रीत कहीइ खीर नीर समीए । जलदहि नाखि बेह ॥
 प्रीत राखी प्राण नीगम्याय । एहवो कहीइ सनेह ॥१४॥
 रखेनीगमाय प्रीत रतनडू ए । जाणो ऊचालो भारधो एह ॥
 प्रीत राखी प्राणनी गम्या ए । एहवो कहीयि सनेह ॥१५॥
 भाणस राधस सरीखडां ए । कोपतां बार न होय ॥
 प्रीति प्राण दीघो हरणलीए । पशूमां तणो नेह जोय ॥१६॥
 केटला लोटालां पावो भिलटिए । प्रीत करीहरिण सोय ॥
 प्रीति प्राण दीघो हरणली ए । पूसूमां तणो नेह जोय ॥१७॥
 केटली नारी मायावनी ए । नाहनि बंचती जोय ॥
 प्रीति प्राण दीघो हरणली ए । पशूमां तणो नेह जोय ॥१८॥
 नाह नेहें प्राण पाथरे ए । पापणी व्यभवत्तर सोय ॥
 प्रीति प्राण दीघो हरणली ए । पशूमां तणो नेह जोय ॥१९॥
 भाई पुत्रादी कुंटब बहूए । माहो माहि बंचि सहू कोय ॥
 प्रीति प्राण दीघो हरणलीए । पशूमां तणो नेह जोय ॥२०॥

बांधवें बांधव बापें सुत ए । कलह कलंतडा होय ॥
 प्रीति प्राण दीधो हरणली ए । पशुआ तरागे नेह जोय ॥२१॥
 बांधा हरणी भृत्यें तदा ए । खांधि घाली तेणी वार ॥
 राय नगर भरी पाछो बल्यो ए । हरणें न दीठी नार ॥२२॥
 राय पूठि मृग पाछो बल्यो ए । राय दीठी ते जाण ॥
 हरणलो तराण मोहि व्यापियो ए । पामीयो वृखीनी खारण ॥२३॥
 आसूं धारि मेह सींचतु ए । वस दिश जूइ अपार ॥
 नव्य देखिते हरणली ए । धरह व्यापो अपार ॥२४॥
 पंथ पड्यो पूठि आवतो ए । रडतो दूखीयो होय ॥
 राय बीचारे नील सेवें न । मोह तराणे सदा जोय ॥२५॥
 न्यान विहणडो ए पसू ए । भाखा रहीत ते होय ॥
 बिरह पकी ए दुःख धरे ए । मोह तराणी गत्य जोय ॥२६॥
 संसार बन ए दुःखे भरपू ए । जीवने भमाडि सोय ॥
 बीखय वसें बीहल करी ए । मोह तराणी गत्य जोय ॥२७॥
 संसार सागर ए दुस्तरय ए । जीवनें बोलि सोय ॥
 कुटुंब पाषाण कंठे करीए । मोह तराणी गत्य जोय ॥२८॥
 लाख चोरासी जोन चूहटडाए । संसार मगर ए होय ॥
 खेतारि जीवनें सोभि करीए । मोह तराणी गत्य जोय ॥२९॥
 लाख चुरासी रुप धरधा ए । जीवने नचाबि सोय ॥
 आपें नटवो यह करीए । मोह तराणी गत्य जोय ॥३०॥
 क्रोध मानादिक चोरडाए । संसार कूप ए होय ॥
 जीवने नंखावी प्रेय करीए । मोहतराणी गत्य जोय ॥३१॥
 संसार तराणी गत्य जोय । संसार अटवी जीव मृग ए ॥
 वेगें पीडे सोय । आसा पास नाखी करीए ॥३२॥
 राजा मृग देखी दुःख धरे ए । एहनें कीधु संताप ॥
 विषय केरे जंपट पणि ए । केस छटे सूं पाप ॥३३॥
 वैराग्य मन मांहि चींतवतो ए । पुत्र ते दीधू राज ॥
 दीक्षा लीधी वने जई ए । करवा आत्म काज ॥३४॥
 तप करी अती ऊजलो ए । जीते इन्दी चोर ॥
 व्यान मीनें करी संकारयो ए । कर्महुण्यो घन घोर ॥३५॥

कुंभर राज पालि न्यायसूँ ए । बाधयो सपतांग राज ॥
 गजघोडा रथ बंधार घणो ए । परजानी सारि काज ॥३६॥
 एक बार कुंभर दीठो मुनीवरें । ए गज घोडा बहू परिवार ॥
 ते देवी मोह ऊपनो ए । नाणूं बांधूं तेणी बार ॥३७॥
 तपकरी द्रव आचरी ए । नाणूं म बांधसो कोय ॥
 नाणि तप नोःफल जाइए । कोडी हाथी बेच्यो जोय ॥३८॥
 ते रतन आपी काच लीजीयिए । घोडा साटि सर लेवि तेह ॥
 आमलां मोती साटि लीयि संखलो ए । तप करी नाणूं बांधि जेह ॥३९॥
 परधन पर रामा धर रुधी ए । नाणूं ज बांधि देख ॥
 हाथ चीतामणि सांपडिए । काम ऊडाइतो लेख ॥४०॥
 तपें कर्म क्षय ईछीयि ए । संसार दुःख विछेद ॥
 मोक्ष तरां दुख बाछीयिए । नव्य घरीयि मन खेद ॥४१॥
 मरण पाम्यो मुनीवर तदाए । सालव देग ऊजेरा ।
 जसोबंद राजा तणो सरणोए । जसोधं हवो गुण तेह ॥४२॥
 गंधर्वराय राणी ब्यीऊणीबी ए । मीथ्यात तप करयो जाण ॥
 चन्द्रमती हवी ते सहीए । जसोधनी राणी बखारा ॥४३॥
 देवीनें दीधु पांठनु कुकटो ए । व्यर्थें करीमोई तेह ॥
 मिथ्यात पाप उदय हवो ए । सात भव भमी जेह ॥४४॥
 मंधवसेना पुत्री रायनी ए । सील लोप्पूं दुःख खारण ॥
 भीम देव रमू अति घणूं ए । विषयासक्त ते जाण ॥४५॥
 नार तणो अल्लाचार लही ए । जीत शत्रू हवो बैराग्य ॥
 मोह मछर राग परहरीए । दीक्षा पामी भलो भाव ॥४६॥
 तप करी तेणो प्रती घणोए । पाल्यूं संयम सील ॥
 संन्यास लेई प्राण भूंकयाए । पाम्यो माहाराज सील ॥४७॥
 राज जसोधर ते हवो ए । राणी बीखि मरेय ॥
 पीठ कूकडा पाप उदय हवो ए । भव साते एम करेय ॥४८॥
 राम मंत्रीयि बहु बीचार सुण्यो ए । भीम भीम काम असार ॥
 नारी सहीत तीणें आचरयो ए । सील वरत भवतार ॥४९॥
 सील अतिचार विण पाली मूमाए । हवां विद्याधर तेह ॥
 रूप सोभाग विद्या भलीए । सीलतरां फल एह ॥५०॥

पुरुष नारी बेहूते थयां ए । अष्ट महाविष भोग ॥
 रोग संतार दीसि नहीं ए । पामया पुण्य संयोग ॥५१॥
 गंधर्वसेन राजा ए' लह्यो ए । बेहेन तणो अग्याय ॥
 तब बेराग्य मन बसो ए । जोधो तब गुण जाय ॥५२॥
 संजम पाल्यो अति निर्मलोए । नाणूं बांझूं असार ॥
 खधी करी एह अवतरणो ए । मारीदत्त विचार ॥५३॥
 गंधर्व श्री बेटी रायनीए । तप करी सोखी काय ॥
 ते मर करि जपनीए । समृताहवी रूपठाय ॥५४॥
 भीम देवर जे तेहनोए । तेणो भवें करणो जार ॥
 पोढा पाप तणि कलिये । कूबडो हवो गमार ॥५५॥
 पूर भवि आसक्त हती ए । ताहू स्याजी अपार ॥
 एणो भवि नेहू तिम धरयो ए । मारी निज भरतार ॥५६॥
 राम मंथी विद्याधर हवो ए । पालीय आवकाबार ॥
 ते मरी करी अवतरणो ए । असोमती कुमार ॥५७॥
 चंद्ररेखा राजे बीद्याधरीए । तेणो करणो धर्म बखाय ॥
 कुसुमावली सही तेहवी ए । परणी असोमनी जाण ॥५८॥
 चित्रांगद बाप तहू तणो ए । तेणो छांझूँ राज ॥
 नायस बीआ आवरी ए । कुतप करणू सुखकाज ॥५९॥
 कुनीयंपात्रा कीधी बली ए । आवयो दीवी स्याम ॥
 देवी देखी मोहू पांमयो ए । नाणो बांध्यु अजान ॥६०॥
 मरी करी ते देखी हवोए । मारीदत्त सुणो विचार ॥
 नाणूं समत पहारवेए । मोहू कर बूँ असार ॥६१॥
 बीत्ररेखा माय तहू तणीए । तीणि पाप करणो दीन रात ॥
 मंदवानद मरी ते हवो ए । घणो कराव्यो जीवजात ॥६२॥
 माया जीव माटि मोहू धरयोए । तहू जाणो सही राय ॥
 संसार माहि जीव धणूं भमेए । मिथ्या तणो पसाय ॥६३॥
 यमोष पिता जे यशोबंशू ए । दयानु भइ परिणाम ॥
 ते मरी भगदत्त राय सुत ए । हवो सुदत्त सुताम ॥६४॥
 गंधर्व राणी कोय मरी हवी ए । चंद्रलक्ष्मी पसोभह नार ॥
 मिथ्यात फलें मरी घोडो हवीए । महीसे जे हणयो विचार ॥६५॥

ते वली श्रेष्ठी घिर वल्ल हवोए । मरतों पाभ्यो नवकार ॥
 ते मारीदत्त तह्य सुत हसिए । छिते राणी गर्भे सार ॥६६॥
 मुनीवर तणी वाणी सांभलीए । मारीदत्त हवो वैराग्य ॥
 संसारनी स्थिति भावतो ए । सरग मुगति तणो ठाम ॥६७॥

भरवानन्द आदि को वैराग्य होना

राणी ते राज बेसाढी करीए । पञ्चीस राजा सहीत ॥
 दीक्षा लीधी निरमलीए । जीव तणू करघूँ हीत ॥६८॥
 मेरवानन्द जोगहि बरघो ए । जीव हिंसा करघो पाप ॥
 तेह हवे किम छूट सूँ ए । मुनिवर टाल्यो संताप ॥६९॥
 आयु थोडो जाणी करीए । दीक्षा अणसण सीध ॥
 बावीस दीवस लगि तिराए । अणसण पाल्यो प्रसीध ॥७०॥
 पापावडो जो नो शय करघूँ ए । अणसण घरया माट ॥
 जोगी टली देव हवो ए । धन धन घरम महंत ॥७१॥
 पाप एवडो जो नो शय करघूँ ए । अणसण घरया माट ॥
 उपवास वरत संजम तप ए । सही सरग मोक्ष वाट ॥७२॥
 ब्रह्मचारी बाई जेहुतीए । प्रतीबोध्यो जेरि मारीदत्त ॥
 हिंसा ठाम उछेदीयो ए । बेवी संबोधी महंत ॥७३॥
 तीणि महादत्त आदरो ए । आचरियो तप अपार ॥
 सोल संयम घणूँ पालीयूँ ए । अणसण लेई तेणी दार ॥७४॥
 बीजो देव लोक साधोयो ए । संपुट सीला अवतार ॥
 सातधान रहीत तनए । मोती पिर बिचार ॥७५॥
 कनक कुंडल मुगट आदि ए । पहिरया भूषण होय ॥
 अंतरमुहूर्त माहि होय ए । सात हाथ तनू सोय ॥७६॥
 जय जय कार देवी करेए । बरे घाली फूल माल ॥
 देवीय सूँ श्रीढा करे ए । सोल भोगवि विसाल ॥७७॥
 अकृत्रिम खैत्य कल्याणकि ए । यात्रा करें मनरंग ॥
 पूजा अभिषेक अती घणूँ ए । पुण्य जोडे उत्तंग ॥७८॥
 मुदत्ताचारय मुनीवरें ए । अणसण लीधो उदार ॥
 समाधि सरीर सूँकी करीए । सोलमि सरग अवतार ॥७९॥

बाई अजीतमती एवं उसके समकालीन कवि

सुख भोगवि तिहां अती घणूं ए । दीवीय मानस भोग ॥
अनेक यात्रा कल्याणक करे ए । पुण्य तणो संयोग ॥५०॥

मारीदत्त आदि मुनी सहीए । तप कीधो महंत ॥
आपापणा तप फलीए । सरग साध्यु जयवत ॥५१॥

वस्तु

राय जसोधर कथा बिस्तार । गीतम स्वामी इम कह्यो ॥
दया तणो मंडार जाणो । अचेतन जीव हण्यो थकी ॥
सात भवांतर भस्या बलाणो । पुण्य पाप फल दाख्यो ॥
स्वामी ज्ञान मंडार । बार सभा सहीत तदा ॥
श्रेणीक हरषु अमार ॥२॥१॥

भास बधामरानी—राग धन्यासो

मगवान के धर्मोपदेश का प्रभाव

वीर स्वामी तणी सार । दीव्यध्वज अती नीरमसीए ॥
गणधर गीतम स्वामी । बिस्तारी अती सोहोजलीए ॥१॥
सुरवर फणधर स्वामी । अंतर उद्योतिकि सहूमलीए ॥
बली तिर्यंच नर जाण । विद्याधरें घणो सांभली ॥२॥
हरख पाम्या सहू कोय । आनंद घणो मन मांहि बस्यो ए ॥
चन्द्र पूरण जिम जोय । सागर कल्लोल उरसस्योए ॥३॥
केता सील व्रत लीध । केते अहिंसा व्रत आदरधु ए ॥
केता मिथ्यातनि खीध । केते अणुव्रत महाव्रत आचरणो ए ॥४॥
सांभली श्रेणीक राय । हरख ऊपनी मनमांहि घणो ए ।
जिनवाणी मुण्ठाय । स्तवन करि हबि तेह तणो ए ॥५॥
वीर वाणी जाणें मेह । सब तय रूपें राजती ए ॥
वरसि धर्मावृत जेह । मीथात पंखी मव भांजती ए ॥६॥
स्वर्ग मोक्ष सुख क्षेत्र । बुद्धिप माइती दिन दिन ए ।
ज्ञान प्रवाह पवित्र । बुधि नदी बाधि सरण सरण ए ॥७॥
सुरपति आदि भव्य जीव । मोरनि घणूं नचावतीए ॥
संसारतापनें अतीव । निवारती भली भावती ए ॥८॥

वरणावगति नहीं वाणी । नाद अपरंपर नीपवजे ए ॥
 सहू जीव संसय हाणी होय । ए भाश्चर्य ऊपजे ए ॥१॥
 शब्दनीवगति न होय । तुष्टादि व्यापारन नीपजे ए ॥
 प्रीछि जीव सहू कोय । मोटू आश्चर्य मने उपजि ए ॥१०॥
 सूरथ प्रभा जिन भारिण । निष्पात तिमिरनि टालती ए ॥
 भव्य कमल सुख क्षाण । पातक पंकनि रालती ए ॥११॥
 चन्द्रकान्ति सम जिन भास । भव भ्रम खेदनि खेदती ए ॥
 हरस समूह उल्लास । कुवादीयां मान उधेदती ए ॥१२॥
 मेढ सुदर्शन जाम । चैतालसू नादिज बलगिए ॥
 पूरती भणीये काम । महावीर वाणी नांदो तब लगिए ॥१३॥
 लवणादि स्वयंभू समुह । ह्रीन सहीत नादि जब लगिए ॥
 मेघ समीए मग्न । महावीर वाणी नांदो तब लगिए ॥१४॥
 विजयारथ गिरि जाण । बेहू श्रेणसू नादि जब लगिए ॥
 तरव रतन तणी क्षाण । महावीर वाणी नांदो तब लगिए ॥१५॥
 कुल गिरि हिमवत आदि । पद्मद्रह नादि जब लगिए ॥
 हरती विषय विषाद । महावीर वाणी नांदो तब लगिए ॥१६॥
 संग आदि नदी परवाह । सिध बीन अभोषेक जब लगिए ॥
 सुखाता आपि उछाह । महावीर वाणी नांदो तब लगिए ॥१७॥
 गंगादि महानदी चौद । नदी पर बरी नादि जब लगिए ॥
 प्रतिद्वीपे सुप्रमोद । महा० ॥१८॥
 गजदंत गिरि बीस संख्य । जिन मुचन सूनादि जब लगिए ॥
 अपरंपरए अलक्ष । महा० ॥१९॥
 विदेहादि आरज खंड । धरम सहीत नादि जब लगिए ॥
 म्लेच्छ खंड साधि प्रखंड । महा० ॥२०॥
 चक्रो हरी बलदेव । प्रगट पराक्रम जब लगिए ॥
 सुर नर करें अह सेव । महा० ॥२१॥
 जिनघर पंच कल्याण । इन्द्र रक्षित नादि जब लगिए ॥
 वेहेरमाण जिन भाण । महा० ॥२२॥
 प्रतीहरी रुद्र अग्यार । नारद प्रगटि जब लगिए ॥
 त्रिभुवन जन सुखकार । महा० ॥२३॥

मुनीवर रुषी निधान । केवल ज्ञानादि जब लगिए ॥
प्रगटि धर्म विधान । महा०॥२४॥

कर्म हरी मुनी संत । सिव पद पामें जब लगि एह ॥
अनंत सौख्य महन्त । महा०॥२५॥

चक्रवर्ती नामि जुत । कृषभाचल नादि जब लगिए ॥
योजन विस्तारें अदभूत । महा०॥२६॥

नीषधानीलोपरि जाण । रवि शशी उदय जब लगिए ॥
ग्रह नक्षत्र सूर्य वस्त्राण । महा०॥२७॥

रवि शशी ग्रह नक्षत्र । मेरु प्रदक्षिण जब लगिए ॥
करी दिन रात्रि विचित्र । महा०॥२८॥

असंख्यात योतकलोक । चैत्यालां नादि जब लगिए ॥
सुणतां टलि सहू शोक । महा०॥२९॥

व्यंतर जे असंख्यात । घाठप्रकारि नादि जब लगिए ॥
चैत्यालां सूविख्यात । महा०॥३०॥

भवनवासी दस भाख । चैत्यालां सूर्य नादि जब लगिए ॥
सात कोड बोहोत्तर लाख । महा०॥३१॥

सुशर्म ईसान आदि होय । सोल सरग नादि जब लगिए ॥
कल्पवासी विमान जोय । महा०॥३२॥

अवेयक नवोत्तर । पंच्योत्तर नादि जब लगिए ॥
कल्पातीत अमर । महा०॥३३॥

लाख चौरासी सहस्र । सत्ताणू त्रैवीस संख्य जब लगिए ॥
चैत्यालासू विमान वांस । महा०॥३४॥

मुगती शिलापी अंतरीक्ष । सिधावगाह नादि जब लगिए ॥
त्रिगुण त्रिभेद अलक्ष । महा०॥३५॥

आतवलय बृह भेद । त्रिमुवन घरी रही जब लगिए ॥
षट् द्रव्ये भरयो अछेद । महा०॥३६॥

जिनभाषित दयाधर्म । भविकनें उधरि जब लगिए ॥
सास्वतो आये धर्म । महावीर नांदो तब लगिए ॥३७॥
इम वाणी स्तवी राय । श्रेणिक भाणी हरष वणो ए ॥
महावीर पूजवा सुधाय । अष्टप्रकारी सामग्री भण्यो ए ॥३८॥

रत्न जडौत भृंगार । नीरमल जल पूजा करे ए ॥
 वीर आगल दीपि अण्यधार । जनम जरा मरख हरिए ॥३६॥
 कुंकुम केसर सार । करी चंदन पूजा भलीए ॥
 सुगंधि शरीर उदार । जिनगुण पामवा मन रलीए ॥४०॥
 नीरमल मोली जाण । तंभुल पंच पूज करिए ॥
 अक्षय पद नीर्वाण । दीयो स्वामी इम भाव धरीए ॥४१॥
 जाई जुई मन्त्रकुंद । अंघा कमल आदि फूल ग्रहीए ॥
 तह्ये कीषो काम नीकंद । एह गुण लिहिवा पूजिइ सहीए ॥४२॥
 पंचामृत नैवेद । उतारि हेमथाल धरीए ॥
 नहीं तुभ क्षुधा तृषा खेद । तेह गुण प्राप्त होय करीए ॥४३॥
 रत्न कपूरना दीप । उतारि जौन आगलिए ॥
 तत्त्व प्रकासन रूप । केवल ज्ञान लहिवा वसीए ॥४४॥
 कृष्णागुरु आदि धूप । जिन आगलिउ खेवितो ए ॥
 कर्मदाह करो भूप । अह्य तणो इम मन भावतो ए ॥४५॥
 मोच चोच जंबीर । आंवा आदि बहू फल ए ॥
 शिव सुख फल दीयो वीर । तह्ये स्वामी गुण आगला ए ॥४६॥
 कनक थाल भरि करी अर्घ । वीर आगलि उतारतु ए ॥
 रत्नत्रय जे अनर्घ्य । मागी भव दुःख तारतु ए ॥४७॥
 पूजा करी अष्ट भेद । श्री महावीर स्वामी तणी ए ॥
 करवा भव उच्छेद । नृत्य भावना भावी वणी ए ॥४८॥
 कु छनपोर धन धन्य । वीर जनमे जे पवित्र करयो ए ॥
 सीधारथ नृप धन धन्य । जेह घर स्वामी अवतरयो ए ॥४९॥
 धन धनपति यक्ष । षट नवमास रत्नवर्षतो ए ॥
 चउनीकाय असंख्य । देव समूह सही हर्षतो ए ॥५१॥

मगधान महावीर की स्तुति

धन धन्य त्रिसुल्यो मात । जीणीयि वीर जिन जनमयो ए ॥
 धन नाथ बंस विख्यात । त्रिभुवन माहि जे उपमयो ए ॥५२॥
 धन धन सौधमं इन्द्र । मेरु सीखर स्तपन कीउ ए ॥
 धन धन जिन बालचंद्र । वृधियां में जग उद्योतीयो ए ॥५३॥

धन जिन तनु सात हाथ । दश सत लक्षण मंडीउ ए ॥
 कनक बरग वीरनाथ । नयनज्ञान करी मंडीयो ए ॥५४॥
 कुंडल मुकट मणि हार । इन्द्र त्रिकाल जिन भूखतो ए ॥
 नमन करतां अपार । भाल पुरक्षर भुसतोए ॥५५॥
 भिस बरस कुमार । वैरागि लोकांतिक सेविउ ए ॥
 दीक्षा कल्याणक सार । कीयो सीध नमी संजम लीउ ए ॥५६॥
 घाति करम क्षय कीध । केवलज्ञान रवि प्रगट्यो ए ॥
 लोकालोक कीध प्रसिद्ध । मिथ्यातम विघट्यो ए ॥५७॥
 समीसरण आदि होय । अनत चतुष्टय भावीयो ए ॥
 तिहुअण भवीयण लीय । सेवि वांछित फल पावीयो ए ॥५८॥
 सिंह लांछन जय वीर । बद्धमान महावीर सन्मतीय ॥
 महती महावीर धीर । जयो जयो जगगुरु जगपती ए ॥५९॥
 जयो ब्रह्मा तू ब्रह्मा विष्णु । व्यापक शिवशंकर ए ॥
 बुद्ध धलश निःकर्म । हरी हर तू पातक हरो ए ॥६०॥
 बोहोरयर बरस जिन आय । विक्रम देवेन्द्रि पूजीयो ए ॥
 जयदेव त्रिभुवन राय । भवीअण जन जय जय कीयो ए ॥६१॥
 इम स्तवी जिन वीर । पुष्पांजलीयि बधावतो ए ॥
 श्रेणीक साहस धीर । गणधर नमी पुण्य पावतो ए ॥६२॥
 हरलील गुणह समुद्र । वीरने इन्द्र आरती करें ए ॥
 साढीबार कोठ अती गंद । बाजिन ध्वनी अति विस्तरे ए ॥६३॥
 करतो जय जय कार । इन्द्र उतारे आरती ए ॥
 नरखंता हरष अपार । दीठडि दुरीतनी वारती ए ॥६४॥
 रतन अडीत हेम बाल । रतनदीवि उद्योतनीए ॥
 रचना रतन फूल बाल । जाणे जान सुसंतती ए ॥६५॥
 चौंसठ नमर ठलंत । किनर कितरी गुण गावती ए ॥
 ता ता थेई थेई करंत । अपछरा नाचे भवी भावतीए ॥६६॥
 करता स्तवन वस्तु जयमाल । छंद प्रबंध मणि सुरवर ए ॥
 माननी मंगल विशाल । भवीयण जन जय जय करीए ॥६७॥
 करता जय जय कार । इन्द्र उतारि आरती ए ॥
 नरखंता हरष अपार । दीठडे दुरीत नीवारती ए ॥६८॥

जय जीवंत तू देव । वीर जिन जगदीश्वर ए ॥
विक्रम वेवेन्द्र करि सेव । जय जय देव नुत हम उचरि ए ॥६६॥

वस्तु

इन्द्र भारती इन्द्र भारती कीश उदार ।
भवतही भारती मंजरी रंजती भरीया चीस दीठीय ॥
दुरित तिमिर निवारती । बंदी सुर नरें अती गरीबीय ॥
हरखीत श्रेणिक नृप तदा । जिन गणधर नमो पाय ॥
चेलणा तथा परिवार सूर भाव्यो निजपुर ठाम ॥१॥
भास साहेलडी नी । राग धुल धन्यासी ॥

प्रशस्ति

नव सहस्र देस सदा भलो । साहेलडीए । ठाम ठाम बहु गाम ॥
नगर पुर पाटन घणा साहेलडीए । खेडा द्राण सुनाम ॥१॥
धन करण कणय रमणें भरभा । सा० मोधन तणो तही पार तो ॥
महिखी मोटी दीसि घणी । सा० दूध छि तेहनो फारतो ॥२॥
कनक भाज न मोइ मेहेली । सा० दोहता होइ धार नादतो ॥
पंखीयडा वासि पांभि । सा० मोर नाचि सुणो सादतो ॥३॥
सालक्षेत्र सौहि घणा । सा० सूडा साद सोहंत तो ॥
परीमल दहो दश विस्तरे । सा० रण भण भमरा करंत तो ॥४॥
अनेक धान्य क्षेत्र भला । सा० गीरी समा धान्य अंबार तो ॥
भोवां वन विविध परी । सा० ठाम ठाम वन विस्तार तो ॥५॥
नदी कुआ व्यावधणी । सा० सरोवर भरयां अपार तो ॥
कमल रातां नीलां नीलां ऊजला । सा० भमर तणा गुंजार तो ॥६॥

महुआ नगर वर्णन

तेह देस मांहि सौहि । सा० महुआ नयरी बसंत तो ॥
धन करण कणय रतने भरी । सा० माहाजन बसय महंत तो ॥७॥
आह्वाण वेदने अभ्यासे । सा० नाहि पूर्ण नदी मांहि तो ॥
अवर करण घणा बसि । सा० नित नित होइय उद्याह तो ॥८॥
मोटां मंदिर मालीयां । सा० तोरण आदि बहु सोभतो ॥
मेडी गुखने जालीयां । सा० कहोइ नहीं तस सोभतो ॥९॥

चहुटां मोटां हाट श्रेण ।सा०। क्रियाए भरी सारतो ॥
 नाणोटी दोसी घणां ।सा०। कणहट तरा नहीं पार हो ॥१०॥
 बंषा बकुल बेल नौपमां ।सा०। लखेरीं लखूरी रमेक तो ॥
 ताल तमाल प्रांवा जांझू ।सा०। बाडी वन सुबीबेकतो ॥११॥
 सिंहपुर कुल भंडण ।सा०। बहिवागीया आवक वसंत तो ॥
 दान पूजा व्रत अभिषेक ।सा०। बहु यरी घरप करंत तो ॥१२॥
 ते नयरी माहि ऊनत ।सा०। जिन प्रासाद विसाल तो ॥
 तोरण कलस घजा लहिकि ।सा०। सारका सोहि चित्रसालतो ॥१३॥
 वेदी स्थंभ भला भावि ।सा०। जाली गोल सुचंग तो ॥
 गर्भगृह कंबाड भला ।सा०। चंडोपक पंचरंग तो ॥१४॥
 रंगमंडप मोतीजाली ।सा०। नाटक साला रसाल तो ॥
 भीत चियाम चतुर चमके ।सा०। ललके बहु फूल माल तो ॥१५॥
 मोती फूल तरा चोक ।सा०। चोक मोटी पटसाल तु ॥
 कलस भृंगार चमर रुडा ।सा०। आमंडल भाक भमाल तो ॥१६॥
 रतन कनक पीतल रूपां ।सा०। आराम प्रतिमा उत्तंग तो ॥
 तेजि मुरज जीपता ।सा०। दीठि होय पाप तम भंग तो ॥१७॥
 ताल कंसाल घंटा घणी ।सा०। घुवरी भल्लरी सार तो ॥
 अनेक यती पंडीत भणि ।सा०। दीठि हरख अपार तो ॥१८॥
 भूलनायक चन्द्रप्रभ ।सा०। सोम मुरती रूप ठायतो ॥
 चन्द्रपुरी महासेन धन ।सा०। धन धन लक्ष्मण माय तो ॥१९॥
 डेढसो धनूख ऊनत सही ।सा०। चन्द्रवरण सोही देह तो ॥
 धन धन चन्द्रवदन भलू ।सा०। बर्माभूत जाणि मेह तो ॥२०॥
 बाणु गरुधरि सेवीउ ।सा०। धन धन कमल सुनेत्र तो ॥
 धन धन चन्द्र लच्छन भलू ।सा०। धन धन जिन जग तो ॥२१॥
 आयु दश लाख पूरव ।सा०। पूरवि वांछीत काम तो ॥
 काम मोह धी वेग लो ।सा०। होय नवनीच जेह नाम तो ॥२२॥
 धन धन जिन त्रिभुवन पती ।सा०। धन धन जग विश्राम तो ॥
 धन धन तू जगदीश्वर ।सा०। धन धन चंद्रप्रभ नाम तु ॥२३॥
 वादि विधन बेगि टालि ।सा०। विकट संकटनो विनास तो ॥
 विक्रम देखेद्रि पूजीलछ ।सा०। भवीअणनी पुरि आस तो ॥२४॥

त्रैवीस सो धीन जगितीलो ।सा०। पास विघन हर नाम तो ॥
 वाराणसी पुरी बीस्वेसन प्रभु ।सा०। आहूँ जनम्यो अभीराम तो ॥२५॥
 नीलवरण तनु नव हस्त ।सा०। मुरनर रचीत कल्याण तो ॥
 धरणेश्वर पद्मबावली पूजीयो ।सा०। जेह नामि होय कल्याण तो ॥२६॥
 नागलांछन नवनिधी पूरें ।सा०। चूरि बीघनतणी रास तो ॥
 हाकणी साकिणी व्यंतरा ।सा०। भूत भय जेह नामि पास तो ॥२७॥
 पुत्र कलत्र मित्र संपदा ।सा०। भवीयां पूरि पास तो ॥
 कवि श्रेष्ठ पूजीयो ।सा०। जयो जिन विघनहर पास तो ॥२८॥
 जिन सासन रक्षा करो ।सा०। जयो जायो श्री क्षेत्रपाल तो ॥
 तागो नाग विभूषणी तो ।सा०। हाथि डमरु जटाल तो ॥२९॥
 घुघरी पायें धमधमे ।सा०। नेउर रम भ्रमकार तो ॥
 माणीमद भरी मदचूरी ।सा०। संबनि करो जयकार तो ॥३०॥

मट्टारक परम्परा

मूलसंघ सरसती गच्छ ।सा०। बलातिकार गए अभिराम तो ॥
 पद्मनंद गुह गच्छती ।सा०। श्रेष्ठकोरती गुण ठामतो ॥३१॥
 विद्याधि विद्यानीलो ।सा०। तस पाटि सोहि नीधान तो ॥
 मल्लिभूषण महीमा भलो ।सा०। मानीयो जेह सुखसाग तो ॥३२॥
 ललित अंग लक्ष्मीचंद्र ।सा०। तेहपाटि जलनीधी चन्द्र तो ॥
 तप तेजें करीं सोहीयो ।हा०। वीरचंद्र सुमुनींद्र तो ॥३३॥
 लाक्षवंस सोभा करू ।सा०। तेह पाटि सार सारागार तो ॥
 ज्ञानभूषण ज्ञाने भलो ।सा०। अभिनवो गोपम अवतार तो ॥३४॥
 सुमतिकोरती सूरि आचार्य ।सा०। सेवयो जेह अनुदीन तो ॥
 रत्नभूषण सूरि वरि स्तव्यो ।सा०। ज्ञानभूषण सूरि धन्य तो ॥३५॥
 तेह पाटि घुरंघर ।सा०। बीसा हूंच वंसतो ॥
 प्रभाचंद्र महीचांदलो ।सा०। ज्ञान सरोवर हंस तो ॥३६॥
 कल्याण कीरती आचार्य ।सा०। सेवयो जेह सुभ मन तो ॥
 बाहिराज महो स्तव्यो ।सा०। प्रभाचंद्र धन धन तो ॥३७॥
 तेह पाट उदयाचल सूर ।सा०। मिथ्यावादी मदचूर तो ॥
 बाबिचंद्र वादिस्वर ।सा०। दीठि होई माणंद तो ॥३८॥

त्रैवीस मो जीन जगिनीलो ।सा०। पास बिघन हर नाम तो ॥
 वाराणसी पुरी बीस्वेसन प्रभु ।सा०। ब्राह्मण जनम्यो अभीराम तो ॥२५॥
 नीलवरण तनु नव हस्त ।सा०। सुरनर रबीत कल्याण तो ॥
 धरणेश्वर पद्ममावली पूजीयो ।सा०। जेह नामि होय कल्याण तो ॥२६॥
 नागलाञ्छन नवनिधी पूरें ।सा०। चूरि बीघनतली रास तो ॥
 डाकणी साकिणी ध्वंतरा ।सा०। भूत भय जेह नामि पास तो ॥२७॥
 पुत्र कलत्र मित्र संपदा ।सा०। भवीयां पुरि पास तो ॥
 कवि वेवेक्ष पूजीयो ।सा०। जयो जिन बिघनहर पास तो ॥२८॥
 जिन सासन रक्षा करो ।सा०। जयो जायो श्री क्षेत्रपाल तो ॥
 नागो नाग विभूषणो तो ।सा०। हाथि डमरू जटाल तो ॥२९॥
 घूषरी पायें धमधमे ।सा०। नेउर रम भ्रमकार तो ॥
 माणीभद्र घरी मदचूरी ।सा०। संघनि करो जयकार तो ॥३०॥

भट्टारक परम्परा

मूलसंघ सरसती गच्छ ।सा०। बलातकार गण अभिराम तो ॥
 पवनसंघ गुरु गच्छपती ।सा०। वेवेक्षकीरती गुरु ठामतो ॥३१॥
 विश्वामंखि विद्यानीलो ।सा०। तस पाटि सोहि नीधान तो ॥
 भस्त्रिभूषण महीमा भलो ।सा०। मानीयो जेह सुखतान तो ॥३२॥
 ललित भंग लक्ष्मीचंद्र ।सा०। तेहपाटि जलनीधी चन्द्र तो ॥
 तप तेजें करी सोहीयो ।हा०। बीरचंद्र सुमुनींद्र तो ॥३३॥
 लाडवंस सौभा करू ।सा०। तेह पाटि सार सणगार तो ॥
 ज्ञानभूषण ज्ञाने भलो ।सा०। अभिनवो शोयम अवतार तो ॥३४॥
 सुमतिकीरती सूरि प्राचार्य ।सा०। सेवयो जेह अनुदीन तो ॥
 रत्नभूषण सूरि जरि स्तब्धो ।सा०। ज्ञानभूषण सूरि धन्य तो ॥३५॥
 तेह पाटि घुरंधर ।सा०। बीसा हूबड वंसतो ॥
 प्रभाचंद्र महीचादलो ।सा०। ज्ञान सरोवर हंस तो ॥३६॥
 कल्याण कीरती प्राचार्य ।सा०। सेवयो जेह सुभ संत तो ॥
 बाविराज ब्रह्मे स्तब्धो ।सा०। प्रभाचंद्र घन घन तो ॥३७॥
 तेह पाटि उदयाचल सूर ।सा०। मिथ्यावादी मदचूर तो ॥
 बाविराज वादिस्वर ।सा०। दीठडि होई आणंद तो ॥३८॥

मूलसंघ भारती गछ ।सा०। पद्ममर्दनी गछ राय तो ॥
 तेह पाटि सोहि दीनकर ।सा०। सकलकीरती गुण ठाय हो ॥५१॥
 बुद्धमकीर्ति भुवि विख्यात ।सा०। तस पाटि सार सण्णार तो ॥
 ज्ञानभूषण ज्ञानदायक ।सा०। गोयम सम आचार तो ॥५२॥
 विजय कीरती गुरु गच्छपती ।सा०। बधन सिन्धी मुनीहंस तो ॥
 तस पटोपर सुभर्चह ।सा०। वादीश्वर कर बंस तो ॥५३॥
 हुंवर कुल बडे साजने ।सा०। सकल भूषणों नुल पाय तो ॥
 वाणीयां मानमर्दन ।सा०। षट्दशंश दादी राय तो ॥५४॥
 तेह पाटि सुमतीकीरती सूरि ।सा०। तेह पाटि उबयोमान तो ॥
 भवीयां कमल विकासवा ।सा०। गुणकीरती गुण जाणतो ॥५५॥
 एह गच्छपती तणि मन्वध ।सा०। ब्रह्मवासी जिणदास तो ॥
 सांतिवास तस पद घर ।सा०। ब्रह्म हुंसराल गुणवास तो ॥५६॥
 राजपाल ब्रह्म तेह पाटि ।सा०। सांप्रति श्री सांतिवास तो ॥
 तेह उपदेस जनपोर ।सा०। श्री जिनधर्म उल्हास तो ॥५७॥
 जैन ब्राह्मण सोहि सीहां ।सा०। श्री संघ घनेक प्रकार तो ॥
 संघवी नैकी आदि सद्गु ।सा०। करि जिनधर्म उदार तो ॥५८॥
 धन धन सकलकीरती गुरु ।सा०। जेहने एह्हा सीस निधान तो ॥
 धन धन ब्रह्म श्री जिणवास ।सा०। रघ्या शास्त्र रास निधान तो ॥५९॥
 धन धन जिनवास ब्रह्मवासी ।सा०। प्रतीबोद्ध्या ब्राह्मण राज तो ॥
 अमंत पंड्याना नाम भलू ।सा०। जाणें जेहने राज समान तो ॥६०॥
 ताणें आदरधो समकीत रत्न ।सा०। यत्ने जीवदया प्रतिपाल तो ॥
 घट सपंदीव्य करधू ।सा०। कुतुलूखान सभा विसाल तो ॥६१॥
 जैनधर्म तिहां थापीयो ।सा०। व्यापीयो अस अपार तो ॥
 विब प्रासाद उद्धार करधा ।सा०। तस सुत केजजी उदार तो ॥६२॥
 तस पुत्री पद्यावती ।सा०। घरणी घरत सकंत तो ॥
 चोवीस ब्राह्मण कुलि ।सा०। सोहि महीमावत तो ॥६३॥

तस पुत्र दोए पवित्र । सा० । बीकम गंगाधर नास तो ॥
 जैनवादी विद्यानिला । सा० । समकित रतन सुठम तो ॥६४॥
 गंगाधरें तप उद्धरयो । सा० । भाग्य सौभाग्य समुद्र तो ॥
 बिसालकीर्ति पाटि हवा । सा० । देवेन्द्रकीर्ति सुरेन्द्र तो ॥६५॥
 प्रकलंक सुरी लीनगुने । सा० । कर्ण देव प्ररीत तो ॥
 जिनधर्म तीहां उद्धरयो । सा० । जैनराजायि पूजा कीवती ॥६६॥
 त्रिविध आगम जाणि भला । सा० । विक्रमभट्ट विख्यात तो ॥
 विद्यादांन जीणि दीया । सा० । महीपलकीर्ति मुजात तो ॥६७॥
 प्रजबाई तस भामिनी । सा० । सीससमकित गुण लाणतो ॥
 तसवि पुत्र बीशारद । सा० । देवेन्द्र वासुदेव जाणतो ॥६८॥
 जिनकर चरण कमल सेवि । सा० । करि जिन शास्त्र अभ्यास तो ॥
 कवी देवेन्द्रें एह रच्यो । सा० । राय जसोधर तणों रास तो ॥६९॥
 सांभलि सर्व सुख संपजि । सा० । धर्मबुधी होइ प्रकास तो ॥
 पुत्र पौत्र धान्य वन । सा० । मंगल आनंद उलास तो ॥७०॥
 संवत १६ आठभीसि । सा० । आसो सुद बीज शुक्रवार तो ॥
 रास रच्यो नव रस भरयो । सा० । महुआ नयर मभार तो ॥७१॥
 लजे लखाविजे अणि । सा० । भाव सहित सुणि जेह तो ॥
 तेह धिर नव्य नध्य संपजि । सा० । नित मंगल तेह नेह तो ॥७२॥
 मुनीसुव्रत जिन अगितीलो । सा० । विक्रमदेवेन्द्र करि सेव तो ॥
 वासुदेव चक्रीरामे । सा० । जयदेव कही स्तव्यो देव तो ॥७३॥
 पंचकल्याणि पूजीयो । सा० । देवकीय सुयश प्रकाश तो ॥
 श्री सिधनें मंगल करो । सा० । सो जिन पूरवो आस तो ॥७४॥

धस्तु

जिन चोबीस तरा जिन चोबीस तरा
 नभीते पाया । राय जसोहर तेह तरा । रास रच्यो मे सार नीर्मल
 सरस्वती भाय प्रसाद थी । श्रीगुरुतरा महिमाय उज्ज्वल ॥

अक्षर मात्र पद स्वर, जो कोई छूको होय
भादरयो कवी सुघ करी, क्षमा करयो सह कोय ॥१॥

श्रीरस्तु उत्तमदानशीलशुणभृत् संघायतुर्याग्निने
नंदत्वे तदनंतकीर्ति महिमाहंद्बसत् आसनं ॥

जीवंतु ज्वलवाक् सुधीभितहता तापीः कवीन्द्राः सतां
सद्धर्मः किलबद्धंतां त्रिभुवने जैनो दयालसखः ॥१॥

इति श्री यशोधर महाराज चरित्रे रासचूडामणौ काव्य—
प्रतिष्ठिते मूदेयकवि श्रीविक्रमसुतदेवेन्द्र विरचिते
यशोध यशोधर राजादि भवांतर यथाक्रम स्वर्गसमनोनाम
नवमोऽधिकारः । यशोधर रास संपूर्ण ॥ अरहंतः ॥

संवत् १६४४ वर्षे भाद्रपद सुदि २ श्रृंगी । अयोहवाकरपुर वास्तव्यं । उदीक्ष्य
जातीय राजल सोमनाथ सुत विश्वनाथ लीकृतं । शुभं भवतु ।
अथ संख्या पांजीससे पूरा । प्रलोक ३५०० । इति शुभम् ।